चेखव की श्रेष्ठ कहानिया

लेखक:
[illegible]

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन,
मथुरा

★

अनुवादक :
राजनाथ, एम ए

★

१९५६

★

मूल्य
तीन रुपया

★

मुद्रक
हरिहर प्रेस,
मथुरा।

चेखव की श्रेष्ठ कहानियाँ

एरियाद्ने

ओडेसा से सेवास्तोपोल जाते हुए एक स्टीमर के डेक पर एक छोटी सी गोल दाढ़ी वाला एक सम्भ्रान्त व्यक्ति मेरे पास सिगरेट पीने की इच्छा से आया और कहने लगा।

"छापा में घेरे हुए उन जर्मनों की तरफ़ ज़रा गौर कीजिए! जब कभी जर्मन और अंग्रेज़ आपस में मिलते हैं तो फसल की, ऊन की कीमत की या अपने व्यक्तिगत मामलों की बातें करते हैं। परन्तु किसी कारणवश जब हम रूसी लोग आपस में मिलते हैं तो औरतों और आदर्श या अध्यात्मवादिक विषयों—विशेष रूप से औरतों के ही बारे में बातें करते हैं।"

इस व्यक्ति का चेहरा मेरे लिए पहले से ही परिचित था। पिछली शाम को हम दोनों एक ही ट्रेन से विदेश से लौटे थे और वोलोचिस्क पर जब चुंगी के अधिकारियों द्वारा सामान की जाँच की जा रही थी मैंने इसे इसके साथ यात्रा करने वाली एक महिला के साथ औरतों के कपड़ों से भरे हुए ट्रंकों और टोकरियों के एक ऊँचे ढेर के सामने खड़ा हुआ देखा था और मैंने गौर किया था कि जब इस बनावटी सिल्क के एक टुकड़े पर टैक्स लगा दिया गया था तो यह कितना व्यग्र और निराश हो गया था। और इसके साथ वाली महिला ने शिकायत करने की धमकी दी थी। बाद में ओडेसा जाते हुए मैंने इसे मठरी और सन्तरे लेकर जनाना डिब्बे की तरफ़ जाते देखा था।

हवा में सीलन थी। बादल कुछ २ छिड़क रहा था और महिलायें अपने कमरों में जा चुकी थीं।

छोटी नोकदार दाढ़ी वाला व्यक्ति मेरे पास बैठ गया और कहने लगा।

"हाँ जब रूसी एक दूसरे से मिलते हैं तो आदर्श और औरत के अलावा और कोई बातें नहीं करते। हम लोग इतने बुद्धिमान, इतने गम्भीर हैं कि सत्य के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कहते और केवल उच्चादर्शों के विषय में ही बातें कर सकते हैं। रूसी अभिनेता विदूषक का पार्ट करना नहीं जानता। वह प्रहसन में भी गम्भीरता के साथ अभिनय करता है। हम लोग भी वैसे ही हैं। जब हमें मामूली विषयों पर बातें करनी पड़ती हैं तो हम उन्हें बड़े ऊँचे दृष्टिकोण से देखते हैं। इसका कारण साहस, सचाई और सरलता का अभाव है। हम औरतों के बारे में प्रायः बातें करते हैं और मेरा ख्याल है कि हम ऐसा करते हैं क्योंकि हम असन्तुष्ट हैं। हम औरतों को अत्यन्त ऊँचे आदर्शों पर बस कर देखना चाहते हैं और वास्तविकता जो कुछ हमें दे सकती है उसके अनुपात में बहुत ऊँची वस्तुओं की माँग करते हैं। और हमें मिलता वह है जो हमारी माँग से नितान्त भिन्न होता है और इसका परिणाम स्वरूप टूटी हुई अभिलाषायें और आन्तरिक दुख के रूप में प्राप्त होता है और अगर कोई दुखी है तो वह उसके विषय में बातें करने के लिए बाध्य है। आप इन बातों से ऊब तो नहीं उठे?"

"नहीं, कतई नहीं।"

"ऐसी स्थिति में आज्ञा दीजिए कि मैं अपना परिचय दूँ," अपनी सीट से जरा सा उठते हुए मेरे साथी ने कहा, "इवान इलिच सामालिन, मास्को का एक जमींदार समझ लीजिए ... आपको मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

वह बैठ गया और मेरी तरफ मित्रतापूर्ण और हार्दिक भाव से [illegible]

"मैसस गोर्ड जैसा एक मध्यम श्रेणी का वर्ग सम्बन्धी इन निरन्तर होने वाली बातों का प्रेम का पागलपन पर बताएगा कि इसका कारण यह है कि हम लोग गुलाम है। मेरा इस विषय में बिल्कुल भिन्न विचार है। मैं फिर दु हम लोग असन्तुष्ट हैं क्योंकि हम लोग आदर्शवादी हैं। हम उन को जो हमें और हमारे बच्चों को गर्भ में धारण करती हैं अपन संसार की सब वस्तुओं से ऊँचा रखना चाहते हैं। जब हम हैं तो उन्हीं, जिन्हें हम प्यार करते हैं घृणा करते हैं और उन्हें की तरह सुन्दर समझते हैं। प्रेम और प्रणय हमारे लिए पू जीवन के लिए प्रमुख होने वाले दो सत्य हैं। हम स्त्रियों से प्र विचार दूषित समझा जाता है इन्द्रिय सुख का सहारा पकड़ना और इसके प्रति विरक्ति प्रदर्शित की जाती है और सबसे अधि उन उपन्यासों और कहानियों में पायी जाती है जिनके नारी पात्र भावुक और महान होते हैं। और यदि कभी वर्षों से स्नेह की मेर के पीछे पागल रहे हैं या नारी-सम्पन्नता के इच्छुक रहे हैं तो मैं आप विश्वास दिलाता हूँ कि इस विषय में कोई बाधा उपस्थित की म नहीं रही है। परन्तु मुसीबत यह है कि जब हमारी शादी हो जाती है या किसी स्त्री के साथ परिचय हुए दो या तीन साल बीत जाते हैं हम स्वयं को थका हुआ और निराश अनुभव करने लगते हैं। हम दूसरों के साथ रहना प्रारम्भ कर देते हैं और फिर वही निराशा वही विरक्ति होती है और अन्त में मामला इस हद तक विषम हो जाता है कि औरतें सुन्दरी, उच्च स्तर की, सम्भ्रान्त पतिव्रता विदेशी होती हैं। इसप्रकार मनुष्यों से अलग होना ही [illegible] उनसे [illegible] होती हैं।

१—[illegible] शताब्दी में इंग्लैंड में पैदा हुआ था और आजकल संसार के प्रमुख चित्रकारों में उसकी रचना की गणना है। 'मेडोना' नाम मेरी के उस रूप का नाम है जो चित्रों में प्रदर्शित किया जाता है।

और हमारे असन्तोष और निराशा के कारण हमारे पास इसके अलावा और कोई भी चारा नहीं रह जाता कि हम उस बात के विषय में कुछ और बातें करें, जिससे हमें इतनी निर्दयता पूर्वक धुत्कारा गया है।'

जब शामोहिन बातें कर रहा था तो मैंने गौर किया कि रूसी भाषा और अपना रूसी वातावरण उसे अत्यधिक आनन्द प्रदान कर रहे थे। इसका कारण सम्भवतः यह था कि उसे विदेश में रहते समय वतन की बड़ी याद आती रही थी। यद्यपि उसने रूसियों की तारीफ़ की और उन्हें ऊँचे और दुर्लभ आदर्शों वाला बताया परन्तु साथ ही उसने विदेशियों के महत्व को भी नहीं घटाया और इसके लिए मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ। साथ ही यह भी प्रकट हो रहा था कि उसकी आत्मा में कोई बेचैनी थी और यह कि वह स्त्रियों की अपेक्षा अपने स्वयं के विषय में अधिक बातें करना चाह रहा था और यह कि मुझे आत्म-स्वीकृति के रूप में एक लम्बी कहानी सुननी थी। जब हमने शराब की एक बोतल मँगवाई और एक-एक गिलास पी चुके तो दरअसल उसने इस तरह कहना प्रारम्भ किया।

"मुझे याद है कि बस्टमैन के एक उपन्यास में कोई कहता है, 'और यह कहानी है!' और कोई दूसरा उत्तर देता है 'नहीं, यह कहानी नहीं है—यह तो कहानी की केवल भूमिका है।' इसी तरह जो कुछ मैंने अब तक कहा है वह केवल भूमिका है, दरअसल तो मैं आपको सुनाना चाहता हूँ वह मेरी अपनी प्रेम-कहानी है। क्षमा कीजिए, मैं आपसे फिर पूछता हूँ, आप इससे ऊब तो नहीं उठेंगे?"

मैंने उसे बताया कि ऐसा नहीं होगा और वह कहता गया।

'मेरी कहानी का दृश्य मास्को प्रान्त के उत्तरी जिलों में से है। मैं आपको बता दूँ कि यहाँ का प्राकृतिक दृश्य अद्भुत रूप से सुन्दर है। हमारा बगीचे से घिरा हुआ मकान एक तेज़ बहने वाली नदी के ऊँचे किनारे पर है जहाँ नदी का पानी रात दिन कलकल करता हुआ रहता है। कल्पना कीजिए: एक पुराना बड़ा बाग़, साफ़ फूलों की

क्यारियाँ शहद की मक्खी के छत्ते, रसभरी की छोटी सी बगिया और उसके नीचे एक नदी जिसके किनारों पर घनी पत्तियों वाले 'विलो' के वृक्ष, जो, जब उन पर गहरी ओस पड़ी रहती है तो अपनी चमक खोकर भूरे रंग के दिखाई पड़ने लगते हैं। और नदी के दूसरे किनारे पर एक चरागाह, और चरागाह के परे, ऊँची ज़मीन पर एक भयंकर घना चीड़ का जङ्गल। उस जङ्गल में आश्चर्यजनक रूप वाले रंग के फल बहुत बड़ी तादाद में पैदा होते हैं और अब भी बारहसिंगे उसकी गहरी गुफाओं में रहते हैं। जब मुझे कफ़न में बन्द कर दिया जायगा, मुझे यकीन है कि मैं तब भी उन सुबहों का सपना देखूँगा जब सूरज आँखों को चकाचौंध पहुँचाता है; या वसन्त की उन अद्भुत संध्याओं को जब बुलबुल और कोयलें बाग में और बाग के परे गा उठती हैं और संगीत का स्वर गाँव पर लहराने लगता है जब वे घर में पियानो बजाते हैं और नदी कलकल कर उठती है... जब ऐसा संगीत बज उठता है तब सचमुच, हरेक की इच्छा होती है कि चीखें और ज़ोर से गा उठे।

हमारे पास खेती के लायक ज़्यादा ज़मीन नहीं है मगर हमारे चरागाह उस कमी का बहुत बड़ा हिस्सा पूरा कर देते हैं और जंगल की पैदावार को मिला कर हमारी सालाना आमदनी दो हज़ार रूबल के लगभग हो जाती है। मैं अपने बाप का इकलौता बेटा हूँ। हम दोनों ही संतोषी आदमी हैं और मेरे बाप की पेन्शन को मिला कर यह आमदनी हमारे लिए काफी थी।

युनिवर्सिटी की पढ़ाई ख़तम करने के बाद, मैंने तीन साल अपनी जायदाद की देखभाल करते हुए बराबर इस उम्मीद में देहात में ही बिताए कि मैं स्थानीय असेम्बली के लिए चुन लिया जाऊँगा। परन्तु सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं एक अद्वितीय रूप से सुन्दर और आकर्षक लड़की से प्रेम करने लगा था। यह हमारे एक पड़ोसी ज़मींदार कोल्तोविच की बहन थी। वह ज़मींदार बर्बाद हो चुका था। इसकी ज़मींदारी में अनन्नास, स्वादिष्ट आड़ू, जिनको पैदा करने की

असीम धरातलियों के भीतर एक कुल्हाड़ा मारते थे, और साथ ही उसकी जेब में एक भी पैसा नहीं था। वह कुछ भी नहीं करता था और जानता था कि कुछ भी कैसे नहीं किया जाता है। वह इतना कोमल था मानो उबली हुई शलगम से बनाया गया हो। वह किसानों का होम्योपैथिक इलाज किया करता था और आत्म-शिक्षा में रुचि रखता था। फिर भी वह बड़ा भावुक और विनम्र व्यक्ति था और किसी भी हालत में उसे बुरा नहीं कहा जा सकता। परन्तु ऐसे व्यक्तियों को मैं पसन्द नहीं करता जो आत्माओं से बातें करते हैं और किसानों की औरतों का कुनैन गोलियों से इलाज करते हैं। पहली बात तो यह है कि उन लोगों के विचार, जो मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होते, सदैव उलझे हुए रहते हैं और उन लोगों से बातें करना बहुत मुश्किल होता है और दूसरे, साधारणतः वे लोग किसी से प्रेम नहीं करते, स्त्रियों से कोई सम्पर्क नहीं रखते और उनकी रहस्य भावना का भावुक व्यक्तियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मैं उसकी रूपरेखा भी पसन्द नहीं करता था। वह लम्बा, मोटा, गोरा था और उसका सिर छोटा, आँखें चमकती हुई और उँगलियाँ सफेद और फूली हुई थीं। वह हाथ नहीं मिलाता था बल्कि दूसरे का हाथ अपने हाथ में पकड़ कर उसे मसलता था। और हमेशा विनम्र बना रहता था। अगर वह किसी चीज को माँगता तो 'क्षमा कीजिये' और अगर उसको कोई चीज देता तो भी 'क्षमा कीजिये' कहता था।

और उसकी बहन बिल्कुल दूसरी ही तरह की थी। मैं यह बता दूँ कि कोवालिन परिवार से मेरा बचपन और किशोरावस्था में कोई परिचय नहीं था क्योंकि मेरे पिता 'न—' में प्रोफेसर थे और हम लोग बहुत दिनों तक घर से बाहर रहे थे। जब मेरा उनसे परिचय हुआ तब वह २८ वर्ष की थी। बहुत पहले ब्याह हो चुकी थी और दो या तीन साल मास्को में उसकी ... हुआ ... नहीं रही थी जिसने उसे मुसद्दी में उसका बैठना सिखाया था। जब मुझे उससे परिचित कराया गया और मैंने उससे पहली बार बातें कीं तो मुझे सबसे

अधिक आकर्षक और अद्भुत वस्तु उसका नाम था—परिपाद् मे। यह बहुत ही उपयुक्त नाम था। वह सोलह वर्ष की युवती लड़की, दुबलापन, कोमल दर्शनीय और अद्भुत रूप से भव्य थी। उसकी रूपरेखा सुन्दर स्पष्ट और अत्यधिक तेजस्वितापूर्ण थी। उसके नेत्र भी चमकीले थे परन्तु उसके भाई के नेत्रों की चमक शान्त मधुर और चीनी की मिठाई की तरह फीकी थी जब कि उसके नेत्रों में यौवन गर्व और सौन्दर्य की आभा थी। उसने हमारे परिचय के पहले ही दिन मेरा हृदय जीत लिया और सचमुच इसे रोका भी नहीं जा सकता था। मुझ पर उसका प्रथम प्रभाव इतना गहरा था कि मैं आज तक भी अपनी उस कल्पना से छुटकारा नहीं पा सका हूं। मैं अब भी यह कल्पना करने को उत्सुक हो उठता हूं कि उस लड़की का निर्माण करते समय प्रकृति के सम्मुख कोई महान और अत्यधिक सुन्दर आदर्श रहा होगा। परिपाद मे की आवाज, उसकी चाल, उसका क्रोध, यहाँ तक कि रेतीले किनारे पर पड़े उसके पद चिह्न, जहाँ वह मछली पकड़ने बैठती थी, मुझे प्रसन्नतासे भर देते और मुझ में जीवनके प्रति एक उत्कटअभिलाषा उत्पन्न हो उठती। मैं उसकी आत्माका अनुमान उसके सुन्दरचेहरे और आकर्षक रूपरेखासे लगाया करता था और उसका प्रत्येक शब्द प्रत्येक दृष्टिपात मुझे मन्त्रमुग्ध कर देती, जीत लेती और उसकी आत्मा की श्रेष्ठता में विश्वास करने को बाध्य कर देती। उसका व्यवहार मिलनसार तथा हमेशा बातें करने को तैयार रहती और उसके व्यवहार में प्रसन्नता और सादगी भरी रहती। ईश्वर के प्रति उसकी आस्था अटल थी। मृत्यु के विषय में वह कवित्वपूर्ण विचार धारा रखती और उसकी आत्मा में इतनी विभिन्नतायें भरी रहती कि उसके दोष भी अद्भुत और आकर्षक गुण बन जाते। मान लीजिए कि उसे एक पाई की जरूरत होती और पास, मैं पैसा न होता—तो कोई चिन्ता की बात नहीं थी। कोई चीज बेच दी जाती या गिरवी रख दी जाती। और अगर कठिनता अनुभव होता कि कोई भी चीज न तो बेची जा सकती है और न गिरवी रखी जा सकती है तो मकान की

घास की गाँठों की गाड़ियाँ उतारी जातीं और कोठरी में ले जाई जातीं या काम की बहुत ज्यादा भीड़ रहने पर भी छुट्टी में काम पाने वाले घोड़े बाजार में जाने वाले और मिट्टी के साथ बहा दिए जाते। कभी-कभी उसकी ये अनियन्त्रित इच्छाएँ मारे पर को निराशा में डुबा देतीं और वह अपनी इच्छाओं को इतने सुन्दर ढंग से व्यक्त करती कि उसके लिए सब चीजों को न्यौछावर कर दिया जाता। सारी चीजों पर उसका उतना ही अधिकार रहता जैसा कि किसी देवी या सीज़र की पत्नी का रहता था। मेरा प्रेम आकर्षक था और शीघ्र ही सब भाग इसे जान गये—मेरे पिता पड़ोसी और किसान आदि की भी सहानुभूति मेरे साथ थी। जब मैं मजदूरों को वोद्का बाँटता तो वे सलाम करते और कहते: "भगवान करे कोत्सोतोविच महोदया आपकी पत्नी बने।

और परिवार में सुख भी जानती थी कि मैं उसे प्यार करता था। वह कभी घोड़े पर सवार होकर और कभी गाड़ी में बैठ कर हम दोनों से मिलने के लिए आती और पूरा दिन मेरे और मेरे पिता के साथ बिताती। उसने पिता के साथ गहरी मित्रता कर ली। उन्होंने उसे साइकिल चलाना भी सिखाया जो उसका प्रिय मनोरंजन था।

मुझे याद है कि एक शाम को मैंने उस साइकिल पर चढ़ने में मदद की थी और वह इतनी सुन्दर लगी थी कि मैंने अनुभव किया मानो मेरे हाथ जल रहे हों जब मैंने उसका स्पर्श किया। मैं खुशी से काँप उठा और जब वे दोनों मेरे पिता और वह, जो इतने सुन्दर और सज्जित दिखाई पड़ रहे थे बड़ी सड़क पर एक दूसरे की बगल में साइकिलों पर बैठे जा रहे थे तो एक काला घोड़ा, जिस पर कारिन्दा सवार था दौड़ कर एक तरफ को हट गया क्योंकि वह भी उनके सौन्दर्य से प्रभावित हो गया था। मेरे प्रेम, मेरी पूजा ने परिवार को भी प्रभावित किया और उसके हृदय को पिघला दिया। उसकी उत्कट इच्छा थी कि वह भी मेरी तरह किसी के वश में हो जाय और अन्तिम में उसी की गम्भीरता में मग्न रहे। वह सब इतना भावुकतापूर्ण था।

परन्तु वह मेरी तरह प्रेम करने के अयोग्य थी क्योंकि उसकी प्रकृति हठीली थी और चरित्र भी कुछ सीमा तक खराब था। उसके हृदय में एक शैतान था जो रात दिन उसके कान में फुसफुसाया करता था कि वह आकर्षक और पूजा के योग्य है। और उसे क्यों उत्पन्न किया गया था या उसे यह जीवन किसलिए प्रदान किया है, इस विषय में उसके कोई निश्चित विचार नहीं थे। वह भविष्य में स्वयं की कल्पना एक धनवान और विशिष्ट महिला के अतिरिक्त और किसी भी रूप में नहीं करती थी। वह स्वर्ण, घुड़दौड़ों, कीमती पोशाकों, सजे सजाये भव्य ड्राइंग-रूमों और अपने एक व्यक्तिगत कमरे के स्वप्न देखती थी और राजकुमारों, राजदूतों, प्रसिद्ध चित्रकारों और कलाकारों के एक ऐसे झुंड की कल्पना करती थी, जो सब के सब उसकी पूजा करते और उसके सौन्दर्य और आभूषणों को देख अभिभूत हो उठते।

व्यक्तिगत सफलता की यह प्यास और एक ही दिशा में मस्तिष्क को सदैव केन्द्रित किए रहने की इस आदत से व्यक्ति उदासीन हो उठता है और पेरिस में उदासीन थी—मेरे प्रति, प्रकृति के प्रति और संगीत के प्रति। समय व्यतीत होता चला जा रहा था और अभी तक रंगमंच पर राजदूतों का पदार्पण नहीं हुआ था। पेरिस में अपने आज्ञाकारी भाई के साथ रह रही थी। हालत दिन प्रतिदिन बिगड़ती चली जा रही थी। यहाँ तक कि उसके पास खाने और पोशाकें खरीदने के लिए कुछ भी नहीं बचा था और इस अपनी निर्धनता को छिपाने के लिए तरह-तरह की चालाकियों और धोखेबाजियों का सहारा लेना पड़ता था।

सौभाग्य से मार्कस नामक एक प्रिंस, जो एक अमीर परन्तु बहुत ही साधारण सा व्यक्ति था उसके पास आया था जब वह मास्को में अपनी बुआ के पास रहती थी। उसने प्रिंस को पूर्णतः निराश कर दिया था। परन्तु अब वह इस बात पर पश्चाताप करती थी कि उसने उसे अस्वीकार कर दिया था जैसे कि एक सियार बैठे हुए आम (शराब) के प्याले को देखकर खट्टा या फूट कह दे परन्तु फिर भी उसे

पीता है। इसी तरह वह मिस की याद कर घृणा से कुछ कहती परन्तु फिर भी अपने आपसे बन्द उठती "जो तुम्हारी इच्छा हो सो करो, फिर भी एक पत्नी में कुछ अबोध्य आकर्षण सा होगा है।"

वह स्वस्थ युवती एक रईसी का, एक उच्च सामाजिक स्थिति का और साथ ही वह मुझे भी हाथ से निकल जाने देना नहीं चाहती थी। कुछ भी हो, कोई राजपूतों का स्वप्न देख सकता है फिर भी उसका हृदय पत्थर का नहीं होता और हरेक अपने यौवन के दिनों में उच्च भावनाएँ रखता है। एरियाद्न ने प्रेम में पड़ने का प्रयत्न किया, प्रेम करने का प्रदर्शन किया और कसम खा गई कि मुझसे प्रेम करती है। परन्तु मैं एक जागरूक और भावुक व्यक्ति हूँ। जब मुझसे प्रेम किया जाता है तो मैं बिना प्रतिज्ञाओं और विश्वास दिलाये जाने के प्रयत्नों के ही दूर से ही इसका अनुभवकर लेता हूँ। तुरन्त ही मैंने अनुभव किया कि वातावरण में उपेक्षा थी और जब वह मुझसे प्रेम की बातें करती थी ऐसा लगता मानो मैं धातु की बनी हुई एक बुलबुल का संगीत सुन रहा हूँ। एरियाद्न स्वयं इस बात से चौकन्नी थी कि इसमें कोई कमी नहीं थी। वह परेशान हो उठी थी और मैंने उसे कई बार रोते देखा था। एक बार-आप इसकी कल्पना कर सकते हैं!—अचानक वह मुझसे लिपट गई और मेरा चुम्बन ले लिया। यह घटना नदी तट पर शाम को घटी थी और मैंने उसकी आँखों में देखा कि वह मुझसे प्रेम नहीं करती थी बल्कि केवल उत्सुकतावश आलिंगन कर रही थी और स्वयं को जाँचना चाहती थी कि इसका क्या परिणाम निकलता है। मैं भयभीत हो उठा। मैंने उसके हाथ पकड़ लिए और निराश होकर कहा। 'इस प्रेमहीन दुलार से मुझे दुःख होता है!'

"तुम भी कैसे अजीब आदमी हो!" उसने नाराज होकर कहा और चली गई।

एक या दो साल बाद गुजर गए होंगे और अत्यधिक सम्भावना के सहित हम दोनों उसके विवाह कर लेना चाहिए था और इस तरह मेरी

बदनामी समाप्त हो जाती, परन्तु भाग्य ने तो हमारे इस प्रेम व्यापार का कोई दूसरा ही रूप निश्चित कर रखा था। ऐसा हुआ कि हमारे इस क्षितिज पर एक नया व्यक्ति उदय हुआ। परिवार के भाई का युनिवर्सिटी का एक पुराना मित्र मिहैल इवानोविच सुखकाव उनसे मिलने आया। वह एक आकर्षक व्यक्ति था जिसे कोपतान और भावुक "समझदार आदमी" कहा करते थे। वह औसत कद का दुबला पतला और लंबा, जल्दी हर बात मानने वाला व्यक्ति है से चेहरा काला अनाकर्षक परन्तु तीखा और मिलने योग्य व्यक्ति था जिसकी मूँछें काली और नहीं हुई गर्दन [illegible] की तरह रंग काली और पैर [illegible] के बड़े पेड़ की तरह था। वह एक बीड़ि [illegible] में फंसा हुआ एक [illegible] बोलता था और 'र' और 'ल' का [illegible] स्पष्ट नहीं कर पाता था। वह हमेशा खुश रहता था प्रत्येक वस्तु उसका ध्यान आकर्षित करती थी।

बीस साल की उम्र में उसने एक निहायत देहाती से भरी हुई शादी की थी मगर अपनी पत्नी के दहेज के रूप में उसे मास्को में मकान मिले थे। उसने उनकी मरम्मत करवाई और एक रहन-गृह प्रारम्भ कर दिया और पूरी तरह मर्जी हो गया। आजकल उसकी और चार बच्चे 'ओरिएन्टल विंडिंग' में बड़ी गरीबी की जिन्दगी रह रहे थे उसे उनका पालन पोषण करना पड़ता था—और इसमें [illegible] था। उसकी पत्नी दुर्बल था की थी और इस नहीं पीती अल्कोहल की थी और इस काल में भी उसे [illegible] [illegible]। उसकी माँ एक समझिन गुस्सेवाज और कंजूसी [illegible] [illegible] करने वाली औरत थी। वह उसकी बीवी से नफरत करती [illegible] और बिच्चियों के एक पूरे लिहाफ मान के साथ [illegible] [illegible]। सुखकोव को उसे भी मगर स्वयं मदद्गारी दन रहते थे। [illegible] व्यक्ति था। [illegible] बाजार में [illegible] और हरमीटाज में काम का [illegible] था। उसे [illegible] की महफ़िल रहती थी परन्तु उनका [illegible] उस मित्र का इनाम

मामला ही देता था जो काफी नहीं थे और वह कई कई दिनों तक, जैसी कि कहावत है, बीस मिनटों के मास्को में इधर से उधर किसी काम हुये भाग की तलाश में घूमता रहता था और इसमें भी उसे मज़ा आता था। वह कसलोविच के यहाँ जैसा कि उसका कहना था प्रकृति की गोद में पारिवारिक जीवन से दूर रहकर आराम करने आया था। दोपहर के खाने शाम की चाय और हम बागों में घूमने वाले समय वह अपनी बीबी अपनी माँ अपने कर्जदारों और जमीनों के बारे में बातें करके हँसी उड़ाता। वह अपने ऊपर भी हँसता और इसमें , दिखाता कि बातें करने की उसकी प्रतिभा को धन्यवाद है उसमें इतना अनेकों से अच्छी जान पहचान करती है। वह बिना रुके रहता और हम लोग भी हँस पड़ते। साथ ही उसके साथ हम दोनों समय भी दूसरी तरह कटने लगा। मेरा झुकाव अपेक्षाकृत अधिक कहना चाहिए कि ग्रामीण जीवन के आनन्दों की तरफ अधिक था। मछली पकड़ना, सांध्य-भ्रमण, कुकुरमुत्ते इकट्ठे करना अच्छा था। लुकनोव को पिकनिकों पालतू जानवरों और शिकार का शौक था हफ्ते में तीन बार पिकनिकों का आयोजन किया करता था परीवाद्से बिना इस बात को पूछे कि मेरे पास पैसे हैं या कोकरों, गौस्टेक और मिठाइयों की एक पूरी लिस्ट बनाकर मैं आठवा मास्को से ले आऊँ। और इन पिकनिकों में शराब उड़ाने लगते और फिर वही मजाकिया बातें शुरू हो जातीं कि बीबी कितनी शाह की है उसकी माँ के पास कैसा मोटा सिकाने पाला हुआ है और उसके साहूकार कैसे मजेदार आदमी

लुकनोव प्रकृति-प्रेमी था परन्तु वह उसे एक ऐसी था जो बहुत दिनों से परिचित हो और साथ ही, वास्तव में, नीची हो और उसके मनोरंजन के लिये बनाई गई हो। वह अत्यन्त सुन्दर प्राकृतिक दृश्य को देखकर चिल्ला पड़ता – "यहाँ चाय पीने में आनन्द आएगा।"

एक दिन पुरीवाद्से को दूर खेता बनाकर आते हुए

उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा "वह पतली है, और मुझे बड़ी अच्छी लगती है, मुझे मोटी औरतें पसन्द नहीं हैं।'

इस बात ने मुझे चौंका दिया। मैंने उससे अपने सामने स्त्रियों के विषय में इस तरह की बातें करने के लिए मना किया। उसने अचरज से मेरी तरफ देखा और कहा :

'इस बात में क्या बुराई है कि मैं पतली औरतों को पसन्द करता हूँ और मोटी औरतों की तरफ ध्यान नहीं देता ?"

मैंने जवाब नहीं दिया। बाद में उसने मेरी ओर कुछ मस्त होकर उससे कहा।

'मैंने गौर किया है कि परिपार्श्वे सिगारेट्स तुमको चाहती है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम उस पर विजय पाने की कोशिश क्यों नहीं करते।

उसके शब्दों ने मुझे परेशान कर दिया और कुछ क्षण ठहर कर हुए मैंने उसे बताया कि प्रेम और स्त्रियों के प्रति मेरा क्या दृष्टिकोण है।

"मुझे नहीं मालूम" उसने गहरी साँस ली। मेरे विचारानुसार तो एक औरत एक औरत है और एक मर्द एक मर्द है। जैसा कि तुम कहते हो, हो सकता है कि परिपार्श्वे भावुक और महान हो परन्तु इससे यह तो साबित नहीं होता कि वह प्राकृतिक नियमों से भी महान है। तुम खुद ही देख लो कि अब वह उस अवस्था को पहुँच गई है जब उसका कोई पति या प्रेमी होना ही चाहिए। मैं भी औरतों की उतनी ही इज्जत करता हूँ जितनी कि तुम करते हो, परन्तु मैं नहीं सोचता कि कुछ विशिष्ट सम्बन्ध कविता को दूर कर देते हैं। कविता एक चीज है और प्रेम बिल्कुल दूसरी चीज। यह वैसा ही है जैसा कि खेती में होता है। प्रकृति का सौन्दर्य एक चीज है और तुम्हारे खेतों और जंगलों से होने वाली आमदनी दूसरी चीज है।'

जब मैं और परिपार्श्वे मछली पकड़ रहे होते तो कुचकोव पास ही बालू पर लेट जाता और मेरा मजाक उड़ाता या आचरण पर शिक्षा

मायावता ही देता था जो अपनी यहीं थे और वह कई कई दिनों तक, जैसी कि कहावत है, बीम मिलाके मास्को में इधर से उधर किसी कर्ज देने वाले की तलाश में घूमता रहता था और इसमें भी उसे मजा आता था। वह कोस्लोविच के यहाँ, जैसा कि उसका कहना था प्रकृति की गोद में पारिवारिक जीवन से दूर रहकर, आराम करने आया था। दोपहर व खाने, शाम की चाय और हम दोनों के घूमने वाले समय वह अपनी बीवी अपनी माँ, अपने कर्जदारों और जमीनों के बारे में बातें करता और उनकी हँसी उड़ाता। वह अपने ऊपर भी हँसता और हमको विश्वास दिलाता कि कर्ज लेने की उसकी प्रतिभा को धन्यवाद है उसने इससे इतना अनेकों से अच्छी जान पहचान करली है। वह बिना रुके हँसता रहता और हम लोग भी हँस उठते। साथ ही उसके साथ हम दोनों का समय भी दूसरी तरह कटने लगा। मेरा झुकाव अपेक्षाकृत अधिक शान्त, कहना चाहिए कि, ग्रामीण जीवन के आनन्दों की तरफ अधिक था। मुझे मछली पकड़ना, सांध्य-भ्रमण, कुकुरमुत्ते इकट्ठे करना अच्छा लगता था। लुबकोव को पिकनिकों पार्टियों और शिकार का शौक था। वह हफ्ते में तीन बार पिकनिकों का आयोजन किया करता था और एरियाद्ने बिना इस बात को पूछे कि मेरे पास पैसे हैं या नहीं मुझे सेंकड़ों शैम्पेन और मिठाइयों की एक पूरी लिस्ट बनाकर पकड़ा देती कि मैं जाकर मास्को से ले आऊँ। और तब पिकनिकों में शराब उड़ती और पहले जाम और फिर वही मजाकिया बातें शुरू हो जातीं कि उसकी बीवी कितनी साल की है उसकी माँ के पास कैसा मोटा गोदी में खिलाने वाला कुत्ता है और उसके साहूकार कैसे मजेदार आदमी हैं...

लुबकोव प्रकृति-प्रेमी था परन्तु वह उसे एक ऐसी चीज मानता था जो बहुत दिनों से परिचित हो और साथ ही, दरअसल उससे बहुत नीची हो और उसके मनोरंजन के लिये बनाई गई हो। वह कभी किसी अत्यन्त सुन्दर प्राकृतिक दृश्य को देखकर स्थिर खड़ा हो जाता और कहता 'यहाँ चाय पीने में आनन्द आएगा।'

एक दिन एरियाद्ने को दूर [illegible] जाते हुए देखकर उसने

उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा "वह पतली है, और मुझे बड़ी अच्छी लगती है, मुझे मोटी औरतें पसन्द नहीं हैं।'

इस बात ने मुझे चौंका दिया। मैंने उससे अपने सामने स्त्रियों के विषय में इस तरह की बातें करने के लिए मना किया। उसने ताज्जुब से मेरी तरफ देखा और बोला।

"इस बात में क्या बुराई है कि मैं पतली औरतों को पसन्द करता हूँ और मोटी औरतों की तरफ ध्यान नहीं देता?"

मैंने जवाब नहीं दिया। बाद में तरंग में आकर और कुछ मस्त होकर उसने कहा।

"मैंने गौर किया है कि परिस इन सिगरेटिस्ता तुमको चाहती है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम उस पर विजय पाने की कोशिश क्यों नहीं करते।

उसके शब्दों ने मुझे परेशान कर दिया और कुछ क्रुद्ध होते हुए मैंने उसे बताया कि प्रेम और स्त्रियों के प्रति मेरा क्या दृष्टिकोण है।

"मुझे नहीं मालूम" उसने गहरी सांस ली। "मेरे विचारानुसार तो एक औरत एक औरत है और एक मर्द एक मर्द है। जैसा कि तुम कहते हो, हो सकता है कि परिस्थितियां भावुक और महान हों परन्तु इससे यह तो साबित नहीं होता कि वह प्राकृतिक नियमों से भी महान है। तुम खुद ही देख लो कि अब यह उस अवस्था को पहुँच गई है जब उसका कोई पति या प्रेमी होना ही चाहिए। मैं भी औरतों की उतनी ही इज्जत करता हूँ जितनी कि तुम करते हो, परन्तु मैं नहीं सोचता कि कुछ विशिष्ट सम्बन्ध कविता को दूर कर देते हैं। कविता एक चीज है और प्रेम बिलकुल दूसरी चीज। यह क्या हो है जैसा कि दुनी में होता है। प्रकृति का सौन्दर्य एक चीज है और तुम्हारे ग्रन्थों और रचनाओं से इसकी चर्चा सामग्री दूसरी चीज है।"

जब मैं और परिवार्‌मे मछली पकड़ रहे होते तो कुबकोव पास ही बालू पर बैठ जाता और मेरा मजाक उड़ाना आरम्भ कर दिया करता

साधारण ही देता था जो काफी बड़ी थे, और वह कई कई मिनटों तक, जैसी कि आदत है, बीस नियाले मास्को में इधर से उधर किसी कर्ज देने वाले की तलाश में घूमता रहता था और इसमें भी उसे मजा आता था। वह कैस्तोनिच न था, जैसा कि उसका कहना था प्रकृति की गोद में पारिवारिक जीवन से दूर रहकर, आराम करने आया था। होस्टर के सामने शाम की व्यालू और हम लोगों के घूमने जाते समय वह अपनी बीवी अपनी माँ, अपने कर्जदारों और अमीरों के बारे में बातें करता और उनकी हँसी उड़ाता। वह अपने ऊपर भी हँसता और हमको विश्वास दिलाता कि कर्ज लेने की उसकी प्रतिभा को धन्यवाद है उसने इसके द्वारा अनेकों से अच्छी जान पहचान करली है। वह बिना रुके हँसता रहता और हम लोग भी हँस पड़ते। साथ ही उसके साथ हम लोगों। समय भी दूसरी तरह कटने लगा। मेरा सुझाव अपेक्षाकृत अधिक ध्यान करना चाहिए कि, ग्रामीण जीवन के आनन्दों की तरफ अधिक था। मु मछली पकड़ना, सोम्य-भ्रमण, कुकुरमुत्ते इकट्ठे करना अच्छा लग था। कुपकोव को पिकनिकों, यात्रियों और शिकार का शौक था। व हफ्ते में तीन बार पिकनिकों का आयोजन किया करता था औ मरियाद्न बिना इस बात को पूछे कि मेरे पास पैसे हैं या नहीं मु केकड़ों, शैम्पेन और मिठाइयों की एक पूरी लिस्ट थमाकर रवाना देती। मैं सामान मास्को से ले आऊँ। और इन पिकनिकों में शराब उड़ती औ पहले जाने और फिर वही मजाकिया बातें शुरू हो जातीं कि उसक बीवी कितनी नाक की है उसकी माँ के पास कैसा मोटा मोटी सिखलाने वाला कुत्ता है और उसके साहूकार कैसे मजेदार आदमी हैं

कुपकोव प्रकृति-प्रेमी था परन्तु वह उसे एक ऐसी चीज मानता था जो बहुत दिनों से परिचित हो और साथ ही, वस्तुतः, उससे बहु नीची हो और उसके मनोरंजन के लिये बनाई गई हो। वह कभी किसी अत्यन्त सुन्दर प्राकृतिक दृश्य को देखकर स्थिर खड़ा हो जाता और कहत "यहाँ चाय पीने में आनन्द आएगा।"

एक दिन मरियाद्ने को दूर धाम ... जाते हुए देखकर उस

उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा, "वह पतली है, और मुझे बड़ी अच्छी लगती है, मुझे मोटी औरतें पसन्द नहीं हैं।'

इस बात ने मुझे चौंका दिया। मैंने उससे अपने सामने स्त्रियों के विषय में इस तरह की बातें करने के लिए मना किया। उसने ताज्जुब से मेरी तरफ देखा और बोला।

'इस बात में क्या बुराई है कि मैं पतली औरतों को पसन्द करता हूँ और मोटी औरतों की तरफ ध्यान नहीं देता?"

मैंने जवाब नहीं दिया। बाद में उमंग में भरकर और कुछ मस्त होकर उससे कहा।

"मैंने गौर किया है कि परिव इन फ्लोरीएन्स तुमको चाहती है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम उस पर विजय पाने की कोशिश क्यों नहीं करते।

उसके शब्दों ने मुझे परेशान कर दिया और कुछ व्यग्र होते हुए मैंने उसे बताया कि प्रेम और स्त्रियों के प्रति मेरा क्या दृष्टिकोण है।

'मुझे नहीं मालूम' उसने गहरी साँस ली, 'मेरे विचारानुसार तो एक औरत एक औरत है और एक मर्द एक मर्द है। जैसा कि तुम कहते हो, हो सकता है कि पुरिमाइन भावुक और महान हो परन्तु इससे यह तो साबित नहीं होता कि वह प्राकृतिक नियमों से भी महान है। तुम खुद ही देख लो कि अब वह उस अवस्था को पहुँच गई है जब उसका कोई पति या प्रेमी होना ही चाहिए। मैं भी औरतों की उतनी ही इज्जत करता हूँ जितनी कि तुम करते हो, परन्तु मैं नहीं मानता कि कुछ विशिष्ट सम्बन्ध कविता को दूर कर देते हैं। कविता एक चीज है और प्रेम बिल्कुल दूसरी चीज। यह वैसा ही है जैसा कि खेती में होता है। प्रकृति का सौन्दर्य एक चीज है और तुम्हारे खेतों और बगीचों से होने वाली आमदनी दूसरी चीज है।'

जब मैं और परिवार्गे मछली पकड़ रहे होते तो पुरिमाइन अक्सर ही बाग् पर फेर आती और मेरा मजाक उड़ाना या आरम्भ कर विलक्षणा

चाहिये इस बात पर ध्यानस्थ पेश रहता ।

"मुझे आश्चर्य है, प्रिय महोदय कि आप बिना प्रेम किये कैसे रह सकते हैं," वह कहता "आप जवान हैं, सुन्दर हैं, मनोरम हैं—सच पूछा आप ऐसे व्यक्ति हैं जिस पर मांस भी नहीं चढ़ाया चाहिये फिर भी आप एक साधु की तरह रहते हैं। बस! मैं ऐसे आदमियों को सहन नहीं कर सकता जो अट्ठाईस वर्ष की अवस्था में ही बूढ़े बन जाते हैं। मैं आपसे लगभग दस साल बड़ा हूँ और फिर भी हम में से कौन जवान है? एरियाद्ने ग्रिगोरीएव्ना कौन है?"

"बेशक, आप हैं" एरियाद्ने ने जवाब दिया।

और जब वह हमारी खामोशी और सिरैरी पर मिर्याद जमाये रहने से तंग आ कर चला जाता और वह मेरी तरफ गुस्से से देखती हुई कहती।

'तुम सचमुच आदमी नहीं हो बल्कि मिट्टी के एक लौंदे हो, भगवान मुझे क्षमा करे! आदमी को इस योग्य होना चाहिये कि भावनाओं में बह जाय। उसे इस लायक होना चाहिये कि वह पागल हो उठे गलतियाँ करे दुःख उठाये। एक औरत तुम्हारी धृष्टता और बदतमीज़ी को क्षमा कर सकती है परन्तु वह तुम्हारी मूर्खता को कभी भी क्षमा नहीं करेगी!'

वह सचमुच गुस्से में थी और कहती गई:

"सफलता प्राप्त करने के लिये आदमी का दृढ़ और साहसी होना चाहिये। लुब्कोव तुम्हारी तरह सुन्दर नहीं है परन्तु अधिक आकर्षक है। वह हमेशा औरतों के मामले में सफलता प्राप्त करेगा क्योंकि वह तुम्हारी तरह नहीं है। वह एक आदमी है"

और सचमुच उसकी आवाज़ में क्रोध की कंपकंपी भरी हुई थी।

एक दिन भोजन के समय उसने सहसा प्रारम्भ किया बिना

बंध कर नहीं रहती बल्कि यात्रा करती कहीं विदेश में जाये चली—उदाहरण के लिए जैसे इटली में। ओह! इटली! इसी समय मेरे पिता ने यकायक बात में ही बात में भी रस दिया। वे हमें बताने लगे कि इटली कैसा है, वहाँ कितना अच्छा लगता था वहाँ के प्राकृतिक दृश्य कितने भव्य व प्रभावशाली कैसे सुन्दर थे। परिचारिका के हृदय में अचानक इटली जाने की तीव्र इच्छा प्रज्वलित हो उठी। उसने लापरवाही से मेज पर घूँसा मारा और उसकी आँखें चमक उठीं वह कहने लगी। "मैं जरूर जाऊँगी!"

इसके बाद रोज इटली के विषय में बातें होने लगीं। इटली में कितना आनन्द आयगा आह इटली! आह, इटली! और अब परिचारिका ने मुड़ कर, उपेक्षापूर्ण और रूखी दृष्टि से मेरी तरफ देखा तो मुझे लगा कि उसने अपने स्वप्न में ही इटली को जीत लिया था—वहाँ के सुन्दर होटल महान शिल्पी और यात्री। और अब उसे रोका नहीं जा सकता था। मैंने उसे कुछ दिनों रुकने की सलाह दी कि वह अपनी यात्रा को एक या दो मास के लिये मुल्तवी कर दे परन्तु वह नफरत से त्योरियाँ चढ़ा उठी और बोली:

"तुम एक बुढ़िया की तरह कंजूस हो!"

सुखरोव यात्रा के पक्ष में था। उसने कहा कि वह बहुत सस्ते में हो सकती है और वह खुद भी इटली जायगा और वहाँ पारिवारिक जीवन से दूर रह कर आराम करेगा।

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने एक स्कूली लड़के की तरह सरल व्यवहार किया ईर्ष्या से नहीं बल्कि किसी भयानक और अद्भुत भविष्य की कल्पना कर मैंने पूरी कोशिश की कि उन दोनों को अकेले एक साथ न रहने दूँ परन्तु उन्होंने मेरा मजाक उड़ाया। उदाहरण के लिए जब मैं भीतर जाता तो वे यह दिखाते कि अभी एक दूसरे का चुम्बन ले रहे थे और ऐसी ही और हरकतें करने लगते थे।

परन्तु इसलिए, एक सुन्दर प्रभात में उसका मोटा सफेद बालों

पाया भाई यह अभ्यासमयी भाषा और मुझसे अकेले में बात की इच्छा प्रकट की।

उस आदमी में अपनी कोई इच्छा-शक्ति नहीं थी। इतना शिक्षित और विनम्र होते हुए भी वह दूसरे व्यक्तियों के पत्रों को पढ़ने से अपने को रोक नहीं पाता था, अगर वे उसके सामने मेज पर पड़े होते। और इस समय उसने स्वीकार किया कि उसने फ्लेमिंग फुमफ्रेज का परिवारजनों के नाम लिखा हुआ एक पत्र पढ़ लिया था।

"इस पत्र से मुझे मालूम हुआ कि वह बहुत जल्दी ही विदा हो रही है। मेरे प्यारे भाई, मैं बहुत परेशान हो गया हूँ। भगवान के लिये मुझे सब बताओ। मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा।"

जैसे ही उसने यह कहा गहरी सांस ली और चीनी मेरे मुँह पर छोड़ दी। बरामदे से उठते हुए धाम के गोरस की गन्ध आ रही थी।

"मुझे इस पत्र का रहस्य खोल देने के लिए क्षमा करना, परन्तु तुम परिवार के मित्र हो, यह तुम्हारी इज्जत करती है। शायद तुम इस विषय में कुछ जानते हो। यह बाहर जाना चाहती है, मगर मिस्टर भाप; मिस्टर फुमफ्रेज उसके साथ जाने का प्रस्ताव रख रहे हैं। क्षमा कीजिए परन्तु यह मिस्टर फुमफ्रेज का विचित्र व्यवहार है। वे एक शादीशुदा आदमी हैं, उनके बच्चे हैं, और फिर भी वे प्रेम की घोषणा कर रहे हैं, वे परिवार में न दिखाई देते हैं, "शर्मिंदा", क्षमा कीजिये मगर यह सब बड़ा विचित्र लग रहा है।"

मैं स्तम्भित हो गया, मेरे हाथ और पैर सुन्न पड़ गए और मैंने अपने सीने में एक दर्द महसूस किया मानो एक विषैला पत्थर उसमें घुसेड़ दिया गया हो। कोल्यादिन इसका होकर कुछ बातामुकों पर गिर पड़ा और उसके हाथ बगल में शिथिल होकर लटकने लगे।

"मैं क्या कर सकता हूँ?" मैंने पूछा।

"इसे समझाओ उस पर असर डालो जरा सोचो या नहीं कि फुमफ्रेज उसके लिए क्या है? क्या

भगवान ! यह कितना अजीब है कितना अजीब है !" अपना सिर पकड़ कर यह कहता गया । ' उसके सामने हमने अपने प्रस्ताव रखे मय प्र–मिस मारगुएव और और दूसरे । मिस उसकी पूजा करता है और अभी पिछले पुष्पजार को उसके स्वर्गीय चाचा, हुचारियास, ने यह निश्चित घोषणा की थी कि ओरियास्ने उसकी मौसी बनेगी–निश्चित रूप से । उसका चाचा हुचारियास, मर गया है मगर वह आत्मप्रशंसक रूप से एक बुद्धिमान व्यक्ति है, इस तरह उसकी आत्मा को शान्ति दे !"

इस बातचीत के बाद मैं सारी रात जागता हुआ पड़ा रहा और मैंने अपने आप को गोली मारने की सोची । सुबह होने पर मैंने पाँच पत्र लिखे और उन सबको फाड़ डाला । फिर मैं तकिये में मुँह गड़ाकर रोता रहा इसके बाद मैंने पिता से कुछ धन लिया और बिना मिले उनसे मास्को को चल पड़ा ।

बेशक एक औरत एक औरत है और एक मर्द एक मर्द है लेकिन क्या यह सब इतना आसान हो सकता है जितना कि प्रकट में पहले था, और क्या ऐसा हो सकता है कि मैं एक संस्कृत मनुष्य जिसका मानसिक संगठन बड़ा पेचीदा है इस गहरे आकर्षण की व्याख्या करूँ जो मैं एक नारी के प्रति अनुभव करता हूँ सिर्फ इस कारण कि उसकी शारीरिक बनावट मुझसे भिन्न है ? आह, यह कितना भयानक होगा ! मैं विश्वास करना चाहता हूँ कि प्रकृति से संघर्ष करने में मनुष्य की बुद्धि शारीरिक प्रेम के प्रति भी संघर्षशील रही है मानो शत्रु के साथ संघर्ष कर रही हो और यह कि अगर उसने इस पर विजय नहीं प्राप्त की है तो भी कम से कम वह इसे भाईचारे और प्रेम के सम्बन्ध में आच्छादित करने में तो सफल हो ही गया है, और मेरे लिए, किसी न किसी तरह यह अब मेरी पाशविक प्रकृति की अभिव्यक्ति न रहकर जैसी कि कुत्तों और मेंढकों में होती है, सच्चा प्रेम बन गई है और प्रत्येक आलिंगन हृदय की पवित्र भावना और नारी के प्रति सम्मान की भावना के कारण आध्यात्मिक बन गया है ।

असलियत यह है कि पशु प्रकृति के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न करने की शिक्षा युगों से मानव संस्कृति को दी जाती रही है, मुझे भी यह रक्त-परम्परा से प्राप्त हुई है और मेरे स्वभाव का अंग बन गई है और यदि मैं प्रेम को भावुकता की दृष्टि से देखता हूँ तो क्या यह उतना ही स्वाभाविक और अवश्यम्भावी नहीं है जितना कि कानों को हिलाने की शक्ति का हम में अभाव होना और हमारे शरीर पर घने बालों का न होना है ? मैं सोचता हूँ कि सभ्य मनुष्यों का एक बहुत बड़ा भाग इसको इसी दृष्टि से देखता है जिससे कि आज के युग में प्रेम में पारिवारिकता और भावुकता के अंश का अभाव एक अभद्र वस्तु के रूप में और पूर्वजों की आकृति की समानता के आधार पर रखा जाता है। उनका कहना है कि पागलपन के अनेक लक्षणों में से यह भी पतन का एक लक्षण है। यह सत्य है कि प्रेम को भावुकतापूर्ण बनाने में, हम उनमें उन गुणों की कल्पना कर लेते हैं जिनका कि उनमें अभाव होता है और इसी से हमारे जीवन में निरन्तर त्रुटियाँ होती रहती हैं और बराबर दुख का सामना करना पड़ता है। परन्तु मेरे विचार से ऐसा होते हुए भी यह अच्छा है, मतलब यह है कि यह अधिक अच्छा है, कि नारी को एक नारी और पुरुष को एक पुरुष ही मानकर इसके आधार पर सन्तोष प्राप्त करने की अपेक्षा हम दुख उठाते रहें।

क्रिसमस में मुझे पिता का एक पत्र मिला। उन्होंने लिखा कि अमुक तिथि को एरियाड्ने मिसार्गिवना, पूरे जाड़े बिताने के विचार से विदेश चली गई है। एक महीने बाद मैं घर लौट आया। इस समय तक शरद ऋतु आ चुकी थी। हर सप्ताह एरियाड्ने मेरे पिता को सुगन्धित कागज पर सुन्दर साहित्यिक शैली में अत्यन्त रोचक पत्र लिखकर भेजा करती थी। यह मेरा मत है कि प्रत्येक नारी लेखिका हो सकती है। एरियाड्ने ने विस्तार से वर्णन करते हुए लिखा कि उसे अपनी बुआ को मनाने और यात्रा के लिए उससे एक हजार रूबल लेने में बड़ी कठिनाई हुई थी और उस मास्को में अपनी एक सम्बन्धी के लिए एक दूर की रिश्ते-

नारी को धर्ममार्गिका के रूप में तैयार करने के लिए बहुत समय तक ठहरना पड़ा था। इतने विस्तृत पत्र में किसी उपन्यास की सी झलक मारती थी और मैंने अनुमान किया कि उसके साथ कोई भी धर्ममार्गिका नहीं है।

कुछ ही दिनों बाद मुझे भी उसका एक पत्र मिला—वैसा ही सुगन्धित और साहित्यिक। उसने लिखा कि उसे मेरी बड़ी याद आती है, मेरे सुन्दर बुद्धिमत्तापूर्ण नेत्रों की याद आती है। उसने स्नेहपूर्वक मेरी भर्त्सना की कि मैं अपने जीवन को बर्बाद कर रहा हूँ, दलदल में फँसा हुआ हूँ जब कि उसकी तरह मैं भी नारियल के वृक्षों की छाया में नारंगी के फूलों की सुगन्धित वायु का उपभोग करता हुआ स्वर्ग में रह सकता था। और उसके नीचे अपना हस्ताक्षर किये थे, "तुम्हारी परित्यक्ता ओरियाद्ने"। दो दिन बाद उसी शैली में लिखा हुआ दूसरा पत्र आया जिसके नीचे लिखा था, "तुम्हारी विस्मृत ओरियाद्ने"। मैं परेशान हो उठा। मैं उससे गहरा प्रेम करता था हर रात उसका स्वप्न देखता था और फिर यह "तुम्हारी परित्यक्ता" "तुम्हारी विस्मृता"—इसका क्या अभिप्राय था? यह किस लिए था? और फिर ग्रामीण जीवन की यह नीरसता, लम्बी सन्ध्याएँ लुबकोव से सम्बन्ध पर व्यग्र विचार इस संताप ने मुझे उद्विग्न कर दिया और मेरी रात और दिनों में विष घोल दिया। यह असहनीय हो उठा। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सका और विदेश चल दिया।

ओरियाद्ने ने मुझे अब्बाज़िया बुलाया। मैं वहाँ वर्षा के बाद उस समय पहुँचा जब धूप खिल रही थी। वर्षा की बूँदें पेड़ों पर अब भी टपक रही थीं और वह विशाल बैरकों की तरह बने हुए होटल पर जहाँ ओरियाद्ने और लुबकोव ठहरे हुए थे चमक रही थीं।

वे लोग घर पर नहीं थे। मैं पास के मुख्य सड़कों पर घूमा और फिर बैठ गया। आस्ट्रिया का एक जनरल हाथ पीछे किये, हमारे जनरलों की तरह पतलून पर लाल पट्टियाँ लगाए, मेरे सामने से गुज़रा। बच्चा

हुई और पूछा कि मुझे मछली पकड़ने की, हमारी छोटी छोटी बातचीतों की खिड़कियों आदि की बातें याद हैं।

"मगर यह सब कितना अच्छा था!" उसने गहरी साँस ली। "परन्तु यहाँ भी हमारा जीवन कोई बुरा नहीं कट रहा है। यहाँ हमारे बहुत से परिचित हैं मेरे प्यारे, मेरे सबसे अच्छे मित्र! कल मैं यहाँ एक रूसी परिवार से तुम्हारा परिचय कराऊँगी परन्तु मेहरबानी कर अपने लिए दूसरा कोट खरीद लेना।" उसने मुझे गौर से सब तरह देखा भौंहों में बल डाले। "अस्तव्यस्तता ठीक नहीं है' वह बोली 'यहाँ हरेक को ठीक तरह से रहना चाहिये।'

फिर हम साथ रेस्तोरां में गए। एरियाद्ना पूरे समय तक हँसती और ऊधम मचाती रही। मुझे 'प्रिय' 'अच्छा' 'चतुर' कहती रही और ऐसी लग रही थी कि जैसे उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही न हो रहा हो कि मैं उसके पास था। हम ग्यारह बजे तक बैठे रहे और मौसम और एक दूसरे से पूरी तरह सन्तुष्ट होकर विदा हुए।

दूसरे दिन एरियाद्ने ने पास बुला कर उस रूसी परिवार से मेरा परिचय कराया: 'एक प्रसिद्ध प्रोफेसर के सुपुत्र जिनकी जमींदारी हमारे पड़ोस में है।"

वह इस परिवार से केवल जमींदारियों और फसलों की ही बातें करती रही और बराबर मुझे आकर्षित करती रही। वह अपने को एक बहुत अमीर जमींदारिन के रूप में प्रकट करना चाह रही थी और इस सच इसमें उसे सफलता मिली। उसका व्यवहार अच्छा भद्र था एक सच्चे सामन्त के समान था कि वह जन्म से सामन्त में थी भी।

"लेकिन मेरी बुआ भी कैसी अजीब है!' उसने अचानक मुस्करा कर दबाते हुए कहा।

"हम दोनों में जरा सा झगड़ा हुआ और वह रूठ कर मेरान चली गई। आपका इस विषय में क्या विचार है?"

बाद में जब हम लोग पार्क में घूम रहे थे तो मैंने उससे

पूछा।

"अभी तुम किस बुआ के बारे में बातें कर रही थीं? वह कौन सी बुआ है?"

"वह तो अपने बचाव के लिए झूठ बोली थी," प्रियतमाने हँसी "क्या तुम्हें यह नहीं मालूम होना चाहिये कि मैं बिना किसी अभिभावक के ही यहाँ हूँ।"

क्षण भर की चुप्पी के बाद वह मेरे और नज़दीक आई और बोली

"माई डियर माई डियर फर्गुसन से दोस्ती कर लो। वह बड़ी दुखी है। उसकी बीबी और माँ बहुत खराब हैं।"

उसने फर्गुसन से बातें करने में मेरे शिष्टाचार का प्रयोग किया और जब वह ऊपर जाने लग रही थी तब उसने बिल्कुल उसी तरह नमस्कार की थी जिस तरह कि मुझ से। हम दोनों के कमरे अलग अलग मंज़िल पर थे। इन सब बातों से मुझे यह आभास हुई कि सब वाहियात बातें थीं और यह कि इन में प्रेम-सम्बन्ध जैसी कोई चीज़ नहीं थी। और जब मैं उससे मिला तो मुझे तसल्ली हुई। और एक दिन जब उसने मुझसे तीन सौ डालर कर्ज़ माँगे तो मैंने बड़ी खुशी से दे दिए।

हमारा प्रत्येक दिन आनन्द मनाने में बिता कर मकान में ही बसने लगा। हम बोस पार्क में घूमते, खाना और शराब पीते। हर रोज़ उस स्त्री परिवार से बातें होतीं। धीरे धीरे मैं इस बात का अभ्यस्त हो गया कि अगर मैं पार्क में जाता तो यकीनन उस पेंसिल के बुड्ढे रोगी से, उस कैथोलिक पादरी से और उस आइरिश जनरल से जो हमेशा बच्चों की एक गाड़ी साथ रखता और जहाँ सम्भव होता वहीं बैठ जाता और उन्हें जिद होकर अपना बच्चे दबकाते हुए 'पैराम्बा' ठेलने लगाए, मुलाकात होती। और वह बैण्ड बार बार एक ही गीत बजाया रहता।

पर हर, काम करने वाले दिन, मैं उस समय खिमासों से मिलने में बड़ा झेंपता जब अपनी पकड़ रहा होता या सिक्किक हो रही होती।

वहाँ भी मैं उन नौकरों, कोचवानों और मजदूरों को देख कर जो मुझसे मिलते शर्मिन्दा हो उठता था। मुझे हमेशा ऐसा लगता कि वे मेरी तरफ देख रहे हैं और सोच रहे हैं "तुम कोई काम क्यों नहीं करते?" और मैं अपराधिता भाव की इस भावना से सुबह से लेकर शाम तक परेशान रहता। यह बड़ा अजीब उदास और दबा देने वाला समय होता। इसमें केवल उसी समय अन्तर पड़ता जब कुज़मीच मुझसे कभी सौ कभी पचास रूबल उधार माँगता और उस क्षण से एकाएक इस तरह मस्त होकर, जैसे कमीनों को अफ़ीम खाकर होता है अपनी बीवी पर, खुद पर और अपने कर्ज़दारों पर हँसना आरम्भ कर देता।

अन्त में वर्षा होने लगी और ठण्ड बढ़ गई। हम लोग इटली चले गए और मैंने पिता के दफ़्तर के नाम पर रोम के पते पर आठ सौ रूबल भेज देने की प्रार्थना करते हुए एक तार भेजा। हम लोग वेनिस में, बोलोग्ना में, फ़्लोरेन्स में ठहरे और हर शहर में बराबर कीमती होटलों में रुके जहाँ हम लोगों से बिजली के, नौकरों के, कमरा गर्म करने के, भोजन के साथ रोटी के, और अपने कमरे में मंगाकर खाना खाने के विशेषाधिकार के अलग अलग पैसे वसूल किए जाते थे। हम लोगों ने खूब खाया। वे लोग सुबह पूरी चाय रोज़ देते जिसमें गोश्त, मछली, एक तरह का आमलेट, पनीर, मक्खन और शराब होती थी। ११ बजे बाद 'खोमेयों' वाला डिनर मिलता। दो खानों के बीच काफी समय रहता जिसमें हम बीयर और शराब पीते रहते। नौ बजे चाय मिलती। आधी रात को परिचारक घोषणा करती कि वह भूखी है और गोश्त और उबले हुए अण्डे मंगाती। उनका साथ देने के लिए हम लोग भी खाते।

विभिन्न खानों के बीच के समय में हम लोग अजायबघरों और नुमाइशों को देखने को भागे जाते। बराबर यह डर लगा रहता कि डिनर या चाय के लिए देर न हो जाय। मैं चित्रों को देखते देखते ऊब उठा था। मैं आराम से घर पर रहने के लिए व्याकुल हो उठा। मैं पूरी तरह थक गया था, इसलिए ढूँढ कर एक कुर्सी पकड़ी और अन्य लोगों के साथ

मुझमें ही कहने लगा। "कितना सुन्दर, कैसा सुन्दर वातावरण।" सवार हुए बाजार की फेरियों की तरह हम लोग तरह तरह चटक मटक वाली चीजों का तरह ध्यान रखते थे। दूकानों की सभी सजाई खिड़कियों हमें मन्त्रमुग्ध कर रही थीं। हम बाग बागों में घूमने वाली काफी हल्की रंगीन चिड़ियों को देख कर चकाचौंध हो उठते और हम दोनों ने ढेर की ढेर बेकार की चीजें खरीद डालीं।

यहाँ शाम में हुआ जहाँ पानी पड़ रहा था और हवा चल रही थी। फिर भी हम लोग सब थियेटर का प्रोग्राम देखने गए और हमारी प्रसन्न स्थिति का शायद खराब मौसम का धन्यवाद है कि इसका हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और एक दूसरे में पसन्दगी के प्रति उपेक्षा का भाव देख कर सामना कर दी।

मेरे पिता के पास से पैसा आ गया। मुझे याद है कि मैं इसे लेने सुबह गया था। लुकहोम मेरे साथ गया।

"वर्तमान पूर्ण और सुन्दर नहीं हो सकता जब किसी के पीछे एक इतिहास हो," उसने कहा

"गुजरे हुए जमाने से मुझ पर बहुत भार लदा रहता है। फिर सिर्फ मुझे पैसा मिल जाय तो इसकी कोई चिन्ता नहीं परन्तु अगर न मिले तो मैं परेशान हो उठता हूँ। आप विश्वास करेंगे कि मेरे पास सिर्फ चार सौ पाउंड बच रहे हैं फिर भी मुझे अपनी बीवी को सौ और माँ को सौ और भेजने हैं। और हम लोगों को यहाँ भी रहना है। जैसे कि मरने की तरह हैं पर गरीबी का अहसास नहीं करेगी और एक प्रेत की तरह पैसा फेंकती जाती है। जब उसने यही क्यों खरीदी और यह बताया कि इसका क्या मतलब है कि हम भले आदमियों का सा दिखावा करते रहें। क्योंकि हमारे खानदान के सम्बन्धियों को धोखा और दासों से छिपाने के लिए हमें दस से लेकर पन्द्रह पौंड प्रतिदिन के हिसाब से बेकार का खर्च करना पड़ता है क्योंकि मुझे एक दिखावा करता रहना पड़ता है। इसका मतलब क्या है?"

मैंने अनुभव किया मानो एक बोझिल पत्थर मेरे सीने से

छेद दिया गया हो। अब कोई संदेह नहीं रहा था सब स्पष्ट था। मेरे सारे शरीर में सनसनी दौड़ गई और तुरन्त ही मैंने यह निश्चय किया कि उसकी शक्ल भी नहीं देखूँगा, उससे दूर भाग जाऊँगा, पेरिस घर चल दूँगा ”

'पेरिस को जाने में करना पड़ा आसान है' सुनकर भड़क गया। "तुम्हें सिर्फ उसे अदा कर देना है परन्तु बाद में बड़ी दिक्कत होती है कैसी मूर्खता का काम है!"

जब मैंने रुपया गिन दिया जो मुझे मिला था, तो वह बोला:

"अगर आप मुझे एक हजार फ्रांक उधार नहीं देंगे तो मैं पूरी तरह बर्बाद हो चुका। आपका पैसा ही अब मेरे लिए एकमात्र साधन रह गया है।"

मैंने उसे रुपया दे दिया। वह पेरिस को चल दिया और अपने बाप को जो एक भावुक आदमी था, की ईर्ष्या उभारने लगा कि वह उसकी बीबी से उसके पते का रहस्य कभी नहीं छिपा सकता था। जब मैं होटल पहुँचा तो मैंने अपना सामान बाँधा और बिल चुकाया। मुझे अभी परिवार से विदा लेनी थी।

मैंने उसके दरवाजे को खटखटाया।

"अन्दर आओ!"

उसके कमरे में बड़ी ही अव्यवस्था थी मेज पर चाय की चीजें आधी खाली हुई मिठाई, अण्डे व छिलके, धूप की तेज गन्ध। बिस्तर अभी ठीक नहीं किया गया था और यह स्पष्ट था कि उस पर दो व्यक्ति सोये थे।

परिवार ने खुद अभी बिस्तर से उठी थी और पास किनारे कपा-कम की एक ड्रेसिंग गाउन पहने खड़ी थी।

मैंने उसे नमस्कार किया और फिर एक मिनट तक खामोश बैठा रहा जिस बीच में उसने बात ठीक करने की कोशिश की और तब मैंने पूरी तरह काँपते हुए उससे पूछा:

"क्यों क्यों तुमने मुझे यहाँ बुलाया था!"

स्पष्ट था कि उसने मेरे विचारों को भाँप लिया था। उसने मेरा हाथ पकड़ा और कहने लगी:

“मैं चाहती हूँ कि तुम यहीं रहो — तुम इतने पवित्र हो!”

मैं अपने विचारों पर — अपने जीवन पर लज्जित हो गया। मुझे भय था कि यहीं मैं सिसकने भी न लगूँ। मैं एक भी शब्द बिना कहे बाहर निकल आया और क्षण भर में ही मैं रथ में बैठा हुआ था। यात्रा भर मैं किसी कारणवश कल्पना करता रहा कि नरिगाकुन गर्भवती है। वह मुझे बड़ी पवित्र लगी और सारी औरतें जिन्हें मैंने रेल में और स्टेशनों पर देखा, ऐसा लगा कि वे भी गर्भवती थीं और उनकी दशा बड़ी दयनीय प्रतीत हुई। मेरी दशा उस मासूम पक्षी के शावक कोमल कुसुम की सी थी जिसे एकाएक यह पता चला हो कि उसके सारे गुण झरी गिरने वाली हैं। वे पवित्र मन्द मूर्तियाँ, जिनकी मेरी कल्पना ने प्रेम से उत्साहित होकर इतने दिनों से पूजा की थी, मेरी कल्पनाएँ, मेरी भावनाएँ, मेरी स्मृतियाँ, मेरे प्रेम और शादी विषयक विचार—सब मेरा मज़ाक उड़ा रहे थे और मुझे शीघ्र निगल कर लिए जा रहे थे। “नरिगाकुन मैं अपमानित प्रसन्न होकर बराबर पूछता रहा, “उस सौरभ से इठलाती हुई चतुर अद्वितीय सुन्दरी युवती एक गीज़र की बैठी एक ऐसे मस्त सीरम युग के साथ मिलकर पलायन रच रही थी। परन्तु यह मुझसे प्रेम क्यों न करे?” मैंने अपने आप उत्तर दिया। “वह किस बात में मुझसे नीचा है? और उस बिचारे वाले उसने प्रेम करने का परन्तु मुझसे प्रेम क्यों चाहती है? परन्तु वह मुझसे लजाने के लिए भी क्यों प्यार दो?” और इस तरह मैं तब तक बराबर सोचता रहा जब तक कि मेरा सिर चकराने न लगा।

रथ में भीड़ थी। मैं थर्ड क्लास में यात्रा कर रहा था परन्तु फिर भी यहाँ साफ़ पानी एक बल्ब और थे। उसमें दुहरी खिड़कियाँ नहीं थीं, बाहरी दरवाज़ा सीधा डिब्बे के भीतर खुलता था। मैंने अनुभव किया मानो मैं इस भार में दबा दुबका हुआ और मेरी आँखें पूरी तरह मुंद

हो रही है और साथ ही मैं बराबर याद करता रहा कि उस सुबह काले नीचे बरसाती और टू सिंग जैकेट पहने हुए वह कितनी आकर्षक लग रही थी। अचानक मैं तीव्र रूप की भावना से इस तरह उद्वेलित होकर कि वेदना से तड़प पड़ा जिससे मेरे पड़ोसी आश्चर्य और भय से मेरी तरफ घूरने लगे।

घर पर मैंने गहरी बर्फ और तीव्र ठिठुरन का आनन्द पाया। मुझे जाड़े अच्छे लगते हैं। मुझे ये इसलिए अच्छे लगते हैं क्योंकि उन दिनों यहाँ तक कि गहरे पाले के समय भी, घर विशेष रूप से आरामदेह लगता है। पाले पड़े हुए धूप से प्रकाशित दिवसों में अपनी फरदार कोट और नमदे के बड़े बूट पहनना, बाग में या अहाते में कोई काम करना, या अच्छी तरह से गर्म किए हुए कमरे में बैठ कर पढ़ना, सुलगी हुई आग के सामने अपने पिता के अध्ययन कक्ष में बैठना, अपने देहाती स्नान-गृह में नहाना बड़ा अच्छा लगता है। शरद ऋतु की संध्यायें बड़ी उदास लगती हैं अगर घर में माँ बहिन और बच्चे न हों और वे संध्यायें आश्चर्यजनक रूप से लम्बी और शांत प्रतीत होती हैं। और घर जितना ही अधिक गर्म और आरामदेह होता है यह अभाव उतना ही अधिक स्पष्ट होता है। जाड़ों में जब मैं विदेश से वापस लौटा तो संध्यायें अपरिमित रूप से लम्बी लगती थीं। मैं बुरी तरह मायूस था इतना मायूस कि पढ़ भी नहीं सकता था। दिन में मैं भीतर बाहर आता रहता, बाग में बर्फ साफ करता रहता या मुर्गे के बच्चों और बत्तखों को खाना खिलाता रहता परन्तु शाम होने पर मेरे सारे कार्य समाप्त हो जाते।

पहले मैंने मेहमानों की कभी चिन्ता नहीं की थी परन्तु अब मुझे उनसे खुशी होती क्योंकि मैं जानता था वहाँ परिवार के बारे में बात जरूर होगी। वह आध्यात्मवादी डॉक्टर इवानोविच अक्सर अपनी बहिन के बारे में बात करने आता और कभी कभी अपने साथ अपने मित्र प्रिंस मलयुतिन को ले आता था। परिवार से वह उतना ही प्रेमबद्ध था जितना कि मैं। परिवार के बैठकमें में बैठना, उसके सिगारों पर टकटकियाँ लगाना

तथा उसके संगीत की तरफ देखना मिम के लिए एक आवश्यक कार्य बन गया था। वह इसके बिना रह नहीं सकता था और उसके बाबा दुआ-रिवाज की आत्मा जब भी भविष्यवाणी कर रही थी कि दर का भवर से परिवार ने उसमें पत्नी बनाओ। मिम आमतौर पर हम बागों के साथ काफी दूर तक टहलता था—नाश्ता के रखने से लेकर आधी रात तक। पूरे समय तक वह चुप भी नहीं रहता था। चुपचाप वह बीयर की दो या तीन बाटलें खाली कर रह रह कर यह दिखाने के लिए कि वह भी बातचीत में भाग ले रहा है वह अचानक निरर्थक मूर्खतापूर्ण हंसी के साथ हँस उठता। घर आने से पहले वह हमेशा मुझे एक तरफ ले जाता और धीमी आवाज में पूछता: "आपने परिवार में मिसाइरियेस्का का आ-खिरी बार कब सुना था? क्या वह अच्छी तरह से थी? मेरा ख्याल है कि वह जिन्दा में रहने से खुशी नहीं है?"

अगस्त आ गई। टेन बात गए और फिर बसन्त ऋतु के समान और विनपत्तियां पास की पुकार हुई। मैं दुखी था परन्तु पसन्द की मस्ती भर रही थी इसलिए ईश्वर जनसम्पर्कों को भंगार करने के लिए व्याकुल हो उठा। खेतों में काम करते और पक्षियों की चहचहियाँ सुनते हुए मैंने अपने आप से पूछा "क्या मैं अपनी इस व्यक्तिगत मनोव्यथा के मरम को एक बार और सदैव के लिए दूर नहीं कर सकता था? क्या मैं अपने इस कल्पना का एक तरह दूर कर किसी सीधी सादी किसान-कन्या से विवाह नहीं कर सकता था?"

जब हम पूरी तरह से व्यस्त थे तो मुझे अचानक दरखी की मोहर लगा हुआ एक पत्र मिला और वह पाम, वे शहर की मक्खियाँ, वे बच्चे और वह किसान-कन्या सब कुछ की तरह गायब हो गए। परिवार ने लिखा था कि वह बहुत अत्यधिक दुखी थी। उसने उसकी सहायता न करने के लिए उसे अपने गुणों की प्रतिष्ठा के अनुरूप भीषा रखने के लिए और मजूर के समय उसका साथ छोड़ देने के लिए, मेरी भर्त्सना की थी। वह तार बात लम्बी और पत्रोत्तम, निरर्थकपूर्ण बड़ी

बड़ी सिवालय में लिखी गई थी और यह स्पष्ट था कि उसने जल्दी में और दुखी होकर लिखा था। अन्त में उसने मुझसे आने और उसकी रक्षा करने की प्रार्थना की थी। एक बार फिर मेरा संसार उजड़ गया और मैं चल पड़ा। अरियादने रोम में थी। मैं शाम को देर से पहुँचा और जब उसने मुझे देखा तो सिसकने लगी और मेरी गर्दन से लिपट गई। वह इन बातों में बिल्कुल भी नहीं बदली थी और अब भी उतनी ही जवान और आकर्षक थी। हमने साथ साथ खाना खाया और फिर सवेरा होने तक रोम में इधर उधर घूमते रहे और पूरे समय वह अपनी बातें बताती रही। मैंने पूछा कि लुबकोव कहाँ है।

"मुझे उस जानवर की याद मत दिलाओ!" वह बोली। "वह मेरे लिए घृणित और नीच है!"

"परन्तु मैंने सोचा था कि तुम उससे प्रेम करती थीं," मैंने कहा।

"कभी भी नहीं" वह बोली। "प्रारम्भ में वह मुझे अच्छा लगा और उसने मेरी दया को जाग्रत कर दिया, बस इतना ही। वह ढीठ है और औरत पर तूफान की तरह हावी हो जाता है, और यही आकर्षक होता है। मगर हम उसके बारे में बातें नहीं करेंगे। यह मेरे जीवन का एक दुखद पृष्ठ है। वह पैसे लेने रूस चला गया है। उसके लिए यही ठीक था। मैंने उससे कह दिया कि वह वापस आने का साहस न करे।"

वह उस समय एक होटल में न रह कर एक दो कमरों वाले घर में रह रही थी जिसे उसने अपनी रुचि के अनुसार साधारण परन्तु भव्य रूप से सजा रखा था। लुबकोव के चले जाने के बाद उसने अपने परिचितों से लगभग पाँच हजार फ्रांक उधार ले लिए थे और मेरा आगमन निश्चित रूप से उसके उद्धार का प्रतीक था। मैंने सोचा था कि मैं उसे वापस घर ले जाऊँगा परन्तु उसमें मुझे सफलता नहीं मिली। वह अपने घर लौटने के लिए लालायित थी परन्तु जब उस गरीबी की जिसमें वह रह चुकी थी, कुण्ठित जीवन की, अपने भाई के घर की जंग लगी हुई छत की याद आई तो वह घबराती काँपती और

जब मैंने उस पर चलने की सलाह दी तो उसने कांपते हुए मेरा हाथ दबाया और कहने लगी:

"नहीं नहीं मैं वहाँ ठण्ड से मर जाऊँगी।"

तब मेरा प्रेम अपनी अन्तिम सीमा पर पहुँच गया।

"तुम वैसे ही प्यारे बन जाओ जैसे कि थे, मुझे थोड़ा सा प्यार करो" परिवार्ने ने मुझ पर झुकते हुए कहा 'तुम मन में नाराज हो और सोचते रहते हो, तुम मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति के सम्मुख झुकने से भय खाते हो और सदैव परिणामों के विषय में चिन्तित रहते हो और यह सब बड़ा नीरस है। इस बात की मैं तुमसे क्षमा माँगती हूँ मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ मेरे साथ अच्छा व्यवहार करो। "मेरे निगाह, मेरे मुन्ना, मेरे प्रिय मैं तुम्हें इतना प्यार करती हूँ।

मैं उसका प्रेमी बन गया। महीने भर तक मैं पागल सा बना रहा। मुझे आनन्द के अतिरिक्त और किसी का भी अनुभव नहीं होता था। अपनी बाँहों में एक जवान और सुन्दर शरीर को भर लेना, नींद से हर समय जागने से अपने पर उसकी गर्माहट का अनुभव करना और यह याद करते रहना कि वह यहीं है—वह मेरी परिवार्ने है—आह, इसका अभ्यस्त होना इतना सरल नहीं था। परन्तु फिर भी मैं इसका अभ्यस्त हो गया था और धीरे धीरे अपनी नई स्थिति पर विचार करने योग्य बन गया था। सबसे पहले पहले ही की तरह मैंने महसूस किया कि परिवार्ने मुझे प्रेम नहीं करती थी। परन्तु वह सचमुच प्रेम करना चाहती थी, वह एकान्त से भयभीत थी और सबसे बड़ी बात यह थी कि मैं स्वस्थ जवान और शक्तिशाली था। वह जैसा, कि निकम्मे हैं सभी उद्दाम प्रकृति के व्यक्तियों के समान कामुक थी और हम दोनों ने ही यह दिखाया कि हम एक तीव्र और पारस्परिक प्रेम द्वारा एक दूसरे से बँधे हुए हैं। बाद में, मैंने कुछ और भी अनुभव किया।

हम रात में, नगर में प्लाटेन में ठहर, घूमने गए परन्तु वहाँ हमने सोचा कि ठण्ड है इसलिए हम वापस लौट आए। हर बात

उसने अपना परिचय पति-पत्नी के रूप में दिया—एक अलबत्ता असमीचीन दम्पति के रूप में। लोग प्रसन्नता से हमारे परिचित बन जाते और परि-वार में को सामाजिक क्षेत्र में सर्वत्र बड़ी सफलता प्राप्त हुई। जब उसने चित्रकारी सीखी प्रारम्भ की तो वह चित्रकार कहलाने लगी, और तनिक कल्पना कीजिये कि वह उस पर गर्व करती था यद्यपि उसमें योग्यता का नामोनिशान तक नहीं था।

वह रोज दो या तीन बजे तक सोती रहती कभी और दोपहर का खाना बिस्तर में ही खाती। शाम को वह शोरबा, केकड़ा, मछली, गोश्त खाकर खाती और जब वह सोने चली जाती तो मैं उसके लिए कुछ खाना करता जैसे ठण्डा भुना गोश्त का गोश्त, और वह इसे बड़े स्वाद और बढ़ी हुई भूख से खाती और अगर रात को उसकी नींद खुल जाती तो सेब और सन्तरे खाती।

नारी की सबसे प्रमुख, या कहना चाहिए कि सारभूत-विशेषता उसका आश्चर्यजनक रूप से दूसरा पार्ट अदा करना था। वह निरन्तर, प्रत्येक क्षण स्पष्टतः बिना किसी आवश्यकता के, धोखा दिया करती थी मानो यह उसकी पशु-प्रवृत्ति हो बिल्कुल वैसी ही प्रवृत्ति जिसके वशीभूत होकर गौरैया फड़फड़ाती है और कनखजूरा अपनी मूछों को हिलाता है। वह मुझे धोखा देती, कुत्ते को, दुकानों पर बैठे हुए दुकानदारों को अपने परिचितों को—सभी को धोखा देती थी। एक भी वार्तालाप, एक भी मुलाकात ऐसी नहीं होती थी जिसमें बनावट और आडम्बर का दिखावा न होता। एक आदमी का सिर्फ हमारे कमरे में घुसना देखा कि—वह चाहे कोई क्यों न होता बैरा या एक बड़ा जमींदार—फौरन उसकी निगाहें, उसका भाव उसकी आवाज बदल जाती, यहाँ तक कि उसकी सम्पूर्ण आकृति परिवर्तित हो जाती। उस समय उस पर पहली निगाह पड़ते ही आप कह उठते कि सारे रूस में उससे अधिक धनी और फैशनपरस्त और कोई भी नहीं है। वह किसी भी कलाकार या संगीतज्ञ से,

उसकी निकम्मी प्रतिमा के विषय में तरह तरह की झूठी बातें किया करते हुए, कभी भी नहीं निकली थी।

'आप कितने प्रतिभाशाली हैं।' वह मंद मिश्रित स्वर में कहती 'मैं आपसे भयभीत हूँ। मैं सोचती हूँ कि आप मनुष्यों की आत्मा की गहराई तक देख लेते हैं।'

और यह सब उसने उन्हें प्रसन्न करने, सफलता प्राप्त करने और आकर्षक बनने के लिए ही। वह हर सुबह सिर्फ एक ही विचार लिए उठती 'सफल बनना'। यह उसके जीवन का लक्ष्य बन गया था। अगर मैं उससे कहता कि अमुक घर में, अमुक सड़क पर एक आदमी रहता है जो उसके प्रति आकर्षित नहीं है तो इससे उसे वास्तविक दुख होता। वह रोज मनुष्यों को मंत्रमुग्ध करती, उन्हें वश में करती और अपने पीछे पागल बना हुआ पाती थी। यह मानो कि मैं उसके प्रभाव में था और उसके आकर्षणों के सम्मुख पूर्णतः परास्त हो चुका था, उसी तरह का मज़ा [illegible] जैसा कि [illegible] का [illegible] है। मेरी गुलामी ही काफी नहीं थी और रात भर एक [illegible] की तरह लम्बी बनी हुई, उसकी—एक मन्द मधुर गर्म स्वर्ण थी—वह—[illegible] में रुके हुए दांतों से [illegible] थी। उसने [illegible] और [illegible] की [illegible] थी, इस बात की [illegible] हुए कि [illegible] यह न सोचा था वह उसके [illegible] के लिए, पर [illegible] के लिए किसी का [illegible] लेगा या मार डालेगा। परिताप मैं उससे नफरत करती थी परन्तु [illegible] गुलामी से भरे हुए [illegible] दिन [illegible]। अपने [illegible] के विषय में उसकी राय बड़ी दिलचस्प थी। वह [illegible] करती थी कि [illegible] में मनुष्य [illegible] देख पाते कि वह कितनी सुन्दर थी और उनकी [illegible] का [illegible] लेगा था [illegible] सारे [illegible] उसकी [illegible] बैठी। उसकी रूपरेखा व उसकी [illegible] के बारे में [illegible] में नाराज हो उठता था और [illegible], जब वह [illegible] होती तो मुझे परेशान करने के लिए [illegible]

तरह की गन्दी बातें करती। एक दिन जब हम लोग अपनी एक परिचित महिला के ग्रीष्म-निवास पर थे और वह नाराज हो उठी थी तो यहाँ तक कह गई "अगर तुम अपने उपदेशों से मुझे परेशान करना बन्द नहीं करोगे तो मैं इसी वक्त कपड़े उतार डालूँगी और यहीं इन फूलों पर लेट जाऊँगी।"

अक्सर उसे सोते, खाते या चेहरे पर एक निश्छलता का भाव का प्रयास करते हुए देखकर मुझे आश्चर्य होता कि ईश्वर ने उसे अद्वितीय सौन्दर्य, सभ्यता और बुद्धि क्यों प्रदान की। क्या यह बिस्तर में लोटने पोटने और खेलने, निरन्तर खेलने के लिये ही था? क्या उसकी बुद्धिमत्ता वास्तविक थी? वह एक लाइन में रखी तीन बत्तियों, तेरह नम्बर से भयभीत रहती थी और जादू और बुरे स्वप्नों से आतंकित हो उठती थी। एक हठीली बुढ़िया की तरह स्वतन्त्र प्रेम और सब बातों की स्वतन्त्रता पर बहस करती, घोषणा करती कि मार्क्सवेच टुर्गनेव से अच्छा लेखक था। परन्तु वह नितान्त चालाक और तेज थी और जानती थी कि समाज में उच्च दर्जा प्रतिष्ठित कैसे बना जाता है।

प्रसन्न चित्त रहने के क्षणों में भी वह नौकर का अपमान किये बिना या एक कीड़े को बिना मारे नहीं रह सकती थी या एक कीड़े को बिना मारे नहीं रह सकती थी। वह सांडों की लड़ाई पसन्द करती थी, उसे पसन्द थे और उस समय नाराज होती थी जब कैदियों को बरी कर दिया जाता था।

जिस तरह का जीवन मैं बिता रहा था वह काफी पैसा होना चाहिये था। मेरे गरीब पिता ने अपनी पेंशन की छोटी रकमें जो उन्हें मिलती मुझे भेज दीं। मेरे लिये बहुत कर्ज लिया और जब एक दिन उन्होंने मुझे जवाब में कुछ भी नहीं लिखा "तो मैंने उन्हें एक निराशा से भरा पत्र लिखा और मैंने उनसे जमींदारी को गिरवी रख देने को

दिनों बाद मैंने उनसे प्रार्थना की कि किसी तरह अमीरुमी को [illegible] [illegible] पैसे भेज दें। उन्होंने यह भी बिना किसी आपत्ति के कर दिया और मुझे सारा पैसा भेज दिया। [illegible] जीवन के व्यावहारिक रूप को घृणा की दृष्टि से देखती थी, इस सब से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था और अब उसकी प्रसन्नता से भरी हुई इच्छाओं को पूर्ण करने के लिये मैं हजारों [illegible] फेंकते समय एक पुराने [illegible] की तरह [illegible] [illegible] तब वह मस्त मन से कोई गीत गुनगुना रही होती।

धीरे धीरे मैं उससे उदास होने लगा और अपने इस व्यवहार पर मुझे लज्जा आने लगी। मुझे नारी का गर्भवती होना और घर में बच्चे पैदा होना अच्छा नहीं लगता परन्तु अब कभी कभी मैं एक बच्चे का स्वप्न देखने लगा जो हमारे जीवन का एक [illegible] [illegible] तो सिद्ध कर देता। नहीं मैं अपने से पूरी तरह घृणा न करने लगूं इसलिए मैंने पागल और नशेबाजों और [illegible] में जाना आरम्भ कर दिया, शराब पीना छोड़ दिया और बहुत कम [illegible] लगा। अगर कोई हृदय से लेकर सम्पूर्ण एक स्वप्न को व्यस्त रखता है तो उसका हृदय [illegible] हाथ लगता है। मैं [illegible] को भी परेशान करने लगा। वे लोग जिन पर यह निर्भर रह सकती थी, साधारणतया [illegible] के होते थे। पहले ही की तरह वहाँ राजपूत नहीं थे [illegible] एवं विशाल भवन नहीं थे, केवल [illegible] नहीं [illegible] था और इससे उसे दुख होता और वह सिसकने लगती भी और अन्त में उसने [illegible] कि [illegible] यह सब जीवन से [illegible] नहीं है।

और अब हम अपनी बातों पर हैं। पिछले कुछ महीनों से वह अपने भाई के साथ [illegible] पर व्यवहार करती रहती है। यह स्पष्ट है कि उसका इसमें कोई [illegible] अभिप्राय है, परन्तु यह क्या है इसे भगवान ही जानता है। मैं उसकी इन [illegible] कार्यवाहियों का पता लगाने लगाने परेशान हो गया हूँ। परन्तु हम लोग [illegible] न [illegible] पार्टी [illegible] हैं और फिर वहाँ से [illegible] को। [illegible] सिर्फ [illegible] [illegible]

स्थानों पर ही रह सकती है और काश आप जानते कि इन स्थानों से मैं कितनी घृणा करता हूँ इनमें रहते हुए कैसी मेरी दम घुटती है और क्या बीती है। काश, मैं इस समय देहात में होता। काश, मैं इस समय काम कर रहा होता, अपने पसीने से अपनी रोटी कमा रहा होता, अपनी मूर्खताओं का प्रायश्चित्त कर रहा होता। मैं अपने में एक अद्वितीय शक्ति का आभास पाता हूँ और मुझे विश्वास है कि यदि मैं उस शक्ति को काम में लगाता तो अपनी जमींदारी को पाँच साल में वापस खींच लेता। परन्तु अब जैसा कि आप देख रहे हैं, हममें उलझन पड़ गई है। यहाँ हम विदेश में नहीं हैं, बल्कि मातृभूमि रूस में हैं। हमें विधिपूर्वक विवाह के विषय में सोचना पड़ता है। निस्सन्देह सारा आकर्षण समाप्त हो चुका है। मेरे पुराने प्रेम का नामोनिशान भी बाकी नहीं बचा है, परन्तु चाहे जो हो, मैं उससे विवाह करने को बाध्य हूँ।

× × × ×

शामोहिन अपनी भावना से उत्तेजित होकर, मेरे साथ बैठ गया और हम साथ औरतों के विषय में बातें करते रहे। देर हो गई थी। ऐसा लगा कि वह और मैं एक ही केबिन में थे।

"अब तक सिर्फ गाँवों में ही औरतें पुरुषों से पीछे नहीं हैं" शामोहिन ने कहा। 'वहाँ वह उसी तरह सोचती और अनुभव करती है जिस तरह कि पुरुष। और संस्कृति के नाम पर पुरुष की ही तरह प्रकृति से संघर्ष करती रहती है। शहरों में बुर्जुआ और शिक्षित वर्ग की नारियाँ बहुत पहले से ही पिछड़ गई हैं और अपनी आदिम अवस्था की ओर लौटी जा रही हैं। वे इस समय एक आधी पशु बन चुकी हैं और उन्हें धन्यवाद देना चाहिए कि जो कुछ मानव-बुद्धि के द्वारा अब तक प्राप्त किया गया है उसका बहुत बड़ा भाग नष्ट हो चुका है। स्त्रियाँ भारी हास होती जा रही हैं और उनके स्थान पर बड़ी आदिमकालीन मादा रह गई है। शिक्षित नारियों का यह मन्दगामी संस्कृति के लिये एक वास्तविक खतरा है। अपनी इस पीछे लौटने वाली चाल में वह पुरुष को

भी अपने साथ घसीटने की कोशिश करती है और उसे आगे बढ़ने से रोकती है। इसको रोका नहीं जा सकता।"

मैंने पूछा : "ऐसी धारणा सबके प्रति क्यों? सबकी परिवार में से सम्पूर्ण नारियों को क्यों घसीटा जाय? नारियों का शिक्षा और यौगिक समानता के लिये संघर्ष जिसमें न्याय के लिये संघर्ष मानता हूँ, प्रतिष्ठ-मिता की कल्पना के विरुद्ध है।

मगर मामोहिन ने मेरी बातों की तरफ ध्यान नहीं दिया और अविश्वासपूर्वक मुस्करा गया। वह एक कट्टर और अपनी धारणा में दृढ़ विश्वास रखने वाला कौन-सिद्धपंथी व्यक्ति था और उसके विश्वासों को बदलना असम्भव था।

"ओह, फ्रांसिस!" उसने बोला। "जब एक बार एक औरत मुझमें एक आदमी को, एक बराबर के साथी का न पाकर एक पुरुष को पाती है और जीवन भर उसे एक ही फ़िक्र रहती है कि मुझे आकर्षित करे—मतलब यह कि मुझ पर अधिकार करे—तो कोई उसके अधिकारों के विषय में बातें कैसे कर सकता है? ओह, आप उनका विश्वास मत कीजिये, वे बहुत बहुत ही ज्यादा खतरनाक प्राणी हैं। हम पुरुष उनकी मुक्ति के लिए फ़िज़ूल बकवास करते हैं परन्तु वे अपनी मुक्ति की तनिक भी फ़िक्र नहीं करतीं, वे केवल हमको शिकार करने का दिखावा करती हैं। वे भयानक रूप से खतरनाक हैं भयानक रूप से खतरनाक!"

मैं इस विचार से ऊब गया और उनींदा हो गया। मैंने दीवाल की तरफ करवट ले ली।

"हाँ," जैसे ही मुझे नींद आई मैंने सुना— 'हाँ और यह हमारी शिक्षा है जो उत्तरदायी है, मादाम! हमारे नगरों में सारी शिक्षा और इस वातावरण में औरतों का लालन पोषण होता, मानव-पशु बना रही है—मतलब यह कि पुरुष के लिए उसे आकर्षक बनाना और पुरुष पर विजय प्राप्त करना। हाँ, निस्सन्देह"-मामोहिन ने बात जारी—"कोई

लड़कियों को लड़कों के साथ शिक्षा देना और पालना पोसना चाहिए जिससे वे हमेशा साथ रह सकें। एक औरत को इस तरह शिक्षा देनी चाहिए जिससे वह पुरुष की तरह इस बोझ को उठा सके क्योंकि अपनी शक्तियों को पहचाने के बग़ैर वह हमेशा यह सोचती है कि वह ठीक है। एक छोटी बच्ची को उसके पालने में से ही यह सिखाओ कि पुरुष सबसे पहले एक योद्धा या होने वाला पति भी नहीं होता वरन् उसका पड़ोसी और हर बात में उसके समान होता है। उसे तर्क के आधार पर सोचने की व्यापक दृष्टिकोण से देखने की शिक्षा दो और उसे यह विश्वास मत दिलाओ कि उसका मस्तिष्क पुरुष से निर्बल होता,है इसलिये उसे विज्ञान के प्रति, कला के प्रति और साधारण तौर पर संस्कृति के कार्यों के प्रति उदासीन रहना चाहिए। मोची या मकानों पर रंग करने वाले इनसान के साथ काम करने वाले की सिलिपस्त मस्तिष्क भी वयस्कों की तुलना में अपरिपक्व होता है फिर भी वह काम करता है ज़िम्मेदारियाँ उठाता है और सफलतापूर्वक अपने अस्तित्व को स्थापित रखने के संघर्ष में भाग लेता है। इसे अपनी शरीर-सम्बन्धी धारणाओं को भी छोड़ देना चाहिए—गर्भधारण को—यह देखकर कि औरतों के हर महीने बच्चे पैदा नहीं हुए, दूसरे सब औरतों के बच्चे नहीं होंगे, और तीसरे साधारणतया गर्भ की औरत बच्चा पैदा होने तक खेतों में काम करती है और इससे उसे कोई हानि नहीं होती। इसके बाद हमारे दैनिक कार्यों में पूर्ण समानता होनी चाहिए। अगर एक पुरुष एक महिला के लिए अपनी कुर्सी छोड़ या उसका इन्तज़ार कर ले देता है तो उस महिला को भी प्रतिदान वही करना दीजिए। मैं इसमें विरोध की कोई बात नहीं देखता अपने परिवार की एक लड़की मुझे कोट पहनने में सहायता देती है मुझे पानी का एक ग्लास भर कर दे रही है।"

मैंने आगे नहीं सुना क्योंकि मैं सो गया था।

अगली सुबह जब हम सेवास्तोपोल के करीब पहुँच रहे थे। शामपेइन शीशा और शराब का जहाज़ हिल रहा था।

और जॉन मेरे साथ डेक पर बैठा हुआ था। जब खाने की घण्टी बजी तो पुरुष अपने कोट के कालरों को ऊपर करके और सिगार पीते और स्त्रियाँ चेहरा छिपाए नीचे जाने लगीं। एक अधेड़ और अत्यंत सुन्दर महिला, बड़ी जो ब्लाकविल्स में कस्टम के अधिकारियों पर बहुत बिगड़ रही थी ग्लासोविन के सामने रुकी और एक शैतान और जल्दी गुस्सा हो जाने वाले बच्चों कि से भाव में बोली।

"जीन, तुम्हारी बिटिया समुद्री बीमारी का शिकार हो रही है।"

बाद में जब मैं जहाज में था तो मैंने उसी महिला को घोड़े पर सवार हो और अफसरों के साथ जो उसका साथ मुश्किल से दे पा रहे थे तेजी से दौड़ते हुये देखा। और एक सुबह मैंने उसे शरीर पर एक लम्बा कपड़ा डाले और फ्रांसिसन टोपी पहने समुद्र के किनारे चित्र बनाते और दूर पर खड़ी एक छोटी सी भीड़ को उसे प्रशंसा की मुग्ध दृष्टि से देखते हुए देखा। मुझे भी उससे परिचित करा दिया गया था। उसने बड़े स्नेह से मेरा हाथ दबाया और मेरी तरफ आनन्द से देखते हुए मधुमिश्रित स्वर में मुझे उस आनन्द के लिये धन्यवाद दिया जो उसे मेरी रचनायें पढ़ने से प्राप्त हुआ था।

"आप इसका विश्वास मत कीजिये" ग्लासोविन फुसफुसाया, "उसने उनका एक शब्द भी नहीं पढ़ा है।"

शाम का धुंधलका जल्दी ही जब मैं समुद्र तट पर घूम रहा था तो दोनों हाथों में अनेक कागज और खाने की चीजें लिए ग्लासोविन से मेरी मुलाकात हुई।

"प्रिय सन्तुष्ट नहीं है।" उसने प्रसन्न होकर कहा "वह कल, उनके भाई उस व्याख्यानकारी के साथ आया था। अब मैं समझा कि वह उसे किस बारे में लिख रही थी। ओह भगवान्। वह बकता रहा, पागल की तरह उछलते हुए और उन कागजों को अपने सीने से दबाते

हूँ। 'अगर वह किस्सा कोई चीज होती है तो इसका मतलब हम्म मानती फिर मैं अपने पिता के पास घर जा सकूँगा।'

और वह आगे लंगड़ाता हुआ चला गया।

"मैं चमत्कारों में विश्वास करने लगा हूँ," पीछे हटते हुये उसने मुझे पुकार कर कहा। 'बाबा इस्कारियोत की आत्मा ने, लगता है, सच्ची भविष्यवाणी की थी! और काश ऐसा ही होता!'

इस मुलाकात के दूसरे ही दिन मैं वारसा से चल दिया और वा मेंडेल की मनोकामना का क्या अन्त हुआ मैं नहीं जानता।

गुसेव

अँधेरा बढ़ रहा था; रात होने वाली थी।

गुसेव फौज से निकाला हुआ एक सिपाही अपने झूले* में उठ कर बैठ गया और धीमी आवाज़ में बोला :

"मैं कहता हूँ पावल इवानिच। एक सिपाही ने सुचान में मुझसे कहा : जब वे समुद्र में जा रहे थे तो एक बड़ी मछली उनके जहाज़ से आकर टकराई और उसमें छेद कर दिया।'

वह निश्चल व्यक्ति जिससे यह कह रहा था और जिसे जहाज के अस्पताल का प्रत्येक व्यक्ति पावेल इवानिच कहकर पुकारता था खामोश रहा जैसे कि उसने सुना ही न हो।

और फिर खामोशी छा गई। हवा रस्सियों के साथ खेल रही थी, पंखे घड़-घड़ा रहे थे, लहरें थपेड़े मार रही थीं, झूले चरमरा रहे थे, परन्तु कान इन शब्दों को सुनने के बहुत पहले से ही अभ्यस्त हो चुके थे और ऐसा लग रहा था कि चारों ओर प्रत्येक वस्तु निद्रामग्न और शान्त है। वातावरण में उदासी थी। वे तीनों अपाहिज—दो सिपाही और एक मल्लाह—जो दिन भर ताश खेलते रहे थे, इस समय सो रहे थे और सपने में बड़बड़ा रहे थे।

---

*रूसी व जहाजों में समुद्री बीमारी व समुद्री तूफ़ान से बचाने के लिये मल्लाहों और यात्रियों के लिये एक प्रकार के झूले होते हैं जिन पर वे सोते हैं। जहाज के हिलने पर ये झूले भी हिलते हैं।

ऐसा लगा मानो बहुत हिलने लगा। गुसेव का सूखा धीरे धीरे ऊपर नीचे होने लगा मानो गहरी सांस ले रहा हो और ऐसा एक बार दो बार तीन बार दुहराया गया। कोई चीज ज़ोर से फर्श पर गिरी। यह शायद नीचे गिरने वाली कोई सुराही होगी।

"हवा अपनी जंजीरें तोड़ कर निकल पड़ी है" गुसेव ने सुनते हुए कहा।

इस बार पावेल इवानिच ने गला साफ किया और चिड़चिड़ाकर जवाब दिया।

"कभी एक जहाज मछली से टकराता कभी हवा जंजीरें तोड़कर निकल रही है क्या हवा एक जानवर है जो अपनी जंजीर तोड़कर भाग सकती है?'

'ईसाई लोग इसी तरह बातें करते हैं।

वे तुम्हारी ही तरह मूर्ख हैं, फिर वे तरह तरह की बातें करते हैं। हरेक को अपने मस्तिष्क का सन्तुलन रखना चाहिये और बुद्धि से काम लेना चाहिये। तुम मूर्ख आदमी हो।"

पावेल इवानिच समुद्री-बीमारी का शिकार हो रहा था। जब समुद्र अशान्त होता तो आमतौर पर उसका मिजाज खराब हो जाता और वह जरा सी बात पर चिड़चिड़ा उठता था। गुसेव की राय में गुस्सा होने की कोई भी बात नहीं थी। जैसे कि उस मछली या हवा की जंजीर तोड़ कर भाग निकलने की बात में क्या अनहोनी और आश्चर्य जनक बात थी? मानलो कि वह मछली पहाड़ जितनी बड़ी थी और और उसकी पीठ बहुत कड़ी थी और इसी तरह यह मानते हुए कि बहुत दूर दुनियाँ के छोर पर बड़ी बड़ी पत्थर की दीवारें खड़ी हैं और भयानक हवाएँ जंजीरों द्वारा उनसे बँध दी गई हैं अगर वे जंजीरें तोड़कर नहीं भागती हैं तो पागलों की तरह समुद्र पर चारों तरफ क्यों बेतहाशा मारी मारी फिरती हैं और भाग निकलने के लिये कुत्तों की तरह छटपटाती हैं? अगर वे जंजीरों से नहीं बंधी थीं तो जब खामोशी थी तब

वे कहाँ थीं ?

गुसेव बहुत देर तक पहाड़ की तरह बड़ी मछलियों और मोटी संग लगी ऐंठियों के बारे में सोचता रहा फिर वह ऊबने लगा और अपनी जन्मभूमि के विषय में सोचने लगा जहाँ वह पूर्व में पाँच साल नौकरी करने के बाद वापस जा रहा था। उसने बर्फ से ढके हुए एक विशाल तालाब की कल्पना की तालाब के एक तरफ चीनी मिट्टी का सामान बनाने वाली लाल ईंटों की इमारत एक ऊँची चिमनी और धुंए के बादल दूसरी तरफ—एक गाँव।... उसका भाई अफोनासी पाँचवें मकान में से एक स्लेज पर बैठा हुआ आता है उसके पीछे उसका प्यारा बेटा वान्या बड़े बूट पहने बैठा है। और उसकी छोटी बच्ची अकुलका भी वैसे ही बड़े बूट पहिने बैठी है। अफोनासी पी रहा है। वान्या हँस रहा है। अकुलका का चेहरा उसे दिखाई नहीं पड़ रहा, उसने अपने को पूरी तरह ढक लिया है।

"तुम अभी नहीं समझोगे, वह बच्चों का गला जकड़ेगा" गुसेव ने सोचा। "भगवान उन्हें बुद्धि और ज्ञान—सच्चा दे ताकि वे अपने माँ बाप की इज्जत करें और उनसे अधिक अक्लमन्द नहीं बनें।"

"इनमें बड़ा भगवान की जरूरत है, एक दहकता हुआ कड़ाह भारी पाताल में कड़ाह है। हाँ हाँ।"

गुसेव की विचार धारा भंग हो गई और उसके सामने अचानक मछली सा एक विशाल मोटा सा बिना आँखों वाला सिर आ गया और वह घोड़ा और स्लेज आगे नहीं बढ़ रहे हैं बल्कि धुंए के एक बादल में चारों तरफ चक्कर पर चक्कर खा रहे हैं। परन्तु फिर भी वह खुश था कि उसने अपने परिवार वालों को देखा था। खुशी से उसकी साँस रुक गई उसका सिर नीचे तक काँप उठा और उसकी उँगलियाँ हिलने लगीं।

"भगवान हमें फिर मिलायगा," उसने फिर होकर बड़बड़ाया, परन्तु धीरज उसने अपनी आँखें खोल दीं और अंधेरे में पानी ढूँढने लगा।

उसने पानी पीया और फिर लेट गया और फिर सोच चल रही थी फिर दुबारा वही बिना आँखों वाला सांड का सिर, धुँआ बादल। और दिन निकलने तक वह यही देखता रहा।

दोपहर में जो पहली चीज दिखाई दी वह एक भीगा गोला सा था—छोटी गोल खिड़की। फिर क्रमशः गुसेव अपने पास के झूले में अपने पड़ौसी पावेल इवानिच को देख सका। वह बैठा हुआ सो रहा था क्योंकि वह लेट कर सीने में सांस नहीं ले सकता था। उसका चेहरा भूरा था, नाक लम्बी और तीखी थी, उसके भयानक रूप से पतले चेहरे के कारण उसकी आँखें बहुत बड़ी-बड़ी दिखाई पड़ती थीं उसकी कनपटियाँ भीतर की तरफ धुसी हुई थीं उसकी दाढ़ी छितरी और बाल लम्बे थे। उसे देख कर आप यह पता नहीं लगा सकते थे कि वह किस वर्ग का व्यक्ति था—एक सज्जन व्यापारी या किसान वर्ग का। उसके भावों और लम्बे बालों से यह प्रतीत होता था कि वह एक साधु या मठ में रहने वाला एक वर्ग की दीक्षा पाकर धर्म प्रचार करने वाला व्यक्ति है—परन्तु यदि कोई उसकी बातें सुनता तो यह लगता कि यह एक पादरी नहीं हो सकता। वह खांसी बीमारी और दम घोंटने वाली गर्मी से बुरी तरह पस्त हो चुका था और अपने सूखे होठों को हिलाता हुआ मुश्किल से सांस ले पाता था। यह देख कर कि गुसेव उसकी तरफ देख रहा है उसने अपना चेहरा उसकी तरफ मोड़ा और कहा :

"मैं सोचने लगा हूँ हाँ मैं अब तुम सबको पूरी तरह समझ गया हूँ।

'तुम क्या समझ गये हो, पावेल इवानिच ?"

"मैं तुम्हें बताऊँगा मुझे यह तरीके ही अद्भुत लगा है कि तुमने भयङ्कर रूप से बीमार होते हुए भी तुम इस स्टीमर में हो जहाँ इतनी गर्मी और घुटन है और हम लोग निरन्तर नीचे ऊपर उछलते रहते हैं जहाँ दरअसल हर चीज तुम्हें मौत की धमकी देती रहती है मन मेरे इससे सब कुछ स्पष्ट हो गया है हाँ तुम्हारे डाक्टरों

ने तुमसे अपना पीछा छुड़ाने के लिए तुम्हें इस स्टीमर पर लाद दिया। वे तुम जैसे निरीह व गंवारों का इलाज करते करते परेशान हो उठे थे।

तुम उन्हें कुछ भी नहीं देते, वे तुमसे परेशान हो उठे हैं और तुम अपनी मौत से उनके रुपये को खराब करते हो—इसलिये, जिससे तुम लोग जंगली हो। तुमसे छुटकारा पाना कठिन नहीं है। यह सब जिस की आवश्यकता है पहले, आत्मा या मानवता से रहित होना है और दूसरे, स्टीमर के अधिकारियों को धोखा देना है। पहली बात पर मुश्किल से ही विचार करने की जरूरत है इस मामले में हम लोग अभ्यस्त हैं और दूसरी बात में हरेक आदमी से आसानी से ही सफलता प्राप्त कर लेता है। चार सौ स्वस्थ सिपाहियों और मल्लाहों की भीड़ में आप दो बीमार आदमियों का कोई महत्व नहीं है। उन्होंने तुम सबको हांक कर स्टीमर पर चढ़ा दिया, तुम्हें अन्य मनुष्यों के साथ मिला दिया, जल्दी से तुम सबको गिना और इस हड़बड़ी में कोई गलती नहीं दिखाई पड़ी और जब स्टीमर चल पड़ा तब उन्होंने देखा कि यहाँ कालरा के और तपेदिक की अन्तिम अवस्था के रोगी डेक पर इधर-उधर पड़े हुए थे।'

गुसेव पावेल इवानिच की बातों को नहीं समझ सका परन्तु यह ख्याल कर कि उसे दोष दिया जा रहा है, वह क्षमा-याचना करते हुए बोला।

'मैं डेक पर लेटा हूं क्योंकि मुझमें खड़े होने की शक्ति नहीं थी। जब हम लोगों को उस बजरे पर से जहाज पर चढ़ाया गया था तो मैं बुरी तरह से ठंड खा गया था।'

"यह विद्रोह उत्पन्न करने वाली बात है," पावेल इवानिच कहता गया। 'इसमें सबसे बुरी बात तो यह है कि वे अच्छी तरह जानते हैं कि तुम इस लम्बी यात्रा को सहन नहीं कर सकोगे और फिर भी उन्होंने तुम्हें यहाँ लाद दिया। मान लो कि तुम हिन्द महासागर तक पहुँच जाते हो फिर क्या होगा? इसके बारे में सोचना भी भयानक है। और इतनी स्वामिभक्ति पूर्ण निर्दोष सेवाएं करने में उनकी यह कृतज्ञता है!'

पावेल इवानिच के नेत्रों में क्रोध भड़क उठा। उसने घृणा से भौंहें सिकोड़ीं और मुँह बना कर सांस लेते हुए बोला।

"ये वे लोग हैं जिनकी भलमनसाहत के प्रति तब तक छेड़छाड़ करनी चाहिये जब तक कि वे पूरी तरह से बर्बाद न हो जायं।"

वे दोनों बीमार सिपाही और वह मल्लाह ताश खेलने लगे थे और तम्बाकू पीने लगे थे। मल्लाह अपने बिस्तर में आधा झुका हुआ बैठा था, सिपाही उसके पास जमीन पर बड़ी बेढंगी मुद्रा में बैठे हुए थे। एक सिपाही की दाहिनी बांह पट्टी में बंधी लटक रही थी और हाथ पट्टियों से लिपटा हुआ था इसलिये वह अपने ताशों को दाहिने हाथ के नीचे वाले हिस्से से कुहनी की क्रीज में पकड़ कर बायें हाथ से खेल रहा था। जहाज बुरी तरह हिल रहा था। वे न तो खड़े हो सकते थे, न चाय पी सकते थे, न अपनी दवाई पी सकते थे।

"क्या तुम किसी अफसर के नौकर थे?" पावेल इवानिच ने गुसेव से पूछा।

"हाँ, एक अफसर का नौकर था।"

"अरे भगवान, मेरे भगवान!" पावेल इवानिच ने कहा और दुखी होकर अपना सिर हिलाया। 'एक आदमी को उसके घर से जबरदस्ती छीन लेना, उसे बारह हजार मील दूर घसीट कर ले जाना, फिर उसे तपेदिक का रोगी बना देना और ... और यह सब किसलिए, हरेक जानता है। उसे किसी कोपेइकिन नामक अफसर या दिर्का नामक मिडशिप मैन का नौकर बना देना। कैसी सुन्दर तर्कीब है।'

"यह मुश्किल काम नहीं है, पावेल इवानिच। सुबह उठो और जूतों को साफ कर दो, समोवार तैयार कर दो, कमरे साफ कर दो और उसके बाद तुम्हारे पास करने के लिए और कोई भी काम नहीं रह जाता। लेफ्टीनेंट दिन भर नक्शे बनाता रहता है और अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भगवान से प्रार्थना कर सकते हो, किताब पढ़ सकते हो, बाजार जा सकते हो। भगवान हरेक को ऐसी जिन्दगी दे।"

"हाँ बहुत अच्छा, हैवर्डमेन दिन भर लकड़ी बनाया करता है और तुम चौके में बैठ कर आरती पाठ करते रहते हो। सचमुच अच्छे। महत्व की बात लकड़ी नहीं है बल्कि मनुष्य की जिन्दगी है। जिन्दगी दुबारा नहीं मिलती इसके प्रति दयापूर्ण व्यवहार होना चाहिए।

"बेशक, पावेल इवानिच बुरे आदमी पर कहीं भी कोई रहम नहीं करता न घर में न इस फौज में परन्तु अगर तुम जिस तरह रहना चाहिए, उस तरह रहो और आज्ञाओं का पालन करो तो किसी का क्या पड़ी है कि तुम्हारा अपमान करे? अक्सर लोग बड़े सिद्धे सादे आदमी होते हैं, न समझते हैं। इन पाँच सालों में मैं एक बार भी जेल नहीं गया और मुझे एक भी घूंसा नहीं खाना पड़ा। इसलिये भगवान केवल एक बार और मेरी सहायता करना।

"किसलिए?

लड़ाई के लिए। मेरा हाथ मजबूत है, पावेल इवानिच। चार चीनी हमारे मकान में आये। वे लकड़ी ला और कुछ खा रहे थे, यह मुझे याद नहीं। मैं उठ खड़ा था और उनमें जरा हाथ लड़ दिये एक की नाक से खून बहने लगा, बुरा हो सकता। लेफ्टिनेन्ट ने खिड़की में से यह देख लिया। वह नाराज हुआ और मेरे कान पर कस कर एक घूंसा जमाया।

'मूर्ख, दीन आदमी" पावेल इवानिच बुदबुदाया "तुम कुछ भी समझते।

वह जहाज के हिलने से बुरी तरह थक गया था इसलिए उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसका सिर रह रह कर एक बार पीछे की तरफ होता और फिर उसके सीने पर लटक जाता। कई बार उसने लेटने की कोशिश की परन्तु इससे कोई लाभ नहीं हुआ। उसे हँसने में होने वाले कष्ट ने उसे लेटने नहीं दिया।

"और तुमने उन चीनियों को किसलिए मारा था?" कुछ देर बाद उसने पूछा।

छोड़, कुछ भी नहीं। वे कफ़न में बाँध और फिर उन्हें मार दिया।

और निस्तब्धता छा गई। तारा देखने वाले दो घण्टे से बड़े जोश के साथ और एक दूसरे को ताकते हुए खड़े रहे थ परन्तु जहाज़ के हिलने से उन पर भी विजय प्राप्त कर ली। उन्होंने माथा एक तरफ़ फेंक दिए और लेट गए। गुसेव ने फिर वह घड़ा तालाब ईंटों की इमारत गंदे पानी स्लेज फिर चली जा रही थी बालक फिर देख रहा था और पशुधन छोटी सी बेवकूफ़ बच्ची, ने बरस। इस प्रकार जोर जोर हाथ और अपने पैर बाहर निकाल दिए, मानो कह रही हो : "इसे अपने मालकिन मेरे भाग के पूरे बाल्टा के से नहीं है, य बन है।"

"पांच साल की हो गई और फिर भी अभी तक इस पसन्द नहीं आई," गुसेव सन्निपात में बड़बड़ाया। "अपने पैरों का ध्यान के बजाय अच्छा हो कि तुम जाकर अपने बाबा को पानी पिला आओ। मैं तुम्हें बड़ी अच्छी चीज़ दूँगा।"

इसके बाद पश्चात कन्धे पर बन्दूक रखे से पहले वाले बन्दूक हो एक बरसाती पन्नम, जिसे उसने मारा था तारा और उसके पीछे एक निकला हुआ गहरी एकादशिक माथा का तालुप व एक टुकड़े व बाजे में उस लगाव का भोग रहा है। फिर खेतों में देखा हुआ क्या बहुत फिर हाथमा एक क्लीम तीनी और किसी चीज़ के लिए चीखती हुई और फिर वही दिया पांची बाबा स्लेज का सिर, काटा हु था

ऊपर कोई जार से चिल्लाता बड़े मल्लाह और वे डेक पर छोड़ भारी चीज़ घसीटने लग रहे थ कोई चीज़ भारी धमाका के साथ गिरी। वे लोग फिर धीरे पता कोई दुर्घटना हो गई थी। गुसेव ने सिर उठाया हुआ और देखा कि वे दूसरे सिपाही और वह मल्लाह फिर ताश खेल रहे थे उसका इलाकिन देख हुआ ताक बजा रहा था। चारों तरफ़ घुटन थी, किसी में भी सांस लेने तक की शक्ति नहीं है फिर —

चमक रही थी, काली गर्म और भारी था। समुद्र हमेशा की तरह कम्पन रहा था।

अचानक ताश खेलने वाले एक सिपाही को चुप हो गया।… वह पास के पत्तों को ईंट का कहने लगा, गिनने में गड़बड़ा गया और उसने अपने पत्ते फेंक दिए, फिर भयभीत, मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट के साथ चारों तरफ सब साथियों की ओर देखने लगा।

"मैं अभी एक मिनट में उठता हूँ, दोस्तो… एक मिनट… …" उसने कहा और फर्श पर लेट गया। प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्यचकित हो गया। उन्होंने उसे आवाज दी मगर उसने उत्तर नहीं दिया।

"स्टेपन, तुम्हारी तबियत खराब है, क्यों?" वर्दी में बंद हुए सिपाही ने उससे पूछा। "शायद, अच्छा हो कि हम लोग पादरी को बुला लें, क्यों?"

"थोड़ा सा पानी पी लो, स्टेपन…" मल्लाह ने कहा। "आ भाई पी लो।"

"तुम मुग्गी का जग दाँतों से क्यों टकराए जा रहे हो?" गुसेव ने गुस्से से कहा। "देख नहीं रहे, शलगम की सी खोपड़ी वाले?"

"क्या?"

"क्या!" उसका मजाक उड़ाते हुए गुसेव ने दुहराया। "इसमें सांस नहीं है, वह मर गया है! 'क्या' यह है! कैसे मूर्ख आदमी हैं, भगवान हम पर रहम करे…!"

२

जहाज का हिलना बन्द हो गया था और पावेल इवानिच पहले से अधिक प्रसन्न था। अब वह चिड़चिड़ा नहीं था। उसके चेहरे पर एक गर्वीला, अस्थिर और व्यंग्य का भाव था। वह इस तरह देखता था मानो कहना चाहता हो: "हाँ, एक मिनट में मैं तुम्हें ऐसी बात बताऊँगा जिसे सुनकर हँसी के मारे तुम्हारे पेट में बल पड़ जायेंगे।"

छोड़, कुछ भी नहीं । वे कहते हैं भाग और मैंने उन्हें मार दिया ।

और निस्तब्धता छा गई । तारा उसने पास का पत्थर से पैर जाल के साथ और एक दूसरे को गर्मी दूर हुए उठ रहे थ परन्तु बादल के हिलने से उन पर भी विजय प्राप्त कर ली । उन्होंने तामा एक तरफ फेंक दिए और लेट गए । गुसेव के फिर वह पड़ा तालाब, ईंटों की इमारत, गाँव यानी स्लेज फिर चली जा रही थी, बाल्का फिर हँस रहा था और चकुन्दम मोटी सी बेवकूफ बच्ची, वे कहना । दूसरा करो जोड़ काला और अपने पैर बाहर निकाल लिए मानो कह रही हो : "देखो अच्छे आदमियो मेरे बरफ के जूते बालका के से नहीं हैं वे नए हैं ।

"पाँच साल की हो गई और फिर भी अभी तक उस अकल नहीं आई" गुसेव सन्निपात में बड़बड़ाया । "अपने पैरों को फटकारने के बजाय अच्छा हो कि तुम आकर अपने बाबा को पानी पिला जाओ । मैं तुम्हें कोई अच्छी चीज दूँगा ।"

इसके बाद एंड्रयान कन्धे पर चकमक के घर से चलने वाली बन्दूक रख एक मरा हुआ खरगोश, जिसे उसने मारा था, आया और उसके पीछे एक निर्बल बुड्ढा यहूदी इसाइचिक आया जो साबुन के एक टुकड़े के बदले में उस खरगोश को माँग रहा है । फिर झोंपड़े में बँधा हुआ काला बछड़ा, फिर डोमना एक कमीज सीती और किसी चीज के लिए चीखती हुई और फिर वही दिमा बोल्शोइ जाकर साँप का सिर काटा हुआ सा

ऊपर काफ़ जोर से चिल्लाया, कई मल्लाह दौड़े, वे डेक पर कोई भारी चीज घसीटने लग रहे थे या कोई चीज भारी धमाके के साथ गिरी । वे लोग फिर दौड़े — क्या कोई दुर्घटना हो गई थी ? गुसेव ने सिर उठाया, सुना और देखा कि वे दोनों सिपाही और वह मल्लाह फिर ताश खेल रहे थे तथा इसलिए खड़ा हुआ दोस पड़ा रहा था । चारों तरफ घुटन थी, किसी में भी सांस लेने तक की शक्ति नहीं रही थी, प्यास

भग रही थी पानी गर्म और भरा था, । समुद्र हमेशा
हरकत रहा था।

अचानक तन्त्रा देखने वाले एक सिपाही को चुप हो गया
वह मन में वर्षों को ईंट का बहने लगा गिनने में गड़बड़ा गया
उसने अपने पर्चे फेंक दिए, फिर भयभीत, मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट से
चारों तरफ हम लोगों की ओर देखने लगा।

"मैं अभी एक मिनट में उठता हूँ, दोस्तो एक मिनट"
उसने कहा और फर्श पर बैठ गया। प्रत्येक व्यक्ति असमंजसपूर्ण
था। हमने उसे थामने की मगर उसने उत्तर नहीं दिया।

'स्तेपन, तुम्हारी तबियत खराब है, क्यों ?" यहीं मैं
घबराए हुए सिपाही ने उससे पूछा। "शायद, अच्छा हो कि हम
पादरी को बुला लें, क्यों ?"

"थोड़ा सा पानी पी लो, स्तेपन··· " मल्लाह ने कहा।
"या भाई पी लो।"

"तुम सुरमई को उसके दाँतों से क्यों हटाए न रहे हो ?"
गुसाव ने गुस्से से कहा। "दम नहीं रहे, शैतान की सी खोपड़ी के !"
"क्या !"

"क्या !" उसका मजाक उड़ाते हुए गुसाव ने दुहराया। "इसमें
जान नहीं है, वह मर गया है। 'क्या' वह है। कैसे मूर्ख आदमी हैं,
भगवान हम पर रहम करे।"

३

जहाज का हिलना बन्द हो गया था और वातेव इवानिच पहले
से अधिक मगन था। अब वह चिड़चिड़ाता नहीं था। उसके चेहरे पर
एक गर्वीला, दम्भ भरा और व्यंग्य का भाव था। वह इस तरह देखता
था मानो कहना चाहता हो, "हाँ एक मिनट में मैं तुम्हें ऐसी बात
बताऊँगा जिसे सुनकर हँसी के मारे तुम्हारे पेट में बल पड़ जायेंगे।"

यह छोटी गोल खिड़की खुली हुई थी और इसकी ठंडी हवा पावेल इवा-
निच पर आ रही थी। वहाँ का पानी में पतवारों की छपछपाहट और अनेक
आवाजों का शोर आ रहा था। ठीक उस छोटी खिड़की के नीचे किसी ने
एक मनमनाती सी तरह, भद्दी आवाज में गाना शुरू कर दिया। निस्सन्देह
एक चीनी गा रहा था।

"अब हम लोग बन्दरगाह में हैं," पावेल इवानिच ने व्यंग्य-पूर्वक मुस्कराते हुए कहा। "सिर्फ एक महीना और हम लोग रूस में होंगे। अच्छा सज्जनो और बहादुरो! मैं ओडेसा पहुँचूंगा और वहाँ से सीधा खारकोव जाऊँगा। खारकोव में मेरा एक दोस्त है एक साहित्यकार। मैं उसके पास जाऊँगा और कहूँगा "अच्छा, दोस्त, अपने इन भयानक विषयों को, औरतों की प्रेम-कहानियों को और प्रकृति के सौन्दर्य को एक तरफ हटाओ और मनुष्य के दुराचारों का चित्रण करो।"

एक मिनट उसने सोचा फिर बोला।

'गुसेव तुम्हें मालूम है कि मैंने उन्हें कैसे काबू में किया था?"

"किस को काबू में किया था, पावेल इवानिच?"

"क्यों, वे लोग तुम जानते हो कि इस स्टीमर पर फर्स्ट-क्लास और थर्ड-क्लास दो ही दर्जे हैं और वे लोग सिर्फ किसानों-नीच मनुष्यों-को थर्ड क्लास में डाले रखते हैं। अगर तुम एक मल्लाहोंवाली कोट पहने हुए हो और तुम्हारी शक्ल अगर भले आदमियों या बड़े आद-मियों से जरा सी भी मिलती जुलती है तो तुम्हें फर्स्ट-क्लास में जाना पड़ेगा अगर तुम जाना चाहते। तुम्हें पाँच सौ रूबल कहीं से भी लाने पड़ेंगे चाहे इसमें तुम्हें जान ही क्यों न दे देनी पड़े। क्यों, पूछता मैं हूँ क्या तुमने यह नियम बनाया है? क्या इसके द्वारा तुम यो किसे रूसियों का सम्मान बढ़ाना चाहते हो? बिल्कुल नहीं। हम तुम्हें फर्स्ट-क्लास में नहीं जाने देंगे सिर्फ इसलिए कि एक साधारण व्यक्ति थर्ड-क्लास में नहीं जा सकता। यह बड़ा भयानक और घृणित

है। हाँ, सचमुच में भले आदमियों की भलाई के लिए इतनी चिन्ता रखने के लिये उनका कृतज्ञ हूँ। परन्तु किसी भी हालत में चाहे यहाँ अच्छा हो या बुरा मेरे पास भी कहने को है नहीं। मैंने सरकारी रुपया नहीं चुराया है, मैंने किसी देश के रहने वालों को लूटा नहीं है मैंने नाजायज चीजों का व्यापार नहीं किया है मैंने किसी को कोड़े मार मार कर जान से नहीं मारा है। इसलिए अनुमान लगाइए कि क्या मुझे स्वर्ग-प्रवास में आराम करने का अधिकार है और इसके भीतर जाने का लिखित पास पाने का अधिकार है। परन्तु तुम वहाँ तक इतना निश्चय में नहीं जा सकोगे। वहाँ तो धोखा देना पड़ता है। मैंने एक मजदूर का सा कोट और ऊँचे बूट पहने, चेहरे पर शराबियों का सा भद्दापन का भाव बनाया और एजेन्ट के पास गया। 'हमें एक धोखा सा टिकट दे दीजिए सरकार," मैंने कहा।

"क्यों, तुम किस वर्ग से सम्बन्धित हो?" एक मल्लाह ने पूछा।

"पादरियों से। मेरा बाप एक ईमानदार पादरी था, वह हमेशा दुनियाँ के बड़े आदमियों के मुँह पर सच्ची बात कह देता था और उसे इसके बदले में बहुत कुछ भोगना पड़ा था।"

अगोस्त इतमिनान से बातें करते करते थक गया था। वह साँस लेने के लिये रुका परन्तु फिर भी बोलता गया।

"हाँ मैं आदमियों के मुँह पर हमेशा सच्ची बात कह देता हूँ। मैं किसी से भी या किसी भी बात से नहीं डरता। इस मामले में मुझ में और तुम सब लोगों में बहुत बड़ा अन्तर है। तुम अन्धकार में हो, अन्धे और कुचले हुए हो। तुम कुछ भी नहीं जानते और जो कुछ देखते हो उसे समझ नहीं पाते। तुम्हें बताया जाता है कि इस धरती की जमीनों का बाद पर माल निकलती है, कि तुम मालदार हो वैभवशील हो और तुम इस पर यकीन कर लेते हो वे तुम्हारी गर्दन पर जूते मारते हैं तुम उनके हाथ चूमते हो। बीसवीं शताब्दी अपनी [illegible] खोले हुए

कोई पद तुम्हें खूब देता है और फिर तुम्हें फस्ट क्लास इनाम देता है, और तुम, मुझे अपने हाथ का चुम्बन करने दीजिये सरकार। तुम नीच, नीच आदमी हो।—मैं दूसरी तरह का आदमी हूँ। मेरी आँखें खुली हुई हैं मैं यह सब उसी तुम नीच, नीच हो। मैं दूसरी तरह का आदमी हूँ। मेरी आँखें खुली हुई हैं, मैं यह सब उसी तरह साफ़-साफ़ देख सकता हूँ जिस तरह एक गिद्ध या आसमानी चील ऊपर उड़ता हुआ देखता है, और मैं यह सब समझता हूँ। मैं जीवित विरोध हूँ। मैं जिम्मेदाराना जुल्म देखता हूँ—विरोध करता हूँ। मैं झूठ और छल देखता हूँ—विरोध करता हूँ। मैं सुअरों को विजयी देखता हूँ—विरोध करता हूँ। और मुझे दबाया नहीं जा सकता, कोई भी स्पेनी जोजमेरी जबान को बन्द नहीं कर सकती नहीं। मेरी जुबान काट दो और मैं गूंगों के इशारेसेअपना विरोधप्रकट करूँगा, मुझेकाल कोठरी में बन्द कर दो—मैं वहाँ से इतनी जोर से चीखूँगा जो आपके मील तक सुनाई देगा या मैं भूख हड़ताल कर-कर मर जाऊँगा जिससे उनकी काली आत्माओं पर एक और बोझ बढ़ जायेगा। मुझे मार डालो और मैं भूत बन कर उनको पीड़ा दूँगा। मेरे सारे परिचित मुझसे कहते हैं। "तुम बहुत बड़े दम्भी व्यक्ति हो पावेल इवानिच।" और मुझे इस तरह का सम्मान पाकर गर्व होता है। मैंने तीन साल तक सुदूर पूर्व में नौकरी की है और मैं वहाँ सौ साल तक याद किया जाता रहूँगा। मेरी सब से लड़ाई हो चुकी है। रूस से मेरे दोस्त मुझे लिखते हैं, "यहाँ वापस मत आओ" परन्तु देखो मैं उनसे लड़ने के लिए वापस जा रहा हूँ। हाँ, यही जीवन है जैसा कि मैं इसे समझता हूँ। यही है जिसे कोई जीवन कह सकता है।

गुसेव पोरी खिड़की की तरफ देख रहा था। और कुछ नहीं सुन रहा था। उस पार निर्मल साफ़, फीरोज़ी रंग के गर्म और धूप में चमकते

हुए पानी पर तिर रही थी। इसमें नन्हे चीनी एक पीछे एक की कतार में बनी चिड़ियों के पिंजरे लटकाए हुए दिखा रहे थे।

'यह चली है, यह चली है।'

एक दूसरी नाव पहली से टकराई। और फिर वहाँ एक और नाव आई जिसमें बैठा हुआ एक मोटा चीनी व्यापारी रकाबियों से चावल खा रहा था।

मन्द गति से समुद्र का जल साँस ले रहा था, समुद्री चिड़ियाँ उस पर धीरे धीरे तैर रही थीं।

'मेरा मन करता है कि उस मोटे की गर्दन में एक हाथ दूँ,' मुस्कराकर उस मोटे चीनी की तरफ देखते हुए गुसेव ने सोचा।

वह मस्ती में झूम उठा और उसे ऐसा लगा कि सारी प्रकृति भी सम्मिलित हो रही है। समय तेज़ी से गुज़र गया। धीरे धीरे दिन बीत गया, फिर अन्धकार छा गया। स्टीमर अब रुका नहीं था बल्कि आगे बढ़ रहा था।

४

दो दिन बीत गए। पावेल इवानिच बैठने की जगह लेट गया। उसकी आँखें बन्द थीं उसकी नाक और भी पतली दिखाई पड़ने लगी थी।

"पावेल इवानिच," गुसेव ने उसे आवाज दी, "ए, पावेल इवानिच।"

पावेल इवानिच ने आँखें खोलीं और होंठ हिलाए।

"क्या तुम्हारी तबियत खराब है?"

"नहीं, कोई बात नहीं," पावेल इवानिच ने हाँफते हुए जवाब दिया। "कोई बात नहीं, इसके बजाय मैं पहले से अच्छा हूँ। तुम देख रहे हो मैं लेट सकता हूँ। मैं पहले से कुछ आराम से हूँ।"

"अच्छा इसके लिए भगवान को धन्यवाद दो फ्योदोर इलीचिच।"

"जब मैं अपने से तुम्हारी तुलना करता हूँ तो मुझे तुम्हारे लिए दुख होता है ...बेचारा। मेरे फेफड़े ठीक हैं, यह सिर्फ पेट की खाँसी है। काला सागर की तो क्या बात मैं नरक को भी बर्दाश्त कर सकता हूँ। साथ ही मैं अपनी बीमारी और उन दवाओं को जो वे मुझे इसके लिए देते हैं, आलोचनात्मक दृष्टि से देखता हूँ। जब कि तुम ... तुम अन्धकार में हो ...यह तुम्हारे लिए कठिन है, बहुत, बहुत, कठिन है।"

जहाज हिल नहीं रहा था बल्कि शान्त था परन्तु एक स्नान-घर की तरह गर्म और घुटन से भरा हुआ था। यहाँ बोलना ही मुश्किल नहीं था अपितु सुनना भी कठिन था। गुसेव ने अपने घुटने हाथों से बाँध लिये, उन पर अपना सिर रखा और अपने घर के बारे में सोचने लगा। हे भगवान, इस दम घोंटने वाली गर्मी में बरफ और ठंड के विषय में सोचने से कितना सन्तोष मिलता था। तुम एक स्लेज में बैठे जा रहे हो, अचानक घोड़े किसी चीज से डर जाते हैं और बेतहाशा दौड़ने लगते हैं। सड़क खाई, खाइयों की बिना परवाह किये वे पागल की तरह भागे चले जाते हैं गाँव के बीच में होकर चीनी मिट्टी के कारखाने के पास वाले तालाब पर होकर बाहर खुले खेतों की तरफ। "रोको," कारखाने के मजदूर और किसान जो रास्ते में मिलते हैं चीखते हैं, "रोको।" मगर क्यों? तीखी ठंडी हवा को किसी के चेहरे पर लगने दो और किसी के हाथों को अपने घोड़ों के खुरों से उछले हुये बरफ के टुकड़ों को किसी की टोपी पर, किसी की पीठ पर, किसी के कालर के नीचे, किसी के सीने पर गिरने दो दौड़ने वालों को बरफ पर घंटी बजाते हुए दौड़ने दो और पहियों के निशानों और स्लेज को नष्ट हो जाने दो। पिशाच इन सबको उठा ले जाय! और कितना आनन्द आता है जब स्लेज उलट जाती है और तुम गाड़ी के पौहार पर से उछल कर तीर की तरह सीधा मुँह किये बरफ में जा पड़ते हो और फिर अपनी मूँछों को बरफ से सफेद किये हुये उठ खड़े होते हो: टोपी गायब, दस्ताने नदारद बैठी

हुआ हूँ। आदमी बेमन हैं और कुत्ते भौंकते हैं।

"पावेल इवानिच ने एक भारी आँखें खोलीं, उसने गुसेव की ओर देखा और धीरे से पूछा।

गुसेव, क्या तुम्हारा कमांडिंग अफसर गुस्सा है?"

"कौन कह सकता है पावेल इवानिच। हम नहीं कह सकते, हमें इसका पता नहीं चल पाता।" और इसके बाद बहुत लंबा समय खामोशी में गुजरा। गुसेव सोचता रहा, नींद में कुछ बड़बड़ाया और पानी पीता रहा। उसके लिये बात करना और सुनना दोनों ही मुश्किल हो रहा था और वह बात किये जाने से डर रहा था। एक घण्टा बीत गया, दूसरा, तीसरा बीत गया। शाम हो गई फिर रात आ गई परन्तु उसने इस तरफ गौर नहीं किया। वह अब भी पाले का स्वप्न देखता हुआ चुपचाप बैठा था।

एक आवाज हुई जैसे कोई अस्पताल में आया हो। कानों साफ सुनाई दी मगर कुछ मिनट गुजर गये और फिर खामोशी छा गई।

"स्वर्ग का राज्य और अनन्त शान्ति" घड़ी में हाथ बदलते हुए सिपाही ने कहा "वह एक दुखी आदमी था।"

"क्या?" गुसेव ने पूछा। "कौन?"

"वह मर गया, वे उसे अभी ऊपर ले गये हैं।"

"आह, अच्छा" जम्हाई लेते हुए गुसेव बड़बड़ाया। "उसे स्वर्ग का राज्य मिले।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है?" बाँह को घड़ी में बदलने वाले सिपाही ने गुसेव से पूछा। "उसे स्वर्ग का राज्य मिलेगा या नहीं?"

"तुम किसके बारे में बातें कर रहे हो?"

"पावेल इवानिच"

"उसे मिलेगा उसने इतना सहा है। और एक दूसरी बात यह है, वह पादरी लोगों से सम्बन्धित रह चुका है और पादरियों के

मरीजों रिश्तेदार होते हैं। उनकी भावनाएं उसे क्या होंगी।

यही बात सिपाही सुरेश के पास एक कुर्सी पर धीमी आवाज में बोला।

"और तुम, सुरेश इस दुनियाँ में ज्यादा नहीं रहोगे। कभी नहीं पहुँच सकोगे।"

"क्या डाक्टर या उसका सहायक ऐसा कहता है?" पूछा।

"यह बात नहीं है कि उन्होंने ऐसा कहा था, मगर कोई भी देख सकता है। कोई भी साफ देख सकता है जब कि एक मरने वाला है। तुम खाते नहीं, तुम पीते नहीं, यह इतना कर है कि तुम इतने दुबले हो गये हो। यह ठीक है, समझना। मैं तुम्हें परेशान करने के लिए नहीं कहता बल्कि इसलिये कि शायद धार्मिक संस्कार और अन्तिम उत्तम अवसर पसन्द करो। और तुम्हारे पास कुछ पैसा हो तो उसे अपने घर वालों को दे दो।"

"मैंने घर को नहीं लिखा है ..." सुरेश ने आह भरी। "मैं मर जाऊँगा और उन्हें मालूम भी नहीं पड़ेगा।"

"उन्हें खबर मिल जायगी," बीमार मल्लाह ने भारी आवाज में कहा। 'जब तुम मरोगे तो वे गजट में इसकी सूचना निकाल देंगे, ओडेसा में। वे वहाँ कमाण्डिंग अफसर के पास एक रिपोर्ट भेज देंगे और वह उसे जिले में या कहीं और भेज देगा।"

सुरेश ऐसे वार्तालाप के बाद बेचैन हो उठा और उसके हृदय में एक अतृप्त सी तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हो उठी। उसने पानी पिया, वह नहीं थी वह खिसकता हुआ खिड़की के पास पहुँचा और गर्म और नम हवा में सांस ली—पर वह भी नहीं थी। उसने घर के बारे में सोचने की कोशिश की, पानी के बारे में सोचा पर वह भी नहीं थी। अन्त में उसे यह लगा कि अगर वह उस वार्ड में एक

रूप से मर

"बड़ी घुटन है साथियो" उसने कहा। "मैं डेक पर जाऊँगा। भगवान के लिए उठने में मेरी सहायता करो।"

"अच्छी बात है" बड़ी नाकवाले सिपाही ने मंजूर किया। "मैं तुम्हें ले चलूँगा, तुम चल नहीं सकते, मेरी गर्दन पकड़ लो।"

गुस्तेव ने सिपाही के गले में हाथ डाल दिया, सिपाही अपनी लम्बी बाँह उसके चारों तरफ लपेटकर उसे सहारा देकर ले चला। डेक पर मल्लाह और नौकरी की मियाद खत्म हो जाने वाले सिपाही बराबर बराबर लेटे हुए थे। वे इतने अधिक थे कि उनके बीच में होकर गुजरना मुश्किल था।

"खड़े हो जाओ" बड़ी नाक वाले सिपाही ने धीरे से कहा। "मेरे पीछे चुपचाप चले आओ, मेरी कमीज पकड़ लो।"

चारों तरफ अंधकार था। कहीं न डेक पर न मस्तूलों पर न चारों तरफ समुद्र पर ही कोई रोशनी थी। जहाज के सबसे दूर अग्रिम भाग में सन्तरी पहरा देता हुआ बिलकुल बुत की तरह खड़ा और ऐसा मालूम पड़ता था मानो सो रहा हो। ऐसा लग रहा था मानो जहाज अपने आप निर्जन हो गया था और अपनी मर्जी से चला जा रहा था।

"अब वे लोग पावेल इवानिच को समुद्र में फेंक देंगे," नाटे सिपाही ने कहा। "एक बोरे में भरकर फिर पानी में।"

"हाँ यही कायदा है।"

"मगर घर पर जमीन में दफनाना ज्यादा अच्छा है। कम से कम तुम्हारी माँ कब्र पर आती है और रोती है।"

"बेशक।"

वहाँ सूखी घास और गोबर की गन्ध भर रही थी। वे रेलिंग के सहारे बैल सिर नीचे किए खड़े हुए थे। एक, दो, चार थे। और एक छोटा सा घोड़ा था। गुस्तेव ने उसे सहलाने को हाथ बढ़ाया मगर घोड़े ने अपना सिर हिलाया, और उसकी आस्तीन मुँह से पकड़ने की कोशिश की।

"शैतान ..." सुरेश नाराज होकर बोला।

वे दोनों—वह और सिपाही—जहाज के अगले सिरे की तरफ चलते हुए गए, फिर रेलिंग के सहारे खड़े हो गए और ऊपर नीचे देखने लगे। ऊपर गहरा आसमान चमकते सितारे, शान्त और बिलकुल गाँव में घर की तरह, नीचे अन्धकार और अस्पष्टता। ऊँची लहरें गरज रही थीं, कोई नहीं बता सकता कि क्यों। तुम जिस को भी देखो वह और दूसरी सब लहरों से अधिक ऊँची उठता दूसरी का पीछा करता और उसे कुचल डालना चाह रही थी। पीछे उतनी ही भयङ्कर और वैसा ही शोर मचाती हुई तीसरी जिसकी चोटी प्रकाश से चमक रही होती।

समुद्र में दुर्दिन और हवा नाममात्र को भी नहीं थी। स्टीमर फौलाद और लोहे और मोटी लोहे की चादरों से न बना होता तो लहरें बिना किसी प्रकार के भेद का अनुभव किए उसके टुकड़े टुकड़े कर डालतीं और उस पर सवार सब आदमियों को, सन्त और पापी का बिना भेद किए निगल जातीं। स्टीमर से भी वही क्रूर और अर्थहीन भाव झलक रहा था। वह दैत्य अपनी विशाल चोंच के साथ आगे अग्रसर हुआ चला जा रहा था, रास्ते में करोड़ों लहरों को छिन्न भिन्न करता हुआ। उसे न अन्धकार का भय था, न हवा का, न स्थान का, न एकान्त का। बिना किसी की परवाह किए बढ़ा जा रहा था और अगर समुद्र के अपने आदमी होते तो वह दैत्य उन्हें भी कुचल डालता, बिना सन्तों और पापियों का भेद किए।

"अब हम कहाँ हैं?" सुरेश ने पूछा।

"मैं नहीं जानता, हमें महासागर में होना चाहिए।"

"जमीन का कहीं पता नहीं ..."

"सचमुच नहीं है। उनका कहना है कि हम जमीन के दर्शन सात दिनों तक नहीं कर सकेंगे।"

वे दोनों ...

देख रहे थे और सोचते हुए खामोश थे। गुसेव ने ही सबसे पहले शान्ति भंग की।

"डरने की कोई बात नहीं है," वह बोला, "सिर्फ होता यह है मानो एक घने जंगल में बैठा हो। मगर, मान लो अगर मैं इसी समय पानी पर एक नाव उतारूँ और वह कप्तान मुझे समुद्र में सौ मील दूर जाकर मछली पकड़ने की आज्ञा दे तो मैं चला जाऊँगा। या मानो, एक ईसाई इसी वक्त समुद्र में गिर पड़े तो मैं उसके साथ ही नीचे कूद पड़ूँगा। एक जर्मन या चीनी को मैं नहीं बचाऊँगा परन्तु एक ईसाई के साथ ही नीचे कूद पड़ूँगा।

"और क्या तुम मरने से डरते हो?"

"हाँ। मुझे घर पर अपने परिवार वालों के लिए दुख है। जानते हो कि घर पर मेरा भाई ठीक से नहीं रहता। शराब पीता है व पत्नी बच्चों को बिना बात मारता है। और उसके माँ बाप की नहीं करता है। मेरे बिना सब कुछ बर्बाद हो जाएगा और मुझे डर है कि मेरे माँ बाप रोटी के लिए भीख न माँगते फिरें। परन्तु तुम मेरा बोझ नहीं समझ पा रहे हो, भाई, और यहाँ हमें बचा, कैसे बचें।"

५

गुसेव वार्ड में वापस चला गया और अपनी खाट पर बैठ गया। फिर एक अस्पष्ट धुंधली अभिलाषा उसे परेशान करने लगी और समझ न सका कि वह क्या चाहता था। उसके सीने में दर्द था, सिर भारी था, उसका मुँह सूख गया उसमें तीखा कड़वा स्वाद आ रहा था। वह ऊँघता रहा और नींद में बड़बड़ाने लगा और बुरे सपनों, खाँसी और भारी गर्मी से परेशान होकर सुबह तक पड़ा रहा। नींद में उसे लगा कि वे बैरक में रोटी सेंक रहे हैं और वह स्टोव के अंदर चढ़ गया और उसमें भाप का स्नान

है। कुछ देर बाद एक दूसरी गहरे पीले रंग की रेखा उसके पास आ जाती है। उसके बाद एक सुनहरी और फिर एक गुलाबी। ...क्षणक्षण पर रंग इतने चकाचक से एक हो जाते हैं इस समय मनमोहक आकाश को देखकर मनुष्य पहले तो गलता है परन्तु तुरन्त वह भी कोमल, गुणगुना, सुन्दर रंगों को धारण कर लेता है जिसके लिए मानव-भाषा में कोई नाम ढूंढना कठिन है।

दो वोलोद्या

"मुझे दो, मैं खुद चलाना चाहती हूँ। मैं कोचवान के पास बैठूँगी।" सोफिया ल्वोव्ना ने ऊँची आवाज़ में कहा। "एक मिनट ठहरो, कोचवान मैं ऊपर तुम्हारे पास बैठूँगी।"

वह स्लेज में खड़ी हो गई और उसके पति व्लादीमीर निकितिच, और उसके बचपन के मित्र व्लादीमीर मिखाइलिच ने उसे गिरने से रोकने के लिए उसकी बाँहें थाम लीं। तीनों घोड़े तेज़ी से सरपट भागे चले जा रहे थे।

"मैंने कहा था कि तुम्हें इसको ब्रांडी नहीं देनी चाहिए थी।" व्लादीमीर निकितिच ने रुष्ट होकर अपने साथी से फुसफुसाते हुए बोला। "तुम भी क्या आदमी हो।"

कर्नल अनुभव से इस बात को जानता था कि उसकी बीवी सोफिया ल्वोव्ना जैसी औरतों को ज़रा भी ज़्यादा पिला देने से पहले तो वे मस्ती में उन्मत्त हो उठती हैं, फिर हिस्टीरिया की रोगी की तरह हँसती हैं और फिर आँसू बहाने लगती हैं। उसे डर था कि अब वे घर पहुँचेंगे तो सोने की जगह उसे उसको कमरे में पानी और दवाई पिलानी पड़ेंगी।

"ठहरो !" सोफिया ल्वोव्ना चीखी। "मैं एक चक्कर चाहती हूँ।"

वह सचमुच प्रसन्नता और विजय का अनुभव कर रही थी। पिछले दो महीनों से, अपनी शादी के बाद से ही, वह इस विचार से दुखी रही थी कि उसने कर्नल यागिच से सांसारिक आनन्द प्राप्त करने के लिए और जैसा कि कहा जाता था 'कुढ़ाने के लिए' के लिए शादी की थी। परन्तु उस शाम को रेस्टोरेन्ट में उसे अचानक विश्वास हो गया था कि वह उससे गहरा प्रेम करती थी। चौवन साल की अवस्था होते हुए भी वह इतना छरहरा फुर्तीला और कोमल था। मज़ाक करता था और जिप्सी गानों की धुनों को बड़ी सुन्दरता के साथ गुनगुनाता था। सचमुच, आज कल बुड्ढे जवान आदमियों से हजार गुने ज्यादा मजेदार होते थे। ऐसा लगता था मानो अवस्था और यौवन ने आपस में अदला बदली कर ली थी। कर्नल उसके पिता से दो साल बड़ा था परन्तु इस बात का क्या कोई महत्व हो सकता था ? अगर सच कहा जाय तो कर्नल में स्वयं उसकी अपेक्षा अधिक शक्ति, स्फूर्ति और ताजगी थी यद्यपि उसकी अवस्था तेईस साल की ही थी।

"ओह मेरे प्यारे !" उसने सोचा। "तुम अद्भुत हो !"

उस रेस्टोरेन्ट में ही इस बात पर विश्वास हो गया था कि उसमें पुरानी विचार धारा का एक कण भी शेष नहीं रहा था। अपने इस बचपन के मित्र व्लादीमीर मिहाइलिच या सिर्फ वालोद्या, जिसके प्रेम में वह कल तक बुरी तरह पागल थी, के प्रति इस समय पूर्ण उदासीनता के अतिरिक्त वह और कुछ भी अनुभव नहीं कर रही थी। उस सारी शाम तक वह उसे एक निर्जीव जड़, सुस्त और तुच्छ व्यक्ति प्रतीत होता रहा था। और उदासीनता ने जिसके द्वारा वह अभ्यासवश इस अवसर पर रेस्टोरेन्ट में जिप्सी का भुगतान करने से अपने को बचाता रहा, सोफिया को चिढ़ा दिया और वह मुश्किल से अपने को यह कहने

से रोक सकी कि, "अगर तुम गरीब हो तो तुम्हें घर पर रहना चाहिये।" कर्नल ने सारे पैसे चुकाए।

शायद इसलिए कि पेड़, तार के खम्भे और बरफ के ढेर उसकी आँखों के सामने से तेज़ी से गुज़रते रहे, उसके दिमाग में तरह तरह के असम्बद्ध विचार आते रहे। उसने सोचा रेस्तोरैंट का बिल एक सौ बीस रूबल का था, और सौ जिप्सियों पर चले गए और कल अगर वह चाहे तो हज़ार रूबल उड़ा सकती है, और सिर्फ दो महीने पहले उसकी शादी से पहले उसके पास उसके अपने तीन रूबल भी नहीं थे और हर मामूली चीज़ के लिए उसे अपने पिता से कहना पड़ता था। उसके जीवन में कैसा परिवर्तन हो गया है।

उसके विचार उलझे हुए थे। उसने याद किया कि कैसे, जब वह दस साल की बच्ची थी, कर्नल यागिच, अब उसका पति, बुआ से प्रेम किया करता था और घर में हरेक कहता था कि उसने उसे बर्बाद कर दिया था। और उसकी बुआ भी सचमुच रोने से आँखें लाल किए कभी कभी खाना खाने नीचे आया करती थी और हमेशा कहीं चली जाती थी, और लोग उसके विषय में कहा करते थे कि इस बेचारी को कहीं भी शान्ति नहीं मिलती। उन दिनों वह बहुत सुन्दर था और 'नारी-हन्ता' के रूप में उसकी प्रसिद्धि असाधारण थी। इतनी अधिक कि उसे सारा शहर जानता था और उसके विषय में यह कहा जाता था कि वह प्रतिदिन नियम से अपनी प्रशंसिकाओं के यहाँ उसी तरह जाया करता जिसतरह एक डाक्टरअपने मरीज़ों को देखनेजाया करता है। और अब भी उसके भूरे बालों, उसकी झुर्रियों और उसके चश्मे के रहते हुए भी उसका पतला चेहरा सुन्दर लगता था विशेष रूप से बगल से देखने में।

सोफिया ल्वोव्ना का पिता एक फौजी डाक्टर था और किसी समय उसने कर्नल यागिच के साथ एक ही रेजीमेन्ट में नौकरी की थी। वोलोद्या का पिता भी एक फौजी डाक्टर था और वह भी उसके पिता

और कर्नल यागिच की तरह उसी रेजीमेंट में रहा था । बचपन में सम्बन्धों के रहते हुए भी जो कभी बड़े पेचीदा और परेशानी उत्पन्न देने वाले होते थे, वोलोद्या ने यूनिवर्सिटी में अच्छी सफलता प्राप्त की और एक पाठ्य अच्छी डिग्री प्राप्त कर ली थी । इस समय वह साहित्य का विशेष अध्ययन कर रहा था और एक थीसिस लिख रहा बताया जाता था । वह अपने पिता फौजी डाक्टर के साथ बैरकों में रहता था और खुद कुछ भी नहीं कमाता था यद्यपि उसकी अवस्था तीस साल की थी । बचपन में वह और सोफिया एक घर में, यद्यपि अलग अलग फ्लैटों में, रहते थे । वह अक्सर उसके साथ खेलने के लिए आया करता था और दोनों साथ नाचना और फ्रेंच सीखा करते थे । परन्तु जब वह बड़ा होकर एक भव्य, अत्यन्त सुन्दर युवक बन गया तो वह उससे शरमाने लगी और फिर पूरी तरह उसे प्रेम करने लगी और उस समय तक बराबर उसे प्रेम करती रही जब उसकी यागिच के साथ शादी हुई । वह भी चौदह वर्ष की अवस्था से ही औरतों पर विजय प्राप्त करने के लिए मशहूर था । और वे महिलाएं जो उसकी खातिर अपने पतियों को धोखा देती थीं वह कह कर अपनी ,सफाई दे देती थीं कि वह एक बच्चा है । किसी ने कभी उसका एक किस्सा सुनाया था कि जब वह एक विद्यार्थी के रूप में यूनिवर्सिटी के पास ही एक मकान में रहता था तो हमेशा जब कोई उसके दरवाजे का खटखटाता था तो वह कहता था कि उसके पैरों की आवाज सुनाई पड़ती थी और फिर फुसफुसाते हुए क्षमा चाहता : "क्षमा कीजिए मैं अकेला नहीं हूँ" । यागिच उससे प्रसन्न रहता था और उसे एक योग्य उत्तराधिकारी के रूप में आशीर्वाद देता था, जैसे कि डेरझाविन ने पुश्किन को आशीर्वाद दिया था । वह उसे चाहता था । वे घण्टों बिना बोले साथ साथ बिलियर्ड या ताश खेला करते थे । अगर यागिच कहीं बाहर जाता तो वोलोद्या को हमेशा अपने साथ ले जाता था और यागिच ही एक मात्र व्यक्ति था जिसे वोलोद्या ने अपनी थी[illegible] के

पहले जब वालोद्या अपेक्षाकृत युवक था वे कभी कभी एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु बन जाते थे परन्तु कभी भी एक दूसरे से अलग नहीं थे। उस समाज में जिसमें वे रहते थे वालोद्या 'बड़ा वोलोद्या' और उसका मित्र 'छोटा वालोद्या' के नाम से प्रसिद्ध थे।

बड़े वोलोद्या छोटे वोलोद्या और सोफिया अलेक्सा के अलावा इस स्लेज में एक चौथा व्यक्ति और था—मार्गरीता अलेक्से-एव्ना या, जैसा कि सब उसे कहते थे, रीता। मैडम वालोद्या की चचेरी बहन—काफी मोटी और एक पौंस का चश्मा लगाने वाली अधपकी पीली तीस साल से ऊपर की कुमारी, जो हमेशा सिगरेट पिया करती थी, मजलिस में भी और जिसके ब्लाउज की सामने के हिस्से और घुटनों पर हमेशा सिगरेट की राख पड़ी रहती थी। वह नाक के स्वर और हरेक शब्द को गुनगुनाती हुई बोलती थी। उसका मिजाज ठंडा था, बिना नशे में गाफिल हुए चाहे जितनी शराब पी सकती थी और बड़े भावशून्य और नीरस ढंग से गन्दी कहानियाँ सुनाया करती थी। घर पर वह मोटी पत्रिकाएं पढ़ती रहती थी, उन पर सिगरेट की राख बिखेरती हुई या सेब खाती हुई।

"सोफिया, बेवकूफी बन्द करो" उसने गुनगुनाते हुए कहा। "यह सचमुच मूर्खता है।"

जब वे शहर के फाटक के पास आए तो घोड़े भी धीरे धीरे चलने लगे और आदमियों और मकानों के बीच में होकर गुजरने लगे। सो-फिया अलेक्सा शान्त हो गई और अपने पति के साथ सट कर बैठ गई और उसने अपने विचारों की लगाम ढीली छोड़ दी। छोटा वोलोद्या सामने बैठा था। इस समय तक उसके कोमल और प्रसन्न भाव उदासीन भावों के साथ मिल गए थे। उसने सोचा कि सामने बैठा हुआ व्यक्ति जानता है कि वह उसे प्रेम करती थी और इसमें कोई शक नहीं कि वह इस प्रकार से विश्वास करता था कि उसने मनोवैज्ञानिक शोध विज्ञान के लिए ही उस कर्नल से विवाह किया था। उसने उससे अपने प्रेम के विषय

में कभी नहीं कहा था। वह नहीं चाहती थी कि वह उसे मालूम पड़े और उसने अपने भावों को छिपाने की पूरी कोशिश की थी परन्तु उसके चेहरे से वह जानती थी कि वह उसे अच्छी तरह समझता था—और इससे उसके आत्म-सम्मान को चोट पहुँचती थी। परन्तु उसकी स्थिति में सब से अधिक उद्विग्न कर देने वाली बात यह थी कि उसकी शादी के बाद ही मोलोवृषा ने अचानक उसकी तरफ ध्यान देना आरम्भ कर दिया था, जो उसने पहले, उसके साथ घण्टों बिताने और चुपचाप बैठे हुए या इधर उधर की मामूली बातें करते हुए भी, कभी नहीं किया था। और अब भी स्लेज में बैठे हुए, यद्यपि उसने उससे बातें नहीं की थीं, उसने अपने पैर से उसका पैर छुआ और उसके हाथ को जरासा दबाया। जाहिरा, वह इतना ही चाहता था कि उसकी शादी हो जानी चाहिए। और यह स्पष्ट था कि वह उससे घृणा करता था और कि वह उसमें सिर्फ एक विशेष प्रकार की दिलचस्पी उत्पन्न कर देती थी मानो वह एक चरित्रहीन और बदनाम स्त्री हो। और जब अपने पति के प्रति प्रेम और विजय के भाव उसकी आत्मा में दुःख और अपमानित आत्म सम्मान के भावों के साथ मिल उठे तो वह एक विद्रोही भावना से भर उठी और बक्स पर बैठने, चीखने चार घोड़ों को सीटी बजा कर चलाने की इच्छा करने लगी।

जैसे ही वे पादरियों के मठ के पास होकर निकले सौ टन वाला विशाल घण्टा बजने लगा। रीता ने अपने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाया।

"हमारी ओल्गा इसी मठ में है," सामिया कपोत्मा बोली और उसने भी अपने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाया और काँप उठी।

"वह मठ में क्यों गई थी?" काब्स ने पूछा।

'कुमारी के लिए' रीता ने खिलखिला कर उत्तर दिया, सामिया के पाणिग्रह से विवाह करने की बात दृष्ट संकेत करते हुए। "कुमारी के

लिए। हाँ साजरूप का फैशन है। सारी दुनियाँ के खिलाफ बगावत था। यह हमेशा हँसती रहती थी, बहुत चौंचलेबाज, मिर्ज़े साथ और बच्चों की शौकीन और एकाएक वह चली गई—इस को बड़ा दुःखित कर।'

'यह सच नहीं है," क्सोट्र्या ने अपने इन्सार कोट का कालर नीचे की तरफ मोड़ते और अपने सुन्दर चेहरे को दिखाते हुए कहा, 'यह फ़ैशन वाला मामला नहीं था। अगर आप चाहें तो यह बहुत भयानक मामला था। उसका बाप दुनियाँ तथा अलग चला गया था और उन्हें नहीं मालूम कि वह अब कहाँ है। और उसकी माँ दुःख से मर गई।"

उसने अपना कालर फिर ऊपर उठा लिया।

"योसफ ने धोखा दिया," उसने धीमी आवाज़ में कहा, "एक धार लिए हुए दरवे की तरह रहना और ऐसी आशा के साथ देखना कि मोक्षिया ग्रामान्या—इस बात का मन ध्यान में रखना ज़रूरी है।"

मार्फ़ा क्सोत्या ने उसकी आवाज़ में घृणा की ध्वनि सुनी और उससे कुछ कड़ी बात कहने के लिए उत्सुक हो उठी परन्तु कहा कुछ भी नहीं। विरोध की भावना फिर उस पर हावी हो गई, वह फिर नर्म हो गई और आँसू भरी आवाज़ में धीरे से बोली:

"मैं सपने में उसका ख्याल करती हूँ। अलविदा, बहन! मैं योसफ का स्मरण करती हूँ।'

वे अलग हट दिए। सड़क के खम्भे की लालटेन जली थी और मार्फ़ा ग्रामान्या ने अनुभव की कि उसमें कुछ ऐसा था जिसने उसे अपनाया और उसके जीवन को पार दिखा दी थी। गिरजे के दूसरे खम्भे भी बजने लगे। जब धर्माध्यक्ष ने बातों का अन्त किया तो मार्फ़ा क्सोत्या उठ कर खड़ी हुई और दिया लिया तथा खिड़की के रास्ते से दरवाज़े की तरफ चल दी।

"मेरी बहन, मार्फ़ा इवा..." उसने पीछे से उसे पुकारा

कर कहा। "पहले ही काफी देर हो चुकी है।"

वह उस बड़े दरवाजे में होकर भीतर चली गई और फिर उस सड़क पर होकर आगे बढ़ी जो दरवाजे से मुख्य गिरजे की तरफ जाती थी। बरफ उसके पैरों के नीचे टूटने लगी। घण्टे की आवाज बिल्कुल उसके सिर के ऊपर बज रही थी और उसके सारे शरीर में कांपती हुई प्रतीत हो रही थी। यहाँ गिरजे का दरवाजा था, फिर तीन सीढ़ियाँ नीचे, और एक मेहराब का कमरा जिसमें दोनों तरफ सन्तों की मूर्तियाँ थीं, धूप और मसालों की सुगन्ध, फिर दूसरा दरवाजा और उसे खोलती हुई और नीचे एक झुकती हुई एक काली मूर्ति। प्रार्थना अभी प्रारम्भ नहीं हुई थी। एक पादरिन सूचियाँ वाले पर्दे के सहारे चल रही थी और ऊँचे बड़े शमादान की मोमबत्तियों को जला रही थी, दूसरी फानूस को जला रही थी। इधर उधर खम्भों और बगल की वेदियों के पास काली, स्थिर मूर्तियाँ खड़ी थीं। "मैं सोचती हूँ कि वे लोग वैसे खड़े हैं, इसी तरह सुबह तक खड़े रहेंगे," सोफ़िया ल्वोव्ना ने सोचा और यह स्थान उसे अन्धकारपूर्ण, ठंडा निर्जीव—एक कब्रिस्तान से भी अधिक निर्जीव, लगा। उसने उदासीनता से उन शान्त स्थिर मूर्तियों की तरफ देखा और अचानक दिल में एक टीस का अनुभव किया। किसी प्रकारवश एक छोटे कद की पादरिन के रूप में जिसके कन्धे पतले थे और सिर पर एक काला रूमाल बंधा हुआ था उसने ओल्गा को पहचान लिया हालाँकि ओल्गा जब मठ में दाखिल हुई थी वह मोटी थी और लम्बी लगती थी। हिचकिचाती और अत्यधिक उत्तेजना का अनुभव करती हुई सोफ़िया ल्वोव्ना उस पादरिन के पास गई और उसके कन्धे पर से होकर उसके चेहरे को देखते हुए उसने ओल्गा को पहिचान लिया।

"ओल्गा!" अपने हाथ फैलाते हुए वह चीखी और आवेशवश बोल नहीं सकी। "ओल्गा!"

पादरिन ने उसे फौरन पहचान लिया। उसने आश्चर्य से भौंहें

चढ़ाई और उसका पीला लम्बा झुका हुआ चेहरा ऐसा लगा कि उसका सिर का सफ़ेद कपड़ा भी जिसे वह अपने बालों के नीचे बाँधे हुये थी, प्रसन्नता से चमक उठा।

"भगवान का कैसा आश्चर्य है!" उसने कहा और उसने भी अपने पतले पीले हाथ फैला दिए।

सोफ़िया ल्वोव्ना उससे चिपट गई, प्रेम से उसका चुम्बन किया और ऐसा करते समय उसे डर लगा कि उस पर से शराब की बदबू आ रही होगी।

"हम लोग अभी यहाँ से गुज़र रहे थे और हमें तुम्हारी याद आ गई" उसने हाँफते हुए कहा मानो दौड़ कर आ रही हो। "मेरी प्यारी! तुम कितनी पीली दिखाई पड़ रही हो! ...मैं... मैं तुमसे मिल कर बहुत खुश हूँ। अच्छा, बताओ तुम कैसी हो! यहाँ मन नहीं लगता!"

सोफ़िया ल्वोव्ना ने चारों तरफ़ दूसरी पादरिनों की तरफ़ देखा और अधीरता सी दिखाती हुई कहने लगी:

"घर पर बहुत से परिवर्तन हो गये हैं...तुम्हें मालूम है मेरी शादी कर्नल युगिच से हो गई है। तुम्हें उसकी याद है है न। मैं उसके साथ बहुत खुश हूँ।"

"अच्छा इसके लिए भगवान को धन्यवाद दो। और तुम्हारे पिता अच्छी तरह से हैं?"

"हाँ वे अच्छी तरह हैं। अक्सर तुम्हारी बातें करते रहते हैं। ओल्या, छुट्टियों में आकर हम लोगों से ज़रूर मिलना आओगी न?"

"आऊँगी," ओल्या बोली और मुस्करा उठी। "मैं महीने के दूसरे दिन आऊँगी।"

सोफ़िया ल्वोव्ना रोने लगी वह खुद नहीं जान सकी कि क्यों, और एक मिनट तक चुपचाप आँसू बहाती रही, फिर उसने अपनी आँखें पोंछी और बोली:

"रीता तुमसे न मिल कर बहुत दुखी होगी। वह भी हमारे साथ

आई है और बोलोद्या भी आई है। वे लोग दरवाजे के पास खड़े
उन्हें कितनी खुशी होगी अगर तुम बाहर चल कर उनसे मिलो।
उनके पास बाहर चलें मातमा अभी शुरू नहीं हुई।"

"चलो," ओल्गा सहमत हो गई। उसने अपने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाया और सोफिया ल्वोव्ना के साथ दरवाजे पर आई।

"तो तुम कहती हो कि तुम सुखी हो सोफिया क्यों हो न, जब वे दरवाजे पर बाहर आ गई तो उसने पूछा।

"बहुत।"

"अच्छा, भगवान को इसके लिये धन्यवाद है।"

पादरिन को देखकर दोनों बोलोद्या स्लेज से बाहर निकले और सम्मान के साथ उसकी अभ्यर्थना की। दोनों ही उसके पीले चेहरे और मठ की काली पोशाक से प्रभावित प्रतीत हुये और दोनों प्रसन्न थे कि उसने उन्हें याद किया और उनका सम्मान करने के लिये बाहर आई। कहीं उसे ठंड न लग जाए इसलिये सोफिया ल्वोव्ना ने उसे एक कम्बल उढ़ा दिया और आधा एक बार उसके चारों तरफ लपेट दिया। उसके आँसुओं ने उसके मन को हल्का कर दिया था और उसका हृदय को पवित्र बना दिया था। वह प्रसन्न थी कि यह शोरगुल और बेचैनी से भरी हुई रात और दरअसल गन्दी रात एकाएक इतनी पवित्रता और शान्ति के साथ समाप्त होगी। और ओल्गा को कुछ देर और अपने साथ रखने के लिये उसने प्रस्ताव रखा।

"चलिये, इसे घुमाने ले चलें। ऊपर चढ़ो ओल्गा। हम थोड़ी दूर चलेंगे।"

उन आदमियों ने आशा की थी कि मातृगत इन्कार कर देगी—संत लोग तीन घोड़ों की स्लेज में इधर-उधर नहीं घूमते फिरते, लेकिन आश्चर्यचकित करते हुए उसने स्वीकार कर लिया और स्लेज में चढ़ गई। और जब घोड़े नगर के फाटक की तरफ दौड़े जा रहे थे सब

और केवल उसे ढंग से बदनाम और नाकाम होने का प्रयत्न करते रहे। प्रत्येक सोच रहा था कि वह पहले क्या थी और अब क्या है। इस समय उसका चेहरा रक्त रहित भावना हीन शान्त, सौन्दर्य और निर्जीव था मानो उसकी धमनियों में रक्त न होकर पानी भरा हो। दो या तीन साल पहले वह सुन्दर थी, चंचल एक गुड़िया सी अपने प्रेमियों के बारे में बातें करती रहती थी और हरेक बात पर हँसने लगती थी।

नगर के फाटक के पास स्लेज वापस मुड़ी। दस मिनट बाद वह मठ के पास रुकी ओल्गा मीख उतर गई। घण्टा और उसी से बजना पाया था।

"भगवान तुम्हारी रक्षा करे," ओल्गा ने कहा और भीख मुँड़ी जैसे कि भिखारिनें करती हैं।

"ओल्गा, ज़रूर आना।

"आऊँगी, आऊँगी।"

वह गई और जल्दी से फाटक दरवाज़े के पीछे गायब हो गई। और इसके बाद जब वे लोग फिर चल दिए तो सोफिया ल्वोव्ना बड़ी उदास हो उठी। हरेक खामोश था। उसने पूरी तरह निराशा और थकान का अनुभव किया। यह बात कि उसने एक नन को स्लेज में बैठा कर ऐसे व्यक्तियों के साथ घुमाया था जो गम्भीर नहीं कहे जा सकते, उसे अब मूर्खतापूर्ण, अव्यावहारिक और किसी पवित्र वस्तु को दूषित करने के समान लगा। जैसे ही उसका नशा उतरा स्वयं को धोखा देने की उसकी इच्छा भी नष्ट हो गई। अब उसे यह स्पष्ट लग रहा था कि वह अपने पति से प्रेम नहीं करती और न कभी उससे प्रेम कर ही सकती थी और यह सब मूर्खता और व्यर्थ की बातें थीं। उसने उससे स्वार्थवश विवाह किया था क्योंकि उसके स्कूल के मित्रों के शब्दों में वह अत्यन्त धनी था और क्योंकि वह रीता की तरह एक बुढ़िया नौकरानी बनने से डरती थी। क्योंकि वह अपने डाक्टर पिता से ऊब उठी थी और वोलोद्या को जलाना चाहती थी। अगर कहीं विवाह के समय वह [illegible] की

कर सकी होती कि यह इतना क्रूर, इतना भयानक और इतना घृणित कार्य होगा तो वह दुनियाँ की सारी दौलत के बदले में भी शादी करने के लिये तैयार न होती। परन्तु अब इस स्थिति से छुटकारा पाने का कोई रास्ता नहीं था। उसे इससे समझौता करना ही पड़ेगा।

वे घोड़ा गाड़ी पहुँचे। अपने गर्म कोमल बिस्तर में लेट कर और रजाई ओढ़ कर सोफिया ल्वोव्ना उस काले गिरजे को, धूप की गन्ध को और खम्भों के सहारे खड़ी हुई उन मूर्तियों को अपने स्मृति पट पर पुनः अंकित करने लगी और इस विचार से भयभीत हो उठी कि जब वह सो रही होगी, वे मूर्तियाँ पूरे समय तक वहीं खड़ी रहेंगी। सन्ध्या की प्रार्थना बहुत बहुत देर तक होती रहेगी और फिर 'पन्ने' होंगे, फिर सम्मिलित प्रार्थना होगी फिर दिन की प्रार्थना होगी ..."

"परन्तु निस्सन्देह एक ईश्वर है—निश्चित रूप से एक ईश्वर है, और मुझे मरना पड़ेगा इसलिये देर या सबेर से हरेक को अपनी आत्मा के विषय में सोचना, जैसे जीवन के विषय में, सोचना पड़ेगा। अब ओल्गा का उद्धार हो गया, उसने स्वयं ही सारे प्रश्नों को हल कर लिया है परन्तु अगर ईश्वर नहीं है? तो उसका जीवन बर्बाद हो गया। परन्तु यह कैसे बर्बाद हो गया है, क्यों बर्बाद हो गया?"

और एक मिनट बाद उसके दिमाग में फिर यह विचार उठा।

"ईश्वर है मृत्यु अवश्य आयेगी, अपनी आत्मा की चिन्ता अवश्य करनी होगी। अगर ओल्गा इसी क्षण मृत्यु को अपने सामने देखती तो भयभीत नहीं होती। वह तैयार है। और सबसे बड़ी बात यह है कि उसने अपने जीवन की समस्या सुलझा ली है। ईश्वर है हाँ परन्तु मठ में जाने के अतिरिक्त इस समस्या का क्या और कोई हल नहीं है? मठ में जाने का अर्थ है जीवन से सन्यास ले लेना, इसे नष्ट कर ..."

सोफिया ल्वोव्ना थोड़ी सी भयभीत हो उठी। उसने तकिये के नीचे अपना सिर छिपा लिया।

"मुझे इस विषय में नहीं सोचना चाहिए," वह "नहीं सोचना चाहिए।"

वाणिस्या दूसरे कमरे में कालीन पर अपनी पत्नी की धीरे से तारतम्यता कुछ सोचता हुआ टहल रहा था। वाणिस्या के मस्तिष्क में यह विचार उठा कि यह व्यक्ति उसके इतना समीप प्रिय केवल इसी कारण है कि उसका नाम भी ज्यानीमीर था बिस्तर पर उठ कर बैठ गई और कोमलता पूर्वक पुकारा।

"वासोदया!

'क्या बात है?' उसके पति ने उत्तर दिया।

कुछ नहीं।'

वह फिर लेट गई। उसने कमरे की आवाज सुनी शायद मर का पंजा हो। उसने फिर उस इतवार और उन कासी मूर्तियों विषय में सोचा और ईश्वर तथा अवश्यम्भावी मृत्यु के विचार मस्तिष्क में घूमते रहे। उसने अपने कान बन्द कर लिए जिससे अपने की आवाज न सुन सके। उसने सोचा कि वृद्धावस्था से पूर्व उसके सामने एक लम्बा बहुत लम्बा जीवन होगा और यह कि उसे दिन प्रति दिन उस मनुष्य के नजदीक जाना होगा जिसे वह प्यार नहीं करती थी और जो अभी ड्राइंगरूम में आया था और पलंग पर आ रहा था और उसी अपने हृदय में उस दूसरे युवक आकर्षक व्यक्ति के प्रति अपने अमराय में न आ सका और इतना रोचक अलौकिक था। उसने अपने पति की तरफ देखा और उससे 'गुड नाइट' कहने का प्रयत्न किया परन्तु ऐसा करने के स्थान पर अचानक फूट-फूट कर रो पड़ी। वह अपने आप से नाराज थी।

वह सुबह दस बजे तक शान्त नहीं हुई। उसने रोना और सोचना बन्द कर दिया परन्तु उसके दिल में अचानक दर्द होने लगा। वाणिस्या मोपेरा की प्रार्थना में जाने की जल्दी में था और कमरा भारी कमरे में अपने पत्नी पर नाराज हो रहा था जो कहीं पहनने में उसकी

सफ़र कर रहा था। वह एक बार शयनागार में, अपनी एड़ियों को ठनका सा बजाते हुए कुछ पीने आया और दूसरी बार कन्धे पर पद-सूचक निशान और सीने पर तमगे लगाए, गठिया के कारण कुछ लंगड़ाते हुए आया और सोफ़िया ल्वोव्ना को ऐसा लगा कि वह एक शिकारी चिड़िया की तरह चलता हुआ दिखाई दे रहा था।

उसने यागिच को टेलीफ़ोन की घण्टी बजाते सुना।

"मेहरबानी करके मुझे वासिलिएव्स्की बैरक जोड़ दो," उसने कहा, और एक मिनट बाद फिर। "वासिलिएव्स्की बैरक? मेहरबानी कर डाक्टर सालीमोविच से टेलीफ़ून पर आने के लिए कह दो" "और एक मिनट बाद फिर। "मैं किससे बातें कर रहा हूँ? तुम हो वोलोद्या? खुशी हुई। अपने पिता से फ़ौरन हमारे यहाँ आने के लिए कहो? प्यारे बच्चे कल के बाद से मेरी पत्नी बड़ी परेशान है। घर पर नहीं हैं, तुम कहते हो? हूँ! शुक्रिया। बहुत अच्छा। मैं बहुत कृतज्ञ हूँगा दया।"

यागिच तीसरी बार शयनागार में आया, अपनी पत्नी के ऊपर झुका, उस पर क्रॉस का निशान बनाया उसे अपना हाथ चूमने के लिए दिया (वह औरतें जो उससे प्रेम करती थीं उसका हाथ चूमा करती थीं और यागिच को इसकी आदत पड़ चुकी थी।), और यह कहते हुए कि वह खाने के समय तक आ जायगा, बाहर चला गया।

बारह बजे नौकरानी यह सूचना देने भीतर आई कि व्लादीमीर मिखायलोविच आ गया था। सोफ़िया ल्वोव्ना ने थकान और सिर दर्द से लड़खड़ाते हुए, जल्दी से 'फ़र' की झालरें लगी हुई अपनी नई सुन्दर पश्मीने के रंग वाली ड्रेसिंग गाउन पहन ली और जल्दी से अपने बाल सँवार लिए। वह अपने हृदय में एक अवर्णनीय कोमलता का अनुभव कर रही थी और प्रसन्नता और भय से काँप रही थी कि कहीं वह चला न जाए। वह उसे देखने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं चाहती थी।

वालोद्या, अपनी रुचि के अनुसार टीप टाप से पहन कर आया था—एक ऊँचा कोट और सफ़ेद टाई। जब सोफ़िया ल्वोव्ना भीतर आई

उसने उसका हाथ चूमा और अपना हार्दिक दुःख प्रकट किया कि वह बीमार थी। फिर जब वे बैठ गए तब वोलोद्या ने उसके ड्रेसिंग गाउन की प्रशंसा की।

"कल ओल्गा को देख कर मैं व्यग्र हो उठी थी," उसने कहा। "पहले तो मुझे वह भयानक लगा परन्तु अब मुझे उससे ईर्ष्या होती है। वह एक चट्टान की तरह है जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते, उसे हिलाया नहीं जा सकता। परन्तु उसके लिए और कोई हल नहीं था, वोलोद्या? क्या अपने को जिन्दा ही दफन कर देना जीवन की समस्या का एकमात्र हल है? क्यों यह मृत्यु है जीवन नहीं।"

ओल्गा के विचार से वोलोद्या के चेहरे पर कोमलता आ गई।

"तुम एक चतुर आदमी हो वोलोद्या," सोफिया ल्वोव्ना बोली। "मुझे समझाओ कि जो ओल्गा ने किया है वह कैसे किया जाता है। यह ठीक है कि मैं धार्मिक नहीं हूँ और मुझे मठ में नहीं जाना चाहिए परन्तु उसके बराबर और कोई दूसरा काम भी तो किया जा सकता है। जिन्दगी मेरे लिए आसान नहीं है, 'उसने क्षण भर रुक कर आगे कहा। 'बताओ कि मैं क्या करूँ? कुछ ऐसी बात बताओ जिसमें आस्था रख सकूँ। मुझे कुछ बताओ मगर सिर्फ एक शब्द में ही बताया जा सके।'

"एक शब्द में? केवल: टा रा रा बूम दिए।"

"वोलोद्या, तुम मेरा तिरस्कार क्यों करते हो?" उसने तब पूछा। "तुम मुझसे एक अजीब गँवारों के से ढंग से बातें करते हो, उस तरह नहीं जिस तरह कोई अपने मित्रों से बात करता, और स्त्रियों से जिनका वह सम्मान करता है, बातें करता है। तुम अपने काम में सफल रहे हो, विज्ञान में तुम्हारी रुचि है, तुम उसके विषय में मुझसे कभी बातें क्यों नहीं करते? ऐसा क्यों है? क्या मैं इसके लायक नहीं?"

वोलोद्या कुढ़ कर गुस्सा हुआ और बोला:

'तुम एकमात्र विज्ञान को कैसे चाहते थीं ! वैज्ञानिक सरकार आप ! तुम्हें पसन्द नहीं ! वा मक्खियाँ !"

"ठीक है, मैं एक स्वार्थ, तुच्छ, मूर्ख स्त्री हूँ जिसके कोई सिद्धान्त नहीं । मुझ में बहुत, बहुत बुराइयाँ हैं । मैं पागल और बदचलन हूँ और इसके लिए मुझ से नफरत करनी ही चाहिए । परन्तु तुम बोकोरेया, मुझ से दस साल बड़े हो और मेरा पति तीस साल बड़ा है । मैं तुम्हारे सामने बड़ी हुई हूँ और तुम मुझे जैसा चाहते वैसा बना सकते थे—एक फरिश्ता । परन्तु तुम,—" उसकी आवाज कांप उठी—"मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव करते हो । पालिया ने मुझ से बुढ़ापे में शादी की है और तुम "

"अच्छा, अच्छा, " बोकोरेया ने उसके और नजदीक खिसकते और उसके दोनों हाथों को चूमते हुए कहा : "शोपेनहावर के अनुयायियों को दार्शनिक चिन्तन और जो ये चाहें वैसा सिद्ध करने दो, तब तक हम इन नन्हें से हाथों का चुम्बन करेंगे ।'

तुम मुझ से नफरत करते हो । काश कि तुम जानते कि इससे मुझे कितनी तकलीफ होती है,' उसने अनिश्चय के साथ कहा इस बात को पहले से ही जानते हुए कि वह उसकी बात का विश्वास नहीं करेगा "और काश कि तुम जानते कि मैं स्वयं को बदलने के लिए, एक दूसरी जिन्दगी शुरू करने के लिए कितनी उत्सुक हूँ । मैं उत्साह के साथ इस बारे में सोचती हूँ !" और सचमुच उसके नेत्रों में उत्साह के आँसू भर आए । "अच्छी ईमानदार, पवित्र बनना, झूठ से दूर रहना जीवन का एक उद्देश्य रखना ।"

अच्छा, अच्छा बस, रहने दो भावुक मत बनो ! मुझे यह पसन्द नहीं ! ' बोकोरेया ने कहा और उसके चेहरे पर एक नाराजी का सा भाव झलकने लगा । "मैं सच कहता हूँ तुम्हें तो अभिनेत्री होना चाहिए था । हम दोनों को साधारण मनुष्यों का सा व्यवहार करना चाहिए ।'

बोकोरेया को नाराज होकर चले जाने से रोकने के लिए वह

अपनी सफाई देने लगी और उसे प्रसन्न करने के लिए जबर्दस्ती और फिर योगाभ्यास की बातें करने लगी। और यह कि वह अपने जी समस्या को हल करने के लिए और दरअसल कुछ करने के लिए कितनी उत्सुक थी।

'ता—रा—रा—बूम—डी—ए" वह गुनगुनाने लगा। "ता-रा-रा बूम-डिए!

और अचानक उसने अपने दोनों हाथ सोफिया की कमर में डाल दिए और उसने भी बिना यह जाने कि वह क्या कर रही है, उसके कन्धे पर अपने दोनों हाथ रखे क्षण भर तक विभोर होकर, लगभग उन्मत्त सी होकर उसका चतुर व्यंग्यपूर्ण चेहरा, उसकी भौंहें, उसकी आँखों, उसकी सुन्दर दाढ़ी की तरफ देखा।

'तुम जानते हो कि मैं तुम्हें कितने दिनों से प्यार करती हूँ,"
सोफिया ने उसके सामने स्वीकार किया और पीड़ा से लज्जित हो उठी और अनुभव किया कि शर्म से उसके होंठ हिले जा रहे थे। मैं तुम से प्रेम करती हूँ। तुम मुझे क्यों सताते हो?'

उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और वोलोद्या के होंठों का गहरा चुम्बन लिया और काफी देर तक पूरे एक मिनट तक, अपने होंठ नहीं हटा सकी यद्यपि वह जानती थी कि ऐसा करना बुरा है कि वह उसके विषय में और भी गन्दी धारणा बनायेगा, कि कोई नौकर अन्दर आ सकता है।'

'ओह तुम मुझे कितना सताते हो?' उसने दुहराया।

आध घण्टे बाद, जब उसे जो कुछ चाहिए था वह सब कुछ पाकर वह भोजन करने के कमरे में खाने पर बैठा हुआ था तब वह उसके सामने घुटनों के बल बैठी हुई, ललचाई निगाहों से उसके चेहरे की तरफ देख रही थी और वोलोद्या ने समझा कि वह एक पालतू कुत्ते की तरह थी जो एक टुकड़े के इन्तजार में लगा था। फिर उसने उसे अपने घुटनों पर बैठा लिया और एक बच्चे की तरह उसे ऊपर नीचे उछाला

एक स्त्री का शाप

नोटों की एक मोटी गड्डी। वह बंगला वाले बंगले से ... जमीन में भेजी थी। उसमें लिखा था कि वह पन्द्रह सौ रुपया भेज रहा है जो उसे एक मुकदमा जीत जाने पर इनाम के तौर पर मिले थे। अम्मा पूर्णमोम्मा 'इनाम मिलना' और 'मुकदमा जीत जाना' जैसे शब्दों का आशय समझ करती थी और उनसे डरती थी। वह जानती थी कि कानून की शरण लिए बिना काम नहीं चल सकता परन्तु किसी कारणवश जब कभी मजिस्ट्रेट, कैसरी का मैनेजर, या उसका गाँव का सहकारी अमीन जो अक्सर मुकदमे किया करते थे, उसके पास पहुँचने वाले केस जीत जाते थे तो वह हमेशा व्याकुल और शंकित हो उठती थी। इस अवसर पर भी वह व्याकुल और व्यग्र हो उठी और उसने चाहा कि उन पन्द्रह सौ रुपयों को कहीं दूर कर दे जिससे वे उसकी आँखों के सामने से हट जायें।

उसने दुःखी होकर सोचा कि उसकी उमर वाली दूसरी लड़कियाँ, उनकी पच्चीसवीं साल चल रही थी—इस समय अपने घरों को सजाने में व्यस्त होंगी थक गई होंगी और गहरी नींद सोयी होंगी और कल सुबह पूरी मस्तम के मूड में होकर उठेंगी। उनमें से कइयों की शादी काफी पहले हो चुकी थी और उनके बाल बच्चे थे। केवल यही, किसी कारणवश इन बातों का उनमे

सब पर दिखाई दिलाने को, उसका जवाब देने को और फिर पूरी लेकर भागी रात तक चुप भी न करने कमिटि तब तक इन्तजार किए कब तक कि नींद न आये, मजबूर थी। और उसके सारे दिनों की शुभ कामनाएं लेकर जाने रहेंगे और उससे चुप मांगते रहेंगे। परसों पैलेस में निश्चित रूप से थे} उसका दम लगा होगा— जो पीया जायगा या कोई ज्यादा शराब पीने की वजह से मर जायगा या वह आत्मा की कचोट से व्याकुल हो उठी और पुलिस के अधिकारियों, काम से गैरहाजिरी होने की वजह से किन्हीं बीस आदमियों को बर्खास्त कर देगा और वे बीसों आदमी उसके दरवाजे पर धरना देकर बैठ जायेंगे, अपनी अपनी टोपियाँ उतार कर और उस उसके पास बाहर आने में जब जायेगी और उन्हें कुत्तों की तरह भगा दिया जायगा। और उसके सारे जान पहचान वाले उसकी पीठ पीछे बातें करेंगे उस गुमनाम खत लिखेंगे कि वह एक करोड़पति और दूसरों का खून चूसने वाली है कि वह दूसरे आदमियों की जिन्दगी को खा रही और मजदूरों का खून पी रही है।

वहाँ उसके सामने रखे हुए खतों का एक ढेर एक तरफ लगा हुआ है। सारे खत ऐसे थे जिनमें भीख मांगी गई थी। वे ऐसे व्यक्तियों के थे जो भूखे शराबी उनके चौड़े परिवार के बोझ से दबे हुए, बीमार, पतित थे——। उसका दृष्टिकोण है होता था कि एक को तीन रुपया दूसरे को पाँच रुपया दे दिए जाएं। वे सब उसी दिन दफ्तर वाले भेजे और उसके बाद सहायता करने का काम आरम्भ होगा, या जैसा कि वह करा करते हैं, जानवरों को खिलाना जायगा।

वे लोग छोटी छोटी रकमों में चार सौ डालर रुपये और साठो— पुलिस इन्तजामिया द्वारा दी गई वर्ष भर की रकम के सूद को जो उसने गरीबों और जरूरतमन्दों की मदद के लिए दान कर रखा था। यहाँ बड़ी रकमें बरखास्त होगी। फकत व लेकर दफ्तर के दरवाज

तक जिनके पहने ठंड से सुन्न पड़े सूखे और
चेहरों वाले मलीन लोगों की एक लम्बी कतार लग जायगी
भावनाओं में भरा एफीमोम्ना भी तो उनकी रक्षिम की ओर
आप को आशीष दे रहे होंगे। पीछे वाले आगे वालों को धक्के
और आगे वाले लम्बी गालियाँ बकते हुए उन पर मसाज
शोर से, उन कम्पसों से और उन पाली हुई गूंजनी की सी
दुआओं से परेशान हो उठेगा दौड़ कर बाहर आयेगा और
काम पर कस कर एक पूरा लगायेगा जिससे और सब बड़े
और उसके अपने आदमी दैवरी के मजदूर छिन गये। जिन पर
तनख्वाह के अलावा और कुछ भी नहीं मिला था और जो
ख्वाहिशी पाई एक वर्ष कर चुके थे, दालान में खड़े हो अपने
लोगों को देखते और हंसते हुए कुछ ईर्ष्या के साथ और कुछ
साथ।

"ज्यादारी और उससे भी ज्यादा उनकी बीवियां भिखारियों
अपने नौकरों से ज्यादा प्यार करती हैं," अन्ना एफीमोम्ना ने सोचा
'हमेशा ऐसा ही होता है।

उसकी निगाह मोटरों की उस गाड़ी पर पड़ी। क्या मजबूरन
इस पवित्र बेकार पैसे को बांट दिया जायगा परन्तु मजदूरों को
किसी बात के कुछ भी देना ठीक नहीं रहेगा वर्ना वे दुबारा फिर मांगेंगे।
और पन्द्रह सौ रूबल बांटने से क्या काम होगा जब कि दैवरी में उनकी
बीवियों और बच्चों के अलावा तकरीबन सौ तो मजदूर ही हैं; और, हो
सकता है कि यह धन सहायता मांगने वाले पत्रों में से किसी एक के
लिखने वाले को बांट दे—किसी अभागे व्यक्ति को जो बहुत दिनों से
जीवन में किसी भी प्रकार का सुख पाने की आशा छोड़ चुका है—और
उसे वे पन्द्रह सौ रूबल दे दे। यह रकम उस गरीब आदमी के लिए छप्पर
फाड़ कर आई हुई दौलत की तरह

मौलिक और मनोहर बना दिया इमारत पर उसने में मर गयी। वैसे ही उस देश में से एक रात उस जिला पार कर गया। कार्यालय का कोई मुख्य अधिकारी पहुँच दिनों से बेकाम और बीमार था गुरुकिन सिविल में रह रहा था। उसकी पत्नी का देहान्त भी उसके पाँच बच्चे थे। अतः अकोमात्मा उस चौमंजिली गुलाबी सि का सबसे बड़ा जानती थी जिसमें कार्यालय रहता था। मोटे पर भयानक गर्मी और अस्वास्थ्यकर इमारत थी।

'पहला मैं यह काम उस कारण ले ली थी।" उसने कहा किया। "मैं इसे मेरी नहीं बेकार की बातों से बचने लिए पहला कि मैं शुरू ही इस बात से आऊ।" हाँ उसने साथ ही उस काम का अपनी जब में रखा और मैं उन कामों को एक भी सुनी और लाभ उन मोटी बस्तियों के लिए कुछ कर सकूँ।

इन्हीं परीक्षा दूर हो गई। उसने ... की प्रतीक्षा थी।

जब वह स्टेशन में खड़ा तब ... एक हुए थे। सारे मकानों की खिड़कियों तक रस्सी से लटक रही थी और उसके पर निवास बहता पहुँच कपड़ा उसने काम था। सड़क पर और मकान के इस पुरे क्षेत्र में गन्दगी और मजदूरों की बातों के साथ बिजली की बत्तियाँ चमक रही थी।

अतः अकोमात्मा उस जिले के बातों इमारतों मालिकों और उस बेचारों से जिसमें मजदूर रहते थे बराबर बातें की और बताया थी। मरण जिनका की मृत्यु के बाद से ... एक दिन एक बार बहुत इमारत में ... की। कोई बच्चों ... पूरे पर्दे वहाँ सभी के पुनर बाते वहाँ, कई बातें बातें और देखिया वाली उनके बारे की सबसे बड़ा पन्नी पन्नी गलियों की जायदाद, मार जिले का बात करने के पार ... और उसके ... साथ भोजन करने आते, सभी और ... और

कोयले की गन्ध थी। तेज हवा के झोंके जो कभी वेदना की
महसूस होते थे। ये सब बातें उनके सामने मन में
कर देती थीं। उसे ऐसा लगता था मानो वे पहिए, वे
गरम फुसकारते हुए सिलेण्डर अपने बन्धनों को तोड़ कर
कुछ कर डालने की कोशिश कर रहे थे जब कि वे आदमी
की बातों को न सुनते हुए, श्याम चेहरों से इधर उधर दौड़ते
मशीनों को समझाने में मशगूल होकर उनको मनमाफ़िक हरकतों की
कोशिश कर रहे थे। उन्होंने पावेल एकोमोव्ना को कुछ
आदर के साथ उसे उसके हिस्से समझाया। उसने याद किया कि
गड्ढों में से लोहे की एक लाल पट्टी बाहर निकाली गई थी,
एक बुड्ढे ने जो सिर पर एक पट्टा बाँधे हुए था और एक
नौजवान ने जो नीली कमीज पहने और सीने पर एक जंजीर
हुए और जिसके या चेहरे पर ओस चमक रहा था, शायद वह
में से एक था—धीरे से उस लोहे को पीटा और कैसे चिनगारी
गोलियों चारों ओर उछलने लगी थीं और कैसे, कुछ देर बाद, वे
लोहे की एक लम्बी चौड़ी चादर को खटखटाते हुए खींच कर

थे। वह बुड्ढा सीधा खड़ा था जब कि उस नौजवान ने
बांह से अपने चेहरे को पोंछा था और उसे कोई बात समझाई थी।
और उसने यह भी याद किया कि कैसे एक दूसरे विभाग में एक धौंक
वाला एक बुड्ढा लोहे के टुकड़ों को रेत रहा था और कैसे लोहे के कण
उसके चारों तरफ बिखरे पड़े थे, और कैसे चमड़ा पहने और ढीली काली
कमीज पहने हुए लाल बालों वाला आदमी खराद की मशीन पर काम
करता हुआ औज़ार के एक टुकड़े में से कुछ बना रहा था। खराद की
मशीन गरज रही थी फुफकार रही थी और शोर मचा रही थी और
माँ एक मोटा इस शोर से परेशान हो उठी थी और ऐसा लग मानो
वह शोर उसके कानों को फाड़ डाल रहा था। उसने
भी नहीं समझी, शाम के

ऐसे काम से जिसे कोई समझता नहीं और उसे पसन्द नहीं कर सकता, वालों अवश्य कमाना कितना अजीब सा लगता।

वह मजदूरों के क्वार्टरों में एक बार भी नहीं गई थी। उसे बताया गया था कि वहाँ सीलन रहती थी वहाँ घटमच दुर्गन्धियता और घृणास्पदता थी। यह एक बोझ उसे काफी बात थी। उन घरों को ठीक रखने के लिए उन पर एक हजार रुपया सालाना खर्च किए जाते थे फिर भी अगर वह उन गुमनाम पत्रों पर यकीन करती तो हर साल उन मजदूरों की हालत और भी खराब होती चली जा रही थी।

'मेरे पिता के समय में व्यवस्था अधिक अच्छी थी। जहाज से बाहर निकलते समय मिसेज एलीसोप्पा ने सोचा क्योंकि वे स्वयं मजदूर रह चुके थे। मैं इस विषय में कुछ भी नहीं जानती और सिर्फ रुपया ही काम किया करती हूँ।"

यह फिर उलझन हो उठी और अब इस बात से छुटकारा नहीं थी कि वह यहाँ आई थी और उस सौभाग्यशाली व्यक्ति के विषय में उसे यह विचार अब मौलिक और मनोरंजक नहीं प्रतीत हो रहा था जिसे प्यार कर कर वह रुपया मिलते रहते थे। किसी पार्लियामेन्ट या किसी और के पास जाने का मतलब जब कि घर पर करोड़ों की लागत का व्यापार धीरे धीरे बिगड़ और बर्बाद होता जा रहा था और घेरों में रहने वाले मजदूर के दिलों में भी बुरी जिन्दगी बिता रहे थे वह था कि वह कोई बेहूदगी का काम कर रही थी और अपनी आत्मा को धोखा दे रही थी। बड़ी सड़क पर और उसके पास वाले पेड़ों के पार पड़ोस की धूप और कपास की फैक्टरियों वाले मजदूर शहर की रोशनी की तरफ चले जा रहे थे। ठंडी हवा में कच्चे बरतन और इ सन का व्यापार शुरू हो गयी थी। मिसेज एलीसोप्पा ने उन चीजों और बोतलों की तरफ देखा और अचानक इसी और की तरह सारा जीवन बिताने की तीव्र इच्छा उसके मन में बढ़ती रही हुई। उसने ग्लास कर

से उन स्मृतियों को दुहराया कि बचपन पहले जब उसे अच्छा गुज़रा जाता था जब वह एक छोटी सी बच्ची थी और माँ एक ही रजाई ओढ़ कर सोया करती थी, जब कभी वे अपनी पोशाक, कमरे वाले कमरे में कपड़े धोया करती थी दीवारों को पार कर पड़ोस के घरों से हँसने की, उसमें नाम की के रोने की, हाथ से बजाये जाने वाले छोटे से बाजे की और पढ़ाई की और सीने की मशीनों की आवाज़ें आया करती थीं जब बाप, मुस्लिम इसलामिया सा हर काम में दिलचस्पी था, साथ के छोर और पुरुष की कोई भी परवाह न करते हुए कुछ काम कोई काम करता रहता था। और बाद में, दूसरी करने सूरज और दौड़ कर जाने के लिए, जैसे कि वह जब अपनी माँ के साथ भी हर रोज़ किया करती थी, वास्तविक हर ..
उसे एक मजदूरिन होना चाहिये था न कि एक कौन्सली की उसका विराम भवन और उसके बाद अमृत और तस्वीरें, मूर्खों और ऊँचा कोट वाला उसका सर्दी सिरोवाला, और दर्शनीय और मधुरभाषिणी आलापपूरक युवक और युवतियाँ लगभग प्रतिदिन उससे भेंट की याचना करने के लिए आया करते थे और जिनके सामने वह किसी कारण वश करने को गुनहगार महसूस करती थी और वे नाचक बदतर और मक्खियाँ था उसके धन के बल पर राज किया करते थे, जो उसकी चापलूसी करते रहते थे और उससे, बाप के पुत्र की होने के कारण छिपे तौर से नफ़रत करते रहते थे—वह सब उसके लिए किताब वास्तविक और बाद में पाया था।

यहीं एक चक्कर और शहर का दरवाज़ा था फिर अमीरी की बगिया वाले मकान एक के बाद एक आए और अन्त में वह चौड़ी सड़क जहाँ वह मशहूर गुरुत्वविन इमारत थी। वह सड़क जो आमतौर पर निस्तब्ध रहा करती थी, आज बड़े ि

दूसरे आदमियों से भरी हुई थी। अगर कोई जो इस किले में न रह कर शहर के बीच में रहता होता और इस समय इस सड़क पर शाम गुजरता तो उसे यहाँ मस्त शराब पिए और गालियाँ बकते आदमियों के अलावा और कुछ भी नहीं दिखाई देता। परन्तु मेरा धर्मात्मा, जो जीवन भर इन लोगों के बीच में रही थी उस भीड़ में बराबर अपने माता पिता या चाचा को पहचानती था रही थी। इसका पिता कायम दुर्बल चरित्र वाला थोड़ा सा सनकी जवाब और गैर जिम्मेदार व्यक्ति था। वह धर्म तत्वज्ञान या शक्ति की चिन्ता नहीं करता था। वह कहा करता था कि एक मजदूर के पास छुट्टियाँ मनाने और गिरजे जाने का समय नहीं होता और अगर उनकी पत्नी ज़ोर न देती तो शायद वह कभी भी न तो मृत्यु के समय अपने अपराधों का स्वीकार करता न धार्मिक संस्कार करता या व्रत रखता। जबकि दूसरी तरफ उसका चाचा इवान इवानोविच पत्थर की तरह कठोर था। धर्म शास्त्रोक्ति और नैतिकता से सम्बन्धित प्रत्येक बात में वह कट्टर और निर्दय था और केवल अपने ऊपर ही नहीं बल्कि अपने सब नौकरों और पड़ोसियों पर कड़ी निगाह रखता था। भगवान् न करे कि उसके कमरे में अपने ऊपर पवित्र मूर्ति के सम्मुख दीप का निरन्तर प्रकाश किये बिना जाया जाता। वह निवास के साधनों से परिपूर्ण भवन जिसमें वह अन्य धर्मात्मा रहती थी हमेशा बन्द रहता था और उसे वह केवल महत्त्वपूर्ण उत्सवों के लिए महत्त्वपूर्ण अतिथियों के लिए ही खोलता था जबकि खुद कोठरी में रहता था जो मूर्तियों से भरा हुआ एक छोटा सा कमरा था। वह पुराने धर्म में अटूट रहने वालों का सम्मान करता था और सदैव प्राचीन धर्म विचारों को मानने वाले पादरियों और भिक्षुओं का स्वागत किया करता था यद्यपि उसने ईसाई धर्म की दीक्षा ली थी फिर भी वह भी अति कठोर धार्मिक नियमों के साथ अपनी पत्नी को सताता था। वह अपने एक मात्र भाई और उत्तराधिकारी एलिना का उसके नास्तिकपन के कारण अनादर करता था जिसे कि वह नास्तिक और मूर्ख सम

करता था। वह धर्म के प्रति उसकी उपेक्षा के कारण भी उसे नापसन्द करता था। वह उसके साथ अपने से हीन व्यक्ति के समान व्यवहार करता था। उसने उसे सदा एक मजदूर की स्थिति में रखा और सोलह रूबल मासिक वेतन देता रहा। एफिम अपने भाई को बनावटी सम्मान के साथ सम्बोधित करता और क्षमा मांगने वाले दिन वह उसकी पत्नी और बेटी उसके सामने जमीन पर माथा टेकते थे। परन्तु मृत्यु होने से तीन वर्ष पूर्व इवान इवानोविच के अपने भाई के साथ अपने सम्बन्ध ठीक हो गए थे, उसकी निर्बलताओं को उसने क्षमा कर दिया था और आज्ञा दी थी कि अन्यूष्का के लिए एक गवर्नेस रख ले।

गुरदंचिन इमारत के नीचे एक अन्धकारपूर्ण, गहरा और बदबूदार मेहराब के नीचे होकर जाने वाला मार्ग था। दीवारों के पास आदमियों के खांसने की आवाजें आ रही थीं। स्लेज को सड़क पर छोड़ कर अन्ना एकीमोव्ना फाटक में घुसी और वहाँ पूछा कि चालीकोव नामक एक क्लर्क के छयालीस नम्बर वाले मकान में कैसे पहुँचा जाय। उसे तीसरी मंजिल पर दांयी तरफ सबसे आखिरी दरवाजे पर जाने के लिए कहा गया। वहाँ अहाते में और बाहरी दरवाजे के पास और सीढ़ियों पर भी वैसी ही बदबू थी जैसी कि उस मेहराब के नीचे थी। अपने बचपन में अन्ना एकीमोव्ना, जब उसका पिता एक साधारण मजदूर था, इसी तरह की एक इमारत में रहा करती थी और बाद में जब उसकी स्थिति बदल गई तब वह एक दयालु महिला के रूप में प्रायः वहाँ जाया करती थी। वह संकरी पत्थर की सीढ़ी जिसकी प्रत्येक सीढ़ी गहरी और गन्दी थी और हर मंजिल पर जिसके दरवाजे खुलते थे, वह चीकट से भरी दिखाई देती हुई बासलेन, वह तीखी बदबू, वे टब बर्तन और दरवाजों के पास पड़े हुए चिथड़े—इन सब से वह बहुत दिनों से परिचित थी…। एक दरवाजा खुला हुआ था और उसके भीतर टोपियां पहने यहूदी दर्जी सिलाई करते हुए दीख रहे थे। अन्ना एकीमोव्ना को सीढ़ियों पर आदमी मिले। और उसके दिमाग में यह बात कभी भी

नहीं चाहती कि कोई उनके साथ दस्तन्दाजी कर सके। वह अब मिखिन कर्न के अपने परिचितों व अपरिचित किसानों या मजदूरों, चाहे सिर हुए या गम्भीर, चाहे किसी व्यक्ति से भी नहीं डरती थी।

अन्दर दफ्तरीम में घुसने का कोई रास्ता नहीं था। दरवाजा सीधा रसोई में खुलता था। यह स्वाभाविक बात है कि मजदूरों और कारीगरों के निवास स्थानों से निवासकार के व्यवसाय के अनुसार पालिश, चमड़ा, कच्चा चमड़ा, धुँआ आदि की गन्ध आती रहती है। उनके या अधिकारी वर्ग के उन व्यक्तियों के निवास स्थान जो सीन हो गए हैं, एक अजीब बासी और तेज गन्ध से पहचाने जा सकते हैं। इस पुलिस गन्ध ने मेरा महीमारान्का को चारों तरफ से घेर लिया जब कि अभी वह बरामदे में ही थी। कमरा अन्दर पहुँचे एक व्यक्ति जो निस्सन्देह गन्-वालीबस था एक कोने में पड़ी एक मेज पर दरवाजे की तरफ पीठ किए बैठा था। उसके पास पाँच छोटी प्यारी बच्चियाँ थीं। सब से बड़ी आठों में कदम रखता, चौड़े कन्धे वाली एक पतली लड़की लगभग पन्द्रह वर्ष की सी दिखाई पड़ी। जबकि सब से छोटी एक भारी सफेद बच्ची जिसके बाल नीचे लटके थे तीन साल से ज्यादा नहीं थी। वे इतनी मासूमी रहे थे। ग्लास के पास एक बड़ी सुन्दरी पतली ऐसी पहले बाला चारण नहीं थी जिसके सर्द के बारी महीने चार सुख थे। वह एक दर्द और सफेद ब्लाउज पहने थी। उसके हाथ में सलाई का धागा था।

'मुझे तुमसे इतनी हुस्नहाली की उम्मीद नहीं थी किरण'' वह व्यक्ति खाँसते हुए कह रहा था। "पू, पू, शाम को सब है। तुम जानता था कि पास तुम्हारे देर बाद, क्यों।

दरवाजे में एक अपरिचित महिला का दृश्य वह पतली सीतल चौक पड़ी और चाकन बोल रख दिया।

'कलिगडी निकिफोरिच!'' चुप एक बार वह मालुम। चश्मा में पोन्नी माना इस भारी पलकों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

कि वह इतनी दूर आई और इस छोटी सी रकम की खातिर इन दोनों को परेशान किया।

"अगर आप मुझे कागज और दवात दे दें तो मैं अपने एक डाक्टर मित्र को फौरन आकर आपको देखने के लिए लिख दूँगी," उसने जल्द से जल्द पढ़ते हुए कहा। "वह बहुत अच्छा डाक्टर है। और मैं दवाई के लिए आपको कुछ धन भी दे जाऊँगी।"

श्रीमती चाकीमोव मेज को साफ करने की जल्दी कर रही थी।

"यहाँ गन्दगी है। तुम क्या कर रही हो!" उसकी तरफ गुस्से से देखते हुए चाकीमोव ने कुनमुना सी छोड़ते हुए कहा। "इन्हें पड़ोसी के कमरे में ले जाओ। मैडम, मैं आपसे पड़ोसी के कमरे में चलने की प्रार्थना करने का साहस कर रहा हूँ," उसने अन्ना एकीमोव्ना को सम्बोधित करते हुए कहा। "वहाँ साफ है।"

"ओसिप इलिच ने हमें उसके कमरे में जाने के लिए मना किया है!" छोटी लड़कियों में से एक तेजी से बोली।

परन्तु वे इस समय तक अन्ना एकीमोव्ना को कमरे से बाहर, दो पलंगों के बीच के संकरे रास्ते में होकर ले जा चुके थे। बिस्तरों के बिछाने के ढंग से यह साफ जाहिर हो रहा था कि एक पर दो आदमी सीधे जाने सोते थे और दूसरे पर तीन आड़े होकर सोते थे। पड़ोसी के कमरे में जो इसके पार था सचमुच स्वच्छता थी। एक साफ सुथरे बिस्तर पर एक लाल ऊनी रजाई, सफेद गिलाफ चढ़ा हुआ एक तकिया, पट्टे का बना मेजपोश पड़ा एक मेज और उस पर दूधिया रंग के काँच का एक कलमदान कलम, कागज और शीशों में जड़ी तस्वीरें-प्रत्येक वस्तु करीने से सजी हुई जैसा कि होनी चाहिए। और मामूली कामों के लिए एक दूसरी मेज जिस पर सजा कर रखे गए घड़ीसाजी के औजार और घड़ियों के पुर्जे। दीवार पर लटकते हुए हथौड़े, प्लायर्स गज, छेनियाँ, सड़सियाँ आदि और तीन लटकती हुई दीवार-घड़ियाँ जो टिक टिक कर रही थीं। एक बड़ी घड़ी थी जिसकी सूइयाँ मोटी थीं जैसी कि होटलों

रख दिए और एक रूल खोल कर उसमें दो मोड़ और जोड़ दिए। उसने देखा कि मैडम चार्लीकोव का दुबला पीला हाथ, मुर्गी के पंजे की तरह कसता और रिबनों को कस कर पकड़ लिया।

"आपने कृपा कर ये ऐसे दवाइयों के लिए दिए हैं" चार्लीकोव ने कांपती आवाज में कहा "परन्तु मेरी तरफ भी दयालुता का हाथ बढ़ाइए और बच्चों की तरफ भी।" उसने एक सिसकी लेकर आगे कहा। "मेरे दुखी बच्चे! मैं अपने लिए भयभीत नहीं हूँ, अपनी बच्चियों के लिए मुझे भय है। यह दुर्गुणों जैसी अनेक फन वाला सांप है जिससे मुझे भय है।'

अपने बटुवे के बटन को जो खराब हो गया था, खोलने की कोशिश करते हुए अन्ना एकीमोव्ना परेशान हो उठी और उसका चेहरा लाल पड़ गया। उसे इस बात से लज्जा हुई कि लोग उसके सामने खड़े, उसके हाथों की तरफ देखते हुए इन्तजार करते रहे और इसकी बहुत सम्भावना है कि अपने मन में उसकी हँसी उड़ा रहे हों। उसी समय ड्योढ़ी रसोई घर में आया और बर्फ को झाड़ने के लिए उसने अपने पैर पटके।

"किरायेदार आ गया है," मैडम चार्लीकोव ने कहा।

अन्ना एकीमोव्ना और भी परेशान हो उठी। वह नहीं चाहती थी कि उसकी फैक्टरी का कोई आदमी उसे इस अजीब परिस्थिति में देखे। दुर्भाग्य से किरायेदार उसी समय भीतर आ गया जब अन्त में सचमुच तान पर वह चार्लीकोव को कुछ नोट दे रही थी और चार्लीकोव सूअर की तरह गुर्राते हुए मानो उसे झटका मार गया हो, अपने हाथों को नचा कर यह देख रहा था कि उसका इस्तेमाल कहाँ करे। उस किरायेदार के रूप में अन्ना एकीमोव्ना ने उस मजदूर को पहचाना जिसने एक बार बहुत, उसके सामने भट्टी में खाई की बाबत बताया था और उसे कई बातें समझाई थीं। यह साफ था कि वह सीधा फैक्टरी से चला आ रहा था। उसका चेहरा काला और भयानक लग रहा था।

वे सभी रहते हैं।

जैसे ही वह पत्र लिखने के लिए बैठी उसने अपनी तरफ मुँह किए अपना और अपने पिता के चित्र सामने रखे हुए देखे। इससे उसे आश्चर्य हुआ।

"तुम्हारे साथ यहाँ कौन रहता है?" उसने पूछा।

"हमारा किरायेदार मिलेशाव, मैडम। वह आपकी फैक्टरी में काम करता है।"

"ओह, मैंने सोचा कि वह एक पादरी होगा।"

"वह अपने आराम के समय चिड़ियाँ ठीक करता है। उसे इस का शौक है।"

कुछ देर की खामोशी के बाद, जिसमें चिड़ियों की चिक-चिक और कागज पर कलम के चलने की आवाज के अलावा और कोई भी शब्द सुनाई नहीं पड़ा, पार्सीलाव ने गहरी सांस ली और घृणा के साथ कटुता-पूर्वक कहा।

'वह एक सच्चा अफसर है। उच्च श्रेणी में उत्पत्ति और नौकरी में अच्छा स्थान आपको एक कोट मुहैया नहीं कर सकता। आपकी छाती पर एक तमगा और एक उच्च पदवी मगर खाने को कुछ भी नहीं। मेरे विचार से, अगर साधारण वर्ग का कोई व्यक्ति पक्षियों की सहायता करता है तो वह किसी भी पार्सीलाव से अधिक सज्जन व्यक्ति है जो घमंडी और दुर्गुणों में डूबा हुआ है।'

तब अनीसोव्ना की खुशामद करने के लिए उसने अपने उच्च कुलीन होने के महत्व को घटाने के लिए कुछ और वाक्य कहे और यह स्पष्ट था कि वह अपने को दम दिखाने का प्रयत्न कर रहा था क्योंकि वह स्वयं को उसकी तुलना में श्रेष्ठ समझता था। तब तक उसने पत्र को समाप्त कर उस पर मोहर लगा दी थी। पत्र को

परिवार के साथ क्या किया जाय परन्तु वह तरीका इतना भद्दा और अपमानजनक होता कि वह उन शब्दों द्वारा प्रकट करने का साहस नहीं कर सका। यह परिवार उसके लिए इतना शांत और महत्वहीन था कि पल भर बाद वह उन्हें भूल गया। श्रीमती पृथ्वीमाण्डा की बातों में उलझे हुए वह असमंजस से मुस्कराया और उसके चेहरे पर ऐसा भाव आ गया मानो वह कोई मधुर स्वप्न देख रहा था। ठीक इस समय उसके पास खड़े हुए, प्यारा पृथ्वीमाण्डा ने उसके अन्दर और विशेषतया से आँखों से देखा कि वह कितना थका और उनींदा हो रहा था।

"मुझे इस व्यक्ति की सहायता करनी ही चाहिए।" उसने सोचा परन्तु किसी कारणवश यह विचार उसे असंगत और निर्णय के लिए अपमानजनक लगा।

"मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपने काम के बाद आपके सारे शरीर में दर्द हो रहा होगा और आप भर रात दरवाजा तक आए हैं," उसने कहा शीघ्र ही वे सीढ़ियों से नीचे उतरे। 'बस आइए।'

परन्तु वह उसके शब्दों को सुन नहीं सका। जब वे बाहर सड़क पर आ गए तो वह आगे दौड़ा, स्लेज के पर्दे को खोला और श्रीमती पृथ्वीमाण्डा को भीतर बैठने में सहायता करते हुए बोला।

"मैं कामना करता हूँ कि यह दिन आपके लिए शुभ हो।"

"क्या आप हमारी फैक्टरी में बहुत दिनों से काम कर रहे हैं ?" लिया उसकी तरफ मुड़ी और उसने ऊँची आवाज़ में पूछा।

"जी हाँ। मैं आपके बाबा के ज़माने में फैक्टरी में आया था।"

'बहुत अर्सा हो गया। मेरे बाबा और पिता दोनों सब काम करने वालों को जानते थे और मैं मुश्किल से एकाध को जानती हूँ। मैंने आपको पहले देखा है परन्तु यह नहीं जानती थी कि आपका नाम लिसेमोव है।'

पावा एल्कीमोविच उसके सम्मुख अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए और यह दिखाने के लिए कि उसने वह देखा गम्भीरतापूर्वक नहीं बल्कि मज़ाक में लिया था, इच्छुक हो उठी।

"ओह यह गरीबी!" उसने गहरी साँस ली, "हम लोग बुद्धिमानों वाले दिनों और काम करने वाले दिनों में रह रहे हैं और फिर भी इसमें कोई बुद्धिमानी नहीं है। मेरा ख़याल है कि इस पावीलोव और कम्पनियों की मदद करना व्यर्थ है।"

"बेशक बेकार है।" उसने सहमति जताई। "आप उसे चाहे जितना दें वह सबकी शराब पी जायेगा। और इस समय मियाँ बीबी इसे एक दूसरे से छीन रहे होंगे और रात भर झगड़ते रहेंगे," उसने हँसते हुए धीरे कहा।

हाँ यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारा यह चिरप्रेम व्यर्थ, उतना ही बाधा और वाहियात है। परन्तु फिर भी आप सहमत होंगे कि हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठा जा सकता कुछ न कुछ तो करना ही चाहिए। मिसाल के तौर पर बताइये कि इस पावीलोव परिवार के साथ क्या करना चाहिए ?'

वह लिसेमोव की तरफ घूमी और रुक गई उससे उत्तर पाने की आशा से। वह भी रुक गया और बिना पीछे मुड़े स्पष्टतया उसने अपने कन्धे सिकोड़े। निश्चित रूप से वह जानता था कि इन पावीलोव

परिवार के साथ क्या किया जाय परन्तु वह तरीका इतना भद्दा और
अमानवीय होगा कि वह उस शब्दों द्वारा स्पष्ट करने का साहस नहीं
कर सका। यह परिवार उसके लिए इतना नीरस और महत्वहीन था कि
एक भर बात पर उन्हें भूल गया। पया एमीमाम्मा की पलकों में
रखते हुए वह समझा से मुस्कराया और उसके चेहरे पर ऐसा भाव था
मानो वह कोई मधुर स्वप्न देख रहा था। केवल इस समय उसके
पास जाते हुए, मक्षा एमीमोम्मा ने उसके चेहरे और निष्कम्प से आँखों
से देखा कि वह कितना मग्न और उत्तेजित हो रहा था।

"मुझे इस व पन्द्रह सौ रुपया दे देने चाहिए।" उसने सोचा
। किसी अवसर पर यह विचार उसे अर्संगत और सिमेनोव के लिए
लगा।

"मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने काम के बाद आपके सारे शरीर
में दर्द हो रहा होगा और आप भर साथ दरवाजे तक आए हैं" उसने
जैसे ही वे सीढ़ियों से नीचे उतरे। 'मर जाइये।'

परन्तु वह उसके शब्दों को सुन नहीं सका। जब वे बाहर सड़क
पर गए तो वह आगे दौड़ा, स्लेज के पर्दे को खोला और उसको
भीतर बैठने में सहायता करते हुए बोला।

"मैं कामना करता हूँ कि यह दिन आपके लिए शुभ हो।"

बड़े दिन की सुबह

"उन्होंने घण्टे बजाने इतनी दूर से बन्द कर दिए हैं। पर मधुर सुरीली बात है। तुम यहाँ पूजा समाप्त होने से पहले नहीं पहुँच सकोगी। उठो।

'वो घण्टे बज रहे हैं, बज रहे हैं,' अम्मा एफीमोव्ना ने कहा और जाग पड़ी। उसके सामने हाथ में मोमबत्ती लिए उसकी नौकरानी, बाव बाहों वाली माशा खड़ी थी। "क्यों, क्या बात है?"

"पूजा समाप्त हो गई" माशा ने निराश होकर कहा, "मैंने तुम्हें तीन बार जगाया! मेरा बस था तो शाम तक सोती रहो परन्तु तुमने खुद ही सुबह से क्या हुये के लिए कहा था।"

अम्मा एफीमोव्ना कुहनी के सहारे उठी और खिड़की की तरफ देखा। बाहर अभी तक पूरी तरह से अंधेरा था और खिड़की की शीशों का नीचे वाला हिस्सा ही सिर्फ सफेद बर्फ से ढका हुआ था। उस घण्टे की धीमी, सुरीली आवाज सुनाई दी। यह आवाज बीस वर्षों से न जाने कहीं दूर से आ रही थी। छोटी मेज पर रखी हुई घड़ी छः पर तीन मिनट दिखा रही थी।

"अच्छी बात है माशा... तीन मिनट में..." अम्मा एफीमोव्ना ने माशा के से स्वर में कहा और बिस्तर में आराम से छिप गई।

उसने सामने धुंधले दरवाजे पर पड़ा पर्दा, स्लेज, घोड़ा कम्बल, मिलने की भीड़ और धमघ्यम की कांच की कल्पना की और एक विचार से भयभीत हो उठी परन्तु फिर भी उसने तय किया कि वह तुरन्त बिस्तर छोड़ेगी और सुबह की पूजा में मग्न हो जायेगी। और जब वह बिस्तर

में पड़ी गर्म हो रही थी और बाहर से बज रही थी—जो ऐसा लगता है मानो कुछ कह रही हो और जो विराम कर ले, मधुर लगता है जब किसी का उनींदा हो—और जब वह पलंग पर उसे एक निश्चल उदास और फिर गुरुत्वपूर्ण इमारत का स्वप्न देख रही थी वह पूरे समय इस विचार से चिन्तित रही कि उसे उसी समय उठना और गिरजे जाना चाहिए।

परन्तु जब वह उठी तो पूरी तरह उजाला हो चुका था और सारे ही जग रहे थे। रात को भारी हिमपात हुआ था। पेड़ सफ़ेद बर्फ़ के कपड़े पहने खड़े थे और हवा विशेष रूप से हल्की, स्वच्छ और मधुर थी, इसलिए जब अन्ना एफ़िमोव्ना ने खिड़की से बाहर देखा तो उसके मन में पहला विचार यह उठा कि वह एक गहरी, बहुत गहरी सांस ले। और जब उसने हाथ मुँह धो लिया तो एक सुन्दर अतीत के बालपन की भावनाओं का पुनर्लेप—यह खुशी कि आज बड़ा दिन है—एकाएक उसके हृदय में उठ खिल हो गया। इसके उपरान्त उसने अपने को इतना स्वच्छ और धार्मिक रूप से पवित्र अनुभव किया मानो कि उसकी आत्मा भी धोकर साफ़ करदी गई हो या सफ़ेद बर्फ़ में गोता लगा कर आई हो। मात्रा भीतर आई, कपड़े पहन और कस कर फीते बांधे हुए और समझा कर कि बड़ा दिन शुभ और सुखद हो। फिर वह बहुत देर तक अपनी मालकिन के पास आती और कपड़े पहनने में उसकी मदद करती रही। उस नई, भव्य, सुन्दर पोशाक की सुगन्ध और स्पर्श उसकी हलकी सी सरसराहट और ताज़े इत्र की सुगन्ध ने अन्ना एफ़िमोव्ना को उत्तेजित कर दिया।

"अच्छा आज बड़ा दिन," उसने मिचते हुए मात्रा से कहा "अब हम लोग पत्ते अपने भाग्य का पता लगायेंगे।"

"पिछली साल, मुझे बुड्ढे से शादी करनी थी। तीन बार यही पत्ता निकला।"

"भगवान दयालु है।"

न तो यही बात हो और न दूसरी ही—तो यही अच्छा है कि मैं एक बुड्ढे से शादी कर लूँ," माशा ने दुखी होकर कहा और गहरी साँस ली। "मैं बीस साल की हो चुकी, कोई मज़ाक नहीं है।"

पर हर एक व्यक्ति जानता था कि माशा नौकर मिरोन्का से प्रेम करती थी और यह सच्चा गहरा विशद प्रेम तीन साल से चल रहा था।

"अच्छा, अच्छा, बेवकूफी की बातें मत कर" धाय एफीमोव्ना ने उसे सान्त्वना दी।

"मैं तीस साल की होने जा रही हूँ परन्तु फिर भी मैं एक नौजवान से शादी करने के इरादे रखती हूँ।"

जब उसकी मालकिन उससे बात कर रही थी मिरोन्का एक नया फर्कदार कोट और चमचमाते बूट पहने हाल में और ड्राइंग रूम में घूम रहा था और उसके बाहर निकलने का इन्तज़ार कर रहा था जिससे वह उसे बड़े दिन की शुभकामना दे सके। उसकी चाल बराबर धीरे-धीरे और नज़ाकत के साथ कदम रखते हुए। उसके हाथों पैरों और सिर की जुम्बिश को देख कर यह कल्पना की जा सकती थी कि वह सिर्फ घूम ही नहीं रहा था बल्कि 'स्वर्गदूत' नृत्य का पहला पाठ याद कर रहा था। सुन्दर मखमली मूँछों और सुन्दर, कुछ कुछ भरे हुए चेहरे के बावजूद भी वह सतर्क चतुर और एक बूढ़े की तरह धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह ज़मीन तक झुक कर प्रार्थना करता था और अपने कमरे में धूप जलाना पसन्द करता था। वह धनी और उच्चवर्गीय व्यक्तियों का सम्मान करता था और उनके प्रति श्रद्धालु था। गरीबों से और उन सब लोगों से जो सहायता माँगने आया करते थे वह अपनी निर्मल और एक मसालेदार आत्मा की पूरी शक्ति से घृणा करता था अपनी कलफदार कमीज़ के नीचे वह एक फलालैन की बनियान जाड़ों और गर्मियों में हमेशा अपने स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक सतर्क रहने के कारण पहने रहता था। उसके कानों में रुई लगी रहती थी।

जब महा एर्बीमोव्ना ने माया के नाज़ हाथ का प्यार किया तो मिरोन्स्क ने अपना सिर ज़रा सा नत किया और सुन्दर, मधुर भाषा में कहा :

"सुन्दरी, हमारे प्रभु के जन्म दिवस के सुन्दर भोज के अवसर पर महा एर्बीमोव्ना आपको बधाई देने का सम्मान प्राप्त हुआ है।"

महा एर्बीमोव्ना ने उसे धन्यवाद दिए। इसी समय माया प्रस-न्नता से मुख की ओर देख रही थी। उसकी पुतलियों की गति भव, उसका व्यव-हार, उसकी आवाज और जो कुछ उसने कहा था आदि बातों ने अपने सौन्दर्य और शिष्टता से उसे प्रभावित किया। अपना मार्गदर्शक के पीछे आते हुए वह कुछ भी नहीं सोच सकी कुछ भी नहीं देख सकी सिवा मुस्काने पहले प्रसन्नता से और बाद में कृतज्ञतापूर्वक। ऊपरी मंज़िल सब से अच्छी और मेहमानों की अधिकता वहीं जमी थी, जब कि ग्रामर के हिस्से का चार-पांच कमरों का या भिन्न चीज़ों का हिस्सा-चाली मंज़िल वाले उस कमरे का हिस्सा था जहाँ भावी सम्मानित दूल्हा-दुल्हन का घर था। ऊपर मात्र के सम्मान्य और शिक्षित व्यक्तियों का स्वागत किया जाता था नीचे वाली मंज़िल में मामूली आदमियों और भावी के स्वागत मिलन का। सुन्दर, मेरा शरीर दबकर अब भी उदास और व्याकुल और वह अनुभव करती हुई कि वह एक अत्यन्त सुन्दर पोशाक पहने हुए है जो इस बात कि उसके चारों तरफ एक विशेष प्रकाश बिखेर रही थी, ऐसी महा एर्बीमोव्ना के पीछे मंज़िल पर गई। वहाँ उस पर प्रभाव रही कि वह अब भगवान को भूल गई है, क्योंकि वह उत्साह पर विजय पाई है कि वह अब का आरम्भ अब तक नहीं आये, कि वह वास्तव में जन्म के बजाय बहुत देर तक जाती रहेगी। उस बर्मा के हाथ जाड़ और पूर्ण विश्वसनीयता के साथ कहा कि वह कुपुर और बदमाश है और उसने इसका निरादर कर दिया ऐसी कहीं चूमा, एक

... के चमत्कार

ऊपर ही छोटे छोटे गिरजे थे, मूर्तियाँ, छोटे दीपक सन्तों के चित्र थे—उस स्थान से पादरियों की गन्ध आती थी। रसोई में चाकुओं की खट-खटाहट हो रही थी और किसी वस्तु की तेज सुगन्ध, भूख को प्रज्वलित कर देने वाली सारे कमरे में भर रही थी। पीले रंग के फर्श चमक रहे थे और दरवाजों से ओर छोर कालीन जिन पर चमकीली नीली धारियाँ पड़ी हुई थीं छोटे छोटे रास्तों की तरह मूर्तियों वाले कोनों तक चले गए थे। खिड़कियों से छनकर धूप भीतर आ रही थी।

सामने वाले कमरे में कुछ बुढ़ियायें अजनबी, बैठी हुई थीं धर्माध्यक्ष के कमरे में भी बुढ़ियायें थीं और उनके साथ एक बहरी और गूँगी लड़की थी जो किसी बात से लज्जित होकर व्याकुल हो रही थी और बराबर कहे जा रही थी "ब्बी ब्बी!" " हर छोटी लड़कियाँ जिनकी ठुड्डियाँ दिखाई दे रही थीं जिन्हें अनाथालय से बड़े दिन के अवसर पर यहाँ लाया गया था अन्ना एकीमोव्ना का हाथ चूमने आईं और उसकी भव्य पोशाक से मंत्रमुग्ध सी होकर अचल खड़ी रह गईं। उसने गौर किया कि एक लड़की भेंगी थी और उसके हृदय में त्यौहार की प्रसन्नता के मध्य एकाएक सी उठी यह सोच कर कि अवश्य बड़े इस लड़की से नफरत करेंगे और यह कभी शादी नहीं कर सकेगी। मोईसेइविच अगाफिया के कमरे में पाँच हट्टे-कट्टे किसान नई कमीजें पहने समोवार के चारों तरफ बैठे हुए थे। ये फैक्टरी के मजदूर नहीं थे बल्कि अगाफिया के रिश्तेदार थे। अन्ना एकीमोव्ना को देख कर सारे किसान अपनी जगहों से उछल पड़े और उसकी शान से प्रभावित होकर उन्होंने मुँह चलाना बन्द कर दिया हालांकि उनके मुँह भरे हुए थे। रसोइया स्टेपन सफेद टोपी लगाए हाथ में एक छुरी लिये कमरे में भीतर आया और उसने शुभकामनायें प्रकट कीं। ऊँचे बूट पहने द्वारपाल भीतर आए और उन्होंने भी अपनी शुभकामनायें प्रकट कीं अपनी

छाती पर बरफ के ढेर गिराये खिड़की के भीतर प्रवेश मगर अन्दर आने की हिम्मत न कर सका।

भरन पीजनी-पापी बर्गामस, मिखन्द्रोस्ना, एटिन माकसिमोव्ना और नीच बाबा माया

साप चला एफ़ेमोव्ना कमरों में होकर गुजरी। यथासम्भव, एक लम्बी पतली औरत पर मैं कपी, काली, पजामा पहने सायमन और अपने की गन्ध से सुगन्धित, हर कमरे में पवित्र मूर्ति के सम्मुख अपने ऊपर क्रोस का निशान बनाती और कमर से भी नीची झुक कर प्रणाम करती चलती चली गई। जब कभी कोई उसकी तरफ देखता उसे याद आ जाता कि उसने पहले ही से अपने कफ़न का इन्तजाम कर लिया है और यह कि उसने जीवनी की विकटें भी उसी सन्दूक में छिपा कर रख रखी हैं।

"मसीह-जन्म बड़े दिन का स्वागत करो" उसने रसोई का दरवाजा खोलते हुए कहा, "उसे अग्र कर दो उसका पकवान दो। अब इसे खत्म करो।"

फेडोसी फेलकी जिस जवान्नार में ज्यादा शराब पीने के कारण दर्शाल कर दिया गया था रसोई के दरवाजे पुराने के पास पुरुष बैठा था। वह बड़ा समझदार व आदमी था परन्तु जब नशे में होता था तो बदतमीज बन जाता था और दो बड़ी दराजों वाली अलमारियों में इधर उधर बगैर खड़ा रहता और सबसे यह पूछता था कि, "मैं इसवारे में सब जानता हूँ।" इस समय उठ गये हुए और पूछे हुए प्यार और पर को तरह बाल करो से रहा था। कि आज सवेरे से बड़े दिन वह लगातार शराब पीता रहा था।

"मुझे माफ कर दीजिये अम्मा एफ़ेमोव्ना" उसने फर्श पर माथा
... प्रसन्नता में कहा।

बैठे हुये पूछा । वह बहुत मोटी थी और उसको खाना पर चाव से
ओं को एक हूँ और समोसार रखा जा सकता था । "अब चाची की
बातें हो रही हैं ? तुम यहाँ की मालकिन हो, अपनी आज्ञायें दो ।
यपि ये सब बदमाश मर जांय तो भी मुझे परवाह नहीं । उठो, सुअर !"
ह अधीर होकर केलेके पर चीखी । "मेरी निगाहों के सामने से दूर हो
जाओ । यह आखिरी बार मैं तुम्हें माफ कर रही हूँ । परन्तु यदि तुमने
फिर बदमाशी की तो दया की प्रार्थना मत करना !"

फिर वे लोग भोजन करने के कमरे में चोटी पीते गये । परन्तु वे अभी मुश्किल से बैठे ही थे कि नीचे वाला माला आतंकित होकर दौड़ी आई "भाग जाये !" और फिर बाहर भाग गई । उन्होंने किसी को नाक साफ करते, एक हल्की सी खाँसी और जोरों के साथ जूते घुमाने की सी आवाज करते हुये किसी के पैरों की आवाज को हॉल के पास दरवाजे पर सुना । चाची निकट तक सब स्तब्ध रहे जाने वाले हल्के अचानक और उसी से भीतर घुस कि सब चौंक पड़े । जब वे लोग आ रहे थे तो अध्यापालय से पादरी, छोटे पादरी और गिरजाघर की सम्पत्ति सम्भालने वाले अधिकारी के साथ भीतर आया । अपनी उपरनी ओढ़ कर पादरी ने और से कहा कि जब वे प्रातःकालीन प्रार्थना के लिये घन्टे बजा रहे थे तब बरफ गिर रही थी और ठंड नहीं थी । परन्तु सुबह के पहर पाला उसी से पड़ रहा था भगवान रहम कर । और अब बीस डिग्री पाला पड़ना चाहिए ।

"बहुत से लोग कहते हैं कि यद्यपि शरद ऋतु ग्रीष्म ऋतु से अधिक स्वास्थ्यवर्धक होती है, छोटे पादरी ने कहा । फिर तुरन्त उसने चेहरे की मुद्रा कठोर बना ली और पादरी के साथ गाने लगा । "हम
ब्रह्म, ओ प्रभु, हमारे प्रभु

चौरम ही महिला-चिकित्सालय का पादरी छोटे पादरी के साथ आया, फिर अस्पताल के डाक्टर और अध्यापक के बच्चे आये और उसके बाद

सपाय पंक्ति में संक्षिप्त मुस्कराहट फैल गयी। उन्होंने खाया, भोजन किया और चले गये।

बैठकी में लगभग बीस आदमी बड़े दिन की शुभकामना प्रकट करने के लिए आये। इन लोगों में शिक्षक चोरमैन मैंर्थलिक और उनके सहायक, सौचा बनाने वाले एकाउन्टेन्ट आदि थे। वे सभी नये कपड़े पहने अपनी वेशभूषा में थे। वे उनमें प्रथम श्रेणी के व्यक्ति थे जैसे कि कहा जाता था कि चुने हुये व्यक्ति। प्रत्येक अपनी कीमत जानता था—मतलब यह कि प्रत्येक जानता था कि अगर आज उसकी नौकरी छूट जाय तो काम उसे सम्मानपूर्वक दूसरी जगह मिल जायेगा। बैठकी में वे बैठे। यह स्पष्ट था कि वे मालिक को पसन्द करते थे क्योंकि उसकी उपस्थिति में संकोच-रहित होकर व्यवहार करते थे और शिष्टाचार भी बरतते थे। सब के सब बारी बारी से आये पीने के लिये इस्टर हो। सब को एकाउन्टेन्ट ने उनकी मोटी कमर में अपना हाथ डाल दिया। वे स्वतन्त्रतापूर्वक व्यवहार कर रहे थे शायद स्पष्ट इस वजह से कि धर्मसंस्थान, जो पुराने मालिकों के जमाने में बहुत अधिक शक्ति रखती थी और नौकरों के चरित्र पर उसका कड़ी निगाह रहती थी परन्तु अब उसके हाथ में इस पर में कोई भी अधिकार नहीं था, और शायद इसलिये कि उनमें से बहुत से अभी भी उस जमाने की याद करते थे, जब यानी तत्काल इस अवस्था जिसके भाई उस घर का प्रभाव रखते थे, इस समय स्त्रियों की तरह मामूली किस्म औरतों के सी पोशाक पहने हुए थी और जब सबका एलीसाबेथा व्हाइट में बदली की इमारतों के सभी तरफ मामूली सिपाही भी यहाँ प्रत्येक उस सम्पूर्णता का दर पहुँचता था।

चोरमैनों ने भोजन किया, कमरे की ओर चला एलीसाबेथा की चार बालकों के देखा। दे कि अब वह इतनी सुन्दर हो गई थी। परन्तु

[illegible]

थी बराबर उससे खाने पीने का आग्रह करती थी और उसके साथ ग्लास टकराती हुई इस समय तक 'रोदेमस्टी' शराब के दो ग्लास पी चुकी थी। चाचा एकीमोव्ना इस बात से सदैव भयभीत रहती थी कि कहीं वे उसे अपमानित, नई पैसे वाली या मोर के पंख लगाए कौवा न समझ लें, और अब जबकि पीटरसेम भोजन के चारों तरफ इकट्ठे हो रहे थे उसने यह कमरा नहीं छोड़ा बल्कि उसकी बातचीत में भाग लिया। उसने अपने कक्ष के परिचित पिमेनोव से पूछा।

"आपके कमरे में इतनी दीवार-घड़ियाँ क्यों हैं?"

"मैं घड़ियों की मरम्मत करता हूँ," उसने उत्तर दिया "जब मौका मिलता है काम करता हूँ, छुट्टियों वाले दिन या रात में, जब मुझे नींद नहीं आती तब।"

"तो अगर मेरी घड़ी खराब हो जाय तो मैं उसे ठीक कराने आपके पास ला सकती हूँ?" चाचा एकीमोव्ना ने हँसते हुए पूछा।

"निश्चय मैं बड़ी खुशी से ठीक कर दूँगा" पिमेनोव बोला और उसके चेहरे पर उस समय कोमल श्रद्धा का भाव आ गया, जब, चाचा ने स्वयं न जानते हुये कि क्यों, अपनी सुन्दर घड़ी को चेन में से खोला और उसे पकड़ा दी। उसने उसे प्रशंसा के साथ देखा और वापस लौटा दी। "सचमुच मैं खुशी के साथ इसे ठीक कर दूँगा" उसने दोहराया। "मैं अब जेबी घड़ियों की मरम्मत नहीं करता। मेरी आँखें कमजोर हैं और डाक्टरों ने महीन काम करने से मने कर दिया है। परन्तु आपके लिए मैं उनकी आज्ञा का उल्लंघन कर दूँगा।"

"डाक्टर लोग बकवास करते हैं" कृष्णपन्थ ने कहा। वे सब हँसने लगे। "उनका विश्वास मत कीजिये।" हँसी से उत्साहित होकर यह आगे कहने लगा, "पिछली साल दिसम्बर में से एक दाँत निकल कर पुराने कलर्मोजीव की खोपड़ी पर इतनी जोर से लगा कि उसमें भेजा दिखाई देने लगा। डाक्टरों ने कहा कि वह मर जायगा मगर वह जिन्दा है और आज भी काम कर रहा है उस घटना के बाद पर

सिर्फ़ [illegible] है।'

"डाक्टर [illegible] बातें करते हैं, यह ठीक है, परन्तु इससे ज्यादा नहीं" एनी ने गहरी साँस ली। "ब्योवर्न [illegible], बेचारा, उसकी किस्मत खराब रही। तुम्हारी ही तरह, वह फैक्टरी में मशीन के पास दिन-दिन भर काम किया करता था और अन्धा हो गया। आँखों की रोशनी नहीं सुधरी। परन्तु हम लोग क्या बातें कर रहे हैं?' उसकी [illegible] पर [illegible]। "आओ थोड़ी सी शराब पियो। मेरी सबसे सुन्दर रम [illegible], तुम बच्चों के साथ बड़े दिन के उत्सव में हो। मैं और किसी के भी साथ कभी नहीं पीती परन्तु तुम्हारे साथ पीती हूँ, पापिया जो हो। [illegible], [illegible] कर।'

एना एडीमोण्ड ने सोचा कि कम से [illegible] एक आश्चर्यजनक [illegible] पैसा खर्च [illegible] है परन्तु एक महँगी [illegible] के [illegible] उसके प्रति आभारी है। एना ने उसकी तरफ देखा और सोचा कि उसका व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था और उसने सुन्दर पोशाक पहन रखी थी। यह सच था कि उसके [illegible] की [illegible] काफ़ी लम्बी नहीं थी और [illegible] ऊपर पर [illegible] मालूम पड़ता था। पतलून भी काफ़ी चौड़ी और [illegible] नहीं था परन्तु उसकी [illegible] बारीकी और सुरुचि के साथ बाँधी गई थी और दूसरों की [illegible] की तरह [illegible] नहीं थी। वह एक [illegible] समाचार का आदमी लगता था क्योंकि [illegible] जाते हुए उसके [illegible] में रम पीते हुए वह [illegible] था। उसने याद किया कि कम वह कितना [illegible] और कितना [illegible] हो रहा था और इस विचार ने किसी [illegible] ढंग से प्रभावित किया।

जब वे खाना खाने की तैयारी कर रहे थे, एना एडीमोण्ड ने सिगार की तरह [illegible] दिया। [illegible] ——

की उमंग धीरे धीरे धीमी पड़ती जा रही थी। पहले ही की तरह अन्ना प्रकोफियेव्ना ने अनुभव किया कि वह सुन्दर, मधुर स्वभाव वाली और भद्र युवती है परन्तु अब उसे ऐसा लगा कि वह किसी के भी उपभोग की वस्तु नहीं है। उसे ऐसा लगा कि उसे नहीं मालूम कि उसने किसके लिए और किसलिए यह कीमती पोशाक पहनी थी और ऐसा कि युवतियों जैसे रिश्तों में हमेशा होता था वह अकेलेपन से और निरन्तर रहने वाले इस विचार से उद्विग्न हो उठी कि उसका सौन्दर्य उसका स्वास्थ्य और उसका धन केवल एक धोखा है क्योंकि अब कोई आदमी नहीं था, वह किसी के भी काम की नहीं थी और कोई भी उसे प्यार नहीं करता था। वह गुनगुनाती और खिड़कियों से बाहर देखती हुई सारे कमरों में घूमी। अन्त में एक बार वह मिशेन्का से बात करने की इच्छा को न रोक सकी।

"मैं नहीं जानती कि तुम अपने को क्या समझते हो मिशा," उसने कहा और एक गहरी सांस ली। "सचमुच, भगवान इसके लिए तुम्हें दंड दे सकता है।"

"आप का अभिप्राय क्या है?"

"तुम जानते हो कि मेरा क्या मतलब है। तुम्हारी बातों में दखल देने के लिए मुझे क्षमा करना। परन्तु ऐसा लगता है कि बुद्धिहीनता के कारण तुम अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हो। तुम स्वीकार करोगे कि अब समय आ गया है कि तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए और वह एक बहुत अच्छी और योग्य लड़की है। तुम्हें उससे अच्छी मिल कभी भी नहीं मिलेगी। वह सुन्दर, चतुर, सीधी और सच्चा प्रेम करने वाली है। और उसका रूप... । अगर वह हमारे वर्ग की या और उच्च वर्ग की होती तो लोग उसके लाल बालों के कारण ही उससे प्रेम करने लगते। उसके रंग के साथ उसके बालों का मिलाप सुन्दर मेल है। ओह मेरे भगवान! तुम कुछ भी नहीं समझते और यह भी नहीं जानते कि तुम क्या चाहते हो।" अन्ना प्रकोफियेव्ना ने

मनुष्य के साथ बदा और उसकी आँखों में आँसू चमक उठे। 'मेरी बच्ची, मैं उसके लिए दुःखी हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम्हें धनवान पति चाहिए परन्तु मैं तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं मार्था का ध्यान रखूँगी।"

मिरान्डा अपनी अवस्था में अपना आधी पता' का एक अच्छा मोटी भारी भरकम, पक्षि मात की तरह कदम रख कर चलने वाली, और किसी कारणवश, अपने कन्धों पर एक लम्बा शॉल डाले हुए भर्ती के अतिरिक्त और किसी भी रूप में नहीं रह सकती थी और प्रायः अपनी पगड़ी उस का फीता बाँधे और इधर-उधर कदमों से चलने वाली भारी थी और सबसे बुरी बात यह थी कि वह अत्यधिक भावुक थी और कभी कभी मिरेन्डा का पूरी तरह मॅह-मुख कर देती थी और यह बात, उसकी राय में, मनुष्य के लिए असन्तोष और उसकी धर्महीनता की वृद्धि में ही सहायक होने वाली चीज थी। जब श्रीमती एक्लेस्टन ने मार्था को इंग्लैंड रहने का वायदा कर दिया तो यह कुछ समय तक दिखलावा रहा। परन्तु एक बार अपनी पुत्रियों के ऊपर मुग्ध आकर्षण पहन एक गरीब विद्यार्थी, जब पुत्रीमण्डल के लिए एक पत्र लेकर आया तो मार्था का एक कर उपस्थित हो उठा था और उस समय उसने मार्था का कर्तव्य करने व पाले को रोक सका था और वह धीरे से चौथ पाई ऊपर सीढ़ियों पर चढ़े हुए मिरेन्डा ने यह रूप लिया था और उसी समय से मार्था के मुक्ति-प्रश्न का आरम्भ रखने लगा था। एक गरीब विद्यार्थी! कौन जानता है कि अगर एक चमार विद्यार्थी या एक चमार ने इस कार्यक्रम पाठ में भाग लिया होता तो परिणाम कुछ और भी हो सकता था।

"तुम शादी करना क्यों नहीं चाहती?" अन्त श्रीमती एक्लेस्टन ने

"तुम किसी और से प्रेम करते हो?"

मामोश्का चाय वालों वाली मक्खा एक ट्रे पर पत्र और विजिटिंग कार्ड रखे हुए आई। यह सोच कर कि वे उसके बारे में बातें कर रहे थे, लज्जा से उसकी आँखों में आँसू भर आए।

"धमिया आया है," वह हकलाई। "और नीचे पाकीमोव अमरक एक व्यक्ति प्रतीक्षा कर रहा है। वह कहता है कि आपने उसे आज किसी काम के लिये बुलाया था।"

"क्या बदतमीजी है!" अन्ना अकीमोव्ना ने क्रुद्ध होते हुये कहा। "मैंने उसे कोई आज्ञा नहीं दी थी। उससे कहो कि अपनी अजीब का टोकना ले जाये कहो कि मैं घर पर नहीं हूँ।"

एक घण्टी सुनाई दी। उसके बाद यह पादरी आया था। उन लोगों को हमेशा मकान के सजे हुए हिस्से में बैठाया जाता था—अर्थात यह कि ऊपरी मंजिल पर। पादरी के बाद फैक्टरी का मैनेजर नजारिच मिलने आया और उसके बाद फैक्टरी का डाक्टर, उसके बाद लिसेविच ने म्यूनिसिपल स्कूलों के इन्स्पेक्टर के आने की सूचना दी। मिलने वाले बराबर आते रहे।

जब एक क्षण को भी अवकाश मिलता तो अन्ना अकीमोव्ना ड्राइंग रूम में एक गहरी आराम-कुर्सी में धँस जाती और आँखें बन्द कर सोचने लगती कि उसका एकाकीपन एवं स्वाभाविक है क्योंकि उसने शादी नहीं की थी और न कभी करने का ही विचार है। ... "परन्तु यह उसकी गलती नहीं थी। भाग्य ने उसे नीचे वाले मजदूरों के वातावरण से बाहर निकाल फेंका था जिसमें, अगर अपनी याददाश्त पर भरोसा कर सके, वह अपने को पूर्णतः सुखी और निश्चिन्त अनुभव करती थी। इन विशाल कमरों में जिनमें वह कभी भी नहीं सोच सकी कि अपने संग क्या करे और वह नहीं समझ सकी कि उसकी आँखों के सामने होकर बराबर इतने आदमी क्यों गुजरते हैं। जो कुछ अब हो रहा था वह उसे तुच्छ व्यर्थ प्रतीत हुआ जब कि इसने उसे एक मिनट के लिए भी शान्ति नहीं दी और न ही सुख।

"अगर मैं प्रेम में पड़ सकती," उसने अंगड़ाई लेते हुए सोचा। इस बात के विचार मात्र ने ही उसके हृदय को आनन्दित कर दिया। "और अगर मैं नौकरी से छुटकारा पा सकती" " ' उसने विचार किया, यह कल्पना करते हुए कि किस प्रकार इस नौकरी की हमदर्दों, पैसों और रुपयों का बोझ उसकी आत्मा पर से उतर जायगा उसके दिमाग से दूर जायगा। " फिर उसने अपने पिता को याद किया और सोचा अगर वे और ज्यादा दिनों तक जीवित रहते तो निश्चय कर से उसकी शादी किसी मजदूर के साथ कर देते—जैसे कि निकोलाय के साथ। वे उससे शादी कर देने के लिए कहते और इस बारे में इतना ही सब कुछ होता। और यह बहुत अच्छी बात होती, फिर यह नौकरी किसी योग्य व्यक्ति के हाथों में चली जाती।

उसने निकोलाय के घुंघराले बालों वाले सिर को उसके आदमी चेहरे को, उसके कोमल स्वप्नमय होठों और शक्ति को उसके कन्धों को, उसके हाथों को उसके सीने की भयानक शक्ति को और उस कोमलता को जिसके साथ उसने उस दिन उसकी बांहों को छुआ था फिर सोचा।

"हाँ," वह बोली, "यह बिल्कुल ठीक रहेगा। मैं उससे शादी कर लूँगी।"

"अच्छा शुभकामना ' निकोलाय ने दूर से पूरे मन से गाते हुए निकोलाय ने कहा।

"तुम मुझे किसका कह रहे हो।" उसी तरह चौंकते हुए वह कह रही। 'क्या कहते हो?'

"अच्छा शुभकामना," उसने हाथों को अपने हृदय पर रखते हुए और आँखों को चढ़ाते हुए वह बोला, "आप मेरी मार्गदर्शक और पर-निर्भर हैं, और आपके अतिरिक्त मुझे और कोई भी नहीं बता सकता कि

"परन्तु कृपा कर नीचे वालों से मना कर दीजिए कि वे मुझ पर हँसें नहीं और न मेरा मजाक उड़ाएं। वे लोग ऐसा विद्रोह मुझे यहां से गुजरने ही नहीं देते।"

"वे तुम्हारा कैसे मजाक उड़ाते हैं?"

"वे मुझे माशेन्का या मिशेन्का कह कर पुकारते हैं।"

"ऊह, क्या वाहियात बात है।" माशा एफ़ीमोव्ना गुस्से में चिल्लाई। "तुम कितने नादान हो! तुम कितने मूर्ख हो? मैं तुमसे कितना परेशान हूँ। मैं तुम्हें भी नहीं देखना चाहती।"

"तुम किसी से प्रेम करते हो।"

भोजन

गत वर्ष की ही बात है, सबसे पहले मैं उससे मुलाकात करने वाले पुरुषों में विलियम एक वास्तविक विलियम आर्मस्ट्रांग, और विलियम, एक [illegible] था। जब वे आये तब तक मैं पैदा हो चुका था। विलियम, [illegible] साल का एक व्यक्ति था, जिसका मुँह चौड़ा और आँखें [illegible] मूरे [illegible] पर [illegible] के समान एक [illegible] था। वह सफेद [illegible] और 'बाबा टिकट' [illegible] पूर्णाकार पहने हुए था। वह सदा [illegible] इस [illegible] शब्दों में [illegible] हर एक पकड़े रहा और बराबर उसके [illegible] को [illegible] पर [illegible] देखता रहा। उसके [illegible] और [illegible] में [illegible] पर [illegible] से हुए [illegible] में [illegible]।

"मैं तुम्हारे चाचा का — तुम्हारे पिता का सम्मान किया करता था और मुझे उनके [illegible] का [illegible] था। अब मैं तुम्हें [illegible] समझता हूँ जैसा कि तुम देख रही हो कि उनकी [illegible] के प्रति बड़े दिल की [illegible] प्रकट करूँ। उनकी [illegible] और [illegible] हुए भी [illegible] में यहाँ आया हूँ। और मैं तुम्हें [illegible] बहुत [illegible] हूँ।"

[illegible] विलियम एक [illegible] सुन्दर [illegible] व्यक्ति था। उसकी [illegible] और [illegible] पर [illegible] थी। वह [illegible] विजय [illegible] [illegible]। वह [illegible] में [illegible] [illegible]

मैं किसी चौथे प्रकार का प्राणी हूँ और हम दोनों साथ साथ सुन्दरतम कुमारों वाले प्रदेश की ओर उड़ते चले जा रहे हैं और वहाँ अपने असीम आकाश में एकाकार हो जाते हैं। सिर्येझिच—कि—किसके ऐसे सम्बन्ध को सबसे अच्छा बताया है। उसने एक अत्यन्त सुन्दर वाक्य लिखा है एक अत्यन्त सुन्दर वाक्य ..."

सिर्येझिच ने एक नोटबुक को पलटा, फिर कुर्सी में धँसा और उस उद्धरण को न पाकर चुप होकर बैठ रहा। वे लोग मौसम, परीक्षा और ग्रीष्म की छुट्टी के आगमन के बारे में बातें करने लगे। जब पुर्कीमोव्ना ने याद किया कि गत वर्ष सिर्येझिच और उसकी पत्नी ने क्रिसमस पर उसके साथ भोजन किया था और इस समय जब वे जाने की तैयारी करने लगे तो वह पूर्ण सच्चाई के साथ यह कहते हुए उनसे प्रार्थना करने लगी कि क्योंकि उन दोनों को अब और किसी से भी मिलने नहीं जाना है इसलिए उन्हें उसके साथ भोजन करने के लिए ठहरना चाहिए। कुछ हिचकिचाहट के बाद वे राजी हो गए।

वही कुर्सियों वाले जिस रसोई में साधारण पारिवारिक भोजन के साथ जिसमें गोभी का शोरबा, दूध पीता सूअर का बच्चा, मटरों के साथ बत्तख आदि चीजें होती थीं, एक तथाकथित 'फ़्लैंक' या 'बड़े' वाली का भोजन पकाया जाता था, मगर उसकी मंजिल में किसी मेहमान को खाना खिलाया होता। जब उन्होंने भोजन-गृह में प्यालों-तश्तरियों की खनखनाहट सुनी, सिर्येझिच एक दिखाई पड़ने वाली उत्तेजना से लाल मुँह हो बैठा। ... मगर हर्ष मले ... बेचैन आँखें सिकोड़ीं और मलूक होकर सताने लगा कि पहले उनके चाचा और मित्र कैसा भोज दिया करते थे और वहाँ का रसोइया कसाई रखा जाता था वह स्वादिष्ट शोरबा बनाया करता था। वह एक शोरबा न होकर एक वास्तविक स्वर्गीय व्यञ्जन होता था। वह इस समय अपनी कल्पना में भोजन का आनन्द लिए जाता था, उसे चख रहा था और मज़ा ले रहा था। जब पुर्कीमोव्ना ने उसकी बाँह पकड़ी और भोजन-गृह की ओर

के बच्चों को उनके बाप का का एक ग्लास बनाया और मछली का एक टुकड़ा मुँह में डाल लिया। वह आनन्द से मुस्कराने लगा। यह आर से चखते हुए, पूरी तरह नाक से सांस लेते हुए चबाने लगा और उसकी आँखें नम और प्रसन्न हो उठीं।

भोजन बड़ा स्वादिष्ट था। इसमें और चीज़ों के साथ साथ सफ़ेद मक्खन में तैरते हुए कुकुरमुत्ते और एक विशेष प्रकार की चटनी थी या तले हुए कौवे और एक विशेष प्रकार की मछली के साथ तेज़ मिर्चें मिला कर बनाई गई थी। भोजन पुडिंगों वाले दिन बनने वाली अनेक किस्मों वाला और बहुत अच्छा था और उसमें भी देरी हो रही थी। मिखाइल शराब के साथ परोस रहा था। वह जब कोई नई किस्म मेज़ पर रखता और उसका चमकता हुआ ढक्कन हटाता या शराब उंडेलता, तो वह यह सारे काम एक जादूगर की सी गम्भीरता के साथ करता था। उसके चेहरे और 'कटहिया' वृक्ष के प्रारम्भिक पत्तों की तरह बढ़ते हुए उसके पैरों को देख कर वकील ने कई बार सोचा, "कैसा मूर्ख है!

मिस्टर कोर्नी के बाद विक्टोरिया ने प्याला की तरफ मुड़ते हुए कहा:

"एक सुन्दर नवयुवती—मेरा मतलब है कि जब वह दुखी और धनवान भी है—को सब स्वतन्त्र, चतुर, शिक्षित, बुद्धिमान मनस्वी और साहसी सी व्यक्ति की तरह होना चाहिए। व्यक्ति का तीखा सीमा के भीतर चाहे भी ही क्योंकि प्रिय, तुम जानती हो उसका एक साथी होता है। तुम्हें बहुत नहीं चाहिए, प्यारे मित्र, तुम्हें, दूसरों की तरह नहीं रहना चाहिए बल्कि जीवन का पूर्ण आनन्द लेना चाहिए। सुख-विलास का उपभोग का अपार जीवन का चरखा की तरह चलता बना रहा है। मदिरा के पुराने फूलों में रह कर मधुपान करो, कस्तूरी

सोमवार कहूँगा, दूसरे को मंगलवार, तीसरे को बुधवार इत्यादि जिससे हरेक को अपना दिन याद रहे।"

इस बातचीत से माशा पुलीसोव्ना परेशान हो उठी। उसने कुछ भी नहीं खाया और सिर्फ एक ग्लास शराब का पिया।

"अन्त में मुझे भी कुछ कहने दीजिए," उसने कहा, "जहाँ तक मेरा व्यक्तिगत प्रश्न है मैं प्रेम को पारिवारिक जीवन के बिना स्वीकार नहीं कर सकती। मैं एकाकिनी हूँ, अकेली जैसे कि आकाश में चाँद और वह भी कम होता हुआ चन्द्रमा और आप चाहे जो कहें, मुझे विश्वास है, मैं महसूस करती हूँ कि इस नष्ट होने की स्थिति को केवल साधारण एवं भौतिक प्रेम के द्वारा ही टाला जा सकता है। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसा प्रेम मेरे कर्तव्यों की रूपरेखा निर्धारित करेगा मेरे श्रम व्यवस्थित और जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को स्पष्ट करेगा। प्रेम के द्वारा मैं आत्मा की शान्ति और निश्चलता चाहती हूँ। मैं कस्तूरी-गन्ध, आध्यात्मिकता और एक सुन्दर बहुरूपी होने से बिलकुल भिन्न वस्तु चाहती हूँ संक्षेप में"—वह व्यग्र हो उठी— 'एक पति और बच्चे।"

"तुम शादी करना चाहती हो? अच्छा, तुम वह भी कर सकती हो," सिसेविच ने सहमति जताई। "तुम्हें सब तरह के अनुभव करने चाहिए: विवाह, ईर्ष्या और भावुकता की प्रथम मधुरता और बच्चे भी। परन्तु जल्दी करो और जीवन बिताओ—जल्दी करो, माई डियर समय निकलता जा रहा है, वह इन्तजार नहीं करेगा।"

'हाँ, मैं करूँगी और शादी कर लूँगी!' गुस्से से उसके भरे मनहूस चेहरे की तरफ देखते हुए वह बोली। "मैं बिलकुल सादे और साधारण ढंग से शादी करूँगी और प्रसन्नता से खिल उठूँगी। और, क्या आप विश्वास करेंगे कि मैं किसी मामूली मजदूर, किसी मैकेनिक या पुलिसमैन से शादी करूँगी।"

"इसमें भी कोई नुकसान नहीं है। स्वयं जोलियाना विनग्विच से प्रेम करती थी और उसके लिए इसका कोई कारण नहीं था क्योंकि

वह एक समय स्वप्न थी। हर बात तुम्हारे लिए भी सम्भव हो सकती है क्योंकि तुम एक असाधारण नारी हो। मेरी प्रिय अगर तुम एक आत्मा या एक मरद से प्रेम करना चाहती हो तो हिचकिचाना मत, किसी कीमत का दुःख मत करना। अपने को ज़िन्दगी से वंचित मत रखना। तुम्हें अपनी इच्छाओं के समान ही साहसी होना चाहिए, उनसे पीछे मत रह जाना।'

"क्या मुझे समझना इतना मुश्किल हो सकता है?" अन्ना अकीमोव्ना ने आत्मपर्याप्त होकर पूछा। उसकी आँखों में आँसू चमकने लगे। "इस बात को समझिए कि मुझे बहुत बड़ा व्यवसाय सम्हालना है, दो हज़ार मज़दूर, जिनके लिए मुझे भगवान के सामने जवाब देना होगा। वे लोग जो मेरे लिए काम करते हैं अन्धे और बहरे हो जाते हैं। इसलिए अपने बारे में मैं भयभीत हूँ, मुझे डर लगता है। मैं दुखी हूँ और आप इतने निर्दयी हैं कि मुझसे मोहब्बत की बातें करते हैं… " और मज़ाक उड़ाते हैं।' अन्ना अकीमोव्ना ने मेज पर घूँसा मारा। 'जैसी ज़िन्दगी मैं इस समय जी रही हूँ उसी तरह की ज़िन्दगी आप या मेरे ही समान किसी आलसी और पढ़ेलिखे व्यक्ति से विवाह कर लेना, पाप होगा। मैं इस तरह ज़िन्दगी नहीं जी सकती।' उसने तेज होकर कहा "नहीं जी सकती।'

"यह कितनी सुन्दर है!' लिसेविच ने मुसकुराते हुए कहा। "मेरे भगवान, यह कितनी सुन्दर है! परन्तु तुम नाराज़ क्यों हो मेरी प्रिय? सम्भव है मैं गलत होऊँ, परन्तु क्या तुम यह नहीं सोचती कि अगर, उन विचारों के लिए जिनके प्रति मेरी बहुत श्रद्धा है, तुम जीवन के सुखों को त्याग दो और एक नीरस जीवन बिताओ, तुम्हारे मज़दूर क्या इससे तुम्हारी कोई भलाई [illegible] हैं।

अन्ना पुर्वीमोव्ना खुश थी कि उसने सब बातें कह दी थीं और वह उत्साहित हो उठी। वह सन्तुष्ट थी कि उसने इतनी अच्छी तरह कहा था और उसके विचार इतने अच्छे और उचित थे और उसे पूर्ण विश्वास था कि उदाहरण के लिए मान लो, पिमेनोव उससे प्रेम करता हो तो वह खुशी के साथ उससे विवाह कर लेगी।

मिलोव्स्की ने शैम्पेन डालनी शुरू कर दी।

"आप मुझे नाराज कर रहे हैं मिस्टर पिमेनोव," अंगीठी के ताप के साथ सांस टकराते हुए वह बोली। "मुझे ऐसा लगता है कि आप समझ रहे हैं और खुद जिन्दगी के बारे में कुछ भी नहीं जानते। उसके हिसाब से, अगर कोई व्यक्ति सैद्धान्तिक या सूक्ष्मदर्शी हो तो उसे एक किसान और एक मूर्ख होना ही चाहिए! मगर वे लोग सबसे चतुर होते हैं! असामान्य व्यक्ति।"

"तुम्हारे बाप्पा और सिव... मैं उन्हें जानता था और उनका सम्मान करता था" पिमेनोव बोला और एक के लिए रुकते हुए (वह एक खम्भे की तरह सीधा बैठा हुआ था और पूरे समय तक सब समझकर बोलता रहा था), "काफी सूझबूझ वाले व्यक्ति थे आप ... ऊँची आध्यात्मिक शक्तियों वाले।"

"ओह" बेशक, हम उनकी विशेषताओं के विषय में सब जानते हैं," अंगीठी बड़बड़ाया और सिगार पीने की इजाजत मांगी।

जब भोजन समाप्त हो गया तो पिमेनोव एक कसकी जैसे बना गया। पिमेनोव ने अपनी सिगार समाप्त की और एक गुड दोहर कर दिया। दीवारों पर दर्द और कोने से होते हुए साधारण जोड़ और पिमेनोव उठ गया। दीवारों पर दर्द और कोने से होते हुए सामान्य कौन और पिमेनोव के पीछे अन्ना पुर्वीमोव्ना के पीछे-पीछे अध्ययन कक्ष में चला गया। दीवारों पर दर्द और कोने लगे हुए, सामान्य शोध और गुलाबी कागज़ों उठ ... के पुत्र के पाषोलीय लटकी हुई पेंटिंगों या गुलाबी कागज़ों पसन्द नहीं थी क्योंकि वे अर्थपूर्ण और इम्प्रेशनिस्ट ढंग से मन्द प्रेम कथाओं की कहती थीं, साथ ही इन कागज़ों के भाग उसके कुछ प्रेम कथाओं की मूर्तियां लगी हुई थीं जिन पर मन का आश्रय था। अन्ना पुर्वीमोव्ना

की ऊँची दीवारें और पर्वत मण्डप घोंसर उसे आत्मिक आनन्द प्रदान करता था। उसके लिए एक बढ़िया दीवान पर बैठ कर पता पूर्व-सामान की तरफ़ देखना बड़ा आनन्दप्रद और सुखकर लगता था, जो अवसर पर थोड़ी के सामने मचीन पर अपने मुन्ना को दोनों हाथों में थामे पास में इतनी और कुछ सावली हुई बैठी रहती थी और ऐसे अवसरों पर वकील को ऐसा लगता मानो उसका विश्वासी धर्म में विश्वास रखने वाला रक्त उसकी नसों में गहरे पैठ हो गया है।

हर बार भोजन के बाद जब कॉफ़ी और शराब आती तो वह सिगार पीता और अनेक मोटी भारी सर्वहितैषिक आदर्शें सुनाने लगता। वह आत्मप्रद रूप से और असम्मति होकर बोलता और अपनी ही कही हुई दार्शनिकताओं से प्रभावित हो उठता। वह उसकी बातें सुनती और हर बार सोचती कि ऐसे मनोरंजन के लिए बारह हज़ार ही नहीं बल्कि उसकी तिगुनी रकम देना भी उचित होगा और उसकी उन बातों को भूल जाना भी उचित होगा जिन्हें वह नापसन्द करती थी। कभी कभी वह उस कहानी या उपन्यास की कथा या उसका पाठ होता सुनता और दो या तीन घण्टे एक मिनट की तरह समझने ही गुज़र जाते। इस उसने बड़ा प्रसन्न होकर आँखें बन्द कर, मिले हुए आवाज़ में शुरू किया।

"कुछ बीत गए, मार्के प्रिय, जब से कि किसी कुछ पढ़ा हो।" वह आग जब सभा ने उससे कुछ सुनाने के लिए कहा। "यद्यपि मैं कभी ज़्यादा कर्म यात्रा रहता हूँ।"

"मैं सम्भीर पर रही थी कि आप कुछ नई बात सुनायेंगे।"

"हूँ!— नई" विचलित सम्भीरता सा बड़बड़ाया और आगे व और भी पीछे हट कर बैठ गया "कोई भी नया साहित्य, मेरा सुधार किसी भी काम का नहीं है। केवल यह लिए था व है और इसको सम्भवतः न इस का अर्थ है कि इस—सवाल इतना कि वस्तुओं

मान्यता न देता और मैं इसे मान्यता देता हूँ परन्तु ...” ऐसा लगा कि किसेलिच सो गया। परन्तु एक मिनट बाद फिर उसकी आवाज सुनाई पड़ी। “सारा नया साहित्य चिमनी में घुमड़ती हुई हेमन्त ऋतु की वायु के समान क्लान्त और नीरस है। “आह दुःखी बेचारा! आह, तुम्हारी जिन्दगी कैद की सी जिन्दगी है! आह, तुम्हारी जेल जैसी नम और अँधेरी है! आह, यह सच है कि तुम बर्बाद हो जाओगे, और तुम्हारे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है। यह बहुत अच्छा है परन्तु मैं ऐसे साहित्य को अधिक पसन्द करूँगा जो हमें यह बताए कि कैदखाने से कैसे भागा जा सकता है। सारे समकालीन लेखकों में सिर्फ मैं ही मोपासाँ को पसन्द करता हूँ।” किसेलिच ने आँखें खोल दीं।

“एक सुन्दर लेखक एक गम्भीर लेखक!” किसेलिच अपनी नाक से हिला। “एक अद्भुत कलाकार! एक भयंकर, विलक्षण, दैवी कलाकार!” किसेलिच सोफे पर से उठ खड़ा हुआ और अपना दाहिना हाथ उठाया। “मोपासाँ!” उसने आनन्दमग्न होकर कहा। “माईडियर, मोपासाँ को पढ़ो! उसका एक पृष्ठ तुम्हें दुनियाँ की सारी दौलत से भी अधिक देगा। प्रत्येक पंक्ति एक नया क्षितिज है। कोमलतम मार्मिक प्रवृत्तियाँ शक्तिशाली भावनाओं में बदल जाती हैं, तुम्हारी आत्मा मानो चालीस हजार वायुमंडलों के बोझ से दबी हुई एक अवर्णनीय गुलाबी रंग की किसी बहुत बड़ी वस्तु के एक नगण्य तुच्छ पारे स कण में बदल जाती है, जिस में सोचता हूँ, अगर कोई अपनी जबान पर रखे तो एक तीखा, आनन्दपूर्ण स्वाद लगे। परिवर्तनों की, उद्देश्यों की, संगीत की कैसी तीव्रता! तुम शान्तिपूर्वक लिली और गुलाब के फूलों पर आराम कर रही हो और अचानक एक विचार—एक भयानक, उग्र चमकती भावना—एक रेल के इंजन की तरह तुम्हारे ऊपर तभी से चढ़ आता है और तुम्हें अपनी गरम भाप में नहला देता है और अपनी सीटी से तुम्हें बहरा बना देता है। मोपासाँ पढ़ो, प्यारी लड़की, मैं इस पर जोर देता हूँ।”

खिड़कियों में उसने हाथ हिलाए और अत्यधिक उत्तेजित होकर एक कोने से दूसरे कोने तक टहलने लगा।

"हाँ, यह आश्चर्यजनक है," उसने ओल्गा की मानो शिकायत करते हुए कहा हो, "इसकी अन्तिम पंक्ति ने मुझे आन्दोलित कर दिया मस्त बना दिया! परन्तु मुझे भय है कि तुम इसकी परवाह नहीं करोगी। इसके प्रकाशित होने के फिर तुम्हें इसका सार देना होगा, प्रत्येक पंक्ति को धीरे धीरे स्पष्टतापूर्वक करना होगा, उसे भावुक मन करना होगा।... तुम्हें इसका भावुक मन करना होगा।..."

एक लम्बी भूमिका के बाद, जिसमें अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया जैसे ढेर [illegible] सुख अत्यन्त कोमल स्वानुभूतियों का अन्त, रहस्य अन्धकार, स्वर्गिक आदि, उसने [illegible] उपन्यास की कथा कहनी शुरू की। उसने कहानी इतनी क्रमबद्ध के साथ नहीं सुनाई, परन्तु उसे सूक्ष्मतम विवरणों के साथ, स्मृति द्वारा उसके सम्पूर्ण विवरणों और घटनाओं का उल्लेख कर दुहराया। उपन्यास के पात्रों में उसने तन्मय कर दिया और उनका वर्णन करने में उसने ऊँची उड़ानें भरीं, और एक चतुर अभिनेता की तरह अपने स्वर के माधुर्य और स्वर को बदला। कभी वह एक गहरी आवाज में आनन्द से हँस उठता और दूसरे ही क्षण, एक मीठी सी बजाता हुआ अपने हाथ बाँध लेता और ऐसे भाव के साथ अपना सिर को थाम लेता जिससे ऐसा प्रकट होता जब कि वह पढ़ रहा था। यद्यपि पूर्णतया मर्माहत होकर [illegible] रही थी कि वह इस उपन्यास को पढ़ने ही वाली थी और उस [illegible] के शब्दों में यह इस और भी अधिक अच्छा और दिलचस्प लगा जितना कि पुस्तक पढ़ने में लगा था। उसने उसका ध्यान अनेक विलक्षणताओं की ओर आकर्षित किया और कल्पनाएँ भावनाओं और गम्भीर विचारों पर बल दिया परन्तु [illegible] उसमें ध्यान जीवन, जीवन, जीवन और [illegible] का रूप पाया यह सब [illegible] ही। [illegible]

इन सबको छुए सोचने लगी कि वह ऐसा ही जीवन नहीं बिता सकती कि एक दयनीय जीवन व्यतीत करने की कोई जरूरत नहीं है जब कि कोई सुन्दर जीवन बिता सकता है। उसने भोजन के समय कहे अपने शब्दों और विचारों को याद किया और उन पर उसे गर्व हुआ। और जब सिमेनोव अचानक उसकी कल्पना में आ खड़ा हुआ तो उसने सुख का अनुभव किया और लालायित हो उठी कि सिमनोव उसे प्रेम करे।

जब स्वामी खत्म कर ली तो सिमेनोव मस्त होकर सोफे पर बैठ गया।

"तुम कितनी श्रेष्ठ हो। कितनी सुन्दर!" कुछ देर बाद उसने कहना प्रारम्भ किया धीमी आवाज में मानो बीमार हो। "मैं तुम्हारे पास गुजरी हूँ, प्यारी लड़की, परन्तु मैं तीस की अपनी अवस्था का क्यों हूँ। तुम्हारी और मेरी रुचियाँ आपस में भिन्न हैं तुम्हें विचारनी होगी और मैं उस अवस्था को बहुत पीछे छोड़ आया हूँ और अब चाहिए और मैं ऐसा प्रेम चाहता हूँ जो सूर्यकिरण के समान कोमल और सूक्ष्म हो— मतलब यह कि तुम्हारी अवस्था वाली स्त्री के लिए मेरा कोई भी सांसारिक उपयोग नहीं है।"

उसके अपने ही शब्दों में वह तुर्गनेव को कुमारिका के प्रेम और पवित्रता को और सत्य के प्राकृतिक रूपों की उदासीनता के अमर गायक तुर्गनेव को प्यार करता था। परन्तु वह कुमारिका के प्रेम को प्यार करता था, अनुभव के कारण नहीं बल्कि दुनियाँ के कहने के कारण, कि यह प्रेम अमूर्त और अलौकिक जगत के परे होता है। तब उसने स्वयं को विश्वास दिलाया कि वह सच्चा धर्मात्मा व आध्यात्मिक, आदर्शवादी प्रेम करता था, यद्यपि उसे यह नहीं मालूम था कि इन शब्दों का अर्थ क्या होता है। परन्तु वह सुखी आनन्दित और उत्तम का अनुभव करता था। अपना धर्मात्मा उस मधुर और नवीन मर्यादा रानी भी और वह कल्पना करता था कि इस वातावरण में उसके हृदय में उत्पन्न होने वाली आत्मसमर्पी भावना ही आदर्शवादी प्रेम कहलाती है।

उसने माँ के हाथ पर अपना हाथ रख दिया और प्रेम सार में
या भावना बच्चों को पहचाने के लिए सौभाग्य होता है बोला।

"मेरे रत्न तुमने मुझे इतना क्यों दिया है।
केवल ! बस !'

"मुझे तुमसे बड़े दिन का कोई उपहार नहीं मिला।"

माँ एलेमोव्ना ने कभी सुना था कि उन लोगों की तरफ से
जब बरीस को कभी कोई बड़े दिन का उपहार भेजा गया था और जब
उसको समझ में नहीं आता कि उसे छिपाना है। परन्तु उस चुप को एक
ही हाथ क्योंकि वह इसकी उम्मीद कर रहा था यद्यपि वह उसकी तरफ
में मार्मिक दृष्टि से देख रहा था।

"मेरा ख्याल है कि मजाक़िया ढंग से पूछ गया, वह बोली,
"परन्तु अभी ज्यादा देर नहीं हुई है।

अचानक उस मन प्यार माँ का ध्यान आ गया जो उसे कल
मिले थे और जो इस समय उसके ... के गार मकान में रखने पड़े
हुए थे। और अब वह उस पुलिन्दा घर ले आई और बरीस को दे दिया
और उसने उस भावनापूर्ण भावना के साथ जेब में रख लिया, था अभी
परमा मार्मिक और स्वाभाविक ढंग से पर गए। अचानक बड़े दिन के
उपहार की याद दिलाया और न उनकी विशेष की प्रकृति के विपरीत
था।

'देखा' वह बोला और उसको उस गयी चूम ली।
विजय समय और उसकी देखा लिए परन्तु बिना कमाई के
... ।

विशेष और वह चुप रह और डरा और डरने के साथ का एक
लिया और जान के लिए तैयार होने लगे। माँ एलेमोव्ना जान
रही। यह बिलकुल भूल गई थी कि विशेष दिन मास्क
काम था और यह कि उस देता एक ...एक था नहीं, और
रहा है था अभी ह है था बार में बिगड़े में एक कर देख ह।

"वह यहीं काम करता है।" वह विशेष से पूछा।
मालूम अच्छा होगा" विशेष ने अपने देख हुए कहा।

चचा ने सोचा कि अगर फ़िलिप उसके लिए और चाचा के पास आता होता और उसका सम्मान करता होता तो शायद यह बेमतलब नहीं होता। स्पष्टतः वह उनके मकसद पर पानी फेरता होगा, किसी तरह बैंक वाली संस्था में काम करते हुए। जब उसने विदा की नमस्कार की तो चुपचाप तीन सौ रूबल उसके हाथ में पकड़ा दिये। वह चौंक सा पड़ा और क्षण भर उनकी तरफ़ चुपचाप अपनी आँख की सी पलकों से देखता रह गया परन्तु फिर ऐसा लगा कि समझ गया हो और बोला:

“सम्माननीया चचा एकीमोव्ना, इसकी रसीद तुम्हें केवल अगले आठवें दिन ही मिलेगी।”

फ़िलिप पूरी तरह उत्तेजित हो उठा था और जब सियाल्का ने उसका ओवर कोट पहनाया तो लड़खड़ा उठा।

जब वह सीढ़ियों से नीचे उतरा तो ऐसा लग रहा था जैसे कि पूरी तरह मग्न हुआ हो और यह स्पष्ट था कि जैसे ही वह स्लेज में बैठेगा सो जायगा।

“ओर एकीमोव्ना,” सीढ़ियों के बीच में रुकते हुए उसने धीमे मरे स्वर में फ़िलिप से कहा, “कभी आपने यह अनुभव किया है कि कई बार ... आपको ..., ... पीछे छिप आ रही हो। आप ... ... छिप गये हो और एक अत्यन्त सुन्दर संसार में पहुँच गए हो। ... रूप से यह एक विचित्र आनन्दमयी भावना द्वारा व्यक्त होता है जिसकी किसी से भी तुलना करना असम्भव है।”

चचा एकीमोव्ना ने सीढ़ियों के ऊपर खड़े हुए उन दोनों द्वारा फ़िलिप का एक-एक शब्द सुन लिए जाते हुए देखा।

“गुड बाई! फिर आइये!” उसने उनसे कहा और अपने कमरे कक्ष में लौट गई।

उसने चुपचाप अपनी पोशाक उतार कर फेंक दी जिससे वह पहले से ही थक रही थी, एक नृत्य-सम्बन्धी पत्रिका और हाथ ... ली और साथ ही साथ उसने वह एक सूखी पत्थर की तरह ठंडी और अपने पैर दबा दी। बड़ा ... के लिए ... रहा थी।

४.

संध्या

एक शीत ऋतु का [illegible] पहले काकी [illegible] आरामकुर्सी और दो और कुर्सियाँ [illegible] वाले कमरे में बैठी हुई [illegible] रही थीं। [illegible] का एक बड़ा टुकड़ा, एक [illegible] और अनेक स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ उनके सामने मेज पर रखे हुए थे और कमरे में से आग के [illegible] से उठ रहे थे और जो सब [illegible] और सुगन्धि को प्रवाहित करते जा रहे थे। खिड़की [illegible] पर [illegible] पड़ी थी परन्तु वे लोग [illegible] की [illegible] और पर थे। [illegible] मिला कर [illegible] थे। [illegible] को साड़ी, सफेद [illegible] एक [illegible] दोनों [illegible] दो कुर्सियों से पाँव पर रही थी और नीचे [illegible] एक [illegible] जिसके बालों में [illegible] बंधा हुआ था, [illegible] रही थी। [illegible] इन दिनों को [illegible] इसलिए [illegible] जबरदस्ती [illegible] रही थी—[illegible] पालन कर रही हों।

"[illegible] मेरी बच्ची!" काकी ने [illegible] "[illegible]" [illegible] कमरे में आई और उसकी [illegible] बैठ गई। "मैं तो [illegible] मार मर गई।"

[illegible] और [illegible]। [illegible] कि [illegible] है और [illegible] कोई [illegible] नहीं रहा है और भी [illegible]

उससे जवाब तलब किया जायगा। सिर्फ ये दोनों युवतियाँ आश्चर्य से कभी फ़ीमोत्स्या की तरफ़ तिरछी निगाह से देख रही थीं। वह गुनगुना रही थी जब कि भोजन की मेज़ पर बैठ कर गाना, गाना चाप था।

"हमारी मालकिन, हमारा सौन्दर्य, हमारी तस्वीर," व्याकि पूरका मधुर स्वर में गा उठी। हमारा कीमती रत्न। वे खाना पी चोम, खा साज हमारी रानी को दफ़न साप हैं। भगवान हमारे ऊपर रहम करे। जनरल अफ़सर और सज्जन पुरुष में बराबर खिड़की में स एकती रही और निमती रही, निमती रही और कान में पक कर रख कर दिया।"

"मैं चाहती थी कि य लोग कहीं न जायें।" चाची बाली, उदास होकर अपनी भतीजी की तरफ़ देखा और आगे कहने लगी। "मैं लाग सिर्फ़ मेरी बेचारी लड़की का वक्त बर्बाद करते हैं।"

अब फ़ीमोत्स्या भूखी था क्योंकि उसने सुबह से कुछ भी नहीं खाया था। उन्होंने उसे कुछ नहीं तीखी शराब दी। उसने उस पी लिया और सरसों के साथ नमकीन गोश्त खाया और समझा कि वह बहुत स्वादिष्ट है। फिर पीछे वाली मछली दी सब का स्वाद और गुलाबी कार्य। और ये चीज़ें भी उसे अच्छी लगीं। सिर्फ़ एक चीज़ ऐसी थी जो उस पसन्द नहीं आई। ह्रदों क स्वाद से गर्म हवा का झोंका आ रहा था। वह इतना नज़दीक था कि उसका दम घुट रहा था और खाना उसे ला रहे थे और सिगार क

नेपकिन समाप्त होने क बाद कमरा ठंडा किया गया और सिगार व सिक्कुर, चाकलेट और क्रिसमिस की प्लेट लाई गई।

'तुम भी बैठ जाओ ...यहाँ एक दम का असर नहीं।" चाची ने रसोईदारिन से कहा।

फ़्योदोस्यूरना न गहरी सांस ली और मज़ पर बैठ गई। मानो फ़ीमोत्स्या ने उसके सामने भी शराब का ग्लास रख दिया और कहा, ... सिगरेट महसूस करने लगी कि मानो फ़्योदोस्यूरना की सफ़ेद गर्दन में से ... की तरह गर्मी निकल रही थी। वे सब य बातें कर रही थीं कि चाय

कठ मार्ग कभी कितना मुश्किल हो गया है और कह रही थी कि पुराने ज़माने में, मगर इन खूबसूरती की तरफ ध्यान नहीं देते थे तो पंडा देखते थे परन्तु अब तो यहाँ तक नहीं जानता था कि वे कार्विंग करते रहे हैं। और जबकि कुन्ती और चंपा सूखी मोमबत्तियाँ बनने के लिए पारदर्शी जगह करती थी। मामाजी इन गुम्बज़ और मालदारों से भी प्यारा नहीं करते। मामी ने इसमें गजब बरबादी मचाई और कहा कि मन्दिर को भगवान का डर नहीं रहा है परन्तु उस बचपन पर माना कि इनके दुर्भाग्य समस्त भक्तों और पापात्मा—दोनों को अधिक ज्ञान मिलने वाले—भगवान के दर्शन के प्यार साथ ही उनके पुरखा रखते हुए थे और उन्हें धर्मशाला में भेज दिया जाता था। वह मामी हाकर दौड़ गई और पार्वती के विषय का वर्णन किया और उन्हें प्रसन्न एक प्रेमी के विषय में बताया जिसने एक बार उससे शादी करनी चाही थी। वह एक मजदूर था और वह उसे कितना प्यार करती थी परन्तु उसके माँ-बाप ने उसे मूर्तियों पर चित्रकारी करने वाले एक बूढ़े पेन्टर से शादी करने को मजबूर कर दिया था जो भगवान का पुजारी है तो पागल हो मर गया। सीध कभी मन्दा था मन पर बैठ गई और रहस्यमय ढंग से उन्हें बताया कि निश्चय एक दिन मैं कोई अपनी अपनी जिसकी मूर्ति बनी है, पश्चात्ताप करता रहा वह पहन हर रोज़ सुबह घर में दिखाई पड़ता था। वह बोलता था कि खिड़कियों की तरफ घूमता रहता था और उसने कभी दुनियाँ तक नहीं देखा था। वह बच्चा बहुत अच्छा और सुन्दर था।

इस सम्पूर्ण वार्तालाप ने चपला पर्वतात्मा का एक-एक विचार करने के लिए आकर्षित कर दिया। वह उसी बार, पंडित होकर आकर्षित हो उठा। उसने अनुभव किया मानो वह अपनी आँखों खिन्न और व्याकुल थी जबकि इस बात को जानने के लिए वह सच्ची थी कि उसने भविष्य पर एक ऐसा आदर्श है जो उसने स्वयं उत्तर

[illegible]

विरोध में तड़प रहा है और इस प्रकार की वाग्मीयता से, जो इतनी आत्मसंयम और सहनशील है, उसकी आत्मा को उद्वेलित कर दिया। और यौवन और स्वास्थ्य की भावना से उसे अभी तसल्ली हुई और बढ़ आया कि जीवन की सच्ची कविता समझ नहीं हुई है परिक धर्मा माने वाली है और उसने इस बात का विश्वास कर लिया, और अपनी कुर्सी में पीछे की तरफ झुक कर (ऐसा करने में उसके बाल पीछे बिखर गए) वह हँसने लगी और उसकी तरफ देख कर दूसरी स्त्री भी हँसने लगी। और बहुत देर बाद खाना खाने वाले कमरे की वह मिली जुली हँसी बन्द हुई।

उसे सूचना दी गई कि कमरे वाली नर्स आ गई थी। यह एक दीर्घकालिक औरत थी जिसका नाम पापा या स्पिरिदोनोव्ना था—एकान्त नर्स की एक दुबली पतली औरत, सफेद एप्रन के साथ एक काली पोशाक पहने उस आँखें, सीधी नाक और कोमल ठोडी वाली। उसकी आँखें पूर्ण और निर्भीक थीं और वह इस तरह देखती थी मानो किसी की आत्मा तक की बातें पढ़ रही हो। उसके हाथों को गायक दिव्य की तरह थी। उसके सहनशीलता और सहज अन्तर्मन वाली आदत की वजह से वह कमरे वाली नर्स के नाम से मशहूर हो गई थी।

बिना किसी की तरफ देखे हुए, धीमा कदम चल कमरे में जाकर वह पवित्र मूर्तियों की तरफ मुड़ी और ऊँची आवाज में गाने लगी। 'हम पवित्र पाप्स' फिर उसने गाया "कुमारी आज तुम को जन्म दिया है," फिर, 'मसीह पैदा हुआ" फिर वह मुड़ी और सब पर एक भेदक दृष्टि डाली।

"धन्यवाद तुम्हारा बड़ा प्रिय" उसने कहा और बाबा एलीसावेत्ता को कन्धे पर चूमा।' मैं सिर्फ यही कह सकी, आप दोनों के लिये मिले इतना ही कह सकी, मर मेहरबान होइये।" उसने तुम्हारा को कन्धे पर चूमा। 'मुझे तुम्हारे पास सुबह ही आना चाहिए था परन्तु मैं रास्ते में बड़े पादरियों के यहाँ प्रणाम करने गयी। ' अच्छे, स्पिरिदोनव्ना,

करता ।" उन्होंने कहा और मुझे वहीं नहीं मालूम पड़ा कि आप इतने थका थी ।

चूँकि वह मारत नहीं चलती थी इसलिए उन्होंने उस मपकी और माता पान का ता । वह उन कार्यों की तरफ प्यार कुमार उनकी हुई चली रही और बार का के थाम गलम लिए । तब वह था पुरी पर उसने एक मार्शल मस् और पता पुरोमोथा के चरणों पर झुक गई ।

उन्होंने 'रामायणी' का एक तक उसका टूक कर दिया जैसे कि ने पारम्भ और उसमें भी पाया गई थका था । सारी मन्त्रियों मन मन बचे मौसम उस समय दरवाजों पर इकट्ठे हो गए । पूर्णमात्मा के मन था कि उसने मिलेगा था एक था हो पार किमान गई और लोगों ने अनुभव एक दिन म मुस्कान हुए । पहले राम मन बाजी वह मन बाली थी और बन्ना न सिपाही के रूप में उसकी कल्पना की और उसके बार राजा बनी और प्रजा न्याय मां किमान कि इस पर मन प्रसन्न पार मार्गनिर्देश राजकुमार बना पार प्रसन्नता से गिर उठा । सिर और पर एक दूसरा तेज हान पाय जिसमें सारी समस्यायें पार दिन मात्र देवात्मा बना था रहा थी । इसलिए की कर इस तेज के फिर उड़ाया गया था । उसका चेहरा हमेशा और उसीका रहता था ।

[illegible]

[illegible]

पूर्णात्मा ने कहा, "परन्तु मेरा मन में नहीं पाया कि ...वन हट कर रही हा।"

"मुझे स्नेहन न कर मा... किया ... ।"

"क्या हो मालूम है कि तुमने कुमारी रहने की कसम खा रखी है!" कस्तानी बरें पूछती रही मानो उसने जाना की बात हो व सुनी हो। 'यह अच्छी बात है।...कुमारी रहो।" उसने डारकी अँधे होंठ के साथ अपने बच्चों की तरह दबाते हुए कहा। "अच्छी बात है, मर्द स्थिर रहो। हाँ वे कुमारियाँ के धार्मिक कुमारियों सभी एक सी नहीं हैं।" उसने गहरी सांस ली और राजा का अभिनय किया, "नहीं, मेरी बच्ची वे सब एक सी नहीं हैं। कुछ सचमुच अपने को पादरियों की तरह रखती हैं और उनके मुख में मक्खन भी नहीं पिघलता, और अगर ऐसी कोई कभी मोड़ में पड़कर पाप कर बैठती है तो चिन्ता के मारे मर जाती है बेचारी। इसलिये उसकी बुराई करना पाप है। जब कि दूसरी काफी चालाक रहेंगी और अपने कमरे ढीली रहेंगी और फिर भी अवसर के वशीभूत होकर अमीर युवकों से प्रेम करती फिरेंगी। हाँ हाँ—ओ मेरी प्यारी चिड़ियाओ, कोई पवित्र किसी बूढ़े को गुलाम बना लेगी और उस पर हुकूमत चलाती रहेगी, मेरी बच्चियो, उस पर हुकूमत करेगी। और उसका दिमाग फिर देगी, और जब काफी पैसा और दौलत की किश्तें इकट्ठा कर लेगी तो उसे अपने भाग्य में मार डालेगी।"

इन इशारों के जवाब में वर्जीनिया के लिये एक गहरी सांस की और पवित्र मूर्तियों की याद हुआ। उसके चेहरे पर इसाइयत की छाया का भाव था।

"मैं ऐसी एक औरत को जानती हूँ, अपनी समझ भरी बुराइयों को" कस्तानी बरें चारों ओर सतर्क नज़र फिराती हुई कहने लगी "वह हमेशा गहरी आँखों से किया करती है और पवित्र मूर्तियों की तरह रहा करती है, सुना। जब वह एक धनी बूढ़े के घर में अपना हुकूमत चलाती थी तब अगर कोई उसके पास आता था तो वह एक टुकड़ा पकड़ा देती थी और पवित्र मूर्ति के सम्मुख झुक कर मखमल कपड़ा और माला थी गाई, पाप करने पर तू एक कुमारी को नष्ट रहा है!" पुड़ियाँ पाते दिन वह किसी का सगाती और काम

पने बचे दिनों में वह किसी को इनके लिए चंदाते। परन्तु आजकल मैं इस दृश्य पुत्र रही हैं। मैं किसकी चाहुंगी उसका पुत्र होऊंगी, मेरी रान!"

मार्गरिटा ने फिर पवित्र मूर्तियों की तरफ देखा और अपने ऊपर क्रास का निशान बनाया।

"परन्तु मुझे कोई रहीमर ही नहीं करना सिवाय इन्तमान," रात रखने के लिए धाय एलिसावेटा ने "क्या किया जाय!"

"यह तुम्हारा प्राप्य राम है। तुम बहुत ज्यादा दी जिसे बातों की प्रतीक्षा में हो परन्तु तुम्हें अपना ही भले के लिए स्वयं से, कर स्वामी से विवाह कर लेना चाहिए।"

"हमें स्वामी नहीं चाहिये" उसने व्याकुल होकर कह दी। "माँ की रानी हमारी रहा कर। एक अभिनन्दन तुम्हारा रखे को दर्द करना परन्तु आप ही वह तुम्हारा पार्थ्यकाल का वचन करेगा, नम्रो सी पूजा। मन एक स्वामी रखना स्वीकार रहा कि अपने ही घर में तुम्हें मालिन नहीं मिलेगी। तुम उस पुत्र का आदर्श रहोगी और वह अपना पना निमन्त्र रहेगा और जब तुम उन्हें साथ खाना खाने बैठोगी, वह दर किनारे पर होगा ... पर तुम्हारा पराया रहा है मगर था। वह अभिनन्दन न जाने क्या।'

वे सब जान से एक दूसरे का मुख देखा रहे करते कांपने लगी और सी। वे मेज पर आवाज करती हुई उससे से अलग होकर जाओ।

"हम स्वामी का मंजूर नहीं करेंगे नहीं मंजूर करेंगे। अगर तुम मेरे शादी करोगी तो मैं मनीस्तान में चली जाऊंगी।"

"ह! ह!-- हुंह!" उसकी मां चिल्लाई जब सब दूर हो अपने एक पत्र निकालो और बोला: तुम जानती हो, मग्नूरम, ... कहा। तुम पर्वत और बहार का पता ... अधिक हो, नी नहीं पर ..., यह ठीक नहीं ... कि तुम उचित

तक कुमारी रही। मैं तुम्हारे लिये एक मामूली कुछ सा आदमी ढूँढ दूँगी। तुम दिखाने के लिये उससे शादी कर लेना और फिर कुछ वर्ष देखना, रानी। तुम उसको पांच या दस हजार दे देना और जहाँ से वह आया वहीं वापस कर देना और फिर तुम अपने घर की मालकिन हमा–तुम जिससे चाहोगी उससे प्रेम कर सकोगी और तुमसे कोई कुछ भी नहीं कह सकेगा। और तब तुम अपने मन की किसी आदमियों से प्रेम कर सकोगी। तुम्हारा समय मजे में कटेगा।" कटयानी बर्ग ने अपनी उँगलियाँ चटकाईं और सीटी बजाई।

"यह पाप है," सुषा ने कहा।

"ओह पाप!" कटयानी बर्ग हँसी, "तुम भी विचित्र हो, समझती हो। किसी का गला काटना या एक बुड्ढे पर जादू करना—यह पाप है, यह सच है मगर किसी खूबसूरत दोस्त से मुहब्बत करना पाप नहीं है। और फिर इसमें ऐसी बात ही क्या है। इसमें बिल्कुल भी पाप नहीं है। बुढ़िया तीर्थ यात्रियों ने सीधे सादे लोगों को डराने के लिए यह सब गढ़ लिया है। मैं भी हर जगह यही कहती हूँ कि यह पाप है मैं खुद नहीं जानती कि यह पाप क्यों है।" कटयानी बर्ग ने अपना गिलास खतम किया और खखारा। "खुशकर रहो, मेरी सुन्दरी" इस बार साफ रूप से अपने को सम्बोधित करते हुए कहा "तीस साल तक दुखाओ, मन पाप के बताया और कुछ भी नहीं सोचा और डरती रही मगर अब मैं देखती हूँ कि मैंने अपना वक्त बर्बाद किया मैंने एक बेवकूफ की तरह उसे बिल्कुल जाने दिया। आह मैं कितनी मूर्ख रही।" उसने आह भरी। "एक औरत का समय थोड़ा होता है और हर दिन कीमती है। तुम सुन्दर हो, खूबसूरत और बहुत पैसे वाली मगर तीस ही पैंतीस या चालीस तक पहुँची कि समय निकल जायगा। किसी की बात मत सुनो मेरी बच्ची, जिन्दगी बिताओ, मौज कर लो जब तक कि चालीस की न हो जाओ और तब तुम्हें प्रायश्चित करने के लिए समय मिलेगा, बहुत समय मिलेगा जिसमें तुम अपना उपवास रखना और प्रार्थना करना।

भगवान के लिये एक मोमबत्ती और शैतान के लिये एक धागा इसमने का सीखा। तुम दोनों काम एक साथ कर सकता हो। क्यो कैसा रहेगा? तुम किसी मामूली आदमी को खुशी बनाओगी!"

"बनाऊँगी," अन्ना एडीमोव्ना हँसी "अब मैं लिख्या नहीं करूँगी। मैं एक मजदूर से शादी करूँगी।"

"अच्छा तब सब ठीक हो जायगा। और तुम कितना अच्छा आदमी चुनोगी!" बदसूरती बर्ज़ ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और सिर हिलाया। "ओ हो ओह!"

"मैं इसका गुर करती हूँ" तुषा बोली "एक अफ़सरमेन का इन्तज़ार करने से कोई फ़ायदा नहीं इसलिए उस शादी का ऐसी चाहिए, किसी अफ़सरमेन से नहीं बल्कि सीधे सादे आदमी से। कुछ भी हो घर में रागभाव करने के लिए एक आदमी तो रहेगा। और अच्छे आदमियों की कमी नहीं है। वह दौलती के किसी आदमी से शादी कर सकती है। वे सब गम्भीर और मेहनती लोग हैं।"

"मुझे भी ऐसा ही सोचना चाहिए," बदसूरती बर्ज़ ने हामी भरी। "वे बहुत अच्छे आदमी हैं। तुषा, अगर तुम चाहो तो मैं कविता केमिस्ट्री के साथ इसका सता लिया सकता है।"

"आह बरसा की याने इतना गम्भीर है" तुषा गम्भीर होकर बोली। "यह इतना तुच्छ लगता है! यह लगभग भी गया है।"

रास्ते पर भीड़ में हँसी सुनाई दी।

"अच्छा सिमसान! तुम सिमेमाव से शादी करना पसन्द करोगी?" बदसूरती बर्ज़ ने अन्ना एडीमोव्ना से पूछा।

"बहुत अच्छा। मेरा किसान से शादी क्या हो।"

"सचमुच!"

"हाँ क्या हो!" कहा एडीमोव्ना ने मुसकराकर कहा और मन में तू सा मसा। "अपनी कसम, मैं उससे शादी कर लूँगी।

"सचमुच!"

अन्ना अकीमोव्ना एकाएक झेंप गई कि उसके गाल लाल हो रहे और हरेक उसकी तरफ देख रहा था। उसने छुरा एक साथ मेज पर फेंक दिये और कमरे से भाग गई। जैसे ही वह सीढ़ियों पर दौड़ती हुई ऊपरी मंजिल पर पहुँची और ड्राईंग-रूम में जाकर पियानो पर बैठी नीचे से समुद्र के गरजने की भाँति भनभनाहट का शोर उसके कान में आया। इस बात की अधिक सम्भावना थी कि वे उसके और पिमेनोव के बारे में बातें कर रही थीं और शायद उसकी गैरहाजिरी का फायदा उठाकर प्रदर्शनी वर्ते पार्वाल्सना का मजाक उड़ा रही थी और अब पलंग नीचे बची जा रही थी।

बड़े कमरे में जल रही लैम्प की ही रोशनी ऊपरी मंजिल पर उजाला कर रही थी और इसकी हल्की सी झलक दरवाजे में होकर अंधेरे ड्राइंग-रूम में आ रही थी। नौ और दस के बीच का समय था। इससे ज्यादा नहीं। अन्ना अकीमोव्ना ने 'डान्यूब' की धुन बजाई, फिर दूसरी और तीसरी बार बजाई। वह बिना रुके बराबर बजाती रही। उसने पियानो के पीछे अंधेरे कोने की तरफ देखा, मुस्कराई और मन ही मन उसे पुकारा, और उसके मन में यह विचार उठा कि यह किसी से मिलने न किए अन्दर जाय, जैसे कि क्लिमेंटिव से मिलने और उसे अपने हृदय की बात बताए। वह बिना रुके बातें करना, देखना मज़ाक करना चाह रही थी लगता था मैं पता कौन उदास और सामान्य था और कम। मंजिल के सारे कमरों में चारों तरफ निस्तब्धता और शान्ति छा रही थी।

वह मधुरतापूर्ण गीतों की शौकीन थी परन्तु उसकी आवाज भारी और आवाज़ियों की सी थी। इसीलिये वह केवल साज के ऊपर और बहुत धीमी आवाज में गुनगुनाती हुई गाया करती थी। उसने फुसफुसाते हुए एक के बाद दूसरा गाना गाया ज्यादातर प्रेम विषयक, और दुखी हुई भावनाओं के और उसने कल्पना की कि किस तरह वह उसकी तरफ अपने हाथ फैलायेगी और आँसू भर कर भावुक स्वर में कहेगी "पिमेनोव, मुझ पर से

इस बात को हुआ था। और तब वैसे ही जैसे उसके पापों को क्षमा कर दिया गया हो, उसकी आत्मा में प्रसन्नता और शान्ति आ जायगी और सम्भवतः एक स्वतन्त्र और सुखी जीवन का आरम्भ हो जायगा। इस आशा की पीड़ा से वह पियानो पर झुक गई अपने हृदय में इस बात की तीव्र कामना किए हुए कि उसके जीवन में यह परिवर्तन बिना विलम्ब के तुरन्त हो जाय और इस विचार से भयभीत हो उठी कि उसका पुराना जीवन अभी हुए और ऐसे ही चलेगा। तब उसने फिर पियानो बजाया और बहुत ही धीमी आवाज में गाया। उसके चारों तरफ निस्तब्धता व्याप्त थी। अब नीचे से शोर नहीं आ रहा था। वे मानो चली गईं होंगी। कुछ देर पहले दस बज चुके थे। एक काफी प्रभावी रूप इतने बाजा रात पा रही थी।

मशा व्योमनस्का सार कमरों में घूमी हुए हर स घ पर बैठी और अपने अध्ययन कक्ष में टेबल के पत्र पढ़े जो उस शाम को आए थे। बड़े दिन का शुभकामना वाले कार्ड पत्र थे और तीन गुमनाम पत्र थे। उनमें से एक में किसी मजदूर ने एक मोटे कागज पर लिखा था कि लिफाफे में शिकायत की थी कि बाजरी की दुकान पर पर्ची आन वाली 'जेम्स कार' बरदाश्त है और उसमें से पैराफीन की गन्ध आती है। एक दूसरे में, किसी ने सम्मान के साथ यह सूचित किया था कि आप ने एक पीर में बजाहिर न अभी किसी से एक हजार रूबल की रिश्वत ली थी। एक तीसरे में माशा को उसकी अमानवीयता के लिए उप मना कहा गया था।

बड़े दिन की उमंग जमा मनाया हो रही थी और वह सिर रखे के लिए माशा एकमानसा फिर पियानो पर आ बैठी और धीरे से नम वाल्ज़ का धुन बजाने लगी। फिर उस पार पाया कि यह वाज मोजन के समय कितने चतुराईपूर्ण और धीरज के साथ बातें करती रही थी। रतन चारों तरफ से बैठी खिड़कियों तस्वीर बनी हुई इमारतों को ऊपर से बाहर हुई धुँधला रोशनी की तरह दृश्य और पृष्ठभूमि पर रात बनी

और इस बात से दुःखी हो उठी कि वह इतनी एकाकिनी है और यह कि उसके पास कोई भी बातें करने और सलाह लेने के लिए नहीं है। अपने को सहज करने के लिए उसने कल्पना में पिमेनोव का चित्र खींचा परन्तु इसमें असफल रही।

बारह के घण्टे बजे। पिमेनोव जो अब अपना पीछे खुला हुआ कोट न पहन कर एक मजदूरों की सी जाकेट पहन रहा था, भीतर आया और उसने बिना बोले दो मोमबत्तियाँ जला दीं। फिर वह बाहर गया और एक मिनट बाद एक ट्रे पर चाय का एक प्याला लिए लौटा।

'तुम हँस क्यों रहे हो?' उसके चेहरे पर मुस्कराहट की रेखा देख कर अन्ना ने पूछा।

"मैं सोचता था और मैंने पिमेनोव के बारे में आपका मजाक सुना था ..." उसने कहा और अपने हँसते हुए मुँह पर हाथ रख लिया, "अगर आज वह मिस्टर निकोलाइच और उस जनरल के साथ खाने पर बैठा होता तो डर के मारे मर जाता।" हँसी के मारे पिमेनोव के कन्धे काँप रहे थे। "वह इतना भी नहीं जानता कि काँटा कैसे पकड़ा जाता है मैं शर्त बदता हूँ।'

उस नौकर की हँसी और कम्पन उसकी सफाइयों का सा आवाज और मूँछें देख कर अन्ना एकीमोव्ना के मन में अपनी की भावना उत्पन्न हो उठी। उसने उस से इसके लिए सोच कर कुछ कहा और अपनी इच्छा के विपरीत, पिमेनोव की विचित्र और विचित्र के साथ खाना खाते हुए की, कल्पना की और उसका सहमा हुआ, मुर्दों जैसा चेहरा बड़ा दयनीय और दयनीय लगा और वह इससे विरक्त हो उठी। और ठीक इसी समय, मानो पूरे दिन भर में पहली बार उसने एक दम से यह महसूस किया कि उसने पिमेनोव और एक मजदूर के बारे में जो कुछ सोचा था और कहा था वह दूर असम्भव, काल्पनिक और मूर्खतापूर्ण था। इसके विपरीत अपने को संयत करने और अपनी विरक्ति को छुपाने के लिए उसने भोजन के समय कही गई अपनी बातों

को याद करने की कोशिश का परिणाम यह उसे इतने दुख भी नहीं दिखाई पड़ा। करन की शिकायतों और हरकतों के प्रति क्रोध, और यह भय कि उसने दिन में कई बहुत बात कही थी, और करने में रफ़्तार की कमी हाथ के प्रति घृणा आदि ने उसे पूरी तरह अभिभूत कर दिया। उसने एक मानसिक लड़ाई और इतनी गर्मी न आया कोई उसका पीछा कर रहा हो वह भाग जागी, सिसकियों को दबाया और इस तरह यकीन दिलाने लगी कि वह महसूस कर रही थी। फिर वह अपने सोने के कमरे में चली गई। बाकी बातें बाकी समय ... के बिस्तर के पास एक आराम-कुर्सी पर बैठ रही थी उसका कपड़ा और आँखों को इधर-उधर करने लगी। उसका चेहरा पका हुआ और उनींदा था और उसके सुन्दर बाल कुछ उलझ गए थे।

"इसीलिए मैंने घर से चले जाना था" जम्हाई लेते हुए उसने कहा, "मगर मैं उसकी खबर लेने की हिम्मत नहीं कर सकी। वह कब से घुल हो रहा था। यह कहता है कि कल फिर आऊगा।

"यह मुझसे क्या चाहता है!" उसने दुखभरी आवाज़ में कहा और अपना सिर कन्धे पर टेक दिया। "मैं उससे नहीं मिलूँगी, नहीं मिलूँगी।

उसने यह तय कर लिया कि उसके आदमी में इस पार्टीबाज़ का याद कर और कोई भी नहीं है कि यह उसका पीछा कभी नहीं छोड़ेगा और हर रोज़ उसे याद दिलाएगा कि उसकी ज़िन्दगी कितनी गरम और भरी थी।

फिर अपने कपड़े बदले, वह लेट गई और कमरा और बिस्तर में लिपट गई। उस समय अधिक आनन्द और सुखदायी बात यह लगी कि उस दिन उसके विचार व दार्शनिक लेख कितने आकर्षक महान और सम्माननीय थे परन्तु साथ ही उसे यह भी अनुभव हुआ कि विचार और भाव समूहों की रचना 'पाइथागोरस' और 'सिसेरो' इसका स्पष्ट प्रमाण है। उसने सोचा कि क्या लिखना

लिखी हुई चीज़ों की क़द्र कभी भी नहीं करते। "जो हमारे पास है, हम उसका सम्मान नहीं करते," और इससे भी बड़ी बात यह है कि हम उससे प्रेम भी नहीं करते।

यह छोटा सा मकान हरे वृक्षों के झुण्ड पर बने हुए स्वर्ग जैसे स्थान में बना हुआ है जहाँ चहचहाती चिड़ियों ने अपने घोंसले बना रखे हैं। परन्तु भीतर अफ़सोस.. ! गर्मियों में यह बन्द रहता है और भीतर घुटन रहती है। जाड़ों में दक्षिण स्नान की तरह गर्म रहता है, हवा पर भी नहीं मार पाती, और नीरसता !

पहली बार जब मैं इस मकान पर गया था उस बात को पाँच साल हो चुके हैं। वहाँ मैं एक काम से गया था। मैं कर्मचारी था, जो उस मकान का मालिक था, उसकी बीवी और बेटी के लिए एक स्वस्थ लाया था। अपनी यह पहली मुलाक़ात मुझे खूब अच्छी तरह याद है। सचमुच उसे भूलना असम्भव है।

एक चालीस साल की छोटी सी कंजरी स्त्री की कल्पना कीजिए जो जब आप गैलरी में होकर बैठक की तरफ़ जा रहे हों तब आपकी तरफ़ आतंकित और आश्चर्यचकित होकर घूर रही हो। आप एक अजनबी, एक आगन्तुक, "एक नवयुवक" हैं। बस इतना ही उसे भयभीत और व्याकुल करने के लिए काफ़ी है। यद्यपि आपके पास कुछ हथियार या रिवाल्वर नहीं है, और यद्यपि आप सौजन्यतापूर्वक मुस्कराते हैं फिर भी आपका स्वागत आशंका के साथ ही किया जायगा।

"मुझे किन से बातें करने का सौभाग्य और सम्मान प्राप्त हो रहा है। इस सभ्य सी महिला ने काँपता हुई आवाज़ में पूछा।

मैंने अपना परिचय दिया और आने का कारण बताया।

यह आश्चर्य और आतंक तुरन्त एक मुस्कान और प्रसन्नतापूर्ण "ओहो" में बदल गया और उसने अपनी आँखें ऊपर छत की तरफ़ उठा दीं। यह "ओहो" एक प्रतिध्वनि की तरह हाल से बैठक तक,

बैठक से रसोई तक और वहाँ से भंडार-घर तक गूँज उठी। फौरन सारा मकान विभिन्न स्वरों में "ओहो" की ध्वनियों से आपूरित हो गया।

पाँच मिनट बाद मैं ड्राइंग-रूम में एक बड़े कालीन वाले आराम्य पर बैठा हुआ "आहा" की ध्वनि को सारी सड़क पर प्रतिध्वनित होते हुए सुन रहा था। वहाँ फीतों के पत्थर और बकरी के चमड़े के जूतों की गन्ध भर रही थी। बकरी के चमड़े के जूतों का एक जोड़ा भर कमरे में एक अखबार में लिपटा हुआ कुर्सी पर रखा हुआ था। खिड़कियों पर जिरेनियम और मलमल के पर्दे पड़े हुए थे और इन पर्दों पर मरी हुई मक्खियाँ बिखरी हुई थीं। दीवाल पर एक बिशप का तैल-चित्र टंगा हुआ था जिसके शीशे का एक कोना टूट गया था और बिशप के गाल में झिर्रियों जैसे बादामी रंग के धब्बे पड़े दरारों की एक कतार थी। मेज पर दर्जी की मशीन पर बलगम वाली एक धोती, एक बेबक, एक आधा सिला हुआ मोजा रखा था और कागज के नमूने और एक बड़ा ब्लाउज एक दूसरे से जुड़े हुए, फर्श पर पड़े हुए थे। बगल वाले कमरे में दो हड़बड़ायी हुई दुबली औरतें जल्दी जल्दी बैठ ही नमूने और दर्जी की कतरन के टुकड़ों को फर्श पर से बटोर रही थीं।

"आप हमें क्षमा करेंगे हम बहुत तंग हैं," उस अधेड़ महिला ने कहा।

जब वह मुझसे बातें कर रही थी तो दूसरे कमरों की तरफ, जहाँ कटे हुए नमूने बिखर जा रहे थे, वह परेशानी की निगाह डालती जा रही थी। दरवाजा भी बराबर खुल बन्द हो रहा था, कभी एक या दो हाथ खुल जाता और फिर बन्द हो जाता।

दरवाज़े पर एक धनाभी आवाज़ ने पूछा ।

"अच्छा, यह बात है क्या कि...तब हमारे यहाँ एक ऐसा

आदमी है जो हम से कम मशहूर है । सुदर्शा से पूछा ।"

"तुम कितनी अच्छी फ्रेंच बोलती है ।" मिस अमीं मर्ढ़िया के

देशों में पता जो मास्को से सिखी जा रही थी ।

इसके बाद ही दरवाज़ा खुला और मिस कवीस वर्ष की एक

लम्बी पतली लड़की को देखा जो मलमल की एक लम्बी पोशाक पर

एक सुनहरा पेटी बांधे हुए थी जिससे, मुझे याद है, और [illegible]

पंखा लटक रहा था । वह भीतर आई, नमस्कार किया और आश्चर्य से

पास पड़ गई । उसकी लम्बी नाक जिस पर चेचक के धब्बे काले हुए

थे, पहले लाल हुई और फिर वह लाली उसकी आँखों और माथे तक

फैल गई ।

"मेरी पुत्री ! नहीं म इसा म मूर्ख़ी आवाज़ में कहा, "यह

मास्टरजम, य एक सद्गुरुक है जो यहाँ हैं ।" आदि ।

मेरा परिचय कराया गया और मिस कामदा के इतने पास

समूलों को एक बार आश्चर्य प्रकट किया । माँ और बेटी ने मिठाई

बांधी थी ।

'यहाँ, एरजनपान में एक दवा लगा था," माँ बोली। हम सब

में से हमेशा मामाय पहिरा करते हैं और हम इस कोने में सब तक

व्यस्त रहते हैं जब तक कि दूसरा कर पाना बाक़ा मना जाता है । इन

बरनी चीज़ किसी से कभी भी नहीं बदलता । मर पति का देश

प्यारा नहीं है और हम लोग दिमाग़ एवं जीवन नहीं बिता सकते ।

इसलिए हमें सब चीज़ें हुए हैं । हम भी पहुँची है ।"

"परन्तु इनका चीज़ों का कोन पहनेगा ? यहाँ तो सिर्फ दो

हो ही हैं !

"[illegible] है कि हम इन्हें पहनने को ही सब रहे थे । ये

पहनने के लिए नहीं हैं । ये देखने के लिए हैं ।"

"अरे, माँ, तुम क्या कह रही हो!" लड़की ने कहा और फिर पलंग पर गई। हमारे मेहमान समझते हैं कि यह सच बात है। मेरा शादी करने का इरादा नहीं है। कभी भी नहीं।"

उसने यह कहा, परन्तु 'विवाह करने' के शब्द पर उसकी आँखें चमक रहीं।

अब बिस्कुट, मक्खन और मुरब्बा लाया गया। उसके बाद रसभरी और मलाई लाई गई। जब हमने खाना खाया जिसमें कई तरह की चीज़ें थीं और जब हम खाना खा रहे थे तो मैंने दूसरे कमरे में उत्पात करने की सी आवाज़ सुनी। मैंने आश्चर्यचकित होकर दरवाज़े की तरफ़ देखा। यह एक ऐसी आवाज़ थी जो सिर्फ़ आदमी ही से सम्भव था।

"यह मेरे पति का भाई है, मिस्टर सदमियोर्गेविच," मेरे आश्चर्य को भाँप कर बूढ़ी महिला ने बताया। "वे पिछले वर्ष से हमारे साथ रह रहे हैं। कृपया उन्हें क्षमा कीजिए, वे आप से मिलने नहीं आ सकते। वे कभी किसी से मिलते नहीं, अजनबियों से घबराते हैं। वे एक भय में आ रहे हैं। जेलों में उनके साथ अन्याय हुआ था और यह निराशा उनके दिमाग को परेशान करती रहती है।"

भोजन के उपरान्त बूढ़ी महिला ने वह तमाशा दिखाया जिसे सर्व को भेंट करने के लिए हमारे [illegible] गुरु अपने हाथों से [illegible] रहा था। [illegible] ने एक बार के लिए अपनी लज्जा को दूर किया और मुझे कमाल रखने का पैसा दिखाया जिस पर अपने दिल के लिए [illegible] रही थी। जब मैंने यह दिखाया कि मैं उसके काम से आश्चर्य-चकित हो उठा हूँ तब वह खाट पर गई और अपनी माँ के कान में फुसफुसा कर कुछ कहने लगा। वे गुरु हो उठे और मुझे अपने साथ

"यह इसका दहेज है," उसकी माँ ने धीरे से कहा, "यह सब खुद बनाया है।"

इन पवित्र वस्तुओं को देखने के बाद मैंने अपनी अतिथि-सत्कार वाली मेजबान से विदा ली। उन्होंने फिर किसी दिन आने और मिलने का मुझसे वायदा करा लिया।

ऐसा हुआ कि मैं इस वायदे को पूरा कर सका। मेरी पहली यात्रा सात साल बाद मुझे उस कस्बे से कस्बे में वहाँ पड़ने वाले एक मुक-मे विशेषज्ञ की गवाही देने के लिए भेजा गया।

जैसे ही मैं उस घर के दर में घुसा मुझे वही "ओहो!" की ध्वनि वहाँ गूँजती हुई सुनाई पड़ी। उन्होंने मुझे फौरन पहचान लिया। पहचानते क्यों न? मेरी पहली मुलाकात उनके जीवन की एक घटना थी और जब घटनाएँ कम होती हैं तो बहुत दिनों तक याद रहती हैं।

मैं ड्राइंग रूम में घुसा। माँ जो पहले से मोटी हो गई थी और जिसके बाल सफेद हो चले थे, फर्श पर रेंगती हुई सी कोई नीला कपड़ा काट रही थी। बेटी सोफे पर बैठी चुप रही थी।

वहाँ वही कीड़ों वाले पाउडर की गन्ध थी, वहाँ वही धब्बे हुए कोने वाला वही चित्र था। परन्तु फिर भी वहाँ एक तब्दीली नजर आ रही थी। जनरल के चित्र के पास कप्तान का एक चित्र टंगा रहा था और जिस पर शोक-सूचक रिबन बंधे हुए थे। जमाता की पत्नी बनने के एक सप्ताह पश्चात् कप्तान की मृत्यु हो गई थी।

स्मृतियाँ दुहराई गईं।...विधवा ने आँसू बहाए।

"हमारी भयंकर हानि हुई है," उसने कहा। "आप जानते ही हैं, मेरे पति की मृत्यु हो चुकी है। अब हम संसार में अकेले हैं और हमारी हिफाजत करने के लिए हमारे अलावा और कोई भी नहीं है। मनोर अधिकारियों को लिखा है परन्तु उनके विषय में मैं उस पत्र। सुनाने के लिए कोई शुभ समाचार नहीं है। उन्होंने उस मत में मा लिया क्योंकि वह प्रताप थोड़ा है। और अब निराश हाथ पड़ के।

ज्यादा दिन बाकी है। मैं सोच रही हूँ कि 'मार्शल ग्राब मार्चखिदी' से आज शिकायत करूँ। आप विश्वास कीजिए कि वह कई बार ट्रंकों का ताला तोड़कर मनेचका का दहेज निकाल चुका है और उसे भिखारियों में बाँट दिया है। उसने दो ट्रंकों का सारा सामान लिया है। अगर वह ऐसा ही करता रहा तो मेरी मनेचका बिना दहेज के रह जायगी।"

"क्या कह रही हो माँ!" मनेचका ने परेशान होकर कहा। 'हमारे मेहमान आयेंगे। क्या पता नहीं कि वे क्या सोचेंगे। मैं कभी भी शादी नहीं करूँगी।"

मनेचका ने माथा और उत्साह से छत की तरफ देख भर के लिये भी अपनी कही हुई बात पर विश्वास न करते हुए निगाहें उठाईं।

एक नंगी दुम्वाली एक भूरा कद और टाँगों की अजब दुमों तक बरसाती जूते पहने गलियारे में चूहे की तरह मचली और गायब हो गयी। मेरा ख्याल है कि पनीर सिलेकोविच है' मैंने सोचा।

मैंने माँ और बेटी की तरफ एक साथ देखा। वे दोनों ही पहले से ज्यादा उम्र की और बहुत बदली हुई दीख रही थीं। माँ के बाल चाँदी जैसे हो गये थे परन्तु बेटी इतनी फीकी और मुरझाई हुई लग रही थी कि उसकी माँ को उससे सिर्फ पाँच साल बड़ी उसकी बड़ी बहन समझा जा सकता था।

"मैंने मार्शल के पास जाना निश्चित कर लिया है' माँ ने मुझसे कहा, यह भूलते हुए कि पहले ही कह चुकी हैं। "मेरा इरादा शिकायत करने का है। पनीर सिलेकोविच हमारी बड़ी हरएक चीज जमा रहा है और अपनी आत्मा के उद्धार के लिये उसे दान दे रहा है। मेरी मनेचका बिना दहेज के रह गयी है।'

मनेचका फिर शर्म से लाल पड़ गयी मगर इस बार बोली कुछ नहीं।

"अब फिर बनाना पड़ेगा। और भगवान जानता है कि

"चार धागा फीता—किस काम के लिए?"

"बोडिस में गोट लगाने के लिए—दरअसल पूरी पोशाक में गोट लगाने के लिए

"ज़रूर।"

निकोलाय टिमोफ़िच कई तरह के चार धागे फीते पोलिन्का के सामने रखता है। वह फीतों को लापरवाही से देखती है और मोल-भाव करना शुरू कर देती है।

"मोल अच्छा एक रूबल ज़्यादा नहीं है," दूकानदार नम्रतापूर्वक मुस्कराते हुए अनुरोध करता है। "यह फ्रांसीसी माल है, खालिस सिल्क का। हमारे पास मामूली माल भी है, मगर चार धागे, भारी धागा। वह पैंतालीस कोपेक गज का है, मगर, वह इस दर्जे का माल तो है नहीं।"

"मुझे हाथों वाला कारसेलेट भी चाहिए जिसमें चार धागे वाले के बटन लगे हों," पोलिन्का, गत्ते पर झुकती हुई और किसी वजह से गहरी साँस लेती हुई कहती है। "और आपके पास इसी रंग की दानेदार मालिका भी है?"

"है।"

पोलिन्का काउन्टर पर और भी ज़्यादा झुक जाती है और धीरे से पूछती है :

"और तुम थर्सडे को हम लोगों को पोलका इतनी जल्दी क्यों छोड़ कर चले गये थे, निकोलाय?"

"हूं! यह अजीब बात है कि तुमने इस पर गौर कर लिया," दूकानदार अचरज के साथ हँसता हुआ कहता है। "तुम उस सुन्दर विद्यार्थी को लेकर इतनी व्यस्त थीं कि... यह अजीब बात है कि तुमने इस पर गौर किया।"

पोलिन्का लाल पड़ जाती है और खामोश रहती है। काँपती हुई उंगलियों से दूकानदार बक्स बन्द करता है और बिना वजह उन्हें

एक दूसरे पर रखा चला जाता है। क्षण भर चुप्पी रहती है।

"मुझे थोड़ा सा लसदार गन्ना भी चाहिए," मनमोहिनी की तरह दुकानदार की तरफ निगाहें उठाती हुई पालिम्मा कहती है।

कैसा ! भगवा या पीला ! उसके रेशम का कलेदार गोटा सब से अधिक सुन्दर माना जाता है।"

और इसकी कीमत क्या है ?"

"भगवा कम से कम चार आने गज और रेशम कम से कम छह रुपये गज का। मैं तब कभी तुमसे लिये नहीं मांगूँगा" निराशा भरी धीमी आवाज में आगे कहता है।

"क्यों ?"

"क्यों ! बिल्कुल स्वाभाविक है। पर तुम्हें खुद समझ जाना चाहिए। मैं उसको दुःखी क्यों करूँ ! यह स्वाभाविक बात है। तुम जानती हो कि मुझे यह स्वप्न आकर सतायेगा कि तुम उस सिपाही के साथ जा रही हो ? मैं सब देखता और समझता हूँ। पर रोजाना से ही वह तुम्हारे चारों तरफ मंडराता फिर रहा है और तुम प्रसन्न हो रही हो उसके साथ घूमने जाती हो और जब वह तुम्हारे पास होता है तो तुम उसकी तरफ ऐसे देखती मानो वह देवता हो। तुम उससे प्रेम करती हो, तुम्हारी नजर में उससे अच्छा और कोई भी नहीं है। और अच्छी बात है, तब बात करने से कोई फायदा नहीं।"

पालिम्मा खामोश रहती है और बेचैन होकर काउन्टर पर आंखों से लकीरें खींचती है।

मैं सच कहता हूँ," दुकानदार आगे कहता है, "मुझे क्या जरूरत है कि आऊँ और तुमसे मिलूँ ! मेरा भी कुछ आत्म-सम्मान है। हरेक बेवकूफी का खेल खेलना पसन्द नहीं करता। तुमने क्या मांगा था ?"

"मैं न कुछ भी बहुत सी बातें सोच कर फिर क्या था ख्याल से भूल गई। मुझे कुछ बटनों भी चाहिए"

"कैसी पसन्द करोगी ?"

'सबसे अच्छी कुछ ऐसी जो फैशनेबिल हो ।'

'आजकल सबसे ज्यादा फैशनेबिल तो अखबारी पंखे वाली होती है । अगर तुम्हें सब फैशनेबिल रंग चाहिए तो वह सूर्य समय या 'फ्लक' है—मतलब यह कि पीली आभा लिए हुए धाम । हमारे पास अनेक किस्में हैं । और यह सारी बातें कहाँ से जानोगी, सचमुच मैं समझ नहीं पाया कहाँ तुम प्रेम करती हो और इसका अन्त कैसा होगा ।'

निकोलाय की आँखों के चारों तरफ आँसू भर आते हैं । वह अपने हाथ में कागज़ को चारों ओर से दबाता है और कहे चला जाता है ।

"तुम सोचती हो कि वह तुम से शादी कर लेगा—क्यों नहीं करता है न ? अच्छा हो कि तुम इस ख्याल को दूर करो । सिपाही को शादी करने की आज्ञा नहीं है । और तुम सोचती हो कि यह मर्द हज़ार से तुम से मिलने आता है ; एक सामान्य सिपाही ! मर्द व सुन्दर सिपाही इन लोगों को इन्सान की तरह नहीं समझते...वे सिर्फ दुकानदारों और दर्जियों के पास उनकी बेवकूफियों पर हँसने और शराब पीने जाते हैं । वे घर पर और भले आदमियों के यहाँ शराब पीने में शर्मिन्दा होते हैं मगर इस सीधे सीधे लोग जैसे लोगों के साथ वे इस बात की चिन्ता नहीं करते कि कोई क्या सोचता है । वे फिर न कम रहो लगे को तैयार हो जाते हैं । हाँ ! अच्छा तुम्हें पहनना फौजवाली मोर पसन्द है ! और अगर वह तुम्हारे चारों तरफ चक्कर काटता है और तुम्हारे पीछे पड़ा रहता है तो हम जानते हैं कि क्या मतलब है । ...अब वह एक डाक्टर या वकील बन जायेगा तो तुम्हारे बारे में सोचेगा : 'आह, वह कदम मेरे पास एक बाँकी सी सुन्दर लड़की थी ! मुझे मालूम है कि अब वह कहाँ है । अब भी मैं उसके ऊपर वर सकता हूँ,' अपने

होस्टों में बैठ कर तीन संख्या होगा कि उसमें एक मन्दी सी सफ्ताह बनाने वाली पर निगाह है।"

पार्किन्सन बैठ जाती है और सफ़ेद कपड़ों के ढेर की तरह सिकुड़ी हुई रहती है।

"नहीं, मैं परवानी नाट नहीं लूँगी" वह याद करती है। 'अच्छा होता कि मैं उस ही मूर्ति थे, मैं गलत भी हो सकती हूँ। मुझे पचीस कापक गज़ अभी एक ड्राफ्टमैन के लिए, ... गज़ अन्दर चाहिए। इसी काम के लिए मुझे मर्सिरायज़ के टकन चाहिए, पत्ताण, जिससे उन्हें अच्छी तरह सीया जा सके। ..."

मिसेज़ स्मिथ अपना और बदन थामती है। वह उसकी तरफ़ मनपसन्दीनी का स्वर सुनती है और स्टरता मानता है कि वह बात कहता रहा परन्तु वह उसमें डाक गुम हो जाता है और परवानी ओर सोचने लगता है।

'मुझे एक ट्रेनिंग गाउन के लिए पदम ऐसा नहीं सूखना चाहिए ..." उसके पीछे होठों का स्वाद स पहुँचते हुए एक ढेर की गुप्ती के पार करता है।

"किस तरह का?"

एक दुकानदार की बीवी के लिए चाहिए, इसलिए मुझे ऐसा हो जो चमकदार हो।'

"हाँ, अगर दुकानदार की बीवी के लिए चाहिए तो अच्छा हो कि कोई चमकीला चाक चलाए। ये कुछ पदम हैं। इनके ऊपर निशान— चाक बीच पर फैशनेबिल उभरते रंग के। कुछ असम्भव। उनका असरदार उनका अन्दाज़ के फ़िक्र के तरह लगे रंग पर्दे चाहिए पसन्द कर है। परन्तु मेरी समझ में नहीं आता। तुम हुए नहीं समझ सकती? वह पूछता.. चाहिए हमें न जाएगा।"

"मैं नहीं जानता," पार्किन्सन मुस्कुराती है और बातों पर मुझ

"कैसी पसन्द करोगी?"

"सबसे अच्छी कुछ ऐसी जो फैशनेबिल हो।"

"आजकल सबसे ज्यादा फैशनेबिल तो अलबत्ता चमकीली क्यों बनी होती हैं। मगर तुम्हें सब फैशनेबिल रंग चाहिए तो यह सूर्य कलंक या 'ब्लश' है—मतलब यह कि पीली आभा लिए हुए लाल। हमारे पास अनेक किस्में हैं। और यह सारी बातें कहाँ से जानोगी, सचमुच मैं समझ नहीं पाता जहाँ तुम प्रेम करती हो और इसका अन्त कैसा होगा।"

निकोलाय की आँखों के चारों तरफ लाल धब्बे आ जाते हैं। वह अपने हाथ में कागज वाली गाँठ को दबाता है और कहता जाता है।

"तुम सोचती हो कि वह तुम से शादी कर लेगा—क्यों यही बात है न? अच्छा हो कि तुम इस कल्पना को छोड़ दो। सिपाही को शादी करने की आज्ञा नहीं है। और तुम सोचती हो कि वह बड़े इरादे से तुम से मिलने आता है? एक सुन्दर सिपाही! वर्दी व सुन्दर सिपाही इन लोगों का इस्तेमाल की तरह नहीं करते...सिर्फ दूकानदारों और दर्जियों के पास उनकी बेवकूफियों पर हँसने और शराब पीने जाते हैं। वे घर पर और भले आदमियों के यहाँ शराब पीने में शर्मिन्दा होते हैं मगर हम जैसे सीधे लिखे पढ़े लोगों के साथ वे इस बात की फिक्र नहीं करते कि कोई क्या सोचता है। वे फिर न कभी ऐसे करने को तैयार हो जाते हैं। हाँ! अच्छा तुम्हें बताओ कि फैशनेबिल रंग क्या है? और अगर वह तुम्हारे चारों तरफ चक्कर काटता है और तुम्हारे पीछे लगा रहता है तो हम जानते हैं कि क्या चाहता है। ...जब वह एक डाक्टर या वकील बन जाएगा तो तुम्हारे बारे में सोचेगा। 'आह, वह कहेगा 'मेरे पास एक छोटी सी सुन्दर लड़की थी! मुझे ताज्जुब है कि अब वह कहाँ है?' अब भी, मैं तुमसे शर्त बद सकता हूँ, अपने

बोतलों में बैठ कर ऐसा लगता हाय कि उसमें एक मछली सी पराग अपने पानी पर तिरता है।"

पोलिना बैठ जाती है और ऊपर बस्तों के ढेर की तरफ ताकती हुई रुकती है।

"नहीं, मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूँगी" वह बात करती है। "अच्छा हाय कि माँ गुरु की बुद्धि दें, मैं गलत भी हो सकती हूँ। मुझे पचीस कलक भर चाही एक कारखाने के लिए, पर गज अगर चाहिए। इसी कार के लिए मुझे मशीनरी के पटल चाहिए, परसार, जिससे उन्हें अच्छी तरह सीखा जा सके। ..."

निकोलाय दिमित्रिच अखबार और कलम थामता है। वह तपस्विनी की तरह रुकती है और स्वरूप चाहता है कि यह भाग रहे परन्तु वह उदास होकर चुप हो जाता है और परेशानी कोने में लगता है।

"मुझे एक ट्रेनिंग कालेज के लिए कलम देखा नहीं सूझता लिए ..." उसने पीछे होठों को दबा कर पूछा हुई थी कुछ देर चुप्पी के बाद कहती है।

"किस तरह से?"

"एक दुकानदार की बीवी के लिए चाहिए, इसलिए मुझे प्रेम चाहिए हो।

हाँ, मगर दुकानदार की बीवी के लिए चाहिए या अच्छा हो समझाना चाहिए। ये कुछ कलम हैं। इसी का विषय— पीछे बात कौन मुँह गुजरता है। बहुत समझाया। उसने ... जब पलटते किवाड़ के ढेर कर दिए थे ... हैं। परन्तु मेरी समझ में नहीं आता। तुम चुप नहीं ... यह पूछना... धर्म से कहीं न जाऊँ।'

... मैं नहीं जानता" पोलिना मुस्कुराती है और बस्तों पर एक

मती है 'मैं गुरु नहीं जानती कि मेरा क्या होने वाला है निकोलाय स्मिरनिन !'

एक मोरा बेचने वाला जिसके गलमुच्छे हैं निकोलाय स्मिरनिन के पीछे होकर उस बाजार से भीतर घुसा जबर्दस्ती रास्ता बनाता है। और बड़ी मौज में वातन्न याम के साथ चीखता है :

"श्रीमती जी, इस विभाग में आने की कृपा कीजिये। हमारे पास तीन प्रकार की जर्सियाँ हैं : सादी वैसदार और कमेदार जिनसे आप बहुत ही खिलें। आपको बीसवीं दिखाई।"

इसी समय एक काली चीख पोलिश्म के बगल में होकर, एक गहरी, गुरीली, लगभग धीमी आवाज में बसती हुई गुजरती है।

"उसने सिमटें नहीं होनी चाहिये उस पर ईंट मार्च की मोहर होनी चाहिये।"

'चोरों की तरह गुनती रहने का बदला करो', एक जबरदस्ती की मुस्कुराहट के साथ पर्शियन की तरह मुड़ते हुए निकोलाय गुनगुनाता है। मेरी प्यारी तुम सीधी और बीमार दिखाई पड़ती हो बिलकुल बदल गई हो। वह तुम्हें प्यार करता रहा अमानिया सवोनिका! और अगर वह तुम्हारे उसके बाद भी चेता है तो यह प्रेम के कारण न होकर वासना के कारण होगा वह तुम्हारे पैसे के लिए बहाना करेगा। वह तुम्हारे सहन में अपने लिए एक मकान बना लेगा और फिर तुम्हारी नजर से कैसे बचेगा। वह तुम्हें अपने रास्ते जिनसे चालों की गिरावटों से दूर रहेगा क्योंकि तुम लिख पढ़ी लिखी हो। वह तुम्हें एक बीवी की गुलाम बनाकर रखेगा। तुम्हें यह पता नहीं होगा कि बच्चियों या घररों के समान में व्यवहार किया जाता है। उसके लिए तुम एक पोशाक बनाने वाला के मूर्ख मजदूर हो।

"निकोलाय स्मिरनिन! कोई स्थान के ऊपर गिरे से उभरता। "वहाँ गया हुआ सज्जुरानी धातु की फालीरों वाला और गत दिनन के है। हमारे पास है!"

निकोलाय निकोलेविच उस तरफ मुड़ता है, बच्चे के साथ हँसता है और चिढ़ाता है।

"हाँ है। बालू की परियों वाला रिबन बिना उसम का सार्जेन्ट को पार्टियों वाला और मोहरी परियों वाला सार्जेन्ट।"

"याद कहीं मैं भूल न जाऊँ" पाल्या ने एक मोटी पेन्सिल पाने के लिए कहा था।' पाकिस्मा कहती है।

'तुम्हारी बातों में चीनी है' उछलकर निकोलाय निकोलेविच कहता है। "यह किस लिए? पेन्सिल वाले विभाग में चलो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ—यह मेरा वायदा है।'

एक बनारसी दुकान और पनी खरीदारी के साथ दुकानदार जल्दी से पाकिस्मा को पेन्सिल वाले विभाग में ले जाता है और उसे रजतों के एक ऊँचे ढेर के पीछे खानों को किताबों से दिखा रहा है।

'तुम्हें किस तरह का पेन्सिल दिखाऊँ' वह बार बार पूछता है और चौंक ही फुसफुसा कर कहता है "अपनी आँखें बंद करो।"

"मुझे... मुझे चाहिए अस्पताल मल्टीमास्टर मार वाला। वह सिर्फ एक खास पेन्सिल चाहती है अपनी पुस्तकों के साथ मुझे तुमसे बातें करनी हैं निकोलाय निकोलेविच बाद वाला।"

"बातें करनी हैं! किस बारे में? बात करने के लिए तुम भी तो नहीं हो।"

तुम्ही सिर्फ एक व्यक्ति हो जो मेरा किस्सा समझता है और मैं तुम्हारा ख्याल और किसी से भी बात नहीं कर सकती।

य मतलब का रहस्य का नहीं बल्कि अपनी दुनिया की दूरी को है। ...हमारे पास बात करने के लिए है क्या? बात करने से कोई फायदा नहीं। मेरा ख्याल है कि तुम उस तरफ मुझसे आ रहा था।"

"हाँ मैं आ रहा हूँ।'

"तब बात करने से क्या फायदा? बातों से काम नहीं चलेगा। तुम प्रेम करता था, करते हो न?'

अपनी बीवी के कमरे में, मेज़ पर स्टेशनरी के डिब्बे के बीच उसे एक तार मिला और उसने अचानक उसकी तरफ देखा। यह उसकी बीवी को उसकी सास के मार्फ़त, मौन्टे कार्लो से भेजा गया था और उस पर भेजने वाला मिशेल था। डाक्टर उसका एक शब्द भी नहीं समझ सका क्योंकि यह किसी विदेशी भाषा में अंग्रेजी में भेजा गया था।

'यह मिशेल कौन है? मोन्टे कार्लो क्यों? मां की मार्फ़त क्यों?'

अपनी सात साल की विवाहित ज़िन्दगी के दौरान में वह शक्की, अन्दाज़े लगाने वाला, सुराग़ों को पकड़ने वाला बन गया था और कई बार उसे ऐसा महसूस हुआ था कि घर की इन बातों ने उसे एक चतुर जासूस बना दिया था। अपने अध्ययन कक्ष में आकर सोचते सोचते उसे एक दम ख्याल आया कि दस साल पहले वह किस तरह अपनी बीवी के साथ पीटर्सबर्ग गया था और उसने एक पुराने स्कूल के साथी एक सिविल इंजीनियर के साथ खाना खाया था और किस तरह उस इंजीनियर ने उसका और उसकी बीवी का बाईस या तेईस साल के एक नौजवान मिशेल इवानोविच से उसका परिचय कराया था जिसका उपनाम बड़ा अजीब सा था—रिस। दो महीने बाद डाक्टर ने अपनी बीवी के एलबम में उस नौजवान का एक फोटो देखा था जिस पर फ्रेंच में लिखा था। "वर्तमान की स्मृति और भविष्य की आशा में।" बाद में उसकी सास के घर उसकी उस नौजवान से मुलाकात हुई थी। और यह मुलाकात उस समय हुई थी जब उसकी बीवी अक्सर घर से गायब रहा करती थी और सुबह के चार या पाँच बजे घर लौटा करती थी और बराबर उससे विदेश जाने के लिये पासपोर्ट दिला देने के लिए कहा करती थी जिससे वह हमेशा इन्कार कर दिया करता था और घर में हमेशा ऐसी लड़ाई रहती थी जिसकी वजह से वह नौकरों के सामने आने में झेंपता रहता था।

दो महीने पहले उसके साथी डाक्टरों ने तय किया था कि उसे

उपस्थित होने वाली थी और उसे सलाह दी थी कि वह सब कुछ छोड़ दे और क्रीमिया चला जाय। जब उसकी बीवी ने यह सुना था उसने यह दिखाया कि वह बहुत अधिक चिन्तित हो उठी थी। उसने अपने पति के प्रति प्रेम दिखाना आरम्भ कर दिया और उसे यह विश्वास दिलाती रही कि क्रीमिया की जलवायु बड़ी अच्छी और नीरस रहेगी और यह कि अच्छा इतना कि वह बीमार पड़े और कि वह उसके साथ चलेगी और उसकी सेवा करेगी, उसकी देखभाल करेगी, उसकी हिफाजत करेगी।

वह अब समझा कि उसकी बीवी बीमार आने के लिए विशेष कर से क्यों उत्सुक थी: उसका विशेष [illegible] मर्दों में रहता था।

उसने एक अंग्रेजी डिक्शनरी उठाई और शब्दों का अनुवाद करते हुए और उनके मतलब का अन्दाजा लगाते हुए धीरे धीरे उसने यह वाक्य बना लिया: "मैं अपनी प्रियतमा के लिए स्वास्थ्य-पान करता हूँ और उसके प्यारे से पाँव का सौ बार चुम्बन करता हूँ और अत्यधिक व्यग्र होकर उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" उसने कल्पना की कि अगर वह अपनी बीवी के साथ बीमार आया होता और वहाँ पैदा हो कितना दयनीय और भद्दा पार्ट अदा करता। वह इतना दुखी हो उठा कि उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े और व्यग्र होकर वह कमरे के चारों कोनों में इधर से उधर चक्कर लगाता रहा। उसका गर्व उसकी सामान्य विवेक बुद्धि के प्रति विद्रोह हो उठा। अपनी मुट्ठियाँ भींच कर, गुस्सा से कोई बाहर वह आश्चर्य करने लगा कि कैसे वह एक जनरल के पादरी का बेटा एक पादरी के घर में पला हुआ, एक सीधा सादा व्यक्ति बना और अपनी इस का बेटा बनाया, इतना गुलाम बना रहा, इस निकम्मे पाखण्डी औरत, बीच अपनी के भरी मकर में फँस कर बीच गिर आया।

"अच्छा बस!" यह वो मरोड़ते हुए वह उसने कहा जाता।

वह उठा जब वह उसके प्रेम में पड़ा था और उस अनुभव

निगाह का प्रस्ताव रखा था, और वे साल साल भर पहले उसके साथ रहता आ रहा था यानि मैं से जो बात उसकी स्मृति में छप रही थी वह उसके सफ़ेद दुर्गन्धित केश थे, कोमल गाते का एक ढेर, और उसके कन्धे से पैर जो सचमुच बहुत छोटे और खूबसूरत थे। और अब भी ऐसा लगता मानो अब तुमने यादियों से उत्पन्न ताप और दिवक का अनुभव अब भी उस अपने हाथों और चेहरे पर हो रहा था। इसके अलावा उसे और कुछ भी याद नहीं था और कुछ भी नहीं—मतलब यह कि हिस्टीरिया के दौरों, चीखने चिल्लाने, लानत मलामतों धमकियों और झूठों—सफ़ेद और घोर दगेबाजी झूठों की तो गिनती ही नहीं थी। उसे याद आया कि किस तरह गाँव में उसके पिता के घर में कभी खोजे से कोई चिड़िया खुली हवा में से भीतर घुस आती थी और बुरी तरह निराश होकर खिड़कियों के शीशों से टकराती थी और सारी चीज़ों को तितर बितर कर डालती थी। इसी तरह उसके भिन्न वर्गों की यह स्त्री उसके जीवन में उड़कर आ गई थी और उसे बुरी तरह तहस-नहस कर डाला था। उसके जीवन के दस अच्छे दिन मानो नरक में कटे थे, उसकी सुख चैन की आशायें छिन्न भिन्न हो चुकी थीं और एक मज़ाक बन गई थीं, उसका स्वास्थ्य नष्ट हो चुका था, उस वातावरण में उसके कमरे इतने गन्दे बन गए थे मानो एक वेश्या के कमरे हों और उन दस हज़ार में से जो वह साल भर में कमाता था, वह कभी भी दस में अपनी बुढ़िया माँ को भेजने के लिए दस रूबल भी नहीं बचा पाता था और इस समय तक उस पर पन्द्रह हज़ार का कर्ज़ हो चुका था। ऐसा लगता था कि अगर उसके कमरों में डाकुओं का एक गिरोह रहता होता तब भी उसकी ज़िन्दगी इतनी बुरी तरह से असाध्य रूप से बरबाद नहीं होती जितनी कि इस औरत की मौजूदगी से हो गई थी।

वह खाँसने और साँस लेने के लिए हाँफने लगा। बिस्तर पर जाकर कपड़ों में सो जाना चाहिए था मगर वह ऐसा नहीं कर सका। वह दूसरे कमरों में घूमता रहता था मेज़ पर [illegible]

टाइप करने वाले की तरह बैठने लगा और मशीन की तरह कागज पर आड़ी तिरछी रेखाएं खींचने लगा।

कलम घिस रहा हूँ ...एक भद्दा वाक्य।'

पाँच बजने तक वह कमजोर होने लगा और उसने अपने हाथों को सिर पर रख दिया। अब उस ऐसा लगा कि अगर कोई उसकी किसी प्रेम पद्धति के पास होती जो उसे अपनी तरह बाहु में रख सकती—कौन जानता है!—वह एक अपनी और सीधी औरत बन जाती। उसका मनोविज्ञान का ज्ञान बहुत उथला था और वह नारी-हृदय के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। इसने उसको बड़ा गँवार और रूप उभार बना था।

"अब मुझे चला जाना नहीं रहना है" उसने सोचा। "मैं एक मुर्दा हूँ और मुझे कल्पित मर्यादाओं के रास्ते में रहना नहीं चाहिए। अब किसी के अधिकारों पर बोझ रहना बेढंग और बेहूदी सी बातें हैं। मैं इस समस्या को उसके सामने सुलझा दूँगा। उसे उस आदमी के पास जाने दूँगा जिसे वह प्रेम करती है।... मैं उसे तलाक दे दूँगा। मैं उसका होकर भरने उसको दे दूँगा।"

पाँच बजकर आध घंटा हो गए। वह अपनी कुर्सी से उठा और चलता गया। उसका हर पैर बोझ सा पड़ने लगा और एक कुर्सी में धंस गया।

"बदनसीब मोटा पगला" उसने गहरी साँस लेते हुए सिसकते हुए कहा। 'यह सचमुच अजीब है, पर पवित्र है।" उसने कहा। "मैं इस बर्दाश्त नहीं कर सकता। नहीं कर सकती, नहीं कर सकता!"

'क्या बात है!" उसके पास जाते हुए मिस्टर ने पूछा।

वह गुस्से, मनोवेग से मुझे पर पहुँचने जा रहा था और उसने मेरा कुर्ता फाड़ दिया। उसमें रक्त चमक रहे थे। फिर भी उधार लिए थे।"

वह एक प्यारे बच्चे की तरह बिलकुल मारने लगा।

थी और सिर्फ उसका स्वभाव ही नहीं बल्कि उसके दस्ताने तक आँसुओं से भीग गए थे।

"इसका कोई इलाज नहीं!" डाक्टर ने कहा, "आज उसने पा लिए या खो दिए और इसके लिए चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं। चुप हो जाओ मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।"

"मैं कोई करोड़पति तो हूँ नहीं कि इस तरह पैसे खोती फिरूँ। वह कहता है कि वापस दे देगा परन्तु मैं उसका विश्वास नहीं करती, वह गरीब है ..."

उसके पति ने उससे शान्त होने और उसकी बात सुनने की प्रार्थना की मगर वह बराबर उस स्टूडेन्ट और उन खोए हुए पच्चीस रूबलों की ही बातें करती रही।

"आह! अगर तुम खामोश हो जाओ तो मैं कल तुम्हें पच्चीस रूबल दे दूँगा!" उसने चिढ़चिढ़े होकर कहा।

"मुझे कपड़े बदलने हैं!" उसने रोते हुए कहा। "मैं अपना फर का कोट पहने गम्भीरतापूर्वक बातें नहीं कर सकती! तुम भी कैसे अजीब आदमी हो!"

डाक्टर ने कोट और गले पहनने उतारने में उसकी मदद की और ऐसा करते समय उसे उस सफेद शराब की गन्ध आई जिसे वह सीपियों के साथ खाना बहुत पसन्द करती थी (इतनी दुबली पतली होते हुए भी वह बहुत ज्यादा शराब पीती थी)। वह अपने कमरे में गई और थोड़ी देर बाद आ गई, कपड़े बदल कर और पाउडर लगाकर आई यद्यपि उसकी आँखों में अभी भी आँसुओं के निशान बाकी थे। वह बैठ गई अपना हल्का रेशमी ड्रेसिंग गाउन में पीले हल्की हुई और गुलाबी लहरों के उस समूह में उसका पति उसके बालों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं देख सका, जिन्हें उसने खोलकर बिखरा दिया था। उसके पैरों में पैरों में स्लीपर थे।

"तुम क्या बातें करना चाहते हो?" एक झूलने वाली कुर्सी में झूलते हुए उसने पूछा।

"मैंने यह पूछ लिया था," और उसने उस पर तार पकड़ा दिया। उसने तार पढ़ा और उसके ठहाका।

"क्यों! और भी ज़ोर से मुस्कराते हुए वह बोली 'यह मामूली कई दिन की रात कमाता है और तुम भी नहीं हो इसमें कोई रहस्य नहीं है।

"तुम जान रही हो कि मैं अंग्रेजी नहीं जानता। नहीं मैं नहीं जानता मगर मेरे पास एक डिक्शनरी है। यह तार दिल का है, यह मलेशी मित्रमण्डल के लिए स्वास्थ्य पान करता है और तुम्हें एक हजार शुभकामनाएँ भेजता है। मगर इस बात को जाने दो," डाक्टर कहता गया, "मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हें कहूँ या एक समस्या बना दूँ। हम लोग काफी समय साथ रह चुके हैं और समाप्त कर चुके हैं, अब समय आ गया है कि हमें खत्म कर दिया जाए।... मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ। तुम स्वतन्त्र हो और जैसे चाहो वैसे रह सकती हो।'

खामोशी छाई रही। वह चुपचाप रोने लगी।

"मैं तुम्हें मुँह खोलने और बरतने बचने की जरूरत से छुटकारा दे रहा हूँ," निकोलाय कहता रहा, "अगर तुम उस नौजवान से प्रेम करती हो। प्रेम करो, अगर तुम उसके पास विदेश जाना चाहती हो, जाओ। तुम जवान हो, स्वस्थ हो और मैं एक टूटा हुआ व्यक्ति हूँ और मुझे ज्यादा दिनों तक जिन्दा भी नहीं रहना है। संक्षेप में ...तुम मेरी बात समझ गई।"

वह काफी देर तक और कुछ नहीं बोल सका। मालूम न था और आत्म-दीनता पूर्ण स्वर में बोलते हुए स्वीकार किया कि वह किस से प्रेम करती है और उसके साथ शहर से बाहर जाया करती थी और उसके कमरों में उससे मिलती थी और अब वह सचमुच विदेश जाने के लिए व्याकुल हो रही है।

"देखो मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाती," उसने एक लम्बी साँस लेकर आगे कहा, "मेरी सारी आत्मा तुम्हारे सामने खुली पड़ी

मक्कार चालाक और लालची । उसकी सास, एक तगड़ी स्त्री के की सी चुहियों जैसी स्पष्ट आंखों थी, जो अपनी बेटी को बहुत प्यार करती थी और हर बात में उसकी मदद करती थी । अगर उसकी बेटी किसी का गला घोंट रही होती तो भी वह मना नहीं करती बल्कि उसे अपने आंचल में छिपा लेती । आलग्या को हम रेखा भी चूहे चुहियों जैसी थी परन्तु अपनी माँ से अधिक स्वस्थ और उत्तम । वह म्योचे जैसी न होकर एक बड़े पूडल कुत्ता जैसी लगती थी । और निकोलाय चित्र में खुद एक निष्कपट, दयालु सज्जन स्वस्थ और भावुक व्यक्ति जैसा लग रहा था । उसका पूरा चेहरा एक धार्मिक व्यक्ति की सरल और मधुर मुस्कान से खिल रहा था । और वह इतना सीधा था कि इस बात पर विश्वास करता था कि इन शिकारी जानवरों की संगत में जो भाग्य ने उसे डाल दिया है वह उसे रोमांस और प्रसन्नता तथा वह सब कुछ देगा जिसका वह एक विद्यार्थी के रूप में स्वप्न देखता हुआ सपना करता था, 'यौवन नष्ट हो गया जीवन शून्य है जब हृदय शान्त और प्रेम से शून्य है ।'

और एक बार फिर उसने व्याकुल होकर अपने आप से पूछा कि कैसे वह एक ग्रामीण पादरी का पुत्र, एक प्रजातंत्रिक वातावरण में बड़ा होकर—एक भोले, सरल व्यक्ति के रूप में—इस व्यर्थ, रूखी, गन्दी क्षुद्र नारी के सम्मुख जिसकी प्रकृति उसके एकदम भिन्न थी, आत्म-समर्पण कर सका ।

जब ग्यारह बजे उसने अस्पताल जाने के लिये कोट पहना तो नौकर उसके अध्ययन-कक्ष में आया ।

"क्या है ?" उसने पूछा ।

"मालकिन उठ चुकी हैं और आपसे पच्चीस रूबल मांग रही हैं जिन्हें कल आपने देने का वायदा किया था ।"

अन्यूता

एक बड़े प्लाट के बने हुए कमरों में सबसे सस्ते कमरे में [illegible] श्यामाचरण मेडिकल के तृतीय वर्ष का विद्यार्थी इधर-उधर घूमता हुआ बड़े ज़ोर से शरीर-रचना-शास्त्र की रटाई कर रहा था। उसका मुँह सूख गया था और उसके माथे पर, उस विषय को बराबर रटते रहने के कारण पसीना चमचमा रहा था।

खिड़की में जिस पर पाले के नमूने बने हुए थे एक स्टूल पर सम्पूर्ण मानव की एक अस्थियाँ रखी हुई थीं जो ऊपर टंगा हुआ इसी कमरे में रखा थी। सम्पूर्ण पच्चीस वर्ष की एक पार्वती की हड्डियाँ पाजर सांकले रखी थी जो बहुत पीली पड़ रही थी और जिसकी मांसें धूसर और मुड़ी थीं। मेज़ पुस्तक देखी वह काम करने में पाठनी की मशीन रही थी। वह समय का विचार न कर मन का पर पृष्ठ सा अत्यन्त सुन्दर के लिए ठीक नहीं किया गया था। बिखरी हुई चादर, इधर उधर पड़े हुए सस्ते कपड़े, एक बड़ा गन्दा पलंग का बक्स जिसमें सिगरेट के टेर ढेर रह एक पर सतरंजी और दरवाज़े पर लगी हुई खिड़की—यह सब कैसा अजब सा मालूम होता था जब इन सब पर अन्धकार छाई गई हो।...

"इन्हीं हड्डियों के तीन भाग रखे हैं..." श्यामाचरण ने दुहराया। सीमायें : कपाल की पहली हड्डी का ऊपरी भाग चौथी या पाँचवीं पसली तक जाता है, नीचे [illegible] पसलियों के पीछे..."

क्लोचकोव ने अपनी आँखें छत की तरफ उठाईं और अभी जो पढ़ा था उसको मन में दुहराने की कोशिश की। उसका एक शब्द भी याद न कर पाने में असमर्थ होकर वह अपनी वास्कट में होकर अपनी दाहिनी पसलियों को टटोलने लगा।

"ये पसलियाँ पियानो के पर्दों की तरह हैं," उसने कहा, "हरेक को किसी तरह इनको टटोलना आना ही चाहिए, वरना वह उनके बारे में परीक्षा में नहीं पास हो सकता। हरेक को उनका अध्ययन एक अस्थि पिंजर और जीवित शरीर दोनों में ही करना चाहिए। मैं कहता हूँ अन्यूता, मुझे ज़रा उन्हें टटोलने दो।'

अन्यूता ने अपना सीना-पिरोना नीचे रख दिया, अपना ब्लाउज़ उतारा और बदन को सीधा किया। क्लोचकोव भौंहें सिकोड़कर उसके सामने बैठ गया और उसकी पसलियाँ गिनने लगा।

"हूँ! पहली पसली को नहीं छुआ जा सकता, यह कन्धे की हड्डियों के पीछे है। यह दूसरी पसली होनी चाहिए। हाँ... यह तीसरी है ...यह चौथी है। हूँ! हाँ तुम कुलबुला क्यों रही हो?"

"तुम्हारी उँगलियाँ ठंडी हैं!"

"अच्छा, अच्छा रहने दो... इससे तुम मर नहीं जाओगी। हिलो मत। यह तीसरी पसली होनी चाहिए, फिर यह चौथी है... तुम्हारे शरीर पर सिर्फ चमड़ा ही चमड़ा है और फिर भी तुम्हारी पसलियाँ मुश्किल से दिखाई देती हैं। यह दूसरी है... यह तीसरी है। अरे, सब गड़बड़ हो गया, यह साफ दिखाई नहीं देता। मुझे इस पर चाक लगाना पड़ेगा। मेरी रंगीन पेंसिल कहाँ है?'

क्लोचकोव ने रंगीन पेंसिल उठाई और अन्यूता की छाती पर पसलियों के सामने अनेक समानान्तर रेखाएँ खींचीं।

"बिल्कुल ठीक। यह सब बिल्कुल साफ है। अच्छा, अब मैं तुम्हें थपथपा कर देखूँगा। खड़ी हो जाओ।'

अम्मूबा यहीं हो गई और अपनी डाली ऊपर उठा ली। सलोरबलोर
ने उस उंगलियों से टोह टाक कर रुकना शुरू कर दिया और इस कम
में इतना तल्लीन हो गया कि इस बात को नहीं पूछ सका कि उस के
अम्मूबा के होठ, नाक और उंगलियां कितनी पीली पड़ गई हैं। अम्मूबा
कांपी और भयभीत हो उठी कि अगर उस विद्यार्थी ने इस बात का पता
लिया या यह अपने सम्मुख और मेल मेल कर पूछना शुरू कर देगा
और तब शायद, इम्तहान में फेल हो जाय।
अब सब साफ हो गया' अब समाप्त कर पुरुष का सलोरबलोर
बोला। "तुम इसी बार देख आना और इन आदमों को नियम मत।
तब तक मैं पाता हूँ और पार करूं।"

और वह विद्यार्थी फिर घूम घूमकर रहने लगा। पाठ पर अभी
तसवीरें दिखाए अम्मूबा जैसी विद्यार्थी इस मजा मारने बैठे गए हों
निकले हुए चार तरफ से घेरती हुई बैठी सांस रही थी। आमतौर पर
यह पुरुष बहुत कम पढ़ा करता था पर इस्मत देखी सोचती रहती थी।
पूरा या सात साल की एक बड़े कमरे से दूसरे कमरे में घूमने की
निकम्मे जिन्दगी में वह सलोरबलोर जैसे पांच विद्यार्थियों के सम्पर्क में
आ चुकी थी। अब उन सब ने अपनी पढ़ाई खत्म कर ली थी, बाहर
काम करने चले गए थे और निस्सन्देह भले आदमियों की तरह उसे
बहुत पहले ही भूल चुके थे। उनमें से एक पंजाब में रह रहा था, दो
बंगाल थे, चौथा एक डाक्टर था और पांचवें के लिये कहा जाता था
कि प्रोफेसर बन गया है। सलोरबलोर पांचवां था।... शीघ्र ही वह भी
अपनी पढ़ाई खत्म कर देगा और काम करने चला जायगा। उसके सामने
निस्सन्देह एक उज्ज्वल भविष्य था और सलोरबलोर शायद एक बड़ा
आदमी बने, इसका वर्तमान स्थिति चमत्कारक थी। सलोरबलोर के पास
न तो कानून रही थी और न धन। भावी के लिये चार इसके कार्य
थे। उन उन्हीं से मना कराए मनाफ कर रहा चाहिए, उस उस
के कम के जाना पड़, व जिसे प्यार दिया था और इसके पहले मैं

हने वाले चौपाये जानवर की भाप और तम्बाकू मिश्रित होगी।
"मैं अन्दर आ सकता हूँ?" किसी ने दरवाज़े से पूछा।
सम्पूर्णा ने मस्ती से एक बड़ी शाल अपने कन्धों पर डाल लिया। कलाकार केतीसोव भीतर आया।
"मैं तुमसे एक मदद माँगने आया हूँ," उसने स्कोल्नकोव को सम्बोधित कर कहा और मोंछों पर लटकते हुए लम्बे बालों ने मुँह को से जंगली जानवर की तरह पूरा ढक कर दिया। 'मेरी ज़रा मदद कर दो। मुझे अपनी इस युवती महिला को दो घण्टे के लिए उधार दे दो। मैं एक तस्वीर बना रहा हूँ और बिना मॉडल के बना नहीं सकता।"
'ख़ोर ख़ुशी से।' स्कोल्नकोव सहमत हो गया। "इनके साथ चली जाओ, सम्पूर्णा!"
"मुझे अभी चीज़ें ठीक करनी हैं," सम्पूर्णा धीरे से मुस्कराई।
"वाहियात! यह व्यक्ति तुम्हें कला के लिए माँग रहा है, किसी बुरे काम के लिए नहीं। अगर कर सकती हो तो इसकी मदद क्यों नहीं कर रहीं?'
सम्पूर्णा कपड़े पहनने लगी।
'तुम क्या बना रहे हो?'' स्कोल्नकोव ने पूछा।
"आत्मा, यह बहुत अच्छा विषय है। परन्तु, फिर भी एक होगा मुश्किल है। मुझे भिन्न भिन्न मॉडलों से समझना पड़ेगा। कल मैं एक बौनी टाँग वाली को मॉडल बना कर खींच रहा था। 'तुम्हारी टाँग बौनी क्यों है?' मैंने उससे पूछा। 'मेरे लोगों ने उन्हें रंग दिया है,' वह बोली। और तुम अब तक चोरें पागल बना रहे हो। तस्वीर वाले हो। तुम में ऐसे हैं।'
'आत्मरी एक ऐसा पेशा है जिसमें बिना पाप काम नहीं चलता।"
'हूँ! मान लिया स्कोल्नकोव, मगर तुम एक सुअर की तरह रहते हो। तुम्हारा यह रहन सहन का ढंग बड़ा गन्दा है।'

"क्या मतलब ? मैं कुछ नहीं कर सकता। .. मुझे पिताजी से सिर्फ बारह रुपये मासिक मिलते हैं, और इतने में अच्छी तरह रहना मुश्किल है।"

हाँ.. हाँ.. " विरक्ति के साथ भौंहें चढ़ाते हुए कथाकार बोला, "मगर, फिर भी तुम अच्छी तरह रह सकते हो।.. पढ़े लिखे व्यक्ति का यह धर्म है कि उसकी रुचि परिष्कृत हो, है न ? और भगवान ही जानता है कि यहाँ की हालत कैसी है। बिस्तर ठीक नहीं किया गया है, गन्दे पानी का बर्तन, यह गन्दगी कमरे का हर कोना कोनों में पड़ा है। .. ह!"

"यह सच है।" विद्यार्थी ने उद्विग्न होकर कहा, "मगर अम्पूला को आज सफाई करने का समय नहीं मिला, वह पूरे समय तक व्यस्त रही थी।"

जब वह कथाकार और अम्पूला चले गए, स्तोल्नकोव सोफे पर लेट गया और पड़े हुए ही पढ़ने लगा फिर वह अचानक सो गया और एक घण्टे बाद मेज़ पर झुककर अपने हाथों पर सिर रख लिया और विचारपूर्ण विचारों में डूब गया। उसने कथाकार के शब्दों को याद किया कि एक पढ़े लिखे आदमी की रुचि परिष्कृत होनी ही चाहिए और अब उसे अपने चारों तरफ का वातावरण घृणित और विरक्तिपूर्ण लगने लगा। उसने अपने मस्तिष्क की आँखों से अपना भविष्य देखा, जब वह अपने मरीजों को अपने मरीज देखने वाले कमरे में बैठ कर देखा करेगा, एक विशाल ड्राइंग-रूम में अपनी पत्नी के साथ बैठ कर चाय पिया करेगा जो एक अच्छी महिला होगी। और अब यह गन्दे पानी का बर्तन जिसमें सिगरेट के टोटे तैर रहे थे उसे बुरी तरह घृणास्पद महसूस होने लगा। अम्पूला भी उसकी कल्पना में आ खड़ी हुई—एक फोंधी-भरी, फूहड़ दीन मादा.. और उसने तय किया कि वह किसी

योग्यता

येगार सावविच नामक एक कलाकार, जो एक अफसर की विधवा के घर अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ बिता रहा था, प्रातःकाल की उदासी में डूबा अपने बिस्तर पर बैठा हुआ था। बाहर शरदकाल का सा मौसम होने लगा था। भद्दे, भरे बादलों की गहरी पर्तें आसमान पर छाई हुई थीं। तेज़ ठंडी हवा चल रही थी, पेड़ दुख की उदासीनता में डूबे एक तरफ को झुके हुए थे। पीले पत्ते हवा में इधर उधर और ज़मीन पर उड़ते हुए दिखाई पड़ रहे थे। अलविदा ग्रीष्म! प्रकृति की उदासीनता, जब एक कलाकार की दृष्टि से देखी जाती है तो अपने एक विचित्र सौन्दर्य और कवित्व शक्ति से परिपूर्ण दिखाई पड़ती है परन्तु येगोर सावविच इस समय प्रकृति के सौन्दर्य को परखने की मुद्रा में नहीं था। वह उदासीनता में डूबा हुआ था और इस बात पर एक ही विचार से सन्तोष किये जा रहा था कि कल वह यहाँ नहीं होगा। बिस्तर, कुर्सियाँ, मेजें, फर्श आदि सब तकियों, सिकुड़ी चादरों और पलंगों से भरी हुई थी। फर्श साफ नहीं किया गया था खिड़कियों पर से सूती पर्दे उतार लिये गये थे। कल वह शहर जा रहा था।

उसकी मकान-मालकिन, वह विधवा बाहर थी। वह कल शहर जाने के लिए घोड़े और गाड़ी किराये पर तय करने गई थी। उसकी ओर माँ की अनुपस्थिति से लाभ उठाकर उसकी बेटी कात्या एक बीस बरस की उसकी युवती बहुत देर से उस नौजवान के कमरे में बैठी हुई थी। कल वह चित्रकार जा रहा था और कात्या को उससे बहुत कुछ बातें करनी थीं। वह बातें करती रही, और फिर भी उसने अनुभव किया कि जो कुछ वह कहना चाहती थी उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं कह पाई

। आँखों में आँसू भर कल्पना ने उसके मलीनसे चेहरे की तरफ देखा, जहाँ असफल हर्ष और दुख के साथ रमा। और पागर सात्विक रूप से मवरीला था जिससे वह एक मंझली जमघट की तरह सहता था। उसके बाल उसके कन्धों तक लटके हुए थे उसके मस्तक पर थे, उसके भौंहों में थे, उसके कपोलों में थे रम रही थी। मानों सभी चीज का करपती हुई आँखों के बीच छिप गई थीं। बाल इतने घने, इतने उलझे हुए थे कि एक मक्खी या चींटा वह उस जाल को उस इस बालू भरी माटी में से बाहर निकलने का कभी भी नहीं मिल पाता। फकीर सात्विक उपाय लेकर हुआ बातें सुनता रहा। वह एक हुआ था जब कल्पना ने गिरिपाता तो उसने अपनी काँपती हुई आँखों के नीचे से उसे कमोरक, मुसाफा और एक गहरी, धीमी आवाज में कहा :

मैं शादी नहीं कर सकता।"

। "क्यों नहीं ?" कल्पना ने कोमल स्वर में पूछा।

एक विचार के लिए, और हर व्यक्ति हर व्यक्ति के लिए जीवित रहता है विवाह का प्रश्न हो नहीं उठता, सम्पन्न होना चाहिए।"

मैं तुम्हारे रास्ते में बाधा कैसे बन सकूंगी, केवल

अपने विषय में नहीं कह रहा, आम बात कह रहा हूँ। ... और विचारकों ने विवाह नहीं किए थे।।

तुम भी तो मजदूर बनोगे—मैं इस रूप अपनी तरह अपने को मेरी जगह रख कर देखा। मैं अपनी माँ के कठोर और चिड़चिड़े मिजाज की हूँ। पर इस पथ दुख से शादी नहीं करवाते और वह सब कुछ भी नहीं मुसीबत में डाल देगी। पर ! मैं कितनी दुखी हूँ। कमरों का किराया भी नहीं दिया है !

"इसे येगोरी मारो! मैं किराया दे दूँगा!"

येगोर साबलिच खड़ा हो गया और इधर से उधर घूमने लगा।

"मुझे विदेश में रहना ही चाहिए!" उसने कहा। और उस कलाकार ने कात्या को बताया कि विदेश जाने से आसान और कोई भी काम नहीं है। और कोई काम नहीं करना है सिर्फ एक तस्वीर बनानी है और उसे बेच देना है।

"बेशक!" कात्या ने सहमति जताई। "तुमने गर्मियों में कोई तस्वीर क्यों नहीं बनाई?" "तुम समझती हो कि मैं इस खाली जैसी जगह में काम कर सकता हूँ!" कलाकार ने नाराज होते हुए कहा, "और मुझे मॉडेल कहाँ मिलते हैं?"

नीचे की मंजिल में किसी ने बुरी तरह दरवाजा खटखटाया। कात्या जो प्रत्येक क्षण अपनी माँ के लौटने की उम्मीद कर रही थी, उछल पड़ी और भागी। कलाकार अकेला रह गया। बहुत देर तक वह कुर्सियों तथा तितर-बितर पड़े हुए तरह तरह के सामानों के बीच में रास्ता बनाते हुए इधर से उधर घूमता रहा। उसने दिवाया को नीचे चीनी मिट्टी के बर्तन खड़खड़ाते और जोर जोर से उन किसानों को गालियाँ देते हुए सुना जिन्होंने दो रूबल की गाड़ी का किराया मांगा था। अपनी बदमिज़ाजी में येगोर साबलिच आलमारी के सामने खड़ा हो गया और वोद्का की सुराही की तरफ बहुत देर तक घूरता हुआ देखता रहा।

"भाड़, तेरा सत्यानाश हो!" उसने दिवाया को कात्या पर चिल्लाते हुए सुना। "तुझे शैतान ले जाय!"

कलाकार ने वोद्का का एक प्याला लिया और उसकी आत्मा पर छाया हुआ बादल धीरे धीरे गायब हो गया। उसने अनुभव किया मानो उसका सम्पूर्ण भीतरी भाग उसके भीतर मुस्करा रहा हो। वह स्वप्न देखने लगा। उसकी कल्पना ने चित्र खींचा कि कैसे वह

प्रस्तुत किया। वह आमतौर पर शाम के दोनों वक्त मिलने के समय तक सोया करता था। परन्तु इस बार भोजन के उपरान्त उसने अनुभव किया कि कोई उसकी टाँग खींच रहा था। कोई हँसे जा रहा था और उसका नाम ले लेकर पुकार रहा था। उसने आँखें खोलीं और अपने मित्र, प्राकृतिक दृश्यों के चित्रकार वरकोविन को देखा जो गर्मियों भर कोस्त्रोमा जिले में चला गया था।

"वाह!" प्रसन्न होकर वह चिल्लाया, "मैं क्या देख रहा हूँ!"

फिर सप्रेम चूमे गए, हाथ मिलाये गए।

"क्यों कोई चीज़ लाए हो? मैं जानता हूँ कि तुमने सैकड़ों चित्र बना डाले होंगे!" पैगोर साल्तविच ने वरकोविन को अपने ट्रंक में से सामान निकालते हुए देख कर कहा।

शाम को कोल्पीनिकोव, एक होनहार चित्रकार जिसने काम सीखना समाप्त किया था, येगोर सावलिच से मिलने आया। वह उसका मित्र था, अवस्था पैंतीस साल की थी और शराब के नशे में रह रहा था। उसके बाल काले थे और वह शेक्सपीयर के से कॉलर का व्यवहार करते था। उसके व्यवहार में बचपन की झलक थी। येगोर को देख कर उसने होंठों में मोड़ दी, सीने के दर्द की शिकायत की, मगर अपने मित्रों के आग्रह को रखते हुए एक गिलास लिया।

"मैंने एक विषय सोचा है सर ताराज़े' कहा जाने पर उसने कहना शुरू किया। "मैं कुछ नवीन ...दतोव या ऐबेसेलिमन या इसी तरह के किसी कलाकार का चित्र बनाना चाहता हूँ, समझे और उसके सिवाय मैं ईसाइयत की भावना को। एक तरफ रोम, समझे और दूसरी तरफ ईसाइयत। मैं इस भावना का चित्रण करना चाहता हूँ समझे! भावना का!"

और नीचे वह चिल्ला निरन्तर चिल्लाती आ रही थी:

"अच्छा, मुझे करनी का! मिरोनेंव के यहाँ जा और बोतो की बतल (शराब) ला, सूअर!"

पिंजड़े में बन्द पक्षियों की तरह वे तीनों दोस्त कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चक्कर काटते रहे। वे बिना रुके, गर्म होकर और अकड़ के साथ बातें करते रहे, तीनों ही बड़े खिन्न थे, भावना में बह रहे थे। उनकी बातों को सुन कर ऐसा लगता था कि उनका भविष्य यश कीर्ति उनके हाथों में है। और उनमें से किसी ने भी यह महसूस नहीं किया कि समय बीतता जा रहा है कि दिन दिन जीवन समाप्ति के पास आता जाता है कि उन्होंने दूसरों के सहारे पर जीवन बिताया है और अभी तक कुछ भी नहीं कर सके हैं। कि वे सब निष्ठुर नियम से बँधे हुए हैं जिसके द्वारा सौ होनहार प्रारम्भिक चित्रकारों में से केवल दो या तीन ही किसी स्थिति तक पहुँच पाते हैं और बाकी के सब गुमनाम रह जाते हैं, तोप का शिकार बनते हुए समाप्त हो जाते हैं।

प्रस्तुत किया। वह आमतौर पर शाम के दोनों वक्त मिलने के समय तक सोया करता था। परन्तु इस बार भोजन के उपरान्त उसने अनुभव किया कि कोई उसकी टाँग खींच रहा था। कोई हँसी कर रहा था और उसका नाम ले लेकर पुकार रहा था। उसने आँखें खोलीं और अपने मित्र, प्राकृतिक दृश्यों के चित्रकार उस्त्रेविच को देखा जो गर्मियों भर कोस्त्रोमा जिले में चला गया था।

"वाह!" प्रसन्न होकर वह चिल्लाया, "मैं क्या देख रहा हूँ!"

फिर स्वागत किए गए, हाथ मिलाए गए।

"क्यों, कोई चीज़ लाए हो? मैं सोचता हूँ कि तुमने सैकड़ों चित्र बना डाले होंगे?" येगोर सावविच ने उस्त्रेविच को अपने ट्रंक में से सामान निकालते हुए देख कर कहा।

"हूँ! ...हाँ। मैंने कुछ काम किया है। और कहो तुम्हारा काम कैसा चल रहा है? कोई चीज़ बना रहे न?"

येगोर सावविच बिस्तर के पीछे झुका और चेहरा लाल किए हुए, एक खोखले में बन्द, धूल और मकड़ी के जालों से भरे हुए एक चित्र को खींच कर निकाला।

"यह देखो ... अपनी पत्नि के बिछुड़ने के उपरान्त खिड़की पर खड़ी हुई एक लड़की। तीन बैठकों में। अभी पूरा समाप्त नहीं हो पाया है।"

चित्र में धुँधली सी रूप रेखा वाली बस्ता एक सूखी खिड़की पर बैठी हुई थी जिसमें होकर बाग

दिख रहा

शाम को कोस्तीलियोव, एक होनहार चित्रकार जिसने काम सीखना आरम्भ किया था, येगोर सावविच से मिलने आया। वह उसका मित्र था, अवस्था पैंतीस साल की थी और बगल के देहात में रह रहा था। उसके बाल लम्बे थे और वह शेक्सपीयर के से कॉलर का व्यवहार करता था। उसके व्यवहार में बड़प्पन की झलक थी। वोद्का को देख कर उसने भौंहों में गाँठ दी, सीने के दर्द की शिकायत की, मगर अपने मित्रों के आग्रह को रखते हुए एक प्याला लिया।

"मैंने एक चित्र सोचा है, मेरे दोस्तो!" नशा चढ़ने पर उसने कहना शुरू किया। "मैं कुछ नरोन ..हेरोद या क्लेपेन्टियन या उसी तरह के किसी बदमाश का चित्र बनाना चाहता हूँ, समझे? और उसके विरोध में ईसाइयत की भावना को। एक तरफ रोम, समझे? और दूसरी तरफ ईसाइयत। मैं उस भावना को चित्रित करना चाहता हूँ, समझे? भावना को!"

और नीचे वह विधवा निरन्तर चिल्लाये जा रही थी:

"आन्या, मुझे जल्दी था! मिरोनोव के यहाँ जा और थोड़ी सी स्कम्स (*शराब*) ला जल्दी!"

पिंजड़े में बन्द भेड़ियों की तरह वे तीनों दोस्त कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चक्कर लगाते रहे। वे बिना रुके, गर्म होकर और सचाई के साथ बातें करते रहे, तीनों ही उत्तेजित थे, भावना में बह रहे थे। उनकी बातों को सुन कर ऐसा लगता था कि उनका भविष्य, धन प्रसिद्धि उनके हाथों में है। और उनमें से किसी ने भी यह महसूस नहीं किया कि समय निकला जा रहा है कि प्रति दिन जीवन समाप्ति के पास पहुँचा जा रहा है कि उन्होंने दूसरों के सहारे पर जीवन बिताया है और अभी तक कुछ भी नहीं कर सके हैं; कि वे सब निष्ठुर नियम से बँधे हुए हैं जिसके द्वारा सौ होनहार आरम्भिक चित्रकारों में से केवल दो या तीन ही किसी स्थिति तक पहुँच पाते हैं और बाकी के सब अन्धकार में रह जाते हैं, तोप का निशाना बनते हुए समाप्त हो जाते हैं।

—वे प्रसन्न और आनन्दमग्न थे और भविष्य का उल्लास के साथ सामना करने को प्रस्तुत थे।

सुबह एक बजे कोस्तीलियोव ने विदा माँगी और अपने शेक्सपियर के से कॉलर पर हाथ फेरता हुआ घर चला गया। वह प्राकृतिक दृश्यों का चितेरा येगोर सावविच के यहाँ ही सोने के लिए ठहर गया। बिस्तर पर जाने से पहले येगोर सावविच ने एक मोमबत्ती जलाई और पानी पीने के लिए रसोईघर में गया। अन्धकारपूर्ण, सँकरे गलियारे में कात्या एक बक्स पर बैठी हुई थी और अपने घुटनों को हाथों से बाँधे हुए ऊपर देख रही थी। उसके पीले और थके हुए चेहरे पर एक प्रसन्न मुस्कराहट खेल रही थी और उसकी आँखें चमक रही थीं।

"तुम हो? क्या सोच रही हो?" येगोर सावविच ने उससे पूछा।

"मैं सोच रही हूँ कि तुम कैसे प्रसिद्ध बनोगे," उसने धीमे स्वर में फुसफुसाते हुए कहा।

"मैं कल्पना कर रही हूँ कि कैसे तुम एक प्रसिद्ध व्यक्ति बनोगे। ...मैंने तुम्हारी सारी बातें सुनी थीं।... मैं बराबर स्वप्न देखती रहती हूँ, स्वप्न देखती रहती हूँ। ..."

कात्या प्रसन्न होकर हँसने लगी, चीखी और श्रद्धा के साथ अपने दोनों हाथ अपने आदर्श के कन्धों पर रख दिए।

उनींदी

रात्रि। वार्का नाम की सी कम तेरह वर्ष की एक लड़की, एक पालने को हिला रही है जिसमें बच्चा लेटा हुआ है और मुश्किल से सुनाई देने वाले स्वर में गुनगुना रही है।

'बाबा री निंदिया आजा,
मेरे बच्चे को आके सुलाजा।'

एक छोटा सा हरा लैम्प पवित्र मूर्ति के सामने जल रहा है। कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक रस्सी बंधी हुई है जिस पर बच्चे के कपड़े और एक बड़ा काला पाजामा लटका हुआ है। इन पर मूर्ति वाले लैम्प का एक विशाल हरा धब्बा पड़ रहा है और इन बच्चे के कपड़ों और इस पाजामे की लम्बी छायायें स्टोव पर, पालने पर और वार्का पर पड़ रही हैं ...जब, लैम्प की लौ हिलने लगती है तो हरा धब्बा और उन छायाओं में जीवन पड़ जाता है और वे हिलने लगते हैं मानो हवा से हिल रहे हों। कमरे में घुटन है। गोभी के शोरबे और जूतों के दूकान की बदबू भर रही है।

बच्चा रो रहा है। रोने से बहुत पहले ही उसका गला पड़ चुका है। वह थक गया है मगर फिर भी रोये चला जा रहा है और मालूम नहीं कब चुप होगा। और वार्का की आँखों में नींद भर रही है। उसकी पलकें चिपक रही हैं, उसका सिर नीचे को झुक गया है उसकी गर्दन में दर्द हो रहा है। वह अपनी पलकों या होठों को हिला नहीं पाती और वह महसूस करती है मानो उसका चेहरा सूख कर काठ हो गया है मानो उसका सिर इतना छोटा हो गया है जितना कि एक आलपिन का सिर।

"बाबा री निंदिया आजा" वह गुनगुनाती है, "जब तक कि मैं तेरे लिये हलुआ बनाऊँ"

एक झींगुर स्टोव में चरमरा रहा है। बगल वाले कमरे के दरवाजे में होकर मालिक और उसके यहाँ काम सीखने वाले अफनासी खुर्राटे भर रहे हैं। पालना शोकाकुल होकर चरमरा रहा है। वार्का गुनगुनाती है—और यह सब मिलकर रात्रि के उस शान्ति प्रदायक संगीत का सृजन कर रहे हैं जो उस समय सुनने में बड़ा अच्छा लगता है जब कोई बिस्तर में लेटा हुआ हो। इस समय यह संगीत सिर्फ कर्कश और चिड़चिड़ाहट उत्पन्न करने वाला है क्योंकि वह उसे सोने के लिये उकसाता है और उसे सोना नहीं चाहिए। अगर वार्का—भगवान न करे—सो जाय तो उसका मालिक और मालकिन उसे पीटेंगे।

लैम्प की लौ हिलती है। वह हरा धब्बा और छायायें वार्का की स्थिर अधखुली आँखों पर पड़कर नाचने लगती हैं और उसके अर्धनिद्रित मस्तिष्क में रहस्यपूर्ण स्वप्नों की सृष्टि कर देती है। वह देखती है कि काले बादल आसमान में एक दूसरे का पीछा कर रहे हैं और बच्चे की तरह चीख रहे हैं। परन्तु फिर हवा चलती है, बादल गायब हो जाते हैं और वार्का बहती हुई कीचड़ से ढकी हुई एक बड़ी और चौड़ी सड़क देखती है। सड़क के किनारे गाड़ियों की लम्बी कतारें फैली हुई हैं जब कि मनुष्य पीठ पर थैले लादे हुए धीरे धीरे चल रहे हैं और छायायें आगे पीछे हिल रही हैं। दोनों तरफ उसे घने हरे वन कोहरे में होकर झलक दिखाई दे रहे हैं। एकाएक वे मनुष्य अपने थैलों और छायाओं के साथ ज़मीन पर उस कीचड़ में गिर पड़ते हैं। "ऐसा क्यों कर रहे हो?" वार्का पूछती है। "सोने के लिये सोने के लिए!" वे उसे उत्तर देते हैं। और वे गहरी नींद में, मीठी नींद सोते हुए

कौए और नीलकंठ

उसका स्वर्गवासी पिता वसिल्य लेसलोव कमरे पर हवा से ऊपर कपड़े बदल रहा है। वह उस रूप नहीं रही है मगर उसे कराहते और दर्द से पर्दे पर छुपते हुए सुन रही है। "उसकी आँखें बन्द हैं, सीमा कि वह कहता है। दर्द इतना भयानक है कि वह एक शब्द का भी उच्चारण नहीं कर सकता, सिर्फ साँस ले सकता है और एक रोग की तरह अपने होंठ काटता रहा है।

"भू-भू-भू-भू... ।"

उसकी माँ पेलागेया, मास्को के घर पर अपने रोती रही है कि देमिन मर रहा है। उस तरह बहुत दूर हो चुकी है और उसे वापस आ जाना चाहिए था। बाहर स्टोव पर बैठी हुई जाग रही है और अपने पिता की 'भू-भू-भू' सुन रही है। और तब वह सुनती है कि दरवाज़ पर कोई गाड़ी आई है। यह शहर का एक नौजवान डाक्टर है जिसे उस पर से भेजा गया है जहाँ वह एक मरीज को देखने के सिलसिले में ठहरा हुआ है। डाक्टर झोंपड़ी के भीतर आता है वह अँधेरे में दिखाई नहीं पड़ता परन्तु उसके खाँसने और दरवाज़े के खड़खड़ाने की आवाज़ सुनाई पड़ती है।

"मोमबत्ती जलाओ," वह कहता है।

'भू-भू-भू...' देमिन जवाब देता है।

पेलागेया दौड़कर स्टोव के पास जाती है और टूटे हुए बरतन को ढूँढ़ती है। एक मिनट खामोशी में गुज़र जाता है। डाक्टर अपनी जेब टटोल कर दियासलाई निकालता है।

"एक मिनट में लाती, एक मिनट में," पेलागेया कहती है झोंपड़ी से बाहर दौड़ी जाती है और थोड़ी देर में मोमबत्ती का एक सिरा लौटती है।

देमिन के गाल लाल हैं और उसकी आँखें चमक रही हैं विस्मय में एक विचित्र सी उत्सुकता है मानो उसे उस झोंपड़ी व र के अन्तर्गत सब का भाव हो गया हो।

"बच्चे को इधर ला !" वही स्वर फिर कहता है इस बार क्रोध
क्रोध के साथ। "तू सो रही है, कमबख्त कहीं !"

वार्का उछल पड़ती है और उसी तरफ देखती हुई सम
जाती है कि क्या मामला है। वहाँ वह सड़क नहीं है, पैलागीया
है, उसे सिखाने वाला आदमी नहीं है, वहाँ सिर्फ उसकी मालकिन है
दूध पिलाने आई है और कमरे के बीचोंबीच खड़ी है। जब तक
वह लम्बी चौड़े कन्धों वाली औरत बच्चे को दूध पिलाती है और
उसे चुप करती है, वार्का उसकी तरफ खड़ी हुई देखती है और उसके
चले जाने का इन्तजार कर रही है। और खिड़की से बाहर नीलिमा
झलकती चली आ रही है वे छायायें और छत पर पड़ने वाला हरा
धब्बा फीका पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है, जल्दी ही सुबह हो
जायगी।

"ले इसे !" अपनी कमीज के बटन लगाती हुई मालकिन
कहती है, "यह रो रहा है। इसे नज़र लग चुकी है।"

वार्का बच्चे को ले लेती है, पालने में लिटाती है और फिर
झुलाना शुरू कर देती है। वह हरा धब्बा और वे छायायें धीरे धीरे
गायब हो जाती हैं और अब उसकी आँखों को जबर्दस्ती बन्द करने
और उसके दिमाग पर छा जाने के लिए कुछ भी नहीं है। पर उसकी
आँखों में पहले ही की तरह नींद भर रही है, भयानक नींद भर रही है !
वार्का पालने के किनारे पर सिर रख देती है और नींद को भगाने के
लिए अपने पूरे शरीर को हिलाती है परन्तु फिर भी
झपकी हुई है और सिर भारी है।

और नहीं सताती जितना कि खड़े हुए होने पर। वह अकड़ी जाती है, सोच बनाती है और अनुभव करती है कि उसका भार या चेहरा फिर कायम हो रहा है और यह कि उसके विचार अधिक स्पष्ट होते जा रहे हैं।

"वार्का, समोवार ठीक कर!" उसकी मालकिन चीखती है।

वार्का लकड़ी का एक टुकड़ा काटती है और अभी लकड़ियों को सुलगा कर उन्हें समोवार में रख भी नहीं पाती कि उसे नया हुक्म मिलता है।

"वार्का, मालिक के बरसाती जूते साफ कर!"

वह फर्श पर बैठ जाती है, उन्हें साफ करती है और सोचती है कि एक बड़े गहरे बरसाती जूते में अपना सिर रख देना और उसमें एक झपकी ले लेना कितना अच्छा रहेगा। और एकाएक वह बरसाती बढ़ता है, फूलता है, सारे कमरे में भर जाता है। वार्का ब्रुश गिरा देती है मगर फौरन अपना सिर हिलाती है आँखें खूब खोलती है और चीजों को घूरने की कोशिश करती है जिससे वे बढ़ें नहीं और आँखों के आगे घूमें नहीं।

"वार्का, बाहर की सीढ़ियाँ धो, मुझे शर्म आती है जब उन्हें देखती हूँ!"

वार्का सीढ़ियों को धोती है, साफ करती है और कमरों में झाड़ती है फिर दूसरा स्टोव जलाती है और दूकान पर दौड़ी जाती है। बहुत काम करना है, उसे एक मिनट की भी फुर्सत नहीं है।

मगर कोई भी काम इतना मुश्किल नहीं जितना कि जगह खड़े होकर रसोई की मेज पर आलुओं का छीलना। मेज पर झुक जाता है, आलू उसकी आँखों के आगे नाचने लगते हैं, चाकू उसके हाथ से नीचे गिर जाता है जब कि उसकी मोटी मालकिन उसके पास आस्तीनें ऊपर चढ़ाए इतनी जोर से बोलती घूम रही है कि वार्का के कान बजने लगते हैं। भोजन के समय

करना, साफ करना सीना भी दुखदायी लगता है, ऐसे क्षण आते हैं जब वह चाहती है कि सब कुछ छोड़ कर फर्श पर लेट जाय और सो जाय।

दिन गुजर जाता है। खिड़कियों को धुंधली होती हुई देख कर वार्का अपनी कनपटियों को दबाती है जो ऐसी लगती हैं मानो काठ की बनी हों और मुस्कराती है यद्यपि वह नहीं जानती कि क्यों। शाम का धुंधलका उसकी आँखों को आराम देता है जो मुश्किल से खुल रही हैं और उसे विश्वास है कि शीघ्र गहरी नींद सोयेगी। शाम को मेहमान आते हैं।

"वार्का, समोवार लगा!" उसकी मालकिन चीखती है।

समोवार छोटा सा है और मेहमानों के चाय खत्म करने के पहले उसे कुछ पाँच बार लगाना पड़ता है। चाय के बाद वार्का को वहीं जगह मेहमानों की तरफ देखते और आज्ञाओं की प्रतीक्षा करते हुए एक घंटे तक खड़ा रहना पड़ता है।

"वार्का दौड़ और बीयर की तीन बोतलें खरीद ला!"

वह चल पड़ती है और पूरी तेजी से दौड़ने की कोशिश करती है जिससे कि नींद भाग जाय।

"वार्का, वोदका ले आ! वार्का, बोतल खोलने का पेंच कहाँ है? वार्का, एक मछली साफ कर!"

मगर अब, आखिरकार मेहमान चले गये हैं और मालिक

"आजा री निंदिया आजा" वह गुनगुनाती है "मेरे बच्चे को आज सुला जा!"

और बच्चा रोता है और रोने से थक गया है। वार्का फिर उस कीचड़ भरी सड़क, थैले वाले मनुष्यों, अपनी माँ पेलागिया, अपने पिता येफिम को देखती है। वह सब समझती है वह हरेक को पहचानती है मगर अपने उनींदेपन में वह उस शक्ति को नहीं समझ पाती जो उसके हाथ और पैरों को बांध देती है, उस पर छा जाती है और उसे जीने से रोकती है। वह चारों तरफ देखती है, उस शक्ति को ढूँढती है जिससे कि वह उससे बच सके मगर उसे खोज नहीं पाती। आखिरकार, बुरी तरह थक कर वह अपनी पूरी कोशिश करती है, आँखों पर जोर देती है ऊपर हिलते हुए हरे धब्बे को देखती है और बच्चे को चीखते हुए सुन कर अपने दुश्मन को पा लेती है जो उसे जिन्दा नहीं रहने देता।

उसका वह दुश्मन वह बच्चा है।

वह हँसती है। उसे यह अद्भुत लगता है कि वह इतनी साधारण सी बात पहले नहीं समझ सकी। वह हरा धब्बा, वे छायाएँ और वह झींगुर भी हँसने और आश्चर्य प्रकट करने लगते हैं।

यह भ्रम वार्का पर अधिकार कर लेती है। वह अपने स्टूल से उठ कर खड़ी हो जाती है और अपने चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान लिए और बिना झपकती हुई घूरती आँखों के साथ कमरे में इधर से उधर घूमती है। वह इस विचार से प्रसन्न और मग्न प्रतीत होती है कि अभी उस बच्चे से मुक्ति पा लेगी जो उसके हाथ-पैरों को बांधे हुए है... बच्चे को मार दे और फिर सो जाये, सो जाये सो जाये!...

हँसती, आँखें मिचमिचाती और उस हरे धब्बे की तरफ उँगली हिलाती हुई वार्का चुपचाप पालने तक जाती है और बच्चे के ऊपर झुकती है। जब वह उसका गला घोंट देती है तो जल्दी से फर्श पर लेट जाती है प्रसन्नतापूर्वक हँसती है कि वह सो सकेगी और एक पल में मुर्दे की तरह गहरी नींद में सो जाती है।

करता था और अपने बाप की मदद करता था, मगर उससे बहुत ज्यादा मदद की उम्मीद नहीं की जाती थी क्योंकि उसकी तन्दुरुस्ती खराब थी और वह बहरा था। उसकी बीबी एक्सिन्या एक सुडौल शरीर वाली सुन्दर स्त्री थी जो छुट्टियों वाले दिन टोप पहनती थी और छाता लेकर चलती थी—बहुत जल्दी उठ बैठती थी और रात को देर में सोने जाती थी और दिन भर अपना घाघरा ऊपर खोंसे चाबियों को खनकाती हुई इधर उधर भागती रहती थी। भण्डार के गोदाम से तहखाने में जाती और वहाँ से दूकान में। बुड्ढा त्सिबुकिन मग्न होकर उसे देखता और उसकी आँखें चमक उठतीं। ऐसे अवसरों पर उसे अफसोस होता कि छोटे बेटे की जगह जो बहरा था और जिसे स्पष्टतः नारी-सौन्दर्य का किंचित मात्र भी ज्ञान नहीं था, उसकी शादी बड़े बेटे के साथ क्यों न हुई।

बुड्ढा हमेशा पारिवारिक जीवन को पसन्द करता था अपने घर बार को दुनियाँ की सब चीजों से ज्यादा प्यार करता था, खास तौर पर अपने बड़े बेटे उस जासूस को और अपनी पुत्रवधू को। एक्सिन्या ने जैसे ही बहरे लड़के के साथ शादी हुई, उसने व्यापार में कुशलता दिखानी आरम्भ कर दी। वह जानती थी कि किसे उधार दिया जाय और किसे न दिया जाय। चाबियाँ वह अपने पास रखती थी और उन्हें अपने पति तक को नहीं देती थी। वह माला के दानों को गिनकर हिसाब किताब रखती थी, घोड़ों के दाँतों की किसानों की तरह परीक्षा करती थी और हमेशा खिलखिलाती या हँसती रहती थी। जो कुछ भी वह करती या कहती, उसका हमेशा ठीक होता और सफल।

में आकर रहने लगी घर में प्रत्येक चीज़ चमक उठी मानो सारी खिड़कियों में नए कांच जड़ दिए गए हों। पवित्र मूर्तियों के सम्मुख दीपक जलने लगे, मेज़ें बर्फ़ की तरह सफ़ेद कपड़ों से ढक दी गईं, लाल कलियों के साथ फूल खिड़कियों में और सामने वाले बाग़ में खिल उठे और भोजन के समय एक ही प्याले में खाने के स्थान पर हर व्यक्ति के लिये अलग प्लेटें लगाई जाने लगीं। वारवारा विनोदपूर्ण के चेहरे पर एक सुन्दर मिठास एवं मुस्कान खेलती रहती थी और ऐसा लगने लगा मानो सारा घर भी मुस्करा रहा हो। भिखारी और तीर्थ यात्री, मर्द और औरत आने में लगे शुरू हो गये। पर एक ऐसी बात थी जो पहले कभी नहीं हुई थी। रसोईघरों की खिड़की चीज़ों के सामान एवं मज़े की आवाज़ों और बीमार तथा निर्बल दिखाई देने वाले आदमियों की एकान्तवना सी आती हुई लगीं जिन्हें शराब पीने के कारण कामकाज से निकाल दिया गया था, खिड़कियों के नीचे सुनाई पड़ने लगीं। वारवारा पैसे से, रोटी से, पुराने कपड़ों से उनकी मदद करने लगी और बाद में जब वह पूरी तरह से सुपरिचित हो गई तो दुकान से चीज़ें लाने लगी। एक दिन हम बड़े आदमी ने उसे चार धौल्य चाय के बांटे हुए देखा और उसने उसे बुला लिया।

"प्रिये, माँ ने चार डीम्म चाय के दी हैं," उसने चाय में अपने पिता का सुचित किया, "इसे किस मद में दर्ज करूँ?"

बुड्ढे ने कोई जवाब नहीं दिया, खामोश खड़ा रह गया और कुछ देर अपनी भौंहों को ऊपर नीचे करता हुआ सोचता रहा और फिर अपनी पत्नी के पास चला गया।

"वारवारुश्का, अगर तुम्हें दुकान से कोई चीज़ चाहिए," उसने स्नेह के साथ कहा, "तो ले लिया करो, प्रिये। ले लो और इस्तेमाल करो, हिसाब मत रखो?"

और दूसरे दिन जब बड़े आदमी ने बाहर में दीवान हुए उसे पुकार कर कहा:

"हाँ, अगर तुम्हें कोई चीज़ चाहिए तो ले लेना।"

उसके द्वारा दान करने में कुछ अपमान कुछ मसखरापन और उदार हास्यता की झलक सी थी वैसी ही जैसी कि पवित्र मूर्तियों के सम्मुख जलने वाले दीपकों और लाल फूलों में थी। जब उत्सवों या गिरजे के त्यौहारों के समय जो तीन दिन तक मनाए जाते थे वे किसानों को मीठा नमकीन गोश्त, जिसमें से इतनी तेज गन्ध आती थी कि उसके बरतन के पास खड़ा रहना कठिन था, बेचते थे और उनकी आदमियों से बदले के रूप में टोपियाँ, और उनकी बीबियों के रूमाल ले लेते थे जब कारखाने के मजदूर भारी बुरे शोरबा से मदहोश होकर कीचड़ में नाचते रहते थे और पाप हवा में गहरे कुहरे की तरह मंडराता प्रतीत होता था तो उस समय यह सोच कर सन्तोष मिलता था कि यहाँ पर में ऊपर शरीफ, साफ सुथरे कपड़े पहने हुए एक औरत थी जिसका नमकीन गोश्त या शोरबा से कोई भी सम्बन्ध नहीं था। उस समाचार पर्व और पवित्र दिनों में उसकी दानशीलता, मशीन में लगे हुए सुरक्षा यंत्र का सा प्रभाव रखती थी।

सिबुकिन के घर में दिन व्यापारिक क्रियाओं में ही व्यतीत होते थे। सूरज निकलने से पहले ही बाहर के कमरे को धोते हुए एक्सिन्या खांसती और मुँह से भाप छोड़ती रहती, और रसोईघर में समोवार एक ऐसी आवाज के साथ उबलता रहता जो अच्छे भविष्य का सूचक नहीं था। बुड्ढा ग्रिगोरी पेत्रोविच, लम्बा काला कोट, सूती ब्रीचिस और चमकते हुए ऊँचे जूते पहने, एक साफ सुथरी आकृति अपनी छोटे से व्यक्ति के समान दिखाई पड़ने
और एक प्रसिद्ध

पसन्द करता था। उसकी पत्नी और पुत्रवधू ने उसे विदा दी और ऐसे मौकों पर जब वह एक अच्छा साफ सुथरा कोट पहने होता और गाड़ी में वह बड़ा काला घोड़ा जुता होता जिसकी कीमत तीन सौ रूबल थी तो बूढ़े को किसानों का अपनी शिकायतें और प्रार्थना-पत्र लेकर अपने पास आना अच्छा नहीं लगता था। वह किसानों से नफरत करता था और अगर वह किसी किसान को फाटक पर प्रतीक्षा में खड़ा हुआ देखता तो गुस्से से चिल्ला पड़ता :

"तुम यहाँ क्यों खड़े हो ? भागो यहाँ !"

और वह अगर एक भिखारी होता तो कहता :

"भगवान देगा !"

वह व्यापार के काम से बाहर जाता था। उसकी बीबी अपनी पोशाक पहने और एक काला 'एप्रन' बाँधे हुए कमरों को ठीक करती रहती या रसोई घर में मदद देती। अक्सिन्या दुकान का काम संभालती और वहाँ से बोतलों और उसके पैसे की खनखनाहट, उसकी हँसी और डाँट डपट की बातें करने की आवाज और उन ग्राहकों के गुस्से की भन-भनाहट जिनका वह अपमान कर देती थी, सुनाई पड़ती रहती थी। और उसी समय यह भी देखा जा सकता था कि दुकान में वोदका की बिक्री चोरी छिपे जारी रहती थी। वह बहरा आदमी भी दुकान में बैठा रहता या नंगे सिर, अपनी जेबों में हाथ डाले अपने विचारों में कभी बदहवास की तरह घूमता हुआ सड़क पर घूमता रहता। दिन भर में वे छः बार चाय पीते, चार बार खाना खाने बैठते और शाम को अपनी कमाई गिनते, उसे हिसाब में दर्ज करते, बिस्तर पर जाते और गहरी नींद सोते।

उक्लीवो के तीनों सूती कपड़ा छापने और रंगने के मालिकों को—हृमिन, छोटे हृमिन और कोस्तुकोव—के घरों पर टेलीफोन लगा रहता। टेलीफोन भी स्थानीय कचहरी में लगा हुआ था परन्तु जल्दी ही उसने काम देना बन्द कर दिया क्योंकि वहाँ खटमलों और कीड़े मकोड़ों ने

अपना अधिकार कर लिया था। देहाती विधि का मुखिया बहुत कम पढ़ा लिखा आदमी था और सरकारी कागजातों में प्रत्येक शब्द छापे के बड़े अक्षरों में लिखा करता था। लेकिन जब टेलीफून खराब हो गया तो वह बोला :

"हाँ, अब टेलीफून के बिना हम लोगों का बड़ी तकलीफ हो जायगी।"

बड़े हीमिन हमेशा छोटे हीमिन के साथ मुकदमे लड़ते रहते थे और कभी कभी छोटे हीमिन आपस में लड़ मरते और अदालत का दरवाजा खटखटाने लगते और उनका मामला दो या एक महीने तक बन्द रहता जब तक कि उनमें फिर समझौता न हो जाता और यह झगड़ों की बजाय के लिए एक मनोरंजन का विषय बन जाता क्योंकि प्रत्येक झगड़े के अवसर पर काफी चर्चा होती और मजे उड़ती। छुट्टियों वाले दिनों में कोल्हुकोव और छोटे हीमिन मुलाकात करते, रास्तों में इधर उधर टहलते फिरते और बच्चों को चुम्बन देते। एफ़्रूसिन्या अपने ढंगदार पेटीकोट को सरसराती हुई, एक तीखी गर्दन वाली पोशाक पहने अपनी दुकान के पास चहलकदमी करती रहती। छोटे हीमिन बांहें पकड़ लेते और वे ऐसे लगते मानो जबरदस्ती कर रहे हों। फिर इवान सिदुरिच अपने नए घोड़े को दिखाने के लिए गाड़ी में बाहर निकलता और नास्तसा को अपने साथ बैठा लेता।

२

बड़ा बेटा एनीसिम

मैं तुम्हें तुम्हारी शारीरिक आवश्यकताओं के सम्मान के निमित्त एक शानदार कुत्ता की भाँति समझता हूँ।"

इस कार्ड के बीच वाली तिरछी लिखावट में मानो दूसरी कलम से लिखा गया हो लिखा रहता। "एर्नेस्टिम मिशुटिन," और बाद में इसी सुन्दर लिपि में। "एमेन्द!"

वे एक बड़ी सब बार बार से पढ़ते और कुछ सा प्रभावित और भावना से कांप कर कहता।

"देखो वह घर पर रहने की परवाह नहीं करता, वह मित्रों का सा जीवन बिता रहा है। और विचार हां! प्रत्येक को अपना काम करना चाहिए।"

ऐसा हुआ कि मेंढ़े के बिल्कुल पहले धोखों के साथ सफ़ेद घोड़ी और गाड़ी आया। कुत्ता और बारबारा उसे इसके खिड़की पर गए और देखा। एर्नेस्टिम एक स्लेज में बैठा हुआ स्टेशन से घर आ रहा था। उसका चाल-ढाल नितान्त अप्रत्याशित था। वह भीतर आया, चिन्तित और किसी बात से उद्विग्न होता हुआ और पूरे समय तक ऐसा ही बना रहा। उसके व्यवहार में कुछ अजीब सी शिथिलता और स्वच्छन्दता सी थी। वह जाने की जल्दी में नहीं था। ऐसा लगता था मानो उसे नौकरी से निकाल दिया गया हो। बारबरा उसके आने से प्रसन्न थी। उसने उसकी तरफ एक गर्व-पूर्ण दृष्टि से देखा, गहरी सांस ली और सिर हिलाया।

"यह क्या बात है, मेरे प्रेम्या!" वह बोली, "तन्, तन्, बच्चे की बहुएँ मर रही हैं और यह अब भी एक अति दरिद्र का सा जीवन बिता रहा है तन्, तन्, तन्!"

इधर कमरे से उसकी बेमेल, और एक सी आवाज़ से तन्, तन्, तन् की सी ध्वनि आ रही थी। वह भारी रुचि और पूर्णनिष्ठा के साथ कुत्तुम का गर्दन पकड़ने लगी और उसके पत्तों पर अनुरागपूर्ण और रहस्यमय भाव करके रख मानो वे वास्तविकी हों।

अपना अधिकार कर लिया था। देहाती जिले का मुखिया बहुत कम पढ़ा लिखा आदमी था और सरकारी कागजातों में प्रत्येक शब्द छोटे से बड़े अक्षरों में लिखा करता था। लेकिन जब टैडीफूल खतम हो गया तो वह बोला :

"हाँ, अब टैडीफूल के बिना हम दोनों को बड़ी तकलीफ हो जायगी।"

बड़े हीमिंग हमेशा छोटे हीमिंग के साथ मुकदमे करते रहते थे और कभी कभी छोटे हीमिंग आपस में लड़ मरते और अदालत का दरवाजा खटखटाने लगते और जबतक फैसला हो या एक महीने तक बना रहता जब तक कि उनमें फिर समझौता न हो जाय और यह झगड़ों की समाप्ति के लिए एक मनोरंजन का विषय बन जाता क्योंकि प्रत्येक त्योहार के अवसर पर इसकी चर्चा होती और मजे रहती। छुट्टियों वाले दिनों में कोस्तोफेल और छोटे हीमिंग दुकानें करते, झगड़ों में इधर उधर दौड़ते फिरते और वकीलों को घूस देते। एकूसिना अपने जन्मदाता पेत्रीमोटे को बहादुरी हुई, एक बीबी मार्टेन वाली पोशाक पहने, अपनी दुकान के पास मटरगश्ती करती रहती। छोटे हीमिंग उसे पकड़ बैठे और वे यहाँ मानो जबर्दस्ती कर रहे हों। फिर कुछ सिकुमिन अपने नए घोड़े को दिखाने के लिए गाड़ी में बाहर निकलता और बारबरा को अपने साथ बैठा लेता।

२

बड़ा दिन

तय हुआ कि एनीसिम की शादी कर दी जाय।

"ओह खुद, खुद, छोटे भाई की शादी बहुत पहले हो चुकी है" वारवारा ने कहा "और तुम मेले में मस्त हुए मुर्गों की तरह घूमते बिना साथी के हो। इसका क्या मतलब है! खुद, खुद, तुम्हारी शादी हो जायगी भगवान करे, फिर जैसा तुम ठीक समझो—तुम नौकरी पर चले जाओगे और तुम्हारी बीवी यहाँ घर पर हमारी मदद करने के लिए रह जायगी। बेलगाम तुम्हारा जीवन बड़ा अव्यवस्थित है और मैं देख रही हूँ कि तुम ढंग से रहना भूल चुके हो। खुद, खुद, तुम शहरी लोगों के साथ यही मुसीबत है।"

त्सिबूकिन परिवार में शादी होती थी तो उनके लिए गाँव में सब से सुन्दर लड़कियाँ चुनी जाया करती थीं क्योंकि वे लोग अमीर थे। एनीसिम के लिए भी एक सुन्दर लड़की तलाश कर ली गई। वह खुद बड़ी मामूली और ध्यान न देने लायक शक्ल सूरत वाला व्यक्ति था दुबला पतला, बीमार सा शरीर और लम्बा कद, गोल और फूले हुए गाल जो ऐसे लगते थे मानो वह हमेशा फूला रहा हो। उसकी आँखें जल्दी नहीं झपकती थीं, तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से घूरती रहती थीं, उसकी दाढ़ी कम और छितरी थी और जब वह सोच रहा होता तो हमेशा उसे मुँह में रख लेता था और चबाता रहता था। साथ ही वह अक्सर ज्यादा पी लिया करता था और नाक से जग जाया करता था। मगर जब उसे सूचना दी गई कि उन्होंने उसके लिए बड़ी खूबसूरत बीवी ढूँढ ली है तो वह बोला,

"ओह अच्छा मैं कोई बदसूरत ...

कि हमारा परिवार ...

रहती थी और बहुत गरीब थी और दिन में काम करने बाहर जाया करती थी। इस तरह के छोटा मालूम पड़ रही थी। वह भी काम करने लगी थी। ढोरगुपथा के लोग सीपा की सुन्दरता की चर्चा करने लगे थे मगर उसकी भयंकर गरीबी ने सब को उससे दूर रखा। लोगों की इच्छा थी कि कोई विधुर या दूसरी उमर का आदमी उसकी गरीबी का ख्याल न कर उससे शादी कर लेगा या बिना शादी किए ही उस पर प्रेम और यह कि उसके साथ रहने से उसकी माँ को पेट भर खाना मिल जाया करेगा। शादी कराने वाले दलालों के मुँह से बारबार ये बातें विषय में सुना और पानी में देठ कर ढोरगुपथो को चल दी।

फिर मौसी के घर बारकी रखने की रस्म बड़ा करना निश्चित किया गया जिसमें भोजन और शराब का सुन्दर प्रबन्ध था। सीपा ने इसी उत्सव के लिए दमदार्ई गई नई गुलाबी पोशाक पहनी। उसके कानों में एक लाल चीज़ चमक रही थी जो दिल धड़क रहा था। वह ही बड़े बाली, उसकी चमकदार बालों की जिसकी स्पर्श कोमल और सिमट की ओर जो धूप में काम करने के कारण धूप से सांवली पड़ गई थी। उसके चहरे पर हमेशा एक करुणपूर्ण और दयनीयता सी तमतमा रही रहती था और उसकी आँखों में एक बच्चे की सी विस्मयपूर्ण और जिज्ञासु भावना भरी रहती थी।

यह किशोरी थी, बिल्कुल परी सी लगती थी बाद। उसके रूप का उमस दुनिया से निराई करता था मगर उसकी शादी हो सकती थी क्योंकि उसकी उम्र व मालूम की दर से इस योग्य हो चुकी थी। वह सचमुच सुन्दरी थी मगर सिर्फ एक ही चीज़, जो दरअसल मानी जा सकती थी उसको जो सबसे हाथ से जा निमित्त छोड़ दी सिर्फ मातमों को याद करके रहता थे।

"देख नहीं है और हम इसकी ज्यादा पसन्द नहीं करते।"

सिमूकन ने मौसी से कहा। "हमने अपने बेटे स्तेपन के लिये भी एक गरीब घराने की लड़की ली थी और अब हम उसकी अधिक अपेक्षा नहीं कर सकते। पर मैं और व्यापार में वह माहिर है।"

ओल्गा दरवाज़े में खड़ी थी और उसने इस तरह देखा मानो कह रही हो। "मेरे साथ जो चाहो सो करो, मैं तुम्हारा विश्वास करती हूँ," जब कि उसकी माँ मारफ़ोन्या मक्सूमोव्ना, शर्म से विचलित होकर रसोई घर में जा छिपी। एक बार उसकी जवानी में एक व्यापारी ने जिसका वह फ़र्श साफ़ कर रही थी गुस्से में उसके लातें मारी थीं वह डर के मारे सुन्न पड़ गई थी और उसके मन में हमेशा के लिये भय की भावना ने घर कर लिया था। जब यह भयभीत होती तो उसके हाथ पैर काँपने लगते और गला रुँधने लगता। रसोई घर में बैठी हुई उसने मेहमानों की बातें सुनने की कोशिश की और बराबर अपने माथे पर क्रास बनाए और पवित्र मूर्तियों की तरफ़ देखते हुए अपने ऊपर ईश्वर का विचार करती रही। पुर्फ़िरिम ने, जो थोड़ा पिए हुए था, रसोई घर का दरवाज़ा खोला और आत्मीयता के साथ बोला:

"यहाँ क्यों बैठी हो, मेरी प्यारी माँ! हमें तुम्हारे बिना अच्छा नहीं लग रहा।"

और मारफ़ोन्या ने शरमा कर अपने हाथों को अपनी दुर्बल सूखी छाती से लगाते हुए कहा:

"ओह, कोई बात नहीं। तुम्हारी बड़ी कृपा है।"

लड़की देखने के बाद शादी की तिथि तय की गई।

सिम घर पर, सीटी बजाता हुआ कमरों

बाद सोचकर

रहा था कि उसकी सिर्फ इसीलिए शादी हो रही है क्योंकि उसका स्वप्न और भौजी भी ऐसा चाहते थे और इसलिए कि गांव में यह रिवाज था कि बेटे की शादी की जाए जिससे कि घर में काम करने के लिये एक औरत और आ जाए। जब वह गया तो यह नहीं लगता था कि बाकी था और उसका स्वागत वैसा नहीं था जैसा कि पहले हुआ करता था। इस बार उसका स्वागत विशेष रूप से लापरवाही से भरा हुआ था और उसकी बातें उसकी उपरी सी थीं।

मिखाइलोवा गांव में स्कोपेत्स सम्प्रदाय की अनुयायिनी हो मिस रहती थी जो ध्यान में पहले आती थी। शादी के बाद उसे तैयार करने का काम उन्हीं को सौंपा गया था और वे अक्सर उसे बना कर उसका ठीक भार रखने के लिये आया करती थी और चाय पीती हुई कभी एक दृश्य रचती थी। वे बारातियों के लिये कपड़ों गोट लगी हुई दूर रंग की और वधू-कन्या के लिये सामने पीले रंग की और चमकीली हुई इसके हर एक की पोशाक तैयार कर रही थीं। मिगुलिन उन्हें भय मियों के रूप में मजबूरी न हुआ दुःखद के सामान न रूप में दिया करता था। वे सम्पन्न निवास होकर वर्षों की वर्षा मोमबत्तियों के स्वच्छ और बत्तियों के लिए लिए, जिनकी उन्हें अपनी कोई जरूरत नहीं थी और जब गांव से बाहर निकल कर दूसरे मैदान में पहुंचे तो एक घाटे के पीछे पर बैठ गईं और रोने लगीं।

दूसरे दिन शादी के दिन से तीन दिन पहले सिर से पैर तक एक बड़े कपड़े पहने हुए आ पहुंचा। वह सम्पन्न जमींदार इलिया रहता था तमाशा हुए हाथ में हुए था एक कमर बेंत की तरह दोहरे धागे से बने हुई एक लम्बा लम्बी चोंगे हुए था। उसके कन्धे पर एक मोमजामा को बना था, उससे सटा था। उसने उसे पहन नहीं रखा था।

पवित्र मूर्तियों के सम्मुख शादी के मन्त्र पढ़ने उसने आंख का निशान रखने के बाद उसने पिता का सम्मान किया और उन्हें भौंहों के सम समय और इस प्रकार नमस्कार किया। पर इन दोनों की उसने दुःख ही दिए और दया

लिम्का को पच्चीस चौथाई-रूबल। इस उपहार का सबसे बड़ा आकर्षण यह था कि सारे सिक्के, जो मानो होशियारी से छाँटकर लिए गए हों, नए थे और धूप से चमक रहे थे। गम्भीर और शान्त दिखाई देने का प्रयत्न करते हुए उसने चेहरा सिकोड़ा और नाक फुलाए। उसके मुँह से शराब की गन्ध आ रही थी। शायद हर स्टेशन पर वह शराबखाने में गया था। और फिर उसके चेहरे पर आत्मप्रशंसा के चिह्न प्रगट हो उठे—जिसमें दिखावा और असंगति थी। फिर एफीमिसिम ने बुड्ढे के साथ खाना खाया और चाय पी। वरवारा ने अपने हाथ में उन नए सिक्कों को कसकर पकड़ा और उन गाँव वालों की बातें पूछीं जो शहर में रहने लगे थे।

"भगवान को धन्यवाद है कि वे सब ठीक हैं। उनकी मज़े से गुज़र रही है। एफीमिसिम ने बताया 'सिर्फ' इवान येगोरोव मुसीबत में है। उसकी बुड्ढी बीबी सोफिया निकीफोरोव्ना का देहान्त हो गया है। उसे तपेदिक हो गई थी। उन्होंने उसकी आत्मा की शान्ति के लिये दिए जाने वाले भोज का ठेका ढाई रूबल प्रति व्यक्ति के हिसाब से हलवाई को दिया था। और वहाँ असली शराब पिलाई गई थी। हमारे गाँव के किसानों ने भी अपने लिए ढाई ढाई रूबल दिए थे। उन्होंने कुछ भी नहीं खाया मानो वे किसान इस भूख्य को समझ गए हों।"

'ढाई'!" उसके पिता ने सिर हिलाते हुए कहा।

"क्यों वहाँ ताज्जुब की भी बात नहीं है। तुम कुछ जलपान करने के लिए किसी रेस्टोरेंट में जाते हो, तो एक चीज़ें मंगवा लो और लोग भी आ जाते हैं यहाँ तक कि अपनी एक पार्टी जमा हो जाती है, शराब पी जाती है और जब तक कि तुम्हें होश आता है, दिन निकल आता है और हरेक को तीन या चार रूबल के हिसाब से भुगतान करना पड़ता है। और अगर कोई समोरोदोव के साथ जाय तो वह हर चीज़ खाने के बाद कॉफी में ब्रान्डी डालकर पीना पसन्द करता है और ब्रान्डी का एक छोटा सा गिलास साठ कोपेक का आता है।"

"मैं अब हमेशा समोरोरोव के साथ रहता हूँ। समोरोरोव ही मेरे तुम्हारे लिए लिये हुए सब किस्से करता है। वह बहुत सुन्दर लिखता है। और अगर मैं तुम्हें बताऊँ, माँ,' एलीसिम बारबारा की तरफ मुखातिब होकर समय के साथ बढ़ता गया, "कि सोमोरोरोव कैसा आदमी है तो तुम मेरी बात का यकीन नहीं करोगी। हम लोग उसे मरम्म ख्याम पुकारते हैं क्योंकि वह मसमीमिया वासी की तरह अपना है। मैं उसकी हर बात को जान सकता हूँ। मैं अपने हाथ की उँगलियों की तरह उसके सब कामों को जानता हूँ और वह महसूस करता है और वह हमेशा मेरी बात मानता है कि हम लोग अलग नहीं हो सकते। वह इस तरह से तो इसे पसन्द नहीं करता मगर मेरे बिना उसका काम नहीं चल सकता। जहाँ मैं जाता हूँ वह भी जाता है। मेरी बात बड़ी सच्ची है माँ। एक किसान को बाजार में कमीज बेचते हुए देखता हूँ। 'अहा, यह कमीज चोरी की है।' और सचमुच यह बात निकलती है। कमीज चोरी की थी।'

"तुम कैसे जान लेते हो?" बारबारा ने पूछा।

"किसी चीज से नहीं। मेरी निगाह भाँप लेती है। मैं उस कमीज के बारे में कुछ भी नहीं जानता सिर्फ किसी वजह से मैं उसकी तरफ आकर्षित हो जाता हूँ। वह चोरी की है और मैं सिर्फ यही जान सकता हूँ। इस कानूनों में यह बाकायदा कहा गया है। इसका मतलब है कि चोरों की चीजों को पकड़ने। हाँ कोई भी चोरी कर सकता है, मगर उसको छिपाना दूसरी ही बात है। दुनिया काफी चौड़ी है मगर चोरी के माल को कहीं भी नहीं छिपाया जा सकता।"

"हमारे गाँव में पिछले हफ्ते एक घोड़ा और दो भेड़ें चोरी गई थीं" बारबारा ने कहा और एक गहरी साँस ली, "और उन्हें ढूँढ़ने वाला कोई भी नहीं है।" चोर कह कर।

"अच्छा मैं हाजिर करूँगा। मुझे कुछ उज्र नहीं है।"

क्योंकि तूफ़ान के समय गाँव पर एक भी बूँद बिना बरसाये जैसे हो निकल जाते हैं उसके द्वारा पहले किए हुए पाप इतने ज़्यादा थे कि उन सब को नज़रअंदाज़ कर देना या उनसे बच जाना आशा के विपरीत दिखाई पड़ रहा था। यहाँ तक कि उसके लिए क्षमा माँगना भी असंभव प्रतीत होता था। परन्तु फिर भी उसने क्षमा-याचना की और ज़ोर से हिचकी तक ली मगर किसी ने भी इस बात को देख नहीं पाया क्योंकि उन लोगों ने यह सोचा कि उसने ज़रा ज़्यादा पी ली होगी।

बच्चों की सी चिड़चिड़ाहट की एक तीखी आवाज़ आई :

"मुझे यहाँ से ले चलो, प्यारी माँ !"

"चुप रहो !" पादरी चिल्लाया।

जब वे गिरजे से लौटे तो लोग उनके पीछे दौड़े, दूकान पर, फाटक पर और अहाते में खिड़कियों के नीचे लोगों के झुण्ड लगा थे। किसानों की औरतें उन्हें बधाई के गाने सुनाने के लिए आईं। नव-दम्पति ने अभी मुश्किल से दहलीज़ को पार ही किया था कि उन्हें बाजों ने, जो अपनी कमरों में पहले से ही संगीत की पुस्तक लिए बैठे थे, अपनी पूरी ताकत से बाजा बजाकर गाना शुरू कर दिया। एक बैण्ड ने जिसे खास तौर पर शहर से बुलाया गया था बाजा बजाना शुरू किया। काँच के बड़े बड़े गिलासों में झागदार 'डोन' नाम की शराब लाई गई और ऐलीज़ारोव ने जो एक लम्बा, तगड़ा और भरी हुई भौंहों वाला बूढ़ा था और जो ठेके पर काम करता था उस दूल्हा जोड़े को सम्बोधित कर कहना शुरू किया।

"एनीसिम और तुम, मेरी बच्ची, एक दूसरे को प्यार करना, धर्म मार्ग का पालन करना और स्वर्ग की माता तुम पर सदैव अपना वरद् हस्त रखेगी।"

"मिरोशी वेत्रोविच तोषो तुगी से हमें रोको दो!" उसने आवाज़ में कहा और तब तुरन्त ही एक गहरी आवाज़ में हँस पड़ा, हो हो-हो। वह तुम्हारे लिए भी एक अच्छी पुत्र-वधू होगी। वह सब से ठीक है। सब काम ठीक तरह से होता है, कोई गड़बड़ नहीं मशीनरी ठीक काम करती है सब पुर्जे ठीक ठाक हैं।"

वह चेर्नेत्सी जिले का रहने वाला था मगर अपनी जवानी से ही उजगोरोद और उसके आस-पड़ोस की फैक्टरी में काम करता आया था और इस जगह को उसने अपना घर बना लिया था। वह बरसों से यहाँ इसी तरह सबसे परिचित था—वृद्ध, नौजवान और बच्चे और बरसों से यहाँ के लोग उसे 'डॉक्टर' के नाम से जानते चले आ रहे थे। शायद इस वजह से कि वह तमाम बरसों से फैक्टरी की मशीनों को ठीक करता आया था इसलिए वह हरेक व्यक्ति को और हरेक चीज़ को उसके स्वास्थ्य और उसमें अपेक्षित मरम्मत की ही दृष्टि से देखता था जैसे कि मशीन को देखा जाता है। मेज़ पर बैठने से पहले उसने सब कुर्सियों की यह देखने के लिए जांच की कि वे ठीक हैं या नहीं और उसने पास खिसकती हुई मछली को भी आँका।

'जाम' शराब पीने के बाद वे सब मेज़ पर बैठ गए। मेहमान अपनी कुर्सियों का निरन्तर खिसका कर बातें करने लगे। बाहरी कमरे में नाचने वाले गा रहे थे। बैंड बज रहा था और पड़ोस में कितनी औरतें एक साथ गाना गा रही थीं। इन सब आवाज़ों के मिलने से एक ऐसा शोर मच रहा था जिसे सुन कर चक्कर आने लगते थे।

'डॉक्टर' अपनी कुर्सी पर घूमा और अपने पड़ोसियों को कुहनी से ठेल कर बातों को बातें करने से रोका, हँसा और रह रह कर चीखता रहा।

"अरे बच्चो अरे बच्चो," वह तेज़ी से बड़बड़ाया। "एकटेरिना मेरी प्यारी, वरवारा दर्शिया इस काम पर शामिल और खुश के रहो रहेंगे, वैसे सभी कुमारियों [illegible]

उसने थोड़ी सी शराब पी थी और इस समय सिर्फ अंग्रेजी तीखी शराब का एक गिलास पीकर ही पल में चुप हो गया मानो इसने उसमें जड़ जमा दिया हो। उसकी जबान लड़खड़ाने लगी।

स्थानीय पादरी तथा स्थानीय फैक्टरियों के मालिक, दूसरे गाँवों के व्यापारी और सरायों के मालिक वहाँ उपस्थित थे। कस्बे और जिले के देहाती भाग का मुखिया, जो एक साथ चौदह वर्षों से काम करते आ रहे थे और जिन्होंने इस पूरे समय में किसी के एक भी कागज पर दस्तखत नहीं किए थे तथा एक भी आदमी को स्थानीय अदालत से बिना धोखा दिए या अपमानित किए जाने नहीं दिया था, इस समय पास पास बैठे हुए थे। दोनों ही मोटे और स्वस्थ थे और ऐसा लगता था कि मानो वे अन्याय और झूठ में इतने गर्क हो चुके थे कि उनके चेहरे की चमड़ी तक भी कुछ अजीब और धूर्त सी दिखाई पड़ने लगी थी। क्लर्क की पत्नी, जो मैली थी अपने सब बच्चों को अपने साथ ले आयी थी और छछूंदरियों की तरह फिसलती चिड़िया की तरह तिरछी निगाह से देख रही थी और जो कुछ भी उसके हाथ में पड़ जाता उसे अपनी या अपने बच्चों की जेबों में भर लेती थी।

लिपा पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी थी। उसके चेहरे पर गिरजे जैसा ही तन्मयता का भाव था। उससे परिचय होने के बाद अनीसिम उससे एक शब्द भी नहीं बोला था जिससे अभी तक उसे उसकी आवाज का भी पता नहीं चल पाया था और अब उसके बगल में बैठा हुआ वह चुप की तरह खामोश रहा और बराबर तीखी शराब पीता रहा और जब उसे नशा हो आया तो सामने बैठी हुई अपनी चाची से बातें करने लगा:

"मेरा सामोरोदोव नामक एक दोस्त है। अजीब सा आदमी है। — के हिसाब से वह एक सम्मानित नागरिक है और बातें भी खूब

का स्वागत-गान करो आली !"

"आयशा थकी हुई और परेशान मेहमानों से खाने का आग्रह करती हुई मेज़ के चारों तरफ़ घूम रही थी और इस बात से बहुत ख़ुश थी कि वहाँ खाने की इतनी तरह की चीज़ें थीं जो बहुत ज़्यादा थीं— जब कोई उनकी अपेक्षा नहीं कर सकता था। सूरज डूब गया मगर उजाला बचता रहा। मेहमानों को इस बात का भी होश नहीं रहा था कि वे क्या खा रहे हैं या क्या पी रहे हैं। जो कुछ कहा जाता था उसे समझना असम्भव था और सिर्फ़ उसी समय जब बैण्ड का बजाना बन्द हो जाता था किसी विशाल औरत की यह आवाज़ सुनाई पड़ती थी :

"इन लोगों ने हमारा खून चूस लिया है, जोंक कहीं के। इन्हें महामारी ला दे।"

शाम को वे लोग बैण्ड के साथ नाचने लगे। दिमित्र जूलियस अपनी शराब लिए हुए थे और उनमें से एक नाचते समय दोनों हाथों में एक एक बोतल और मुँह में शराब का गिलास पकड़े हुए नाचने लगा जिसे देख कर सब हँस पड़े। नृत्य के बीच में उन्होंने एकाएक अपने घुटने झुका लिए और उसी झुकी हुई स्थिति में नाचते रहे। एफ़्रोसिन्या अपनी पोशाक से हवा उड़ाती हुई बिजली की चमक की तरह उड़ती फिर रही थी। किसी ने उसकी झालर पर पैर रख दिया और 'बैगानी' चीख़ उठा।

"ए, उन्होंने चौंकने को उम्मीद लगा है। बच्चो!"

एफ़्रोसिन्या की आँखें मुँदी और सब की सब कभी कभी ही झपकती थीं। उसके चेहरे पर हमेशा एक सरल मुस्कान खेलती रहती थी। उसकी इन स्थिर दृष्टि से देखने वाली आँखों, लम्बी गर्दन पर प्यारे से सिर, और उसके दुबलेपन में कुछ साँप का सा भाव था। ऊपर से नीचे तक हरी मगर पानी पर चमकती पोशाक पहने हुए वह अपने चारों पर लौटती हुई मुस्कराहट के साथ एक ऐसे तिरछे साँप की तरह दिखाई पड़ रही थी जो पूँछ के बल पीछे पर टिका हुआ, चमकने के

मौसम में फाटक में से गुजरने वाले राहगीरों की तरफ अपना पंजा उठाकर देखता है। इलिच परिवार के पुरुषों का व्यवहार उसके साथ स्वच्छन्द था और यह बात गौर करने काबिल थी कि वह उनमें से सबसे बड़े के साथ बहुत खुशी मिली रहती थी। मगर उसके बहरे पति ने कुछ भी नहीं देखा। उसने उसकी तरफ देखा तक नहीं। वह पैर पर पैर रखे बैठा हुआ लगातार तोड़ तोड़ कर खाता रहा। वह उन्हें इतनी जोर से तोड़ता था कि उससे पिस्तौल के चलने की सी आवाज आती थी।

मगर देखिए, बुड्ढा सिबुकिन खुद कमरे के बीच में आया और यह इशारा करते हुए अपना रूमाल हिलाने लगा कि वह भी उसी नृत्य करना चाहता है। यह देख कर सारे घर भर में और बरामदे में जमा हुई भीड़ में एक स्वीकृति सूचक शोर उठा।

"वह आयेगा! वह खुद आयेगा!"

वरवारा ने नृत्य किया मगर वह बुड्ढा सिर्फ अपना रूमाल हिलाता रहा और एड़ियाँ चटकाता रहा। बरामदे में खड़े हुए लोग, एक दूसरे को धक्के देते हुए खिड़की में से झाँकने लगे। वे सब बहुत खुश थे और क्षण भर के लिए उन्होंने उसके सारे अपराधों को क्षमा कर दिया—उसकी दौलत और अपने प्रति उसके द्वारा किए गए सम्पूर्ण अपराधों को।

"बहुत खूब, ग्रिगोरी पेत्रोविच!" भीड़ में से आवाजें आईं। "ठीक है, खूब अच्छी तरह से नाचो! तुम अब भी नाच सकते हो! हा-हा!"

— यह नृत्य बहुत देर तक सुबह के दो बजे तक चलता रहा। एनीसिम लड़खड़ाता हुआ गाने वालों और बैण्डवालों से विदा माँगने गया और प्रत्येक को एक एक नया आध-रूबल का सिक्का दिया।

विदा में जो लड़खड़ा तो नहीं रहा था मगर अब भी एक पैर पर

शादी में दो हजार का खर्च हुआ है।"

जब माँ बिफर रही थी तब किसी ने अपने पुराने कोट की अन्दर साथ वाली जेबों का अपना कोट उठा लिया। यह देख कर क्लीम्स्किन एकाएक गुस्से से भर उठा और चीखने लगा।

"अच्छा, मैं अभी पता लगाए लेता हूँ। मैं जानता हूँ कि किसने चुराया है इसने।"

"वह सड़क पर दौड़ा गया और किसी का पीछा करने लगा। उसे पकड़ लिया गया, वापस घर में लाया गया और गुस्से से लाल और नशे की हालत में परेशान कर भीगे कपड़ों में ही उस कमरे में बन्द कर दिया गया जिसमें अभी बीना की पोशाक चटकमा रही थी।

४

पाँच दिन बीत चुके थे। क्लीम्स्किन जो जाने की तैयारी कर रहा था, बरसाती से विदा माँगने ऊपर गया। पवित्र मूर्तियों के सम्मुख मोमबत्तियाँ जल रही थीं, सारे कमरे में धूप की सुगन्ध भर रही थी और वह खिड़की पर बैठी हुई खाल ऊन का मोजा बुन रही थी।

"तुम हमारे साथ ज्यादा नहीं रहते," वह बोली, "मैं यह समझती हूँ कि तुम यहाँ उदास रहे। और सच-सच, हम लोग आराम से रहते हैं। हमारे पास सब चीजें काफी तादाद में हैं। हमने तुम्हारी शादी सिफतानुसार और अच्छी तरह से कर दी है। तुम्हारे पिता कहते हैं कि दो हजार खर्च हुए हैं। सचमुच हम लोग व्यापारियों की तरह रहते हैं मगर सिर्फ बाहरी ही चमक दमक है। हम लोग जनता के साथ बहुत बुरा व्यवहार करते हैं'। मैं बड़ी दुःखी होती हूँ। हम उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, हे भगवान! चाहे हम कोई कोड़ा खरीदें या कोई चीज खरीदें या किसी मजदूर से काम करावें—हर चीज में बेईमानी भरी है। सिर्फ चालबाजी और कुछ नहीं। '[illegible] के

त्यौहार के समय बजने वाला, चूल्हे में सिकने वाला केक कर, था और मज़ेदार है। लोगों के सिकने वाली रात तब भी कुछ अच्छी है। मगर, यह बताओ कि क्यों हम अच्छा केक नहीं बेच सकते?"

'हर आदमी अपना काम जानता है माँ।"

"मगर तुम जानते हो कि हम सब को ही मरना है; लो, माँ, सचमुच तुम्हें अपने पिता से बातें करनी चाहिए।"

— "क्यों, तुम्हें उन से कुछ बातें करनी चाहिए।"

"अच्छा, अच्छा, मैंने उन से कहा था मगर उन्होंने भी वही कहा जो तुम कहते हो : 'हर आदमी अपना काम जानता है।' तुम कल्पना कर सकते हो कि उस लोक में वे लोग इस बात का न्याय करेंगे कि तुम्हें क्या काम करने को दिया गया था; भगवान का न्याय निष्पक्ष होता है।'

"ठीक है, कोई भी न्याय नहीं करेगा," एमीसिम ने कहा और एक गहरी साँस ली। "कुछ भी हो, माँ, तुम जानती हो कि भगवान नहीं है इसलिए वहाँ न्याय ही क्या किया जाएगा?"

बुढ़िया ने उसकी तरफ़ आश्चर्य से देखा, खिलखिला कर हँसी और तालियाँ बजाने लगी। शायद इसलिए कि वह उसके शब्दों से सचमुच आश्चर्यचकित हो उठी थी और उसकी तरफ़ इस तरह देखने लगी मानो वह एक अजीब आदमी हो। एमीसिम परेशान हो गया।

"शायद भगवान हो मगर सिर्फ़ उसमें विश्वास नहीं रहा है। जब मेरी शादी हो रही थी तो मुझे पसन्द होना भी नहीं था। ठीक उसी तरह जिस तरह तुम किसी मुर्गी के नीचे से एक अण्डा उठाओ और उसमें एक बच्चा चहचहाता होता है इसी तरह मेरी आत्मा मेरे भीतर फड़फड़ाने लगी थी और जब मेरी शादी हो रही थी तब मैं पूरे समय सोचता रहा था कि भगवान है; मगर जब मैं गिरजे से बाहर

बच्चा माँ का दूध पीता होता है तभी से उसे सिर्फ यह सिखाया जाता है कि : "हर आदमी को अपना काम करना चाहिए। सिजोव भी भगवान में विश्वास नहीं करते। तुम कह रही थीं कि गुस्सोव की कुछ भेड़ें चोरी चली गई थीं।... मैंने उनका पता लगा लिया है। सिमवोलो के एक किसान ने उन्हें चुरा लिया था। उसने उन्हें चुराया मगर सिजोव को उनकी ऊन मिल गई। इसलिए उनका विश्वास यहीं तक सीमित है।"

इगीसिम ने आँखें सिकोड़ीं और सिर हिलाया।

"दुनिया भी भगवान में विश्वास नहीं करती," वह कहने लगा, "और तुम और पादरी भी नहीं करते। और जहाँ तक उनके गिरजा जाने और व्रत रखने का सवाल है, वह सिर्फ इसलिए कि लोग उनके विषय में बुरी बातें न करें और इसलिए भी कि अगर यह बात सच हो कि 'न्याय का दिन' आयेगा। आजकल लोगबाग यह कहते हैं कि दुनिया का अन्त आ गया है क्योंकि मनुष्य कमजोर हो गए हैं अपने माँ बाप की इज्जत नहीं करते आदि। ये सब वाहियात बातें हैं। माँ, मेरा विचार यह है कि यह सब मुसीबत इस वजह से है कि आदमियों की आत्मा बहुत कमजोर हो गई है। मैं चीजों को अच्छी तरह देखता हूँ माँ और उनकी असलियत समझ लेता हूँ। अगर एक आदमी चोरी का कमीज पहने हुए है तो मैं भी पापी हूँ। एक आदमी महल में बैठा हुआ है और तुम भागती हो कि सिर्फ आप ही रहा है मगर मेरे लिए यह न तो यहाँ है और न वहाँ। मैं और आप दुखिया हूँ उनके आत्मा नहीं है। तुम दिन भर भटकने के बाद भी एक भी आदमी ऐसा नहीं पाओगी जिसमें आत्मा हो। और सही बात यह है कि वे यह नहीं जानते कि आत्मा है या नहीं। अच्छा फिर, माँ, अच्छी तरह रहो मेरे विषय में बुरी बातें मत सोचना।'

इगीसिम घनगात के पत्तों में छुपा।

"मैं तुम्हारे सब बच्चों के लिए धन्यवाद देता हूँ, माँ," उसने

कहा। 'तुम हमारे परिवार के लिये बहुत बड़ी नियामत हो। तुम बिल्कुल सम्भ्रान्त महिला के समान हो और मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।"

अत्यधिक दुःखित होकर अनीसिम बाहर निकला मगर फिर भीतर आया और बोला।

"समोरोदोव ने मुझे एक मामले में फंसा दिया है। या तो मेरा भाग्य खुल जायगा या मैं बर्बाद हो जाऊँगा। अगर कोई बात होती है तो तुम पिताजी को सान्त्वना देना, माँ।"

"ओह बकवास! तुम परवाह मत करो तच, तच, तच.. भगवान दयालु है। और अनीसिम तुम्हें अपनी पत्नी से प्रेम का व्यवहार करना चाहिए न कि यह कि तुम दोनों एक दूसरे की तरफ कुप्पी कुप्पी निगाहों से देखते हो। तुम्हें कम से कम मुस्कराना तो चाहिए।"

"हाँ, वह बड़ी विचित्र है,' अनीसिम बोला और गहरी साँस ली। "वह कुछ भी नहीं समझती। कभी बात नहीं करती। वह अभी छोटी है, उसे बड़ा हो जाने दो।"

एक ऊँचा चमकीला सफेद घोड़ा गाड़ी में जुता हुआ पहले से ही दरवाजे पर खड़ा था।

बुड्ढा सीबूकिन घूमने के लिये दौड़कर गाड़ी पर जा बैठा और रासें पकड़ लीं। अनीसिम ने वारवारा को, अक्सिन्या को और अपने भाई को चूमा। सीढ़ियों पर लीपा भी खड़ी हुई थी। वह चुपचाप स्थिर खड़ी हुई थी और दूसरी तरफ देख रही थी। और यह प्रतीत हो रहा था कि वह उसे विदा करने नहीं आई थी बल्कि वैसे ही किसी अज्ञात कारण वश आ खड़ी हुई थी। अनीसिम उसके पास गया और अपने होठों से सिर्फ उसके गालों का स्पर्श किया।

"विदा।" उसने कहा।

उसकी तरफ देखे हुए वह अजीब तरह से मुस्कुरा

के मोर्चे पर हम रघाम खड़ा हो गया क्योंकि वह अपने को सुन्दर समझता था।

जब वे लोग गाड़ी से बाहर आए एर्मोलिम बराबर पीछे गाँव की तरफ देखता रहा। दिन सुन्दर और अच्छा था। पहाड़ी के ऊपर आज आसमान घरों को काम के लिये बाहर ले जाया जा रहा था और किसान लड़कियाँ और औरतें सुन्दर पोशाकें पहने आसपास के खेत रही थीं। लोको रेल का डेक स्लोब हाथ की मुट्ठी में थमा उठा और सामने फूलों से जमीन मुस्कुराने लगा। चारों तरफ ऊपर और नीचे सारियाँ (मेघ) था रही थीं—और उसे याद आया कि किस तरह पाँच दिन पहले वह यहाँ मर्जी कर रहा था। छोटी नदी के किनारे, जिसमें वह कभी नहाता और मछली पकड़ा करता था, बने हुए हरी घास वाले स्कूल की तरफ उसने देखा और उसका हृदय ममता से भर उठा और उसने चाहा कि होतापें जमीन से ऊपर बढ़कर उसे चलते जाने से रोक लें और उसके जीवन में केवल उसका यहीं मुस्कान रह जाए।

स्टेशन पर वे लोग जलपान-गृह में गए और कुछ एक गिलास वोदी (शराब) का पीया। उसके पिता ने दिल खुलने के लिये मन हुए पहला।

"मैं खुश हूँ गा," एर्मोलिम ने कहा। बूढ़े के प्रकाशित चेहरे सपाट होकर उसके कन्धे का थपथपाया और बेटे की तरफ मानो वह रहा हो, "देखो मेरा बेटा कितना अच्छा है।"

"तुम्हें घर पर ही रहकर कारबार की देखभाल करनी एर्मोलिम," उसने कहा "मेरे लिए तुम्हारी मदद बड़ी कीमत है तुम्हें फिर से घर तक मान से ढक दूँगा, मेरे बेटे।"

शराब कड़ी थी और उसमें से कड़वे की भी गन्ध था र मन उसने एक एक गिलास चार लिया।

जब दूसरा लेफ्टिन स्टेशन से पर कदम चाला लो ... पर भारी चोग़ाय पुराने का पहनाव नहीं पता। जैसे हो

पाँव अहाते से बाहर निकला था लीपा सहम गई और चुप हो उठी। एक पुराना सूती पैटीकोट पहने, नंगे पैर और आस्तीनों को ऊपर कन्धों तक चढ़ाए वह दरवाजे के सामने सीढ़ियों को रगड़ कर धो रही थी और सुरीली पतली आवाज में गा रही थी। और जब वह गन्दे पानी का एक बड़ा टब लाई और अपनी बच्चों की सी मुस्कराहट के साथ ऊपर सूरज की तरफ देखा तो ऐसा लगा कि वह भी एक मैना हो।

एक बुड्ढे मजदूर ने जो दरवाजे के सामने होकर गुजर रहा था, अपना सिर हिलाया और गला साफ किया।

'सचमुच ग्रिगोरी पैत्रोविच तुम्हारी बहुएं ईश्वर की नियामत हैं" उसने कहा। "औरतें नहीं बल्कि खजाने हैं।"

५

शुक्रवार ८ जुलाई को एलीजारोव उर्फ 'बैसाखी' और लीपा काजान्सकोय नामक गाँव से वापस आ रहे थे। वहाँ वे गिरजे की छुट्टियों में 'कजान की पवित्र माता' के सम्मान में की गई प्रार्थना सभा में शामिल होने गए थे। उनसे काफी पीछे लीपा की माँ प्रास्कोव्या चली आ रही थी जो हमेशा पीछे रह जाती थी क्योंकि वह बीमार थी और उसे साँस उखड़ने की शिकायत थी। शाम होने वाली थी।

"आ...आ आ ' लीपा की बातें सुन कर आश्चर्य करते हुए 'बैसाखी' ने कहा। "आ-आ !...!"

"मुझे मुरब्बा बहुत अच्छा लगता है इलिया माकारिच " लीपा ने कहा। "मैं अपने कोने से कोने में बैठ जाती हूँ और चाय पीती और मुरब्बा खाती रहती हूँ। या मैं वरवारा निकोलायेव्ना के साथ पीती हूँ और वह भावुकतापूर्ण कहानी सुनाया करती है। हमारे यहाँ ढेर सारा मुरब्बा है—चार मर्तबान भरे हुए हैं। 'खाओ लीपा जो जितना

"वे लोग बहुत शान से रहते हैं। इन्हें चाय के साथ सफ़ेद रोटी मिलती है और गोश्त भी सब को पेट भर कर। वे बहुत अच्छी तरह रहते हैं। फिर मुझे उन से डर लगता है इलिया मात्वेरिच। आह, ओह मैं कितनी डरती हूँ।'

"तुम क्यों डरती हो बच्ची?" वैरवारी ने पूछा और उसने पीछे मुड़ कर देखा कि मात्र्योना कितनी दूर रह गई है।

"पहली बात तो यह कि जब शादी हुई थी मैं एफ़ीसिम मिरोनिच से डरती थी। एफ़ीसिम मिरोनिच ने कुछ भी नहीं किया था। उसने मेरे साथ बुरा बर्ताव नहीं किया था। सिर्फ़ जब वह मेरे पास आता है तो मेरे सारे शरीर में सिहरन सी दौड़ जाती है। और मैं एक पल सो नहीं सकी। बराबर कांपती और भगवान से प्रार्थना करती रही। और अब मुझे एक्सीन्या से डर लगता है इलिया मात्वेरिच। इस वजह से नहीं कि वह कुछ कहती है। वह हमेशा हँसती रहती है, मगर कभी कभी वह खिड़की की तरफ़ देखती है और उसकी आँखें इतनी भयानक हैं उन में एक हरी चमक है—मानो बाड़े में बंधी हुई भेड़ों की आँखों की तरह। खिमिन जूनियर उसे गुमराह कर रहे हैं: 'तुम्हारे बुड्ढे,' वे लोग उससे कहते हैं, 'के पास बुत्योकिनो में जमीन का एक टुकड़ा है एक सौ बीस एकड़' वे कहते हैं, 'वहां रेत है तो ईंट का भट्ठा लगाओ और हम उसमें हिस्सा ले लेंगे।' ईंटें आजकल बीस रूबल की एक हजार मिलती हैं यह बड़ा फ़ायदेमन्द व्यापार है। कल डिनर के समय एक्सीन्या ने मेरे ससुर से कहा: 'मैं बुत्योकिनो में एक ईंटों का भट्ठा चालू करना चाहती हूँ। मैं यह व्यापार अपने जिम्मे लेती हूँ।' यह कहते समय वह हँसी थी। और ग्रिगोरी पेत्रोविच का चेहरा काला पड़ गया था। यह साफ़ था कि उसे यह बात पसन्द नहीं आई थी। 'जब तक मैं जीवित हूँ,' वह बोला, 'परिवार टूटना नहीं चाहिए हम सबको एक साथ रहना चाहिए।' एक्सीन्या ने घूर कर देखा और दांत पीसे। [illegible] लाई गईं मगर उसने

नहीं चाहूँ।"

"क्या-क्या-क्या! " बैसाखी को आश्चर्य हुआ।

"और मुझे ज़रा यह तो बताओ कि वह सोती कब है?" लीपा ने कहा। "वह आधा घण्टा सोती है, फिर उठकर खड़ी हो जाती है और चारों तरफ यह देखती हुई घूमती रहती है कि कहीं किसानों ने किसी चीज़ में आग न लगा दी हो कोई चीज़ चुरा न ली हो। मुझे उसके साथ डर लगता है, इलिया माकारिच। और ख्रिमिन जूनियर शादी के बाद सोने के लिये नहीं गए बल्कि एक दूसरे से मुकदमा करने के लिये शहर चल दिये। और लोग बातें करते हैं कि यह सब एक्सिन्या की ही वजह से है। दो भाइयों ने उसे ईंटों का भट्ठा बनाने का वायदा किया है मगर तीसरा बिगड़ गया है और फैक्टरी एक महीने से बन्द है और मेरा चाचा प्रोखोर बेकार हो गया है और घर घर से टुकड़े माँगता फिरता है। 'तब तक अच्छा हो कि तुम खेतों पर काम करो या लकड़ी चीरो चाचा!' मैं उससे कहती हूँ 'अपना अपमान क्यों कराते हो!' 'मैं इसका आदी नहीं रहा हूँ,' वह कहता है, 'मुझसे अब किसानी काम करना नहीं आता, लिपिन्का।'"

वे एक नये जंगल के पास आराम करने और प्रास्कोव्या का इन्तज़ार करने के लिए रुक गए। एलिज़ारोव बहुत दिनों से एक मोटे मोटे ठेकेदार का सा काम करता आ रहा था मगर घोड़े नहीं रखता था बल्कि सारे ज़िले में 'पैदल चलकर' हाथ में एक थैला लटकाए जिसमें रोटी और प्याज रखी रहती थी लम्बी लम्बी डगें रखता और हाथ हिलाता हुआ चक्कर लगाया करता था। उसके साथ चलने में बड़ी कठिनाई होती थी।

जंगल में घुसने के स्थान पर एक मील का पत्थर गड़ा हुआ था। एलिज़ारोव ने उसे छुआ और पढ़ा। प्रास्कोव्या हाँफती हुई उनके पास पहुँची। उसका झुर्रियोंदार और हमेशा भयभीत सा रहने वाला चेहरा

लिए वह धमकी वाली बात थी और इस समय उसे वहाँ तक मार रहा था कि जीवन में आज पहली बार ही वह अपने आनन्द के संगीत रही थी। मुस्काने के बाद तीनों साथ साथ चलने लगे। हुए चुका था और उसकी किरणें जङ्गल में से छन कर आ रही थी के तनों पर रेशमी चमकती हुई। उसे इतनी भी आवाजें आ रही उर्वशी की कलियाँ बहुत पहले ही आगे चली आई थी मगर में घूम रही थी, शायद कुरमुर्ये इकट्ठे कर रही हों।

"ए, सुन्दरियो !" धृतराष्ट्र चिल्लाया। "ए, मेरी सुन्दरियो

ऊपर में हँसी की एक आवाज आई

"बैरागी आ रहा है ! बैरागी ! बुड्ढी मगरी !"

और प्रतिध्वनि भी हँस उठी। और फिर जंगल पीछे रह गया।

बैरागी की खिड़कियों व छतें दिख दिखाई पड़ने लगे। मिसल पर लगा हुआ काम चमकने लगा। गाँव आ गया था। "यहीं कहीं मुझ साथ के समय यहाँ सारी सब्जी आ गया था।" वह के आगमन पर पहुँच चुके थे। उन्हें मिल' को दरों में जाना था। बोला और मारकाण्डा आ गये थे चल रही थी दूर पहले के लिए काम पर बैठ गई। अभिलाष व भी उधर साथ बैठ गया। धान के ऊपर सन्दीप की तरह ईमन दो उर्वशी अपने 'शिशु' व बैठे सफेद मिसल और उसकी दोसी सा थी। कारण बहुत सुन्दर और शान्ति पूर्ण दिखाई पड़ता। इस समूह तरफ तरफ एक ही पास पर बैठी को चटाइयों बिछ पर सब के स्थान रख काला रंग किया हुआ था। उनके दूर काम पर सूर्य दिखाई पड़ थी—उस पहाड़ों और दर्रों में, इस भाँति सुन्दर में छिपा दिए हों और कुछ अभी खड़ी हुई खेतों में पड़ी हुई। वो व तोड़ भी चढ़ गए व और इस समय सूरज की रोशनी में मछलियों की तरह चमक रहे थे। चर बच्चों के दिन थ। स न पूरी थी, वह के काम एवं कपड़ों और दर रात के कामों और फिर इतवार की छुट्टी है। दर। न दूर बिजली की कभी-कभार सुनाई पड़ती थी। उस दूर रही थी और अभी

आखिरकार उन्हें घर जाना पड़ा। खेत मज़दूर सारे दूकान के पास फाटक के सामने ज़मीन पर बैठे हुए थे। नियमानुसार उकलीवो के किसान सिबुकिन के यहाँ काम करने नहीं आया करते थे इसलिए उन्हें अजनबियों को मज़दूरी पर रखना पड़ता था और अब अँधेरे में ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ लम्बी लम्बी काली दाढ़ियों वाले लोग बैठे हुए थे। दूकान खुली हुई थी और दरवाज़े में से वह बहरा आदमी एक लड़के के साथ गोटियों का खेल खेलते हुए देखा जा सकता था। कटाई करने वाले धीरे धीरे गा रहे थे जो मुश्किल से सुनाई पड़ता था या ज़ोर ज़ोर से पिछले दिन की मज़दूरी माँग रहे थे मगर उन्हें इस डर से मज़दूरी नहीं दी जा रही थी कि कहीं वे कल से पहले ही न चल दें। बुड्ढा सिबुकिन बिना कोट पहने एक भोजपत्र के पेड़ के नीचे, सिर्फ वास्कट पहने अक्सिन्या के साथ बैठा हुआ चाय पी रहा था। मेज़ पर एक लैम्प जल रहा था।

"मैं मरता हूँ, बाबा," एक मज़दूर ने फाटक के बाहर से पुकारा, मानो व्यंग्य कस रहा हो, "हमें किसी तरह आधी मज़दूरी ही दे दो। ए, बाबा।"

और फौरन ही एक हँसी की आवाज़ आई और फिर वे लोग मुश्किल से सुनाई पड़ने वाली आवाज़ में गाने लगे। 'बैसाखी' भी थोड़ी सी चाय पीने बैठ गया।

"तुम्हें मालूम है, हम लोग मेले में गए थे" उसने उन्हें बताना आरम्भ किया। "हम लोग पैदल चले थे बहुत अच्छा घूमना रहा मेरे बच्चो, भगवान के गीत गाओ। मगर एक दुर्घटना घट गई। दरजी साशा ने कुछ तम्बाकू खरीदी थी और दूकानदार को दिया आधा रूबल आधा सिक्का खोटा था—बैसाखी कहता रहा। वह कानाफूसी में

चाह रहा था मगर एक दबी हुई गहरी

आवाज़

था। 'एफीसिम मिशुकिन न दिया था' उसने कहा। 'जब मैं उस गाड़ी में गया था, उसने बताया। उन्होंने पुलिस-इन्स्पेक्टर को उस आदमी को पकड़ लिया गया। ईश्वर मिरोशी पैत्राविच कि इससे कोई बात न कह सकी हो कोई बात मत करना

"बा-बा!" उसी आवाज ने फिर फाटक के बाहर से क्रोध के साथ पुकारा, "बा-बा!"

इसके बाद खामोशी छा गई।

"आह, नाईं बच्चो, नाईं बच्चो, नाईं बच्चो" — बैरागी ने तेजी से दुहराया और उठ खड़ा हुआ। उस पर सुस्ती छा रही थी। 'अच्छा, आप और बीबी के लिए धन्यवाद नाईं बच्चो। सोने का समय हो गया। मैं आजकल सड़े हुए पौधे के कुन्द की तरह हो रहा हूँ, मेरी हड्डियों में दीमक लग गयी है। हो-हो-हो! मेरा ख्याल है कि अब तक मुझे मर जाना चाहिए था।"

उसने एक घूँट लिया। बुड्ढा मिशुकिन ने अब समझा नहीं थी बल्कि कुछ देर बैठा हुआ सोचता रहा। उसके अन्दर से ऐसा लगता था मानो वह बैरागी के कदमों की आवाज का सुन रहा हो या नीचे सड़क पर दूर सुनाई पड़ रही थी।

"मेरा ख्याल है कि तुम्हारा लड़का ने भूल कहा है," उसके बच्चों का भोजन हुए [illegible] बोली।

वह घर में भीतर गया और कुछ देर बाद एक पार्सल लिए लौटा। उसे खोला। उसमें रूबल बंधे हुए थे—बिल्कुल नए सिक्के। उसने एक उठाया, अपने दांतों से उसे जाँचा, [illegible] फेंक दिया फिर दूसरा फेंका।

"रूबल सचमुच असली हैं...," उसने दुश्चिन्ता की तरह पत्नी के पास देखते हुए कहा। "ये वही हैं जो एफीसिम लाया था—तोहफे के तौर पर। इन्हें ले जाओ बेटी," वह फुसफुसाया और उस रूमाल को उसके हाथों में पकड़ा दिया "इन्हें ले जाकर कुएँ में डाल

को बर्बाद कर दो। और ख्याल रखना कि इस विषय में बातें न हों। इससे मुसीबत आ सकती है। समोवार उठा ले जाओ, रोशनी बुझा दो।"

लीपा और उसकी माँ ने गोदाम में बैठे हुए बत्तियों को एक के बाद एक बुझते हुए देखा। सिर्फ ऊपर वारवारा के कमरे में नीली और लाल बत्तियाँ चमक रही थीं और वहाँ से शान्ति सन्तोष और सुखद अज्ञानता की भावना नीचे की तरफ बहती आ रही थी। प्रास्कोव्या अपनी बेटी की एक अमीर व्यक्ति से शादी कर देने पर भी उस वातावरण की आदी नहीं बन सकी थी और जब वह आई तो सहम कर बाहरी कमरे में ही देहरे पर एक दीन मुस्कान लिए, गुमसुम होकर पड़ गई। उसके लिए वहीं चाय और चीनी भेज दी गई। और लीपा भी इसकी आदी नहीं बन सकी और जब उसका 'पति' बाहर चला गया तो वह अपने बिस्तर पर नहीं सोई बल्कि कभी इधर उधर पड़ रहती थी रसोई में या गोदाम में और हर रोज वह फर्श रगड़ती और कपड़े धोती और यह महसूस करती जैसे उसे दिन भर की मजदूरी पर रखा गया हो। और अब, प्रार्थना से वापस आने पर, उन्होंने रसोई घर में रसोइये के साथ चाय पी, फिर वे गोदाम में गए और वहाँ जमीन पर दीवाल और स्लेज गाड़ी के बीच में लेट गईं। यहाँ अंधेरा था और गाड़ी के साज की गन्ध आ रही थी। घर की बत्तियाँ बुझ गईं फिर उन्होंने बहरे आदमी को दूकान बन्द करते हुए और कमाई करने वालों को वहीं अहाते में सोने की तैयारी करते हुए सुना। दूर, ख्रिमिन परिवार के यहाँ वे लोग नाच गान में मस्त थे। प्रास्कोव्या लीपा को नींद आने लगी।

कदमों की आहट से जागीं तो चाँदनी में अपना बिस्तर

चढ़ी और कमरा बीच दरवाज़े में बैठ गई जिससे कि चाँदनी सीधे उस पर पड़ने लगी।

वह साफ़ नहीं बल्कि गहरी नीली बैठी रही और गालों [illegible] बदलती रही। उसने बिस्तर के सारे कपड़े [illegible] फेंक दिए। उस मनहूस चाँदनी में वह कितनी सुन्दर और कितनी गर्वीली पशु की तरह दिखाई पड़ रही थी। कुछ समय बीत गया और फिर कदमों की आवाज़ सुनाई पड़ी। [illegible] ऊपर से नीचे तक सफ़ेद, दरवाज़े में आया।

"फ़र्डिनन्द," उसने पुकारा, "तुम कहाँ हो।"

"यहाँ!" उसने मुझसे न पूछा।

"मैंने अभी तुमसे जब मिरचों को कुँए में फेंक देने के लिये कहा था, फेंक दिए!"

"[illegible] और कहा, मन का कुएँ में फेंक दिया। फिर न [illegible] [illegible] दिया।"

"हाय मेरे भगवान!" भयभीत और [illegible] [illegible] पुकार बैठा। "हाय मेरे भगवान! [illegible]...!"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और बाहर चला गया और [illegible] कुछ बड़बड़ाता रहा। कुछ [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] फिर वह खड़ी हुई और अपना सिर [illegible] कर बाहर चली गई।

"[illegible] इस परिवार में मुझे क्यों [illegible] दिया, माँ!" [illegible] ने कहा।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ऐसा [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] नहीं थे।

और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दूध की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में न [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible]

रहे थे उन पर निगाह रखे हुए है। और दुःख चाहे कितना भी क्यों न हो रात फिर भी शान्त और सुन्दर थी और अब भी भगवान की दुनियाँ में सत्य और न्याय है और रहेगा, इसी तरह सुन्दर और शान्त, और दुनियाँ की हर चीज़ न्याय और सत्य का इन्तज़ार कर रही है जिस तरह कि यह रात चाँदनी से सुशोभित है।

और दोनों एक दूसरे से सटकर सन्तुष्ट होकर सो गईं।

६

यह खबर पहले ही आ गई थी कि एलीसिम जाली सिक्के बनाने और उन्हें चलाने के जुर्म में जेल में डाल दिया गया था। महीने गुज़र गए, आधा साल से ज़्यादा बीत गया, लम्बे जाड़े समाप्त हो गए, बसन्त आ गया। घर का और गाँव का प्रत्येक व्यक्ति इस बात का आदी बन गया था कि एलीसिम जेल में है। और जब रात को कोई उस दुकान या मकान के सामने होकर गुज़रता तो उसे याद आ जाता कि एलीसिम जेल में है। और जब किसी कब्रिस्तान गिरजे में घन्टे बजते तो उनसे भी उन्हें यह ख्याल हो उठता कि एलीसिम जेल में पड़ा हुआ मुकदमे का इन्तज़ार कर रहा है।

ऐसा लगता था मानो उस मकान पर कोई अँधेरी छाया पड़ गई हो। मकान अधिक धब्बाभरापूर्ण था एवं उसका रास्ता गन्दा थी, दुकान का जोड़ा लगा हुआ भारी दरवाज़ा जिस पर हरा रंग हो रहा था, उस पर खरोंचे बन गई थीं या जैसा कि वह बहरा कहा करता था, 'कोड़े'' और बूढ़ा गिगुलिन भी दुबला और गन्दा दिखाई पड़ता था। उसने बाल और दाढ़ी बनाना छोड़ दिया था जिससे वह भयानक सा दिखाई पड़ता था। अब वह घूमने के लिये खुशी से उछल कर गाड़ी पर नहीं चढ़ता

चीखता था— 'भगवान देगा]' उसकी

होती थी।

...नके अन्त रिवाज़ी कार्रवाई का इन्तज़ाम करना था हालांकि उसे अब ...ती बंधी हुई रिश्वत मिलनी बन्द हो रही थी। तीन बार उस बुढ़े ... बाजाब्ता अदालत बलन के जुर्म में केस चलाने के लिए शहर बुलाया ...या गया था और वह केस कोई गवाह न मिलने के कारण बराबर मुल्तवी होता रहता था। बुढ़ा सिकुड़ कर बेचारगी से भरा जा रहा था।

वह अक्सर अपने डेरे को दूसरे आया करता था, किसी को किराये पर दुकान, किसी दूसरे का मर्ज़ीनामा पत्र देना, किसी गिरजे में पवित्र पता-स चढ़ाता। उसने एथीमिया की शक्ल के मजमून को एक कमी चम्मच के साथ एक चांदी का गिलास चर्च भेंट में दिया जिस पर खुदा था—

"आत्मा इसकी असली कीमत को जानती है।"

"पर हमारे कामों की देखभाल करने वाला कोई भी नहीं है," अरापना ने कहा, "अरे, अरे तुम्हें किसी बड़े आदमी से पूछना चाहिए, वे भी अफसरों के लिये लिखेंगे। कम से कम वे उसे अदालत पर तो दबा देंगे। उस बेचारे को तोड़ तोड़ कर क्यों मारा जाय।"

वह भी बूढ़ी थी मगर पहले से ज्यादा भारी और भारी हो गयी थी। वह पहले ही की तरह पवित्र मूर्तियों के सम्मुख दीपक जलाती थी और इस बात का ध्यान रखती थी कि घर की सब चीज़ें साफ रहें तथा मेहमानों की गुज्जा और सेब के पनीर से खातिरदारी करती थी। बहरा और एलीसेवा कुछ भी इन्तज़ार करते थे। एक नया काम शुरू किया जा रहा था—बुनाई मिलों में ईंटों का बढ़ा—और एलीसेवा लगभग प्रतिदिन गाड़ी में बैठ कर वहां जाया करती थी। वह गाड़ी खुद हांकती थी और जब रास्ते में जान पहचान वाले मिल जाते थे तो वह राई में बैठे हुए तोते की तरह अपनी गर्दन बाहर निकालती और सारा मुख एक पु... मुस्कुराहट के साथ झुकाया करती थी। लीपा अपने बच्चे के साथ खेला करती थी जो 'टम्प' औरत से पहले पैदा हुआ था। वह एक नन्हा सा, दुबला पतला दीन बच्चा था और यह आश्चर्य की बात थी कि वह रोने और टकटकी बाँध कर देखे और उसे एक इन्सान माना जाय और यहां

तक कि उसे निकीफोर कहा जाय। वह अपने फूलते हुए गालों में हवा रखता था और पीला दरवाजे की तरफ जाती और उसकी तरफ झुक कर कहती।

"नमस्कार निकीफोर एफीमिच!"

और वह उसकी तरफ दौड़ती और उसे चूम लेती। फिर वह दरवाजे की तरफ जाती फिर झुकती और कहती।

"नमस्कार, निकीफोर एफिमिच!"

वह अपनी नन्हीं काली आँखों का पटपटाना और उसके रोने में कहीं पक्षिलास्थ की सी हँसी की आवाज मिल जाती।

आखिरकार मुकदमे की तारीख तय हो गई। सिवुखिन पाँच दिन पहले ही चला गया। फिर उन्होंने सुना कि गवाही के लिये बुलाए गए किसानों को भी वहाँ ले जाया गया है। उनका पुराना नौकर, जिसे हाजिर होने का नोटिस मिला था, भी चला गया।

मुकदमा बृहस्पतिवार को था। मगर इतवार गुजर गया और सिवुखिन अब भी नहीं लौटा था और कोई खबर भी नहीं आई थी। मंगल की शाम को बारबारा खुली हुई खिड़की पर बैठी अपने पति के आने की आहट सुनने का इन्तजार कर रही थी। बगल के कमरे में पीला अपने बच्चे के साथ खेल रही थी। वह उसे अपने हाथों में उछाल रही थी और उत्साह के साथ कह रही थी।

"तुम इतने बड़े हो जाओगे, इतने बड़े। तुम किसान बनोगे, हम दोनों साथ साथ काम करने जाया करेंगे। साथ साथ काम करने जाया करेंगे।"

"अच्छा, अच्छा!" बारबारा ने नाराज होकर कहा। "काम करने जाओगे कैसे किसान, मूर्ख लड़की! यह एक व्यापारी बनेगा...!"

पीला धीरे धीरे गाने लगी मगर क्षण भर बाद ही भूल गई और

वह फिर वही बातें कहने लगी।

मैं व मिसेज को गोदी में छिपे दरवाज़े में चुपचाप खड़ी हुई और रहा।

"मैं इसे इतना प्यार क्यों करती हूँ, माँ? मुझे इसके लिये इतना दुख क्यों होता है?" वह धीमी आवाज़ में कहती रही और उसकी आँखों में आँसू भर आए। "वह कौन है? वह जिसका पता है? एक पंख की तरह इतना एक हुक्के की तरह मगर मैं इसे प्यार करती हूँ। मैं इस एक अजनबी आदमी मान कर प्यार करती हूँ। यह कोई मान नहीं कर सकता, वर्ना नहीं कर सकता मगर फिर भी मैं उसकी नन्ही सी आँखों से समझ जाती हूँ कि यह क्या चाहता है।"

लगातार सुन रही थी। स्टेशन में घुसती हुई शाम की ट्रेन की आवाज़ उसे सुनाई पड़ी। क्या उसका पति आ गया? सोफ़िया ने अपने की तरह न था उसने कोई ध्यान ही दिया और न उन बातों को सुना। उसे पर पता ही नहीं चला कि समय कैसे बीत गया, मगर वह ऊपर से नीचे तक सिहर उठती रही—मन के कारण नहीं बल्कि काम अनुभव के कारण। उसने खिड़कियों से स्टेशन भरी हुई एक गाड़ी की तरह लड़खड़ाहट की आवाज़ सुनी। वह स्टेशन से छोड़ते हुए लपटों को गाड़ी थी। जब गाड़ी इंजन के सामने होकर गुज़री तो वह इतना बीमार हुआ और कमरा में आया। बरामदे से सुना कि उसके हुक्म-बरदार की मर्द और किसी ने ज़ोर डाला गये।

"मार्च में पत्तियों और मल्लाह की कमी।" उसने ज़ोर से कहा "और सरदरात में था, वर्षा की कठोर कुर्बानी।"

उसने एक सिस्टर का इंजन व सिटी दरवाज़े से बाहर चले हुए देखा। वह किसी का मेज पर रही थी। उसके एक हाथ में कागज़ और दूसरे हाथ में टिन था और मुँह में चुप थी व सिर झुका हुआ था।

"किस जी क्यों है?" उसने हकलाते हुए पूछा।

"स्टेशन पर," मज़दूर ने उत्तर दिया, "उस इंजन पर पता चला उसने कहा "अब मैं जाऊँगा।"

और जब सारे घर भर को यह पता चल गया कि एनीसिम को गुलामी की सजा मिली है तो रसोई घर में रसोइया इस तरह गला फाड़ कर रो उठा मानो किसी की मौत का अफसोस मना रहा हो यह कहकर कि मौत की सीख पड़ी है :

"अब तुम्हारे चले जाने से हमारी देख भाल करने वाला कोई नहीं रहा, एनीसिम ग्रिगोरिच, हमारे प्यारे।"

कुत्ते भयभीत होकर भौंकने लगे। बारबारा दौड़कर खिड़की पर आई और व्याकुल होकर इधर उधर दौड़ते हुये अपनी पूरी ताकत लगा कर रसोइये पर चिल्लाई।

"चुप रहो, स्तेपानिदा, चुप रहो! भगवान के लिये हमें परेशान मत करो!"

वे समोवार ठीक करना भूल गए उन्हें किसी भी बात का होश नहीं रहा। सिर्फ लीपा ही यह नहीं समझ सकी कि यह क्या हो रहा है और अपने बच्चे के साथ खेलती रही।

जब बुड्ढा स्टेशन से घर आया तो किसी ने भी उससे कोई सवाल नहीं पूछा। उसने उन्हें आशीर्वाद दिया और चुपचाप सारे कमरों में घूमा। उसने खाना भी नहीं खाया।

'कोई' भी काम की देखभाल करने वाला नहीं था" जब वे अकेले रह गए तब बारबारा ने कहना शुरू किया, 'मैंने कहा था कि तुम्हें किन्हीं भले आदमियों से कहना चाहिये था तुमने समय पर मेरी बातों की तरफ ध्यान नहीं दिया। एक प्रार्थना-पत्र भेजने से "

"मैंने परिस्थिति को समझ लिया था," उसके पति ने हाथ हिलाते हुए कहा 'जब एनीसिम को सजा हो गई तो मैं उसका बचाव करने वाले सज्जन के पास गया। अब कोई फायदा नहीं होगा,' वह बोला 'बहुत देर हो चुकी है, और एनीसिम ने भी यही बात कही। बहुत देर

मैंने भी मैं अदालत से बाहर आया मैंने एक

की मर्ज़ी है।"

बुड्ढा फिर सब कमरों में घूमा और अब काफ़का के पास बैठ कर धीमे से बोला :

"मैं बीमार पड़ जाऊँगा। मेरे दिमाग़ में कोहरा सा छा रहा है। मेरे विचार गड़बड़ा गये हैं।

उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया जिससे कोई न सुन सके और धीरे से कहने लगा :

"मुझे अपने मन के लिए दुःख है। तुम्हें याद है कि शादी से पहले इलमार को एर्नेस्टिना मर लिए हुए थे एक-एक कदम और बाबा स्वयं वहाँ लिखते जाते थे ? उस समय दिन एक कार्नेस दरवा पर रख दी थी और सारी लिखावटों का सिर्फ़ अपना लिखों में लिखा गिना था। अब मेरे बाबा इसीलिये फ़िलाडेल्फ़िया-भगवान उन्हें स्वर्ग का राज्य दे— और तब वे बराबर साथ रहने के लिए मारका और बर्लिनसा आया करते थे। उनके एक पत्नी थी और वही पत्नी जब वे साथ रहने बाहर रहा करते थे तब दूसरे बालों के साथ मन रखवाया करती थी। उनके बाबा दर्शन करते थे। और जब बाबा घर में आते थे तो हैमन और कहन : 'मैं कभी भी नहीं' जान सकता वे कहा करते थे, 'कि कौन से बच्चे मेरे हैं और कौन से दूसरे पत्नी के हैं।' सचमुच ऐसी सरल प्रकृति थी उनकी और इसी तरह अब मैं भी नहीं बता सकता कि कौन से कमरे मेरे हैं और कौन से आर्था के। और मुझे ऐसा लगता है कि मार जाता हूँ।

"भविष्य भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

"मैं ईसाई था एक विचार रखता हूँ उस आदमी का तीन रकम रखा हूँ और बराबर सोचता रहता हूँ कि वे आर्था हैं। मैं सत्संगीन हो सकता हूँ। मैं ज़रूर बीमार पड़ जाऊँगा।

इसमें इनकार नहीं किया जा सकता, इस बात भगवान के हाथ में है पर प्यार प्यार ?" काफ़का ने कहा और फिर दिखाया। 'तुम्हें इस बार में सावधान रहिए फिर तो वेरोनिका तुम्हें यह मालूम

ही नहीं था कि कोई बात हो सकती है। तुम अब जवान नहीं हो। इस बात का ध्यान रखो कि जब तुम मर जाओ तो वे तुम्हारे पोते को कोई नुकसान न पहुँचा सकें। ओह, मुझे भय है कि वे लोग निकीफ़ोर के साथ अन्याय करेंगे। वह एक तरह से बिना बाप का ही है, उसकी माँ अभी लड़की और बेवकूफ़ है। तुम्हें उसके लिए कुछ प्रबन्ध करना चाहिए, बेचारा बच्चा कम से कम ज़मीन, बुतेकिनो वाली, निकोली पेत्रोविच। इस पर ज़रा सोचो तो सही!" वारवारा उसे बहकाती हुई आगे कहने लगी। "बेचारा सुन्दर बच्चा, उसे देख कर अफ़सोस होता है। तुम कल जाओ तो वसीयत कर आओ। इसमें देर क्यों की जाय!"

"मैं अपने पोते के बारे में भूल गया था," सिबुकिन ने कहा, "मुझे जाकर उसे ज़रूर देखना चाहिए। तो तुम कहती हो कि बच्चा ठीक है? अच्छा, उसे बड़ा होने दो, भगवान रक्षा करे।'

उसने दरवाज़ा खोला और उँगली हिलाकर लीपा की तरफ़ इशारा किया। वह बच्चे को गोद में लिए उसके पास आई।

"अगर तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो, लीपा तो माँग लेना," वह बोला, "जो चाहो सो खाओ हमें कोई शिकायत नहीं होगी जब तक कि यह तुम्हारे लिए स्वास्थ्यप्रद साबित होगा। " उसने बच्चे के ऊपर क्रास का निशान बनाया। "और मेरे पोते की हिफ़ाज़त करना। मेरा बेटा चला गया है मगर मेरा पोता रह गया है।'

उसके गालों पर आँसू बहने लगे। उसने एक सिसकारी भरी और चला गया। थोड़ी ही देर बाद वह बिस्तर पर लेटा और जाग कर बिताई गई सात रातों के बाद गहरी नींद में सो गया।

७

बुढ़ा सिबुकिन कुछ समय के लिए शहर गया। किसी ने अक्सीन्या से कहा कि वह [illegible] में अपनी वसीयत कराने

। उसने

बात की सूचना सुबह उस समय दी जब कुन्दा सिदुकिन और मालाम के पेड़ के नीचे, सीढ़ियों के पास बैठे हुए चाय पी रहे थे। उसने दुकान को आगे और पीछे से बन्द किया सभी चाबियों को एक की, इकट्ठी की और उन्हें अपने ससुर के पैरों के पास फेंक दिं,

"मैं तुम्हारे लिए काम नहीं करूंगी" उसने बार बार कहना शुरू किया और सिसकने लगी। "ऐसा लगता है कि मैं बहू नहीं हूँ, बल्कि एक नौकर हूँ। हरक मेरी मजाक उड़ा रहा है व कह रहा है। 'इसको सिदुकिन का कैसी नौकरानी मिली है!' तुम्हारे पास नमस्कार मांगने नहीं आई। मैं भिखारिन नहीं हूँ, नहीं, मेरे माँ और पिता हैं।

उसने अपने आँसू नहीं पोंछे बल्कि आँसू भरी आँखों से ... और माथे से भर कर गिरती ... से ठुड्डी ... पर टपकती रही। उसका चेहरा और गर्दन लाल और चमकी हुई थी और वह अपनी पूरी ताकत से चिल्ला रही थी।

मैं गुलाम की तरह काम करते रहने का इच्छुक नहीं हूँ। उसने आगे कहा "मैं परेशान हो गई हूँ। जब काम का मौका आता है, जब रात रात भर और दिन दिन भर दुकान पर बैठने का और चोर चोर का बारूद बेचने का मौका आता है तब वह सब मेरे हिस्से में है मगर जब दहेज देने का मौका आता है तब उस कैदी की स्त्री और उसके बच्चे के हिस्से में लिख दिया जाता है। वह यहाँ मालकिन है और मैं उसकी नौकरानी हूँ। उस कैदी की स्त्री को सब कुछ दे दो और इतना उसका एक हुए जमेरान में जाने भर दो रही हूँ। मेरे लिए क्यों तुमने बेहूदा हुई थी पूरा पूछने वाले का जूता!"

उसने जीवन में सिर्फ एक न कभी भी बच्चों का न था स्वय ही था और न उन्हें मजा ही था और कभी इस बात को उसने मैं भी नहीं सोचा था कि सभी व परिवार का व ... उनके साथ इतनी बदतमीज़ी

ही नहीं था कि कोई बात हो सकती है। तुम अब जवान नहीं हो। इस बात का ध्यान रखो कि जब तुम मर जाओ तो वे तुम्हारे पोते को कोई नुकसान न पहुँचा सकें। ओह, मुझे भय है कि वे लोग निकीफ़ोर के साथ अन्याय करेंगे। वह एक तरह से बिना बाप का ही है, उसकी माँ अभी लड़की और बेवकूफ़ है। तुम्हें उसके लिए कुछ प्रबन्ध करना चाहिए, बेचारा बच्चा कम से कम ज़मीन, बुत्योकिनो वाली, ग्रिगोरी पेत्रोविच! इस पर ज़रा सोचो तो सही!" वारवारा उसे समझाती हुई आगे कहने लगी। "बेचारा सुन्दर बच्चा उसे देख कर अफ़सोस होता है। तुम अब जाओ तो वसीयत कर जाओ इसमें देर क्यों की जाय!"

"मैं अपने पोते के बारे में भूल गया था," त्सिबुकिन ने कहा, "मुझे अवश्य उसे ज़रूर देखना चाहिए। तो तुम कहती हो कि बच्चा ठीक है! अच्छा, उसे बड़ा होने दो, भगवान रक्षा करे।"

उसने दरवाज़ा खोला और उँगली हिलाकर लीपा की तरफ़ इशारा किया। वह बच्चे को गोद में लिए उसके पास आई।

"अगर तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो, लीपा, तो माँग लेना," वह बोला "जो चाहो सो खाओ, हमें कोई शिकायत नहीं होगी जब तक कि वह तुम्हारे लिए स्वास्थ्यप्रद साबित होगा।" उसने बच्चे के ऊपर क्रास का निशान बनाया। "और मेरे पोते की हिफ़ाज़त करना। मेरा बेटा चला गया है मगर मेरा पोता रह गया है।"

उसके गालों पर आँसू बहने लगे। उसने एक सिसकारी भरी और चला गया। थोड़ी ही देर बाद वह बिस्तर पर गया और जाग कर बिताई गई सात रातों के बाद गहरी नींद में सो गया।

७

बूढ़ा त्सिबुकिन कुछ समय के लिए शहर गया। किसी ने अक्सीन्या से कहा कि वह सम्बन्धित न्यायालय में अपनी वसीयत कराने

उसने

याद की सूरत सुबह उस समय की जब बुढ़ा मिसुकिन और मोमराम के पेड़ के नीचे, सीढ़ियों के पास बैठे हुए चाय पी रहे उसने दुकान को आगे और पीछे से बन्द किया सारी चाबियाँ का गुच्छा थी, इकट्ठी कीं और उन्हें अपने ससुर के पैरों के पास फेंक ।

“मैं तुम्हारे लिए काम नहीं करूंगी,” उसने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू किया और सिसकने लगी। “ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारी बहू नहीं हूँ, बल्कि एक नौकर हूँ। हरेक मेरी मज़ाक उड़ा रहा है और कह रहा है। 'देखो मिसुकिन को कैसी नौकरानी मिली है।' तुम्हारे पास धन्यवाद मांगने नहीं आई। मैं भिखारिन नहीं हूँ, नहीं, मेरे माता और पिता हैं।'

उसने अपने आँसू नहीं पोंछे बल्कि आँसू भरी आँखों से, दुःख और क्रोध से भर कर सिरकी विषाद से टकटकी बाँध कर देखती रही। उसका चेहरा और गर्दन लाल सुर्ख हो उठी थी और वह अपनी पूरी ताकत से चिल्ला रही थी।

‘मैं गुलाम की तरह काम करते रहने को तैयार नहीं हूँ।’ उसने आगे कहा 'मैं परेशान हो गई हूँ। जब काम का मौका आता है, जब रात रात भर और दिन दिन भर दुकान पर बैठने का और दौड़ दौड़ कर सामान बेचने का मौका आता है तब यह सब मेरे हिस्से में है मगर जब ज़मीन देने का मौका आता है तब उस कैदी की स्त्री और उसके बच्चे के लिए मैं दिया जाता है। वह यहाँ मालकिन है और मैं उसकी नौकरानी हूँ। उस कैदी की स्त्री को सब कुछ दे दो और दूसरा उसका दम घुट जायगा, मैं अपने घर जा रही हूँ। अपने लिए कोई दूसरा बेवकूफ ढूँढ़ लो तुम दुष्ट डाकू कहीं के।'

अपने जीवन में मिसुकिन ने कभी भी बच्चों को न डाँटा ही था और न उन्हें सज़ा ही दी थी और कभी इस बात को सपने में भी नहीं सोचा था कि उनमें से कोई उससे उस तरह इतनी बदतमीज़ी

से बात कर सकता है, या उसका अपमान कर सकता है। इससे वह इस समय बहुत डर गया था। वह दौड़ कर घर के भीतर गया और आलमारी के पीछे छिप गया और अगाफ्या इवानी व्याकुल हो उठी कि उससे अपनी जगह से भी नहीं उठा गया। उसने फिर अपने मुँह के सामने इस तरह हाथ हिलाए मानो मक्खी उड़ा रही हो।

'ओह पवित्र सन्तो! इसका क्या मतलब है?" वह भयभीत होकर बड़बड़ाई। 'यह क्या चीख रही है! ओह, ईश्वर, ईश्वर! लोग सुन लेंगे। चुप। ओह चुप!

"उसने कुप्रोकिनो को उस कैदी की बेटी को दे दिया है," एकसम्या चीखती रही। 'अब उसे सब कुछ दे दो, मैं तुमसे कुछ भी नहीं चाहती! मुझे अकेला छोड़ दो! तुम सब लोग चोर हो! मैंने भी मर कर इस बात को सह लिया है, मेरा मन भर चुका है! तुमने आते जाते हुए लोगों को लूटा है! तुमने जवान और बूढ़े सब को समान रूप से लूटा है डाकुओ! और बिना लाइसेन्स के वोदका कौन बेचता रहा! और जाली सिक्के! तुमने जाली सिक्कों से सन्दूक भर लिए हैं और अब मैं किसी मतलब की नहीं रही!"

इस समय तक फाटक पर एक भीड़ हो गई थी और अहाते की तरफ घूर २ कर देख रही थी।

'लोगों को देखने दो' एकसम्या चीखी। 'मैं तुम सब के मुँह पर कालिख लगवाऊँगी! तुम शर्म से मरने लगोगे! तुम मेरे पैरों पर सिर पटकोगे। ए स्तेपन,' उसने बहरे को आवाज दी, "चलो इसी समय अपने घर चलो! चलो मेरे माँ बाप के पास चलो। मैं कैदियों के साथ रहना नहीं चाहती। तैयार हो जाओ!"

अहाते में बँधी हुई रस्सी पर कपड़े लटक रहे थे। उसने अपने भीगे पेटीकोट और ब्लाउज उस पर से खींच लिए और बहरे आदमी

उन्हें ज़मीन पर पटक दिया और पैरों से कुचल डाला।

"पवित्र सभा ! इस यहाँ से हटाओ !" चमकदार चमको। '
औरत है ! इसे कुचल दो ! भगवान के लिए इसे ... दो !"

"हटो ! कैसी औरत है !" आग ... पर ... रहे
"यह एक औरत है ! यह यहीं दिखाई जा रही है !" एक सिपाही उस
की तरह दौड़ी आते उसके पास आ रहे थे। ... ... था ... रही
... ... पर उसके ... ... गया था। ... में से ... और
के ... में रखे हुए ... ... में ... कर रही थी और ...
... से ... रहा था। ... पर ... ... कर ... हुआ
और ... था। ... ... रहा था, उस
... ही एक ... पर ... दिया गया था ... ... वह गिर न
... । जैसे ही ... ... ने ... में
... को ... ... और ... ... ही और
मेज़ पर रखे हुए ... हुए पानी के ... को ... के लिए ...
ही हाथ ... —

"हमें ... दो" ... ... । हुए और ... में ...
... हुए ... ने कहा। ... ... से हाथ ... से तुम्हें
कोई ... नहीं। तुम ... ... हो और तुम्हें ...
और यह कि तुम कौन हो यह ... ... चाहिए।"

... ... होकर उसकी तरफ़ ... रह गई और ...
नहीं ... परन्तु ... उसने ... को ... की ... की
तरह ... हुए ... और ... वह ... गई तथा उसका सारा शरीर
... पड़ गया।

"तुमने मेरी ज़मीन ले ली है इसलिए ... में ... !" यह
कहते हुए ... ने ... हुए पानी का ... ... लिया और
... ... दिया।

उसके बाद वहाँ एक ऐसी चीख सुनाई पड़ी जैसी कि उक्लीवो में इससे पहले कभी भी नहीं सुनी गई थी और कोई भी इस बात का विश्वास नहीं करता कि लीपा जैसा कमजोर प्राणी भी इस तरह की चीख मार सकता है। और अचानक अहाते में खामोशी छा गई।

अक्सिन्या अपनी उसी पुरानी सरल मुसकराहट के साथ मकान के भीतर चली गई। बहरा अपनी बाँहों में कपड़े भरे अहाते में इधर उधर घूमता रहा। फिर उसने उन्हें दुबारा फैलाना शुरू कर दिया—चुपचाप आराम के साथ। और जब तक कि रसोइया नदी से लौटकर आया तब तक किसी की भी हिम्मत नहीं पड़ी कि रसोईघर में घुसे और देखे कि वहाँ क्या हुआ था।

८

निकेफोर को जिले के अस्पताल में ले जाया गया और शाम होते होते मर गया। लीपा ने लेने के लिए उसके आने का इन्तजार नहीं किया बल्कि मरे हुए बच्चे को उसकी मोटी रजाई में लपेटा और घर ले चली।

अस्पताल जो अभी नया ही बना था और जिसकी खिड़कियाँ बड़ी बड़ी थीं एक पहाड़ी पर ऊँचा खड़ा था। डूबते हुए सूरज की रोशनी में वह चमक रहा था और ऐसा दिखाई पड़ता था मानो इसके भीतर आग लग गई हो। नीचे एक छोटा सा गाँव था। लीपा सड़क के सहारे नीचे की तरफ चली और गाँव पहुँचने से पूर्व ही एक तालाब के किनारे बैठ गई। एक औरत घोड़े का पानी पिलाने आई मगर घोड़ों ने पानी नहीं पिया।

"तुम्हें और क्या चाहिये?" उस औरत ने धीरे से धीरे से

अपने

नहीं दिखाई पड़ रहा था।

“यह   भी नहीं रहा,” बाड़े की तरफ देखते हुए कहा।

फिर घोड़े के साथ वह धीरज और बूटीके साथ घर वापस चले गए। वहाँ कोई भी नहीं रह गया सूरज सुनहरी और बैंगनी रंग रंगों में सिमट कर सोने चला गया और उसके उसके बादल काले भूरे रंग के आकाश में चारों तरफ छा गए और उसकी भीड़ सी करने लगे। दूर कहीं एक टिटहरी पक्षी चीखा एक खोखली सी भी आवाज में जैसे कि बाड़े में बन्द गाय रंभाती है। इस तरह पक्षी की आवाज हर साल बसन्त में सुनाई पड़ती थी परन्तु कोई भी जानता था कि वह कैसा था या कहाँ रहता था। चरागाह पर अस्पष्ट तालाब के किनारे उगी हुई झाड़ियों में तथा खेतों में बुलबुलें चहक रही थीं। कोयल किसी की सालों की गिनती कर रही थी और रुककर फिर शुरू से गिनने लगती थी। तालाब में मेंढक एक दूसरे पर चीख चिल्ला रहे थे, एक दूसरे पर चढ़ने के करीब हो रहे थे और कोई भी उनके शब्दों का रूप समझ सकता था।

“तुम ऐसे हो! तुम ऐसे हो!” सम्पूर्ण वातावरण विचित्र पुकार के शोर से भर उठा था। ऐसा लगता था मानो वे जानबूझ इसलिए रो और चीख चिल्ला रहे थे जिससे कोई भी इस बसन्ती रात में सो न पाए, जिससे सब यहाँ तक कि वे क्रुद्ध मेंढक भी, उस क्षण का पूर्ण रूप भोग और अपना मनोरंजन कर सकें। जीवन केवल एक बार ही मिलता है।

चाँदनी भरा चन्द्र आसमान में चमक रहा था। बहुत से तारे भी खिल रहे थे। इवान को पता नहीं चला कि वह वहाँ कितनी देर बैठे मगर जब वह उठे और चले गये तो सब प्यारे से गाँव का प्रत्येक व्यक्ति सो चुका था और एक भी रोशनी दिखाई नहीं पड़ रही थी। यहाँ से घर करीब डेढ़ मील दूर था, परन्तु उसको सामने ही जान पड़ा हो

उसमें यह सोचने की भी शक्ति नहीं रही थी कि वह कैसे जाय। और कभी सामने चमकता था तथा कभी दाहिनी तरफ और वही आलोक, भारी पर गद्गद् आवाज में पिचकारी सी भर कर उसे मानो चिढ़ाती हुई सी बराबर पुकारे जा रही थी। "ए सामने देखो, तुम अपना रास्ता भूल जाओगी!" लीपा तेजी से भागी चली। उसके सिर का रूमाल कहीं गिर गया" उसने आसमान की तरफ देखा और अनुभव करने लगी कि उसके बच्चे की आत्मा इस समय कहाँ होगी क्या वह उसके पीछे पीछे चल रही थी या वहां दूर तारों के बीच तैर रही थी और इस समय अपनी माँ के विषय में कुछ भी नहीं सोच रही थी। ओह रात को इस सूखे हुए मैदान में कितना एकाकीपन था, उस संगीत से भरे हुए वाता-वरण में जब कोई स्वयं नहीं गा सकता था प्रसन्नता की उस अविराम गति से होने वाली चीजों में जब कोई स्वयं प्रसन्न नहीं हो सकता था, जब चाँद जो इस बात की चिन्ता नहीं करता कि बसन्त का मौसम है या गर्मी का मनुष्य जीते हैं या मर रहे हैं चुपचाप एकाकी जीने की तरह राज्य करता है।" "जब हृदय में दुःख भरा होता है तो मनुष्यों के बिना रहना कठिन हो जाता है। काश कि सिर्फ उसकी माँ प्रास्कोव्या उसके साथ होती या बैसाखी या कोई रसोइया या किसान उसके साथ होता!

"हू-ऊ-ऊ! तिलचीपा पक्षी चीखा। "हू-ऊ-ऊ!"

और अचानक उसने मनुष्य की आवाज को स्पष्ट रूप से सुना।

"घोड़े जोत दो वाविला!"

उसके आगे सड़क के किनारे आग जल रही थी। लपटें बुझ चुकी थीं सिर्फ लाल अँगारे रह गए थे। उसे घोड़ों की घास चबाने की आवाज सुनाई पड़ी। अँधेरे में उसे दो गाड़ियों की रूप रेखा दिखाई दी। एक में एक पीपा रखा था और दूसरी जो छोटी थी उसमें बोरे भरे हुए

हुआ था। गाड़ियों के पास एक कुत्ता गुर्राया। वह आदमी जो साथ में जा रहा था रुका और बोला।

"ऐसा लगता है मानो कोई सड़क पर आ रहा है।"

"शरीफ, चुप रहो!" दूसरे ने कुत्ते को पुकारा।

और दूसरी आवाज से कोई भी बता सकता था कि दूसरा बूढ़ा आदमी था। बीरा रुक गई और बोली।

"भगवान तुम्हारी मदद करे।"

बूढ़ा बीरा के पास गया और कुछ रुककर जवाब दिया।

"गुड ईवनिंग।

"तुम्हारा कुत्ता काटता तो नहीं, बाबा!"

"नहीं, चली आओ, वह तुमसे बोलेगा भी नहीं।"

"मैं रास्ता भूल गई थी," कुछ रुककर बीरा ने कहा। "मेरा बच्चा ऐसे यहाँ मर गया। मैं उस पार से आ रही हूँ।

यह सुनकर बूढ़े को बहुत बुरा मालूम हुआ क्योंकि वह वहीं से हट गया और जल्दी से बोला।

"कोई बात नहीं, बिरा। यह भगवान की मर्जी है। तुम बहुत सुस्त हो, लड़के," अपने साथी को सम्बोधित करते हुए उसने उससे कहा "फुर्ती से काम करो!"

"तुम्हारा कुत्ता है ही नहीं," बीरावान ने कहा "वह दिखाई ही नहीं देता।"

"तुम समझ के ही देख रहा, शरीफा!"

बूढ़े ने एक चौंका भरा लिया, उस फूँक-मिले उसकी नाक और आँखें चमक उठीं—जब, जब उन्हें बुझा दिया गया, वह उसकी लिए हुए बीरा के पास गया और उसकी तरफ देखा। उसकी निगाह में कष्ट और दया की भावना भरी हुई थी।

"तुम एक माँ हो," वह बोला "हरेक माँ अपने [illegible] होती है।"

और यह कहते हुए उसने अपना सिर हिलाया और गहरी साँस ली। वासीली ने कोई चीज आग पर फेंकी, पैर से उसे रगड़ा—और तुरन्त ही घोर अन्धकार छा गया। वह स्वप्न चित्र समाप्त हो गया और पहले की ही तरह वहाँ सिर्फ खेत, तारों भरा आसमान और एक दूसरे के सोने में बाधा डालने वाली चिड़ियों की आवाजें ही रह गईं। और एक पक्षी, ऐसा लगा कि उसी जगह जहाँ पहले आग थी चीख उठा।

मगर एक मिनट बीत गया और लीपा को फिर दोनों गाड़ियाँ, वह बुड्ढा और लम्बा और दुबला पतला वासीली दिखाई पड़ने लगे। गाड़ियाँ, सड़क पर चलते हुए चरमरा रहीं।

"क्या तुम पादरी हो?" लीपा ने बुड्ढे से पूछा।

"नहीं। हम लोग फिरसानोव के हैं।"

"तुमने अभी मेरी तरफ देखा था और मेरा हृदय पिघल उठा। और यह नौजवान भी इतना अच्छा है। मैंने सोचा था कि तुम तीर्थयात्री होगे।"

"क्या तुम दूर जा रही हो?

"बुतकीनो को।"

"गाड़ी में बैठ जाओ हम तुम्हें ले चलेंगे, कुज़्मेन्की तक, फिर तुम सीधी चली जाना और हम बाँयी तरफ को मुड़ जायेंगे।"

वासीली पीछे वाली गाड़ी पर बैठ गया और बुड्ढा और लीपा दूसरी में चढ़े। वे धीमी चाल से चले चले। वासीली आगे था।

"मेरा बच्चा दिन भर तड़पता रहा।" लीपा ने कहा। "वह अपनी नन्हीं सी आँखों से मेरी तरफ देखता था और कहता कुछ भी नहीं था। वह बोलना चाहता था मगर बोल नहीं सकता था। ईश्वर पिता, स्वर्ग की रानी! दुख के मारे मैं फर्श पर पछाड़ें खाती रही। मैं खाट

बिस्तर के पास गिर पड़ी। और मुझे यह बतलाओ बाबा कि

कर दिए जाते हैं मगर एक चलाई से बत्तख का दुख क्यों जब कि कोई पाप ही नहीं किया। ऐसा क्यों?'

"कौन बता सकता है?" बुड्ढे ने जवाब दिया।

वे आगे पसरे एक मुस्कान बनाते रहे।

"हम हर बात को नहीं जान सकते, कैसे और क्यों चिड़िया के मगज़ में यह लिख दिया गया कि उसके चार न होकर दो पंख होंगे क्योंकि वह दो से ही उड़ सकती है। इसी तरह मनुष्य के मगज़ में यह लिख दिया गया कि वह पूरी बात न जानकर आधी या चौथाई जाने—उतनी ही जितनी कि उसे जिन्दा रहने के लिए जरूरी है, इतनी वह जानता है।"

"अच्छा हो कि मैं पैदल चलूँ बाबा। इस समय मेरा दिल बुरी तरह काँप रहा है।"

"कोई बात नहीं चुपचाप बैठी रहो।"

बुड्ढे ने जम्हाई ली और उसने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाया।

"कोई बात नहीं," उसने दुहराया। "तुम्हारा दुख ही सबसे अधिक गहरा नहीं है। जिन्दगी लम्बी है इसमें सुख और दुख दोनों ही आयेंगे, हर तरह की बातें होंगी। मातृभूमि बड़ी महान है," उसने कहा और उसने चारों तरफ मुँह घुमा कर देखा। "मैं सारा रूस घूम चुका हूँ और मैंने उसकी हर चीज़ देखी है तुम्हें मेरी बातों का यकीन करना चाहिए, बिटिया। दुनिया में अच्छी बातें भी होंगी और बुरी भी। मैं अपने गाँव के प्रतिनिधि के रूप में साइबेरिया गया था और अमूर नदी तक गया और अल्ताई पहाड़ भी देखा था। फिर साइबेरिया में आकर बस गया था। वहाँ मैंने खेती की फिर मुझे घर की याद सताने लगी और मैं अपने गाँव वापस चला आया। हम वहाँ पैदल ही वापस आये थे। मुझे याद है कि हमने एक स्टीमर पर सफ़र किया था। मैं दुबला बहुत ही दुबला हूँ जिसके आगे नंगे पैर ठंड से सिकुड़ता

हुआ एक एक टुकड़े के लिए तरसता हुआ पागल कर रहा था और एक नये आदमी ने जो स्टीमर पर था—अगर वह मर गया हो तो उसे स्वर्ग का राज्य मिले—मेरी तरफ दया के साथ देखा और उसकी आँखों में आँसू भर आए। "भाई" उसने कहा, "तुम्हारी रोटी काली है, तुम्हारे दिन काले हैं ..." और जब मैं घर पहुँचा जैसी कि कहावत है, तो वहाँ पास पत्थर कुछ भी नहीं था। मेरी एक बीबी थी मगर मैं उसे साइबेरिया में पीछे छोड़ आया था। उसे वहीं दफना दिया गया था। इस तरह मैं दिन में काम करने वाले मजदूर की तरह दिन गुजार रहा हूँ। और फिर भी मैं तुम्हें बताता हूँ : तब से मैंने सुख भी देखा है और साथ ही साथ दुख भी भोगा है। अब मैं मरना नहीं चाहता मुझे और बीस साल तक जिन्दा रहने से खुशी होगी। इस तरह अच्छाई का भाग अधिक रहा है। और हमारी जन्मभूमि रूस महान है!" और उसने चारों तरफ सिर घुमा कर देखा।

"बाबा" लीपा ने पूछा, "जब कोई मरता है, तो उसकी आत्मा कितने दिनों तक धरती पर घूमती रहती है?"

"कौन बता सकता है! वासीली से पूछो वह स्कूल में पढ़ा है। आजकल सब कुछ पढ़ाया जाता है वासीली!" बुड्ढे ने उसे पुकारा।

"हाँ!"

"वासीली जब कोई मर जाता है, तो उसकी आत्मा कितने दिनों तक धरती पर घूमती रहती है?"

वासीली ने घोड़े को रोक लिया और तब जवाब दिया।

"नौ दिन। मेरा चाचा किरिला मर गया था और उसकी आत्मा हमारी झोंपड़ी में तेरह दिन तक रही थी।"

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"तेरह दिनों तक स्टोव में से खटखट की आवाज आती

''

लगा था कि उसने एक भी बात पर यकीन नहीं किया था ।

कुज़्मेन्को के पास वाली अपनी मेज़ पर मुर्गी और वोदका रख दी । इस समय तक अंधेरा होने लगा था । जैसे ही वह बस्ती में उसकी तस्वीरों की खोपड़ियाँ और निगाहें कोहरा घिर रहे थे । ठंड भी और उसे ऐसा लगा कि वही कोयल अब पुकार रही थी ।

जब वीरा घर पहुँची तो अभी तक अलवार बाहर नहीं गए थे । सब खा रहे थे । वह सीढ़ियों पर बैठ गई और इन्तज़ार करने लगी । दूसरा मग्रम सबसे बाहर निकला । वीरा का एक ही नज़र से देख कर वह सब कुछ समझ गया और काफी देर तक एक शब्द भी उच्चारित नहीं कर सका । सिर्फ उसके होंठ बिना किसी आवाज़ के हिलते रहे ।

"प्यारे वीरा," उसने कहा, "तुमने मेरे बच्चे की हिफ़ाज़त नहीं की ...'

वारवारा काफी गई थी । उसने अपने हाथ पीछे और ढाने लगी और पीतल की तरह का निजाम का जिसने लगी ।

"वह एक सुन्दर बच्चा था.. ..." वह कहने लगी । "प्यारे दिमा, दिमा.. तुम्हारे सिर्फ एक ही बच्चा था और तुमने पूरी तरह उसकी इस भाग्य की बेपरवाह करदी ।"

सुबह खत्म भर हुए लोगों के लिए हैरान से प्रार्थना करने की रस्म अदा की गई । मुश्क-सोम्बार दूसरे दिन किया गया और इसके बाद मेहमानों और पादरियों ने हुआ हुआ घर खाना खाया और इसके बावजूद व गया कि वहाँ भी यह भावना कि इन्होंने सुबह से अन्न के दर्शन भी नहीं किए थे । वीरा मेज़ के पास खड़ी थी । छाती से अपने ढरे से मशीन कुरमुर्ग का एक टुकड़ा बढ़ाते हुए उसने कहा ।

"बच्चे के लिए अफ़सोस मत करो । क्योंकि मेरों का मार्ग का राज मिलता है ।"

और केवल तभी जब सब चले गए, लीपा ने पूरी तरह महसूस किया कि अब निकीफ़ोर वहाँ नहीं था और कभी भी नहीं आयेगा। और उसने यह महसूस किया और फूट फूट कर रो उठी। और उसे यह भी नहीं मालूम था कि वह किस कमरे में जाकर रोये क्योंकि उसने अनुभव किया कि अब जब कि उसका बच्चा मर चुका है, उसके लिए घर में कोई जगह नहीं थी, कि उसे अब यहाँ क्यों रहना चाहिए, कि वह रास्ते में बाधा है। और दूसरों ने भी यही महसूस किया।

“अब तुम किसलिए गला फाड़ रही हो?” अचानक दरवाजे में आकर एक्सिन्या चीखी। पुत्र-संस्कार के सम्मान में उसने सब नए कपड़े पहने थे और चेहरे पर पाउडर लगाया था। “चुप रहो!”

लीपा ने रोना रोकने की कोशिश की मगर न रोक सकी और भी जोर से रो उठी।

“सुन रही हो!” एक्सिन्या चीखी और उसने अपना [illegible] होकर जमीन पर पैर पटका। मैं किससे कह रही हूँ! बाहर अहाते में जाओ और फिर यहाँ कदम मत रखना, कैदी की बीवी। भाग जाओ!”

“अच्छा अच्छा” बूढ़े ने आडम्बर के साथ कहा। “एक्सिन्या इस तरह मत चीखो मेरी बच्ची। ...वह रो रही है, यह स्वाभाविक है... उसका बच्चा मर गया है ...”

“यह स्वाभाविक है,” एक्सिन्या ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा, “इसे सिर्फ रात भर यहाँ रहने दो और कल मुझे इसकी छाया भी यहाँ दिखाई न पड़े। यह स्वाभाविक है! ...” उसने उसका पुनः मज़ाक उड़ाया और हँसती हुई दूकान में चली गई।

... दिन तड़के ही लीपा अपनी माँ के पास तोरगुएवो

कर दिया गया है और वे कैसे चलती हैं मानों नए बन गई। जिन्हें या पहले की ही तरह लिखे हुए 'विरुमिरस' के फूल लगे रहते हैं भी साथ पहले लिथुनिया के मकान में और [illegible] का कुछ हुआ था लगभग पूरी तरह भुला दिया गया है।

लिथुआनी पैदावार पहले की तरह अब भी घर का मालिक जाता है लेकिन [illegible] है कि अब [illegible] के साथ पहुँच गई है। वही गरीबी और बेकारी है और बिना उसकी के कुछ भी नहीं किया जा सकता। [illegible] गरद चल रहा है। क्योंकि उस के लिए [illegible] की ज्यादा [illegible] है इसलिए [illegible] हजार तक पहुँच गये हैं। किसान [illegible] और [illegible] पर [illegible] से जाती है और [illegible] में [illegible] है और इस काम के बदले में [illegible] है।

[illegible] के साथ [illegible] बन गई हैं और उनकी [illegible] अब [illegible] कहलाती है। [illegible] है [illegible] दिया है और अब [illegible] साथ [illegible] में [illegible] नहीं होता है। [illegible] बहुत [illegible] है और वह [illegible] भी [illegible] रहते हैं। [illegible] के [illegible] की [illegible] में ही है और वह [illegible] से [illegible] है और [illegible] से [illegible] है।

[illegible] में [illegible] है कि [illegible] हाथ में [illegible] है और यह [illegible] है कि अब [illegible] और [illegible] में [illegible] करने पर [illegible] हुई और [illegible] में अब [illegible] नहीं [illegible] है [illegible] कि [illegible] में [illegible] है। [illegible] में [illegible] और [illegible] के [illegible] है।

और उससे कहता है।

"मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप तशरीफ़ फरमायें, एकसिन्या अब्रामोव्ना!"

एक अधेड़ मध्यम ऊँचे क़द के, क़ीमती कपड़े की पोशाक और पैटेन्ट लैदर के जूते पहने हुए अर्कीमिस ने एकसिन्या को एक बोसा दिया और उससे बातें कर इतना प्रभावित हुआ कि अपनी इच्छानुसार बोसे की जो क़ीमत एकसिन्या ने दी उसने वही मंजूर कर ली। वह बहुत देर तक उसका हाथ पकड़े रहा और उसकी प्रशंसा, पूर्ण सरल आँखों में आँखें डाल कर बोला।

"तुम जैसी औरत के लिये एकसिन्या अब्रामोव्ना जो तुम चाहो मैं वही करने को तैयार हूँ। सिर्फ़ यह बता दो कि हम लोग कब मिल सकते हैं जहाँ कोई भी हमारे कामों में बाधा डालने वाला न हो।"

"क्यों, जब तुम चाहो।"

और उसके बाद से वह अधेड़ रसिक लगभग रोज़ उसकी दूकान पर 'बीयर' पीने आया करता है। और वह बीयर बड़ी कड़वी होती है चिरायते जैसी कड़वी। अर्कीमिस अपना सिर हिलाता है मगर उसे पी जाता है।

आजकल बुड्ढे त्सिबुकिन का लेन-देन से कोई भी सम्बन्ध नहीं रहा है। वह अपने पास एक भी पैसा नहीं रखता क्योंकि वह असली और नक़ली सिक्कों को पहचान नहीं पाता मगर वह ख़ामोश रहता है। अपनी इस कमज़ोरी के विषय में कुछ भी नहीं कहता। उसकी याददाश्त जाती रही है और वे लोग अगर उसे खाना नहीं देते तो वह माँगता नहीं है। वे लोग उसके बिना ही खाना खाने के आदी हो गए हैं और वारवारा र कहा करती है।

माने बड़ा गया।"

[illegible] की मौसमों में इसका [illegible] बंद रहता है और जिस [illegible] जब गर्मी बहुत बढ़ जाती है वह बाहर नहीं जाता और घर पर [illegible] है। शाम तौर पर वह [illegible] बाद [illegible] कम चलने [illegible] में और [illegible] ओढ़ कर [illegible] वाली सड़क पर [illegible] में [illegible] घूमता रहता है या गिरजे के पास एक बेंच पर सुबह से लेकर [illegible] बैठा रहता है। वह वहां बिना हिले हुए बैठा रहता है। [illegible] से गुजरने वाले उसे सलाम करते हैं मगर वह जवाब नहीं [illegible] की ही तरह [illegible] से [illegible] करता है। अगर उससे [illegible] पूछा जाता है तो वह पूरे [illegible] और [illegible] उत्तर देता है परन्तु संक्षिप्त रूप में ही।

गाँव में एक अफवाह फैल रही है कि उसकी [illegible] उसे घर से बाहर निकाल देती है और उसे खाने को कुछ भी नहीं देती और वह [illegible] भीख मांग कर गुजारा करता है। कुछ लोग इस बात से दुखी हैं तथा कुछ उसके लिए दुख प्रकट करते हैं।

[illegible] बच्चे से और भी ज्यादा [illegible] और [illegible] है। [illegible] है और बच्चे की ही तरह अपने कामों में लगी रहती है। [illegible] उसके कामों में दिलचस्पी नहीं लेती।

[illegible] में इतना [illegible] रहता है कि बच्चों की [illegible] खत्म करने तक भी वे उस का नहीं [illegible] है। उस [illegible] कोई [illegible] बात [illegible] समझ [illegible] कि उनका क्या [illegible] हो जाता है।

वे अपना [illegible] को घूमने चले हैं। उनके [illegible] एक [illegible] बगल में लिखा एक [illegible] है [illegible] है। वह [illegible] ऐसा लगता है मानो [illegible] लिखा गया है। वह [illegible] कि उसके लिए [illegible] भी उसके [illegible] था। इस [illegible] के साथ [illegible] मुश्किल [illegible] बाद [illegible] किताब में [illegible] छिपी हुई थी। मैं वहीं [illegible] रहता हूँ [illegible] हूँ

और उससे कहता है।

"मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप स्वीकार करें, एफ़्सिन्या अफ़ामोव्ना!"

एक अधेड़ मगर ऐश शौकीन कीमती कपड़े की पोशाक और पिकिन 'बेरूए' के ढंग के बूट पहने हुए ज़मींदार ने एफ़्सिन्या को एक घोड़ा दिया और उससे बातें कर इतना प्रभावित हुआ कि अपनी इच्छानुसार घोड़े की जो कीमत एफ़्सिन्या ने दी उसने वही मंज़ूर कर ली। वह बहुत देर तक उसका हाथ पकड़े रहा और उसकी मस्त, पूर्ण सरल आँखों में आँखें डाल कर बोला।

'तुम जैसी औरत के लिये, एफ़्सिन्या अफ़ामोव्ना जो तुम चाहो मैं वही करने को तैयार हूँ। सिर्फ़ यह कह दो कि हम लोग कब मिल सकते हैं जहाँ कोई भी हमारे कामों में बाधा डालने वाला न हो!"

"क्यों, जब तुम चाहो।"

और उसके बाद से वह अधेड़ रसिक लगभग रोज़ उसकी दूकान पर 'बीयर' पीने आया करता है। और वह बीयर बड़ी कड़वी होती है चिरायते जैसी कड़वी। ज़मींदार अपना सिर हिलाता है मगर उसे पी जाता है।

आजकल बुड्ढे सिपुकिन का लेन-देन से कोई भी सम्बन्ध नहीं रहा है। वह अपने पास एक भी पैसा नहीं रखता क्योंकि वह अच्छे और जाली सिक्कों को परख नहीं पाता मगर वह खामोश रहता है। अपनी इस कमज़ोरी के विषय में कुछ भी नहीं कहता। उसकी याद्दाश्त जाती रही है और वे लोग अगर उसे खाना नहीं देते तो वह माँगता नहीं है। वे लोग उसके बिना ही खाना खाने के आदी हो गए हैं और बारबारा अक्सर कहा करती है :

"बिना खाना खाए सोने चला गया!"

विश्व की महान रचनाएँ

गीतांजलि	(रवीन्द्रनाथ ठाकुर)	
युद्ध और शांति	(टाल्सटाय)	
अन्ना कैरेनिना	"	
कज्जाक	"	
पिता पुत्र	(तुर्गनेव)	
इन्द्रपुर	(मजर)	
अपराध और दण्ड	(दोस्तोवस्की)	
धरती माता	(पर्ल बक)	
सिद्धार्थ	(हरमेन हेस)	
कप्तान की बेटी	(पुश्किन)	
सेवास्तोपोल की कहानियाँ	(टाल्सटाय)	
टाल्सटाय की श्रेष्ठ कहानियाँ	(१)	१
रूसमाव की श्रेष्ठ कहानियाँ	(२)	
गोर्की की श्रेष्ठ कहानियाँ	(१)	१)
गोर्की की श्रेष्ठ कहानियाँ	(२)	१)
चेखव की श्रेष्ठ कहानियाँ	(१)	१)
चेखव की श्रेष्ठ कहानियाँ	(२)	१)
मोपासाँ की श्रेष्ठ कहानियाँ		१)
		१)

प्रभात प्रकाशन मथुरा ।

मानो वह प्रसन्नता और विजय की भावना से भरी हो कि दिन समाप्त हो गया और अब वह आराम कर सकती है। उसी झुण्ड में उसकी माँ प्रास्कोव्या भी जो अपनी काँख में एक बंडल दबाए हमेशा की तरह हाँफती हुई चली आ रही थी।

'गुड ईवनिंग माकारिच!' 'बैसाखी' को देखकर लीपा बोली। "गुड ईवनिंग, डार्लिंग!"

"गुड ईवनिंग, किसिन्स!" प्रसन्न होकर बैसाखी चिल्लाया। प्यारी स्त्रियो और लड़कियो, अमीर बनिए को प्यार करो! हो-हो! मेरे नन्हें बच्चो, मेरे नन्हें बच्चो। (बैसाखी ने साँस ली) मेरी नन्ही कुल्हाड़ियो!"

'बैसाखी' और बाकी लोग आगे बढ़ गए। उनकी बातें अब भी सुनी जा सकती थीं। फिर उनके बाद उस झुण्ड की मुलाकात सिबुकिन से हुई और अचानक उनमें खलबली मच गई। लीपा और प्रास्कोव्या कुछ पीछे रह गई थीं और जब बुड्ढा उनके बराबर पहुँचा तो लीपा ने झुककर सलाम की और बोली।

'गुड ईवनिंग ग्रिगोरी पित्रोविच!'

उसकी माँ ने भी झुककर सलाम की। बुड्ढा रुक गया और बिना कुछ कहे उन दोनों की तरफ चुपचाप देखने लगा। उसके होंठ काँप रहे थे और आँखों में आँसू भरे हुए थे। लीपा ने अपनी माँ के बण्डल में से स्वादिष्ट पराँठे का एक टुकड़ा निकाला और उसे दे दिया। बुड्ढे ने उसे ले लिया और खाना शुरू कर दिया।

इस समय तक सूरज डूब चुका था। ऊपर सड़क पर उसकी रोशनी गायब हो चुकी थी, अँधेरा और ठण्ड बढ़ गई थी। लीपा और प्रास्कोव्या आगे चल दीं और कुछ देर तक अपने आप ऊपर पवित्र क्रास का चिह्न बनाती रहीं।